बम्बई दिनांक . . .

मुम्बई दिनांक

अरुण साधु

अनुवादक डॉ॰ विजय बापट

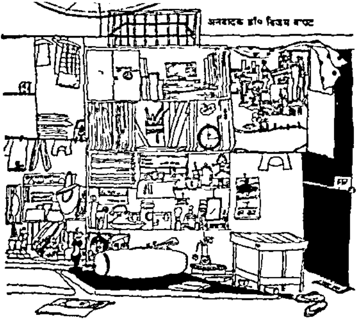

Akshay Chandra Sharma
HOME LIBRARY
Book No 1645
Sadul Colony, Bikaner

राधाकृष्ण

१९७७
©
अरुण साधू
बम्बई

मूल्य १९ रुपये

प्रकाशक
राधाकृष्ण
२ असारी रोड दरियागज
नई दिल्ली ११०००२

मुद्रक
प्रगति प्रिटस
नवीन शाहदरा
दिल्ली ११००३२

रात ढल रही है। तीन का वक्त। चमकीली बत्तियों की निगरानी में महीन कोहरे की शाल ओढ़कर बम्बई समदर की गोद में लेटी हुई है। गाढ़ी नींद में अस्त-व्यस्त प्रौढ़ा-सी। कोलाबा, मालाबार हिल, फारस रोड, पेडर रोड भायखला दादर बांद्रा, घाटकोपर बगल, झुग्गियाँ हाउसिंग बोर्ड की बस्तियाँ—पूरी बम्बई सोयी हुई है। फोर्ट में मेरीन ड्राइव के अमीर बस्तियों के रास्ते सरकारी बत्तियों के चमकीले उजाले में अधिक चिकने ज्यादा साफ-सुथरे और खुशनुमा नज़र आ रहे हैं, इतने साफ़ कि घुटने टेककर उन्हें चूम लिया जाय! उन पर फौरन लेट जायें। एकाध टैक्सी तीखी आवाज़ के साथ उस रास्ते का शील भंग कर रही है। बाकी बम्बई सो रही है ऊँची-ऊँची नयी इमारतों की सख्त निगरानी में समदर की ठंडी हवा बदन पर ओढ़े हुए बत्तियों के उजाले में कहीं-कहीं माल से लदे, भारी पैरों की औरत की तरह धीमे धीमे बंदर की ओर आने-जाने वाले भारी ट्रक, हवाई अड्डे कारखाने के मजदूर अखबार के दफ्तर—पूरी बम्बई पर तेज़ निगाह रखने वाली पुलिस का कंट्रोल रूम—जैसे जाग रहे हैं—पर और बाकी सब जगह खामोशी है ।

तीन का वक्त। बम्बई सो रही है चर्चगेट सो रहा है। समदर की ओर पीठ किये गेटवे सो रहा है, माथे पर प्रगति देवता का सफेद पुतला उठाये बोरीबंदर—आधी आँख बंद किये किसी ध्यानमग्न महागंभीर योगी की तरह खामोश बैठा है। सामने महापालिका की विशाल इमारत के सामने बोरीबंदर स्टेशन का दरवाजा निढाल पड़ा हुआ है—पर आधे घंटे के भीतर ही पहली लोकल शुरू हो जायेगी। पहिये धड़ धड़ की आवाज़ के साथ बेरहमी से खामोशी को चीरते हुए सरकने लगेंगे। बम्बई के हर नये दिन को जगाने-वाली लोकल! तीन चार घंटे बाद जब यहू-वासस

लौटेगी तब उसका हर एक डिब्बा लोगों से ठसाठस भरा हुआ होगा। नयी ताज़गी नये जोश के साथ रंगीन कपड़े पहन औरतें और मर्द बांध टूटी नदी की तरह बोरीबंदर से बाहर निकलेंगे। टैक्सियाँ, ट्रक, डबल डेकर बसें—तब रास्ते को चीरते हुए पागलों की तरह आवाज़ करती हुई दौड़ेंगी। सारे फुटपाथ लोगों से भरे हुए होंगे। चर्चगेट आदमी उगल रहा होगा आदमी ही आदमी!

पर अभी तो जैसे बम्बई महानगरी सो रही है। रास्ते इतने खाली-खाली, साफ और चमकीले हैं कि किसी को एतबार ही न हो सके। गरज़ कि आदमी कहीं न कहीं सोया हुआ है। पानिटकर सोया है। उसकी बीवी सो रही है। किशोर वत्स, नाना सावंत, डी कोस्टा, मुख्यमंत्री शिंदे सलीम हमीद विनीता देशमुख—सबके सब सो रहे हैं। अय्यर भी सो रहा है।

क्रम

अय्यर	९
किशोर वझे	४३
पानिटकर	७५
डी कोस्टा	१०५
जीवाजीराव शिंदे	१४५
डी कोस्टा	१९१
किशोर वझे	२१५
अय्यर	२३३
जीवाजीराव शिंदे	२४७
पानिटकर	२९९

अय्यर

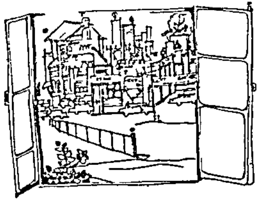

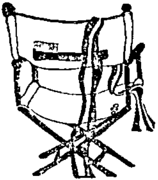

अय्यर ठीक साढ़े छह बज उठा। साढे तीन चार घटे की नींद उसके लिए काफी होती है इसस ज्यादा नींद उसे आती ही नही। रात को दर स सान के बावजूद भी वह सुबह साढे छह पर जाग जाता है—जसे अलाम लगाया हो। उठत ही मुंह धाने के पहले वह अखबार देखता है—पहले दूसरे अखबार और फिर खुद का वेस्टन स्टार। खुद का पेपर तो यू ही देखता है—क्योंकि क्या छपने वाला है वह यह पहल स ही जानता है—सिफ तसल्ली के लिए जरूर देख लेता है। बाकी तीनो अग्रेजी अखबार वह खास तौर पर पढता है और तसल्ली का एहसास कर लेता है। इतना सब होन म करीब डेढ घटा बीत जाता है। इस दौरान दूसरे और काम उससे नहीं हा पात। रोज़ाना का यही रूटीन है उसका। उन तीन बडे अग्रेजी अखबारों के चीफ रिपोटरा की उसे कोई खास परवाह नही है—उनकी योग्यता वह खूब अच्छी तरह जानता है और खुद के हौसले और पत्रकारिता पर उसे नाज़ है। उसका मालिक उसे चीफ रिपोटर क नाम पर अठारह सौ रुपया हर माह यू ही नही दे देता—पर वे अखबार बडे हैं। उसका पेपर नया—सिफ चार साल पुराना है। बम्बई की कोई भी खबर गोल हो जाना ठीक नही और रोज़ाना एक-न-एक सुर्खी का वेस्टर्न स्टार’ म होना लाज़िमी है। अय्यर की इसी खासियत की वजह स दूसरे अखबारा के चीफ़ रिपोटर उससे खार खाये रहत हैं और मौक़ा मिलत ही अय्यर पर ताना कसन स बाज़ नहा आते हैं।

अय्यर ने सारे अखबार पढे और लम्बी सांस ली।

उसकी दी हुई स्मगलिंग की स्टोरी आज अच्छा खासा हगामा खडा कर दगी—इस बात का उसे पूरा-पूरा विश्वास है। वेस्टन स्टार’ के फ्रंट पेज पर बडे और काले टाइप म वह स्टोरी छपी थी। दूसरे अखबारो के चीफ रिपाटरा की बात छोडिये, पर खुद उसके न्यूज़ एडीटर को भी वह सुर्खी अचरज म डाल दगी। रिपोट दे या न दे—बहुत दिना तक इसी असमजस म पडा वह रिपोट जेब म डाले रहा था—कल रात आख़िर उसने वह दे ही दी। वसे उसकी खुद की नज़र मे रिपोट बहल थी—क्योंकि किसी का नाम उसमें न था—पर उससे कई सकेत ज़रूर उभर सकते थे। कई नामा और जगहा का पता चल सकता था। कई मन्त्री भी चपेट म आ सकते थे। कुछ कपनियां भी। स्मगलिंग कैसे होता है, कौन किस तरह

उसम उलझा रहता है, किसकी शह पर काम चलता है सोसिज किस तरह के होते हैं—इन तमाम बातो का उसम जिक्र था। पर सब कुछ बिलकुल ही अथहीन न था—गरज कि कोस्टा की दी हुई जानकारी के बल पर उसन बडी कुशलता से रिपोट तैयार की थी। इसी वजह से वह स्टोरी खास रग ला सकती थी। वह जानता था कि उसके दफ्तर म भी इस कहानी स हलचल मच जायेगी। न्यूज एडीटर और मालिक का चेहरा उसकी नजरा म आ गया और उसे हसी आ गयी।

इस कहानी के अलावा पपर म और कुछ खास न था। बम्बई मे और कोई घटना हुई ही नही थी। मुख्यमत्री की घोषणा आस्ट्रेलियन व्यापारियो का शिष्टमडल वल्ड बैंक की टीम का आगमन मजदूरा की हडतालें और मोर्चे पाँच छह समारोह इश्तहार वालो को मक्का लगाने वाल ग्रत एक अभिनेत्री का फिसाद दो खून एक झगडा कुछ छोटे मोटे अपराध और एक्सीडेंट—एकदम डल।

आज कौन-सी खबर दी जा सकती है इस बार म भी उसन खबरें पढ़ने के दौरान सोच लिया। रेलवे बोड का एक मेम्बर प्राइवेट काम से बम्बई आया हुआ है—इसकी खबर उसे मिल चुकी थी। चुपचाप उससे इन्टरव्यू लेकर बम्बइ की अडरग्राउड रेल के बारे मे कल सुर्खी लगायी जा सकती है—बस उसने यही तय कर लिया।

पढ़ते पढ़ते ही अय्यर ने ब्रश किया और मुह धोकर उसने टेलीफोन का डायल घुमाया। काफी देर तक घटी बजने के बाद दूसरी ओर स रिसीवर उठाया गया।

हलो गुड मानिग! मिसेज खान देयर?

नही साब मेम साब सोया है—अबी उठा नही ' उधर से किसी औरत की आवाज आयी।

अच्छा ? आई सी !

'आप अय्यार साब ना? मैं जुलेखा। मेम साब को कोई मैसेज देना है?

नो नथिग। जस्ट टेल हमारा फोन आया था !

जी साब।

कल शाम उसने डिनर पर बुलाया था और जा नही सका—इसीलिए कही मिसेज खान नाराज-वाराज तो नही है? आज उसे समझाना-बुझाना होगा और इसम ऐसी कोई मुश्किल भी नही। ईजी।

अय्यर ने फ्रिज से दूध निकालकर बिजली की अँगीठी पर रखा। उबलने से पहले उसने दाढी बना ली और वह नहा लिया। कपडे पहन

लिये। फिर दो अंडे फ्राई कर लिये—फिर ब्रेड अंडा और दूध का नाश्ता। पांच मिनट में खत्म। खाने के दौरान एक कागज़ पर वह कुछ लिखता जा रहा था। दिन भर में क्या-क्या करना है—इसी का हिसाब कागज़ पर था।

नहाने के दौरान फोन की घंटी बजी थी। अय्यर को याद आया और उसने डायल घुमाया। काफ़ी देर तक घंटी बजती रही। तब परेशान होकर उसने रिसीवर रख दिया और टाइ बांधकर वह नीचे उतर आया। रास्ते के परली तरफ पार्क की अपनी पुरानी ओपल निकालकर वह अपने आफिस के रास्ते पर हो लिया।

गाड़ी पुरानी थी लेकिन उसके हाथ पर चढ़ी हुई थी। रास्ता भी जाना पहचाना था। बम्बई के रास्ते और गलियां अय्यर के परिचित थे। अपने हाथों की लकीरों की मानिंद। पिछले बीस साल से वह बम्बई को देख रहा है—एक रिपोर्टर की हैसियत से। बम्बई के विकास में उसका भी हिस्सा था। कहीं उसने विरोध किया था, कहीं सुधार के तरीके बनाये थे। कुछ इमारतें उसने अपनी पत्रकारिता के बल पर बनने ही न दी थीं। अय्यर को अपनी ताकत का एहसास था और उस पर नाज़ भी। बम्बई के लिए उसके मन में खास अपनापा था। मद्रास और बंगलौर के लिए उसके दिल में खास आकर्षण न था। पर अभी जैसे उसके मन में बेचैनी उभर रही थी—लग रहा था बम्बई अपने हाथ से निकल जायेगी। एहसास हो रहा था, जैसे ताकत खत्म होती जा रही है।

अय्यर आफिस पहुँचा। वेस्टन स्टार के सभी केबिनों में अभी सन्नाटा था। बीच के हाल में अजीब खामोशी थी। अलग-अलग जगह पर चार-पांच टेलिप्रिंटर खट खट कर रहे थे। अभी-अभी आया हुआ एक सब-एडीटर टेलिप्रिंटर के करीब बैठकर नोटबुक को यूं ही सहला रहा था और एक चपरासी अखबारों की फाइलें करीने से लगा रहा था। अय्यर पहुँचा तब नौ बजने वाले थे। शाम का स्टाफ अभी तक आया न था। अय्यर ने मन ही मन गालियां दे डालीं। पर उन पर उसका अधिकार न था नहीं तो इवनिंग एडिशन के सभी सब्स को उसने आड़े हाथों लिया होता। फिर अभी तक खुद न्यूज़ एडीटर का भी पता नहीं था तो दूसरे लोगों को वह क्या खाक कहे!

अय्यर के केबिन का फोन खनखना रहा था। अलमारी खोलने के पहले उसने रिसीवर उठाया—

“हलो, ‘वेस्टन स्टार’ हीअर!”

‘साब ?

'हलो टली ? क्या बात है बेटा ? इतने सवेरे दिमाग़ खराब करता है !"

'साब आपके रूम पर मैंने रिंग दी थी।

हाँ मैं बाथरूम में था। क्या बात है ?

उधर से टली की भारी भारी साँस सुनायी दे रही थी। वह मोटी आवाज़ में बोला—

मली की बीमारी कल से ज्यादा हो गयी साब।'

अय्यर हड़बड़ाया। कुछ पल रुककर बोला—

अच्छा—क्या हुआ ?

आज भौन बीमार है साब—दवा तक पीती नहीं।'

'ओके ओके ! पिछले हफ्ते पैसे दिये थे वे खतम हो गये ?

वो बात नहीं साब। सनी लगातार आपका नाम पुकार रही है। नींद और बेहोशी की हालत में भी साब !"

हाँ। आज दोपहर को आऊँगा कह देना।

जरूर आना साब वो आपके लिए तड़प रही है।

टली की आवाज़ काफी भर्रायी हुई थी। आज सुबह उसने शराब नहीं पी होगी अय्यर इस बात को भाँप चुका था।

हाँ हाँ ज़रूर आऊँगा। बट लिसन। डोंट टेलीफोन मी इन द आफिस टु डे। ओके !'

अय्यर ने रिसीवर नीचे रख दिया और कोहनियाँ टेबल पर टिकाकर हाथों में सिर लिये आधे मिनट तक यूँ ही बैठा रहा। फिर उसने झपटकर अपनी हथेलियों से मुँह पोंछा पास रखी ट्रे से कोरा कागज़ उठाया और मुँह पोंछकर कागज़ पीछे की ओर फेंक दिया। दाईं ओर के ड्राअर से कपड़ा निकाला और आखिर टेबल पोंछा। चपरासी टेबल भले ही पोंछ दे पर अय्यर दोबारा टेबल ज़रूर पोंछता है। मस्टर पर दस्तखत मारे। पुलिस और फायर ब्रिग्रेड को फोन करके सब ठीकठाक होने की जानकारी ली और आज की फाइल सामने रखी।

पहला रिपोर्टर अभी नहीं आया था। उसे आने में अभी करीबन एक घंटा लग जायेगा। शिपिंग बंदरगाह मज़दूर की खबरें लानेवाला रिपोर्टर ग्यारह तक आयेगा। डेन्काल्स वाला अब तक कोरोनर्स के कोर्ट में पहुँच चुका होगा। और एक एस्प्लेनेड कोर्ट में। आज तीनों रिपोर्टर छुट्टी पर हैं मतलब साथ में सिर्फ आठ। उनमें से एक एअरपोर्ट एक सचिवालय एक कारपोरेशन एक क्राइम और एक नाइट के लिए। मतलब, बचे तीन। लो अब ढेर सारा काम ! सब बूम मारेंगे। मालिक से कहा, चार बढ़ा

दीजिये तो वह झिझकता है। न्यूज़-एडीटर सिर्फ मालिक को मस्का लगाना जानता है। खबर गलत हो जाये तो कुसमुसाता रहता है। पर उसके मस्के के खातिर एकाध रिपोर्टर फालतू के फंक्शन मे अटक जाता है। स्साला यह भी कोई तरीका है? टाइम्स एक्सप्रेस की प्रेस के पास बीस-बीस लोग हैं पर इधर कोई देखता ही नहीं।

"चपरासी!" अय्यर ने ज़ोर से पुकारा और तेज़ी से फाइल टटोलना शुरू कर दिया। दो थर्ड क्लास कान्फ्रेंस चीफ मिनिस्टर की दो मीटिंग उसम से एक किसी फैक्टरी का उद्घाटन कैबिनेट मीटिंग, दो मोर्चे, आस्ट्रेलियन व्यापारियों का शिष्टमंडल वर्ल्ड बैंक की टीम की मुख्यमंत्री से मुलाकात मुरारजी हाल म सर्वदलीय सभा और इसी तरह सटर-पटर।

अय्यर ने एक बार अपना सिर दबाया। काम करने वाले हाज़िर रिपोर्टरों के नाम देखे और डायरी लिखना शुरु कर दिया। सचिवालय कैबिनेट मीटिंग मुख्यमंत्री की शिष्टमंडल से मुलाकात—पोंक्षे के नाम मे डाल दी। पांक्षे हमेशा ही सचिवालय देखता है। टाइम न्यूज़ देने वाले के लिए डिनर की एक फालतू प्रेस कान्फ्रेंस लगा दी जाये तो वह भी खुश होगा और काम भी होगा। बाकी बचे तीन को दूसरे काम बाँट दिये।

फिर खुद की पर्सनल डायरी खोली। सिर एकदम भन्ना गया। कल सुबह तक पर्सनल कालम तैयार होना था। खैर कोई बात नहीं। आज रात जाग कर टाइप कर लेंगे। दोपहर तो काफी अपाइंटमेंटस हैं।

चपरासी!' फिर एक आफिस गुंजा देने वाली पुकार।

हाँ हाँ आया साब!' एक छोकरा-सा चपरासी केबिन का दरवाज़ा ढकेलकर हाथ म कागज़ लिये अंदर दाखिल हुआ।

"सुनता नहीं क्या बे?"

कागज़ ला रहा था साब।" हाथ के कागज़ उसने टेबल पर रखी ट्रे म रख दिये और और अदब के साथ खड़ा हो गया। अय्यर ने डायरी मार्क करते हुए बायें हाथ से उसे जाने का इशारा किया फिर भी वह उसी अन्दाज़ म खड़ा रहा। फिर अय्यर ने सिर ऊपर कर हँसकर उसकी ओर देखा।

'क्या है रे, बेटा?

'साब जरा पाँच रुपये चाहिए थे।

ऐं! क्या सबेरे-सबेरे दिमाग खराब करता है रे!"

साब, भाई के ज़रा

'हलो टली ? क्या बात है बेटा ? इतने सबेरे दिमाग खराब करता है !"

'साब आपके रूम पर मैंने रिंग दी थी।'

'हाँ मैं बाथरूम में था। क्या बात है ?'

उधर से टली की भारी भारी साँस सुनायी दे रही थी। वह मोटी आवाज़ में बोला—

'सली की बीमारी कल से ज्यादा हो गयी साब।'

अय्यर हड़बड़ाया। कुछ पल रुककर बोला—

'अच्छा—क्या हुआ ?'

'आज भौत बीमार है साब—दवा तक पीती नहीं।

'ओके ओके ! पिछले हफ्ते पैसे दिये थे वे खत्म हो गये ?

'वो बात नहीं साब। सली लगातार आपका नाम पुकार रही है। नींद और बेहोशी की हालत में भी साब !"

'हाँ। आज दोपहर को आऊँगा कह देना।

'ज़रूर आना साब वो आपके लिए तड़प रही है।

टली की आवाज़ काफी भर्रायी हुई थी। आज सुबह उसने शराब नहीं पी होगी अय्यर इस बात को भाँप चुका था।

'हाँ, हाँ ज़रूर आऊँगा। बट लिसन। डोंट टेलीफोन मी इन द ऑफिस टु डे। ओके !'

अय्यर ने रिसीवर नीचे रख दिया और कोहनियाँ टेबल पर टिकाकर हाथों में सिर लिये आधे मिनट तक यूँ ही बैठा रहा। फिर उसने रूखेपन से अपनी हथेलियों से मुँह पोंछा पास रखी ट्रे से कोरा कागज़ उठाया और मुँह पोंछ कर कागज़ पीछे की ओर फेंक दिया। दाईं ओर के ड्राअर से कपड़ा निकाला और आदतन टेबल पोंछा। चपरासी टेबल भले ही पोंछ दे पर अय्यर दोबारा टेबल ज़रूर पोंछता है। मस्टर पर दस्तखत मारे। पुलिस और फायर ब्रिगेड को फोन करके सब ठीकठाक होने की जानकारी ली और आज की फाइल सामने रखी।

पहला रिपोर्टर अभी नहीं आया था। उसे आने में अभी करीबन एक घंटा लग जायेगा। शिपिंग बंदरगोदी मज़दूर की खबरें लानेवाला रिपोर्टर ग्यारह तक आयेगा। डे-कालस वाला अब तक कारोनर के कोर्ट में पहुँच चुका होगा। और एक एस्प्लेनेड कोर्ट में। आज तीन रिपोर्टर छुट्टी पर हैं मतलब साथ में सिर्फ आठ। उनमें से एक एअरपोर्ट एक सचिवालय एक कारपोरेशन एक क्राइम और एक नाइट के लिए। मतलब बचे तीन। तो अब ढेर सारा काम ! सब बूम मारेंगे। मालिक से कहा, चार बढ़ा

दीजिये तो वह झिझकता है। न्यूज़-एडीटर सिर्फ मालिक को मस्का लगाना जानता है। खबर गलत हो जाये तो फुसफुसाता रहता है। पर उसके मस्के के खातिर एकाध रिपोर्टर फालतू के फंक्शन में अटक जाता है। स्साला यह भी कोई तरीका है? टाइम्स एक्सप्रेस, फ्री प्रेस के पास बीस-बीस लोग हैं पर इधर कोई देखता ही नहीं।

"चपरासी!" अय्यर ने ज़ोर से पुकारा और तेज़ी से फाइल टटोलना शुरू कर दिया। दो थर्ड क्लास कॉन्फ्रेंस, चीफ मिनिस्टर की दो मीटिंग, उनमें से एक किसी फैक्टरी का उद्घाटन, कैबिनेट मीटिंग, दो मोर्चे, ऑस्ट्रेलियन व्यापारियों का शिष्टमंडल, वर्ल्ड कप की टीम की मुख्यमंत्री से मुलाकात, मुरदवाई हाल में सर्वदलीय सभा और इसी तरह सटर पटर।

अय्यर ने एक बार अपना सिर दबाया। काम करने वाले हाज़िर रिपोर्टरों के नाम देखे और डायरी लिखना शुरू कर दिया। सचिवालय, कैबिनेट मीटिंग, मुख्यमंत्री की शिष्टमंडल से मुलाकात—पोंक्षे के नाम में डाल दी। पोंक्षे हमेशा ही सचिवालय देखता है। प्राइम न्यूज़ देने वाले के लिए डिनर की एक फालतू प्रेस कॉन्फ्रेंस लगा दी जाये तो वह भी खुश होगा और काम भी होगा। बाकी बचे तीन को दूसरे काम बाँट दिये।

फिर खुद की पर्सनल डायरी खाली। सिर एकदम भन्ना गया। कल सुबह तक पर्सनल कालम तैयार होना था। खैर कोई बात नहीं। आज रात जाग कर टाइप कर लेंगे। दोपहर तो काफी अपाइंटमेंट्स हैं।

'चपरासी!' फिर एक ऑफिस गुँजा देने वाली पुकार।

'हाँ हाँ, आया साब!' एक छोकरा-सा चपरासी केबिन का दरवाज़ा ठेलकर हाथ में कागज़ लिये अन्दर दाखिल हुआ।

'सुनता नहीं क्या बे?'

'कागज़ ला रहा था साब।' हाथ के कागज़ उसने टेबल पर रखी ट्रे में रख दिये और और अदब के साथ खड़ा हो गया। अय्यर ने डायरी मार्क करते हुए बायें हाथ से उसे जाने का इशारा किया फिर भी वह उसी अंदाज़ में खड़ा रहा। फिर अय्यर ने सिर ऊपर कर हँसकर उसकी ओर देखा।

'क्या है रे, बेटा?'

'साब ज़रा पाँच रुपये चाहिए थे।'

'एँ! क्या सवेरे-सवेरे दिमाग खराब करता है रे!"

'साब भाई के ज़रा

ओके आर ! अय्यर ने उसे बीच में ही रोक दिया।

फालतू दिमाग खराब करता है। शर्ट की ऊपर की जेब टटोली फिर पैंट की जेब टटोली। रुपये रुपये के चार मैले-कुचैले नोट उसके हाथ में थमा दिये।

'जा भाग।

चपरासी सलाम ठोककर जाने लगा तो अचानक जैसे उसे याद हो आया। अय्यर चीखा —

ए फालतू आदमी !

जी साब !

अरे पिछले महीने तेरे को ही पाँच रुपया दिया था न ?

जी साब एक तारीख को चुकता करूँगा साब।

पकड़ा चार को ! साला फालतू आदमी पैसा माँगता है क्या जा भाग।'

साला हम भी किसके लिए कमायेगा पैसा ? माँ तो दो साल पहले ही चल बसी। बहन पूछती नहीं। और अब कौन करेगा शादी ? पैसा साला सब छेद में घुस जाता है। सैली बीमार है। दोपहर वक्त निकालकर जाना होगा। बिलकुल जाना ही होगा। टालना ठीक नहीं। बीमार है। पहले उसके यहाँ रात बिरात जाते ही थे न ! जाना ही होगा। मिसेज खान का फोन अभी तक आ जाना चाहिए। कल बेकार ही उसे परेशान किया। डिनर पर जाना ही चाहिए था और फिर बेकार रात बाहर जाकर पैसा ही बर्बाद किया। छोकरी एकदम पतली थी। अपन का माल एकदम मोटा माँगता है। एनिफ्गाइन बिहाइंड। मिसेज खान जैसा। सैली पहले क्या लाजवाब थी। माई गाड ! आज भी याद आती है तो साँस तेज हो जाती है। एकदम सोना। अनबीटेबल। तो सैली बीमार है ? दोपहर को वक्त निकालकर जाना ही होगा। टालना ठीक नहीं। फोन घनघना रहा था।

वेस्टन स्टार।

'अरे अय्यर ? धीर हीअर।'

हलो ! क्या है बेटा ?

यू डोंट नो ? साला चीफ रिपोर्टर है या भंगी ?'

क्या बात है ?'

माई गाड ! उधर वेस्टन रेलवे पर इतना बड़ा हादसा हुआ एंड अवर चीफ रिपोर्टर डजंट नो एनीथिंग !'

फालतू आदमी। बकवास बंद। इट इज यूअर ड्यूटी टु लेट मी नो। क्या बात है ?

अर कुछ नहीं। एक लोकल डिरेल हुआ है अँधेरी के पास। इट इज पीक ऑवर नाऊ।'

माई गाड! एनी कैजुअल्टीज़? कुछ पिक्चर पासिबिलीटीज?

'सुनो सुनो, पहले सुनो ना कैजुअल्टीज़। कार शेड से खाली लोकल आ रही थी। बट यू रश ए फोटोग्राफर देअर। आल सर्विसेज़ आर डिसआर्गनाइज्ड।"

अच्छा? देन यू आल्सो रश देअर। इवनिंग के लिए कापी दे देना।"

मैं? अपना डे काल वाला किधर मर गया? साला कल रात वापस लौटते-लौटते एक बज गया था। एंड यू आस्क मी टु रश देअर अगेन इन द मार्निंग?

बस-बस। फालतू आदमी। आई वांट ए कापी फार द इवनिंग। सावंत बस्टन से ही आता है न? वह दस तक आयेगा। आई विश ही विल यूज़ हिज ब्रेन एंड शूट ए पिक्चर। यू रश देअर फस्ट।

'स्साला इससे तो भंगी का काम बेहतर। साला काम धंधा है या क्या? बीवी अभी से डायवोर्स की बात करती है।

साला तुमको जाना है या नहीं? खाली लेक्चर नहीं माँगना।'

"ओके, ओके। मैं फोन करूँगा साढ़े ग्यारह पर। स्टेनो से कापी करने के लिए कह देना। आफिस में नहीं आऊँगा। साली यह भी कोई नौकरी है? आज तो घर पर रह लेने दो।'

ठीक है।'

अय्यर ने फोन रख दिया। चलो 'इवनिंग स्टार' के लिए अच्छी लीड-स्टोरी मिल गयी। धीरू कहता है कोई मरा नहीं। नहीं तो दूसरा ड्रामा दिया जा सकता था। ठीक है पीक आवर का जाम है न। काफी है। धीरू ने फोन किया, अच्छा ही हुआ। साला मेंस का आदमी है अच्छा आदमी। कल उसे बाफ देना चाहिए। उसकी फेमिली भी है। गुड मैन! मिसेज़ खान का फोन अभी तक नहीं आया? काफी गुस्सा हो गयी शायद। या अभी तक लेटी हुई है। इसी की संभावना ज्यादा है। कल डिनर में काफी खा गयी होगी। मैं पहुँचा नहीं इसीलिए ज्यादा पी भी गयी होगी। एक पैग में ही वह किस तरह डोलने लगती है। तो सेली बीमार है! दोपहर को वक्त निकालकर किसी भी सूरत में उसके यहाँ जाना होगा। पिछले डेढ़ महीने से उसके यहाँ गया ही नहीं। डेढ़ क्या दो महीने हो गये होंगे। टेली ने कितने फोन किये! खुद चली आयी। पर जाना हो ही न सका। हाँ नहीं सका या मैं ही नहीं गया? मैंने क्या टेली को पैसे नहीं दिये? पिछले हफ्ते ही तो दिये थे। पर अब वह बीमार है। उसकी ओर देखने की हिम्मत नहीं

हानी। पर जाना तो होगा ही। इसलिए जाना होगा। वक्त निकालकर जाना ही होगा।

अय्यर ने फिर कोरे कागज से मुँह पोछा और वह कागज पीछे की ओर फेंक दिया। डायरी एक बार फिर देखी। आज के सारे एंगेजमेंटस देखे। कल के एंगेजमेंटस देख लिये। उसी हिसाब से सुबह के काम माक कर लिये। फिर ट्रे में रखे कागजों को देखना शुरू किया। खत पढ़े और तारीख नोट की और खत फाइल कर दिये। कुछ खास बात नज़र आने पर डायरी मे नोट कर लिया। टेबिल के कागज़ खतम होने पर वह केबिन से बाहर आ गया। न्यूज़ एडीटर की टेबिल के सामने खड़े होकर एक नया अश्लील लतीफा सुनाया और सबको हँसा दिया। इवनिंग के लिए कौन-सी कहानियाँ आ रही हैं इसका भी खुलासा कर दिया।

सुबह की स्टोरी पढ़कर न्यूज़ एडीटर का चेहरा फक पड गया था। इस बात को अय्यर अच्छी तरह ताड चुका था। पर बातों में उसने भूलकर भी उसका ज़िक्र नही किया। कल स्टोरी देते वक्त उसने जानबूझकर न्यूज़ एडीटर को नही बतायी थी। रात गुरु आकर चीफ-सब को दे दी थी। रात का चीफ-सब भी स्पोर्ट था। उसने बिना किसी दिक्कत के फ्रंट पेज पर ठोक दी।

गुड स्टोरी दैट! मलूल चेहरे से न्यूज़ एडीटर ने कहा।

ओ दैट?' अय्यर बेफिक्री से बोला 'नथिंग मैन, सब 'कुछ बदल। एक नाम तक का ज़िक्र नही है। नाट ए न्यूज़ स्टोरी।"

पर काफी एक्स्प्लोसिव है। अभी तक मेरे पास तेरह फोन आ चुके हैं। जानते हो पहला फोन किसका था।

आई नो। सुप्रीम बास का होगा। वह खुद मुझे तो फोन करेगा नहीं। अय्यर ज़ोर से हँस पड़ा। न्यूज़ एडीटर चुप रहा। उसका चेहरा और भी लटक गया था। ही वाज एंग्री।'

लेट हिम बी। कहते हुए अय्यर ने जानबूझकर उस बात को नज़र अन्दाज़ करते हुए टेलिप्रिंटर की रील को देखना शुरू कर दिया। तभी केबिन के फोन की घंटी बजने की वजह से वह तेज़ी से अपने केबिन में दाखिल हो गया।

तो स्साला सुप्रीम बास गर्मा गया? आल्ड क्रुक! स्साला खुद हिस्सेदार तो नहीं है?

हलो— वेस्टर्न स्टार हीअर।

इज चीफ रिपोर्टर अय्यर देअर।'

दिस इज़ अय्यर। चीफ रिपोर्टर आफ 'द वेस्टर्न स्टार। कैन आई

हैल्प यू मैडम ?"

वन मोमेंट, अय्यर साहब। कोस्टा साहब आपसे बात करेंगे।"

"गुड मार्निंग अय्यर।'

हलो हलो, कोस्टा बेटा! क्या हुआ सुबह-सुबह ? आर यू आउट आफ पालिटिक्स ?"

कांग्रेच्युलेशन्स अय्यर। आखिर तुमने दे ही दी।"

'ओ दैट! नथिंग मैन।"

'मेरा खयाल था तुम डर जाओगे।"

'अरे मुझे क्या गांडू समझते हो ? नानसेंस।"

फनी वन। गुड स्टोरी। और सब ठीक है न ?"

'बकवास! मुझे ज़रा भी फुर्सत नहीं है। इवनिंग स्टार' जाना है। काम क्या है बोलो ?'

गप्पे लगानी हैं यार।'

सारी देन। आइ हैव नो टाइम।'

अरे ज़रा सुनो तो सही। कुछ खास काम है तुमसे।"

'अच्छा तो काम की बात करो।"

सेबाशियन डीकोस्टा हँस पड़ा और बोला 'अय्यर इज एवर आल्वेज इंपेशेंट।'

अरे सारी!" अय्यर ज़रा नरमाई से बोला। कोस्टा को नाराज़ करके काम नहीं चलेगा। आय वाज़ जस्ट फूलिंग यू। तुम तो मेरी हैबिट जानते हो, कहकर वह ज़ोर से हँस पड़ा।

लुक अय्यर आई हैव समथिंग रियली वेरी एक्सप्लोसिव। आज जो कुछ तुमने दिया है न वह कुछ भी नहीं है। फोन पर मैं ज्यादा बता नहीं सकता। हर मटिरियल ऐसा है कि तुम खुद परेशान हो जाओगे और फिर पर सब्स्टांशियली बैक्ड विद फैक्ट्स एंड फिगर्स।"

आई सी।'

सिर्फ तुम्हारे लिए, एक्सक्लूसिव एंड सेंसेशनल।

इट्स ओके। कब आऊँ फिर ? आज ?

ना। इतनी जल्दी नहीं है। कल दोपहर मेरे घर पर आना, तीन बजे के करीब।

'भायरला ? ठहरना ज़रा, डायरी देख लेता हूँ। तीन बजे न ? ओ के, ठीक है।'

तो तय रहा। सो लांग '

इतनी बड़ी बात और ऐसी स्टोरी में अय्यर खुद अपने को उलझाना

नहीं चाहता था। आज जो स्टोरी दी वह काफी है। लेकिन देखें तो सही, बुड्ढा क्या कहता है? हम सैक कर सकेंगे या नहीं इस पर उसकी और न्यूज़-एडीटर की बातें हो ही चुकी होंगी।

अय्यर ने जेब की छोटी-सी डायरी में नोट कर लिया। आज का पन्ना भी उसने देखा। आज के पन्ने पर सिर्फ तीन नाम थे। मिसेज़ खान—लंच, निचिरो नकामुरा जैप पेंटर—ताज ३.३० और सली। सली के आगे वक्त नहीं लिखा था। जापानी पेंटर से मुलाकात पौने घंटे में निबट जायगी। बाद में बान्द्रा जा सकते हैं। सली के पास। अय्यर ने तय कर डाला। वह बीमार है। आज उसके यहां जाना ही होगा। काफी दिन हो चुके हैं। मिसेज़ खान का फोन अभी तक क्यों नहीं आया? बेहद नाराज़ है शायद। लंच के लिए उससे फोन करके होटल का तय कर लेना चाहिए।

दस बज रहे थे और आफिस अपनी रफ्तार में आ रहा था। सब एडीटरों की टेबिलों पर आवाज़ उभरने लगी थी। सब टेलिप्रिंटर्स धड़धड़ कर रहे थे। निचली मंज़िल पर मशीन रूम में भी हलचल शुरू हो चुकी थी। अपनी टेबिल से परे रखे टाइपराइटर पर वह बैठ गया। बांहें ऊपर कर उसने दनादन टाइप करना शुरू कर दिया। फिर फोन खनखनाया।

हलो मिस्टर अय्यर! आई एम हीअर यू नो फ्राम सी० एम्स० आफिस—वी हैव मेट बिफोर।

हलो हलो! हाउ आर यू शहाणे साहब? आज सुबह सुबह हमारी याद?

'अरे भाई आज ही नहीं रोजाना ब्रेकफास्ट के वक्त होती है। बात जैसे गले में ही अटक गयी हो।

अच्छा? थैंक्यू। व्हट कैन आई डू फार यू?

आह! नथिंग मिस्टर। जस्ट ए कर्टसी काल। कभी कभार हम लोग आप लोगों को काल्स करते हैं। आइये न कभी आफिस में वक्त निकालकर यूं ही मिलने के लिए।

कोई खास स्टोरी है क्या? अवर सचिवालय रिपोर्टर मिस्टर पाथे लुक्स आफ्टर ।"

ओह नो। नथिंग आफ द सार्ट। कभी-कभी हम लोग चीफ रिपोर्टर्स और एडीटर्स को बुलाते हैं। हम लोगों को भी काफी जानकारी मिल जाती है। आप लोगों भी अच्छा खासा बैकग्राउंड हम दे सकते हैं।

'आई सी।

सो कम एलांग एनी टाइम फार टी। सी० एम० विल आलसो बी

हैपी टु मीट यू।'

ओ यस, पर इसी वक्त नहीं न?"

अभी? मतलब कल या परसों कभी भी।'

ओके आइ विल काल यू।

ओ थैंक्यू। जस्ट गिव मी ए टिंकल एंड आइ विल अरेंज विद द सी० एम०। बाई द वे आपको आज की स्टोरी इन्टरेस्टिंग है।'

कौन-सी स्टोरी?

'वही फ्रंट पेज वाली स्टोरी।"

अच्छा थैंक्यू। हाऊ डिड द सी० एम० फाइंड इट?

वेल आइ डोंट नो। उन्हें पढ़ने का वक्त ही कहाँ मिल पाता है। पर उन्हें भी इंटरेस्टिंग ही लगेगी। आप आइये तो सही। हम लोग काफी बातें करेंगे।

इस पर अय्यर हँस पड़ा।

थैंक्यू फार द कम्प्लीमेंट्स मिस्टर शहाणे। मैं कभी रिंग करूँगा आपको, कल या परसों।'

'ओके।'

फोन रखकर अय्यर जोर से हँस पड़ा। मतलब स्टोरी ने यहाँ तक गुल खिलाया है। काफी हो गया। शहाणे को दुबारा रिंग करने का उसका इरादा न था। गरज कि और बड़े लफड़े में वह अपने आप को उलझाना न चाहता था। हाँ कोम्टा के पास क्या है यह जरूर देख लेना चाहिए। अभी तक एडीटर और बुल्कू के पास फोन पहुँच चुके होंगे। अय्यर को कुछ गुस्सा आ गया। वह फिर टाइप शुरू करने वाला था तभी फोन खनखनाया।

शर्मा हीअर।'

कहो बेटा? क्या बात है? कोई बड़ी स्टोरी है?"

नथिंग मिस्टर अय्यर। मर्डरर्स आर आन ए हालिडे। पेटी थेफ्ट्स एंड क्लैशेज।"

अरे तो क्या कोरा पेपर बेचना पड़ेगा? वैसे डिवेलपमेंट की बात है अपनी जगह पर। और तो कुछ है नहीं।'

'कुछ छोटी मोटी स्टोरीज हैं।'

"ओके, देन रश एंड गिव। देरी नहीं करना।'

अय्यर फिर टाइप करने लगा। उसकी स्पीड काफी अच्छी थी। की-बोर्ड पर उँगलियाँ ठहरती ही न थीं और बीच में उसे ऊँघ भी आ रही थी। वह पहले टाइपिस्ट ही था। मद्रास में टाइपिंग का कोर्स पूरा कर

वह बम्बई आ गया। मैट्रिक पार न कर सका। सरकारी दफ्तर में टाइपिस्ट की जगह पर चिपक गया। वहाँ से टेलीग्राफ ऑफिस में प्रिंटर पर आ गया। वहाँ से टाइम्स के टेलिप्रिंटर आपरेटर की जगह पर आया। मैट्रिक पास कर लेने के बाद 'बाम्बे क्रानिकल' में रिपोर्टर बना और आगे बढता ही गया अपने हौसले के बल पर। दूसरा महायुद्ध बयालीस का आंदोलन स्वतन्त्रता विभाजन गोवा मुक्तिसंग्राम भारत-पाक युद्ध की घटनाओं के साथ साथ पत्रकार की हैसियत से उसका अच्छा खासा नाम हो गया। जिन्दगी की दूसरी बातें भूल भालकर। बम्बई का डेवलपमेंट उसने देखा था। बम्बई का समंदर हटते हुए पेड टूटते हुए, बस्ती कारखाने बढते हुए उसने देखे और जमकर विरोध किया। बम्बई की ट्राम खत्म हुई तो अपनी खबरों में दिल भरकर रोया और फिर पत्रकार की हैसियत से उसका इतना नाम हो गया कि 'वेस्टर्न स्टार' चौथा अंग्रेजी पेपर निकला तो चीफ रिपोर्टर की जगह पर अय्यर के अलावा दूसरा नाम ही न था।

पौने घंटे में अय्यर की ट्रे खाली थी। तैयार की हुई रिपोर्ट्स चपरासी के हाथों डेस्क पर भिजवा दीं। इवनिंग के लिए कौन-सी रिपोर्ट्स आयेंगी इसका हवाला न्यूज एडीटर को दे ही चुका था। उसका एक फार्म भरकर भिजवा दिया। उसका अपना काम जब खत्म हुआ तब ऑफिस अपनी रफ्तार पर था। डे काल का शर्मा टाइपराइटर खटखटाने लगा। शिपिंग का कृष्णन फोन से सटकर बैठा था। स्टेनो अभी तक आया ही न था। आज जवाबतलबी करना होगी। साला एडीटर का चमचा बना फिरता है! उसकी वजह से सातवें आसमान पर रहता है साला! जूनियर मोस्ट रिपोर्टर लांग हैंड में उससे फास्ट डिक्टेशन ले सकता है। यूँ ही वह स्टेनो कहलाता है। पता नहीं एडीटर के साथ उसका क्या नाता है? फोन फिर खनखनाया—

वेस्टर्न स्टार।

'अय्यर साहब? पालकर हीअर। गोपालन कहाँ है? स्टोरी देनी है। अंधेरी के केमिकल काम्प्लेक्स के इनाग्युरेशन की। इवनिंग के लिए।'

'कुछ खास है। राइटअप तो कल ही दे चुके हैं।'

'फर्स्ट क्लास कापी। सी० एम० ने ऐसा झाडा उन लोगों को!”

'वंडरफुल! जस्ट ए मिनट।'

गोपालन!” अय्यर ने पुकारा। आवाज नहीं आयी तो अय्यर ने केबिन के बाहर मुँह निकालकर फिर पुकारा गोपालन।'

'कमिंग सर' कहते हुए गोपालन दौडता हुआ आया।

'पागल आदमी, कहाँ मर गये थे?" 'यस सर, नो सर, एडीटर के रूम में था।' गोपाल अपनी केरली अंग्रेज़ी में, हँसते हुए बोलने की कोशिश कर रहा था।

'डैमिट! फिर मत मरना कहीं। पालकर फोन पर स्टोरी दे रहा है। अटैंड द फोन। अगर न बन सके तो लॉंग हैंड में ले लेना। एकदम बेकार आदमी!'

'यस सर!' कहकर गोपालन हँस दिया। यह उसकी खास आदत थी।

फिर अय्यर कुछ देर यूँ ही बैठा रहा। जाने वाली रिपोर्टों को एक बार फिर देखने लगा। व्याकरण सम्बन्धी भूलें नज़र आते ही जूनियर रिपोर्टर को मन ही-मन गालियाँ देता रहा। अब दफ्तर पूरी सरगर्मी में था। बाहर के कमरे में टेलिप्रिंटर लगातार टाइप किये जा रहे थे। नीचे की मंज़िल से रोटरी मशीन की आवाज़ आ रही थी। डाक एडिशन छप रहा था।

अय्यर ने झट से टेलीफोन का चोगा उठाया और डायल घुमाया। उधर से मर्दानी आवाज़ उभरी 'मिसेज़ खान।'

'हलो मॉर्निंग मिसेज़ खान!'

अय्यर आवाज़ में मिश्री घोलकर बोल रहा था।

'क्या हो गया था सुबह? तबियत ठीक नहीं थी?"

'ओ! यू अय्यर! यू फूल! किसलिए फोन किया? मैंने तो तय कर लिया था कि तुमसे बात ही नहीं करूँगी।"

'अय्यय्यो! आई एम सॉरी। काफी नाराज़ नज़र आ रही हो?"

'डोंट टाक टू मी। मैं एक न सुनूँगी।'

'ओ माई गॉड! यू आर फ्यूरियस।"

'और क्या? तुम जैसा आदमी तो मैंने देखा नहीं! कल डिनर में क्यों नहीं आये?"

'लिसन लिसन। अरे कितनी बार तो कहा कि मेरे काम का वक्त कभी तय नहीं रहता।'

'ओ डोंट ब्लफ। मैंने रात तीन बार फोन किया।'

'ओफ्फ अच्छा! फरगेट इट। आज लंच को आइये। ब्ल्यू बार में। हलो सुन रही हो न? नाऊ डोंट बी सिली। मैं वहाँ पर शार्प डेढ़ पहुँच जाऊँगा—शार्प।'

'आई एम नॉट कमिंग।' मिसेज़ खान एक-एक शब्द चबा-चबाकर बोल रही थीं। अय्यर को हँसी आ गयी। लेकिन वह फ़ोन पर हँसा नहीं। ज़ोर से बोला 'डोंट बी ए फूल। शार्प डेढ़ ।

आई एम नाट कमिंग।' दूसरी ओर से रिसीवर पटकने की आवाज़ आयी तो अय्यर ने फोन रख दिया और वह हँस पड़ा। मिसेज़ खान ब्ल्यू वानर में एक बजे ही जाकर बैठ जायेगी इस बात को अय्यर अच्छी तरह जानता था। कल के डिनर में साला जाना ही था। बाहर जाकर भी खास मज़ा आया नहीं। कल यूँ ही दिल बहलाने चले गये और पैसे बर्बाद हुए। बस मिसेज़ खान बुरी नहीं हैं। बिलकुल नहीं। एकदम एनिफॅशाइन बिहाइंड एंड आलसो जायंट बूज़म्स। माई गाड! कल जाना ही था। बेकार ही उधर चले गये। पर साली है ईज़ी। साली खुद गले पड़ती है, इसलिए मज़ा नहीं आता। सली की तुलना ही नहीं—नहीं थी। एकदम टुकड़ा। बाई गाड! भूल हो गयी। सली के यहाँ आज तो जाना ही होगा। बीमार है। आज तक काफी बेवकूफी कर ली। मैड है। नींद में और बेहोशी में नाम लेकर पुकारती है। मतलब क्या है? या साला टनी यूँ ही बंडल मारता है? बास्टर्ड! पर बहन के बारे में वह कभी भी बंडलबाज़ी नहीं करता। जाना ही होगा। दोपहर जापानी पेंटर का काम खत्म होते ही जाऊँगा।

पोंक्षे सामने की कुर्सी पर आ बैठा। उसे देखते ही अय्यर हँसा।

क्या है बेटा! इतने सवेरे? आज सचिवालय नहीं है।"

है न।'

फिर क्या चीफ मिनिस्टर को कुर्सी से हटाओगे।"

नाट मी? हटाने वाले मौजूद हैं ही।

कौन फाइनेंस मिनिस्टर। स्साला स्मार्ट गाई। आई लाइक हिम मोस्ट आफ आल द मिनिस्टर्स।'

बट शिंदे इज़ंट।"

नेचुरली। पर वह ज़रूर शिंदे को हटायेगा।

नो। टेक इट फ्राम मी। शिंदे वैसे पक्का है।

अरे छोड़ो भी। शिंदे इज़ बिकमिंग टू ओल्ड टु फाइट।"

तुम खुद बूढ़े हो न इसलिए तुम्हें हर आदमी बूढ़ा ही नज़र आता है।'

बेट!'

बेट।'

अय्यर ने पोंक्षे से हाथ मिलाया। दिन भर इस तरह दोनों के बीच शर्तें लगती रहती हैं। फिर अय्यर ने कहा पोंक्षे तू साला चमचा है सी० एम० का इसलिए तुम नहीं जान पाते। देखो मैं शर्त जीतने वाला हूँ।

पोंक्षे का चेहरा लटक गया। अय्यर हँसा तो वह भी हँस दिया। गंभीर

होकर बोला 'क्न स्टोरी देने के पहले मुझे नहीं बताया ?"

'आई एम द चीफ़ रिपोर्टर हीअर।'

'मुझसे पूछते तो शायद मैं मना कर देता।'

"इसलिए मैंने किसी से पूछा ही नहीं।"

कुछ देर बाद खुद अय्यर ने पूछा, 'कैसी लगी ? एकदम सेंसेशनल ?"

'नानसेंस उसमें सेंसेशनल था ही क्या ? नयी बात तो कुछ भी नहीं थी।'

'फिर तुम ऐसी गांडुगिरी क्या करते हो ?'

'उसमें इम्प्लिकेशन्स हैं और अच्छी भी नहीं।"

अय्यर हँस पड़ा। बोला 'मैंने काफी सोच समझकर दी है। ना दन्नी मेन कैच मी।'

पार्थ बोला 'कामन मैन तो कुछ नहीं जान पायेगा। पर जानकार जरूर नाम जान सकता है।'

'ओ आई डोंट बोदर। आज सुबह किसका फ़ोन आया था, जानते हो ? शहाणे का यूँ ही बातचीत के लिए बुला रहा था।'

'सो। और भी फोन आ सकते हैं।"

'आई डोंट केयर।'

'वैसी बात नहीं। मेरे पास तो और भी जानकारी है पर मैं देता नहीं। वजह यह कि मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि उससे कोई खास लाभ होगा नहीं। एक्चुअल ऑपरेटर से मेरी इतनी जिगरी दोस्ती है कि मैं उसके साथ मिशन पर भी जा सकता हूँ।'

'तुम जानते नहीं और देते भी नहीं। यू आर ए कावर्ड।'

'इधर कुछ होना हवाना नहीं है। और दे दी जाये तो सुप्रीम बॉस हम दोनों को पकड़ेगा।'

'पॉने डोंट बी स्टुपिड" अय्यर ने जरा चिढ़कर कहा 'तुम गधे की तरह बकवास कर रहे हो। इज द सुप्रीम बॉस एनी वे ।'

पार्थ हँसा और बोला, 'सोच लो। टीकास्ना को धमकिया भरे पत्र आते हैं। हमने खबर भी दी थी याद है न ?"

"टीकास्ना साला ब्लफ-मास्टर है। सिर्फ बकवास करता रहता है। करता कुछ भी नहीं।

"पर उसके पास इन्फर्मेशन काफी होना चाहिए।"

आई सी आज सुबह ही उसका फोन आया था।

'किसलिए ?'

"कहता था, स्टोरी अच्छी है स्वागत। साला पब्लिसिटी मोंगर है।'

आई एम नाट कमिंग।' दूसरी ओर से रिसीवर पटकने की आवाज आयी तो अय्यर ने फोन रख दिया और वह हँस पड़ा। मिसेज खान ब्ल्यू वानर में एक बजे ही जाकर बैठ जायगी इस बात को अय्यर अच्छी तरह जानता था। कल के डिनर में साला जाना ही था। बाहर जाकर भी काम मज़ा आया नहीं। बस यूँ ही दिल बहलाने चले गये और पस बर्बाद हुए। बस मिसेज खान बुरी नहीं हैं। बिलकुल नहीं। एकदम एलिफेंटाइन बिहाइंड एंड आलसो जायंट बूब्स। माई गाड! फिर जाना ही था। बेकार ही उधर चले गये। पर साली है ईज़ी। साली खुद गले पड़ती है इसलिए मज़ा नहीं आता। सला की तुलना ही नहीं—नहीं थी। एकदम टुकड़ा। वाई गाड! भूल हो गयी। सली के यहाँ आज तो जाना ही होगा। बीमार है। आज तक काफी बेवकूफी कर ली। मैड है। नींद में और बेहोशी में नाम लेकर पुकारती है। मतलब क्या है? या साला टलो यूँ ही बकल मारता है? बास्टर्ड! पर बहन के बारे में वह कभी भी बकलबाजी नहीं करता। जाना ही होगा। दोपहर जापानी पेंटर का काम खत्म होते ही जाऊँगा।

पाक्षे सामने की कुर्सी पर आ बैठा। उसे देखते ही अय्यर हँसा।

क्या है बेटा! इतने सवेरे? आज सचिवालय नहीं है।'

है न।'

फिर क्या चीफ मिनिस्टर को कुर्सी से हटाओगे।

नाट मी? हटाने वाले मौजूद हैं ही।'

कौन फाइनेंस मिनिस्टर। स्साला स्मार्ट गाई। आई लाइक हिम मोस्ट आफ आल द मिनिस्टर्स।

बट शिंदे इजट।'

नेचुरली। पर वह ज़रूर शिंदे को हटायेगा।

नो। टेक इट फ्राम मी। शिंदे बस पक्का है।

अरे छोड़ो भी। शिंदे इज़ बिकमिंग टू ओल्ड टु फाइट।"

तुम खुद बूढ़े हो न इसलिए तुम्हें हर आदमी बूढ़ा ही नज़र आता है।"

बेट!

बेट।'

अय्यर ने पोक्षे से हाथ मिलाया। दिन भर इस तरह दोनों के बीच शर्तें लगती रहती हैं। फिर अय्यर ने कहा पोक्षे तू साला चमचा है सी॰ एम॰ का इसलिए तुम नहीं जान पाते। देखो मैं शर्त जीतने वाला हूँ।'

पाक्षे का चेहरा लटक गया। अय्यर हँसा तो वह भी हँस दिया। गंभीर

होकर बोला, 'कल स्टोरी देने के पहले मुझे नहीं बताया ?'

आई एम द चीफ रिपोर्टर हीअर।

'मुझसे पूछते तो शायद मैं मना कर देता।'

'इसलिए मैंने किसी से पूछा ही नहीं।"

कुछ देर बाद खुद अय्यर ने पूछा, कैसी लगी ? एकदम सेंसेशनल ?"

'नानसेंस, उसमें सेंसेशनल था ही क्या ? नयी बात तो कुछ भी नहीं थी।'

'फिर तुम ऐसी गांडूगिरी क्यों करते हो ?"

'उसमें इम्प्लिकेशंस हैं और अच्छी भी नहीं।'

अय्यर हँस पड़ा। बोला 'मैंने काफी सोच-समझकर दी है। नो बडी केन कैच मी।'

पाण्डे बोला कामन मैन तो कुछ नहीं जान पायेगा। पर जानकार ज़रूर नाम जान सकता है।"

'ओ, आई डोंट बोदर। आज सुबह किसका फोन आया था, जानते हो ? शहाणे का यूँ ही बातचीत के लिए बुला रहा था।'

'सो। और भी फोन आ सकते हैं।"

'आई डोंट केयर।"

वैसी बात नहीं। मेरे पास तो और भी जानकारी है पर मैं देता नहीं। वजह यह कि मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि उससे कोई खास लाभ होगा नहीं। एक्चुअल आपरेटर से मेरी इतनी जिगरी दोस्ती है कि मैं उसके साथ मिशन पर भी जा सकता हूँ।"

तुम जानते नहीं और देते भी नहीं। यू आर ए कावर्ड।"

"देकर कुछ होना, हवाना नहीं है। और द दी जाये तो सुप्रीम बास हम दोनों को पकडेगा।

'पाण्डे डोंट बी स्टुपिड" अय्यर ने जरा चिढ़कर कहा 'तुम गधे की तरह बकवास कर रहे हो। इज द सुप्रीम बॉस एनी व ।'

पाण्डे हँसा और बोला, 'सोच लो। डीकोस्टा को धमकियों भरे पत्र आते हैं। हमने खबर भी दी थी, याद है न ?'

'डीकोस्टा साला ब्लफ-मास्टर है। सिर्फ बकवास करता रहता है। करता कुछ भी नहीं।'

"पर उसके पास इन्फर्मेशन काफी होना चाहिए।'

आई सी आज सुबह ही उसका फोन आया था।"

'किसलिए ?

'कहता था, स्टोरी देनी है स्पेशल। साला पब्लिसिटी मोंगर है।"

'कैसी स्टोरी ?'

यही फक्टस एड फिगस है उसके पास। तुम भी आ जाओ। कल बुलाया है उसन। लट अस कफट हिम। कहो—साल प्रमाण दो।"

'तुम अपनी बात देखो। मैं नही आ सकता। और डीकोस्टा जरा वैसा है। आई काशन यू।'

ल्डी कावड, पाक्षे !

तभी इटरकाम की घटी बजी। दूसरी ओर न्यूज़-एडीटर था।

अरे अय्यर चलो ऊपर। सुप्रीम बास का समन है।

'मर गया। वह साला अब आ गया ?

'अर धीमे बोलो। अभी अभी आया है। चलो जल्दी। इटस ए स्टाफ काफ्रस।

'अरे आखिर किसलिए ? भाई हम लागा को यहा काम है या नही ? ईवनिंग अभी जा रहा है।

अर भाई म क्या जानू ? एडीटर को अभी-अभी केबिन से बाहर निकलते हुए मने देखा है। वट आई गस। इट इज़ समथिंग इपार्टेंट।

'ओके ! टल हिम आई एम बिज़ी।

अरे भाई यू मस्ट कम। मनेजर कहता है यू मस्ट बी देअर।

आफ। ठीक है। म आधा घटे स ज्यादा नही बठ सकता।

अय्यर ने फान नीचे रख दिया और पाक्षे की ओर देखकर माथे पर हाथ रखा।

बुड्ढ आ गया है ऊपर।

कहत हुए उसन दाहिनी ओर रखा रजिस्टर यो ही जोर से टेबिल पर पटका। मुह बनाया। कुर्सी पर गदन टेक दी और ऊपर चल रहे पख को देखन लगा।

पोंक्षे का हँसी आ गयी। पोक्ष सीनियर रिपोटर था। कई सालो से वह अय्यर के साथ काम कर रहा था। इसीलिए अय्यर का हर नाज़ नखरा वह जानता था। वह बाला अय्यर रिअली तुम इतने डरपोक होगे, मैं नही जानता था। उस बुढऊ से इतने डरते हो ?'

अय्यर बिजली के झटके के मानिंद कुर्सी पर सीधा हो गया।

माई गाड ! पाक्षे पागल आदमी ! यू आर इसल्टिंग मी। मैं उस बुड्ढ से डरूँगा ? बदनामी का दावा दायर कर दूँगा तुम पर। टेबिल पर हाथ मारकर अय्यर तपाक से बोला।

हूं। एक्टिंग मत करो। तुम खूब जानत हो, पट क अन्दर तुम्हारे पांव बुरी तरह काप रहे हैं। पर इतने डरते क्या हो ?'

ओ पोछे खराब आदमी ! स्साल तुम क्या जानो ? आई हेट देट ओल्ड क्रुक। बडा घिनौना आदमी है। देखते ही मितली-स आने लगती है यार। लगता है सारी दुनिया की क्रूकेडनेस उसम समा गयी है। सच कहता हू ही इज़ फिजिकली रिपल्सिव। मैं ता कभी उससे हाथ तक नही मिलाता। एड यू इसल्ट मी हीअर नान्सेंस।'

पाश्रे की हसी नही रुकी तो अय्यर भी हस पडा। 'साला अपना धधा ही ऐसा है। इससे तो तवायफ बेहतर होती हैं। बस मालिक के सामन सोना भर। एडवरटाइज़र्स क आगे सोना और मन्त्रिया क आगे भी सोना। रीडर मर गया और काम करने वाल भी मर गय। बाकी सब पसा खीचते हैं।'

अय्यर न टाई की नाट ठीक की। कधे पर कोट चढाया और चश्मा लगात हुए पाश्रे स बोला सच कहता हूँ पोंश्रे जिन्दगी की वल्यूज़ पर विश्वास नही होता। साली सब हरामखोरी है। दुनिया मे तो बस दो ही बातें सच्ची हैं। जानते हो ?' अय्यर ने पहले अपनी एक ऊँगली मुह पर रखी और दूसरी बार पट के बटनो पर।

मीटिंग रूम म मोटी लाल रग की कारपेट बिछी थी। बीच म एक आलीशान गोल टेबिल। चारों तरफ गद्देदार कुर्सियाँ। बीच की कुर्सी पर मया लाल भडारी बैठा हुआ था। काला स्याह। सिर के बाल नदारद। पथरीली आँखें। नाक और निचला होंठ मोटा। उसने सफेद कुर्ता और धोती पहन रखी थी। इसी वजह स उसका काला रग और भी चमकीला नजर आ रहा था। टेबिल क बायीं तरफ एक प्लेट थी जिसम काजू रखे हुए थ बीच-बीच म वह काजू उठाकर सीधे मुँह म डाल लेता था। उसके दाहिनी तरफ जनरल मनेजर बैठा था। वह झुककर धीमी आवाज़ म उससे बतिया रहा था। भडारी उसकी बातें सुन रहा था या नही पता ही न चलता था।

भडारी को इस सारी बिल्डिंग म भडारी के नाम स ही नही पुकारा जाता था। उसके सभी नौकर उसे बुड्ढ ओल्ड क्रूक टुच्चा या इसी तरह कुछ कहा करते थे। उसके सामने पडते ही यस सर। ना सर। गरज़ कि वेस्टन स्टार उसके परिवार की सपत्ति था। अधिकतर शेयर्स उसके खुद के बीवी के, लडकी के दामाद के थे। मतलब, भडारी ही मालिक था। वह आता और सीधे मीटिंग रूम म जा बैठता था। वजह यह कि पूरे वेस्टन स्टार मे वही एक कमरा एयरकडीशन्ड था।

मनेजर की फुसफुसाहट बद हुई और उसन दो कागज़ भडारी क आगे

रख दिये। भंडारी ने भौंह सिकोडकर उन कागजों पर निगाह डाली। उलट पलट कर देखे। फिर जेब से चश्मा निकाला और आंखों पर चढ़ाया। दोनों कागज पढ़ने में उसने पंद्रह मिनट गुजार दिये। "आई विल साइन दम टुमारो' कह कर वे कागज इस तरह मैनेजर के आगे सरका दिये जैसे उसके हाथ झटक दिये हों। एक काजू मुंह में डाल लिया। अय्यर को आया देखकर उसने कहा, "आओ, आओ, अय्यर! तुमसे बात करने आया था।"

अय्यर कभी का आकर जम्हाइयां ले रहा था। वह सिर्फ हँस दिया। वह कुछ ताड गया था। आज की फ्रंट पेज स्टोरी। नहीं तो किसी इश्तहार वाले का मस्का लगाना होगा। ऐसा कुछ करना हो तो बुढऊ अय्यर को जरूर बुलवाता है। मतलब, अय्यर मस्का लगाने में तेज था यह बात नहीं बल्कि अय्यर से उस इश्तहार वाले का प्रोफाइल लिखवा लेना या कोई खबर ठीक तरह से छाप देना इसी से काम चल जाता था।

"मिस्टर अय्यर आई डोंट वांट एनी ट्रबल इन माई पेपर।"

अय्यर कुछ समझ न पाया। वह सिर्फ भंडारी की ओर देखता भर रहा।

"आजकल आप महाराष्ट्र और शिवसेना के खिलाफ काफी खबरें दे रहे हैं।' कुछ रुककर बोला 'यह ठीक नहीं।"

सच पूछा जाये तो अय्यर का चेहरा तमतमा गया था, लेकिन उसने अपने आप को सम्हालने की कोशिश की।

'आफ कोर्स मिस्टर भंडारी आप मालिक हैं। आप चाहे जो कह सकते हैं। पर्सनली मैंने आपकी बातों पर जर्नलिस्ट की हैसियत से आब्जेक्शन किया होता।

इस तरह के तेवर अय्यर ही दिखा सकता था। बूढे के आगे और किसी की हिम्मत ही नहीं पडती।

भंडारी हँस दिया और उसने एक काजू मुंह में डाल लिया।

"देखिये मिस्टर अय्यर आप साउथ इंडियन हैं और इसी वजह से आपको शिवसेना पर नाराजगी है। आइ सिंपथाइज विद यू। हम भी शिवसेना से ऐसी खास मुहब्बत नहीं रखते। बट यू नो हम लोग बम्बई में रहते हैं। हमारा पेपर बम्बई और महाराष्ट्र में ज्यादा खपता है। दिस इज बिजनेस।'

'सर! यू नो। हमारे कर्मचारी भी कुछ बडबडा रहे हैं" मैनेजर बोल पडा।

"सी! मुझे दीवाला तो निकालना नहीं है।

'आप गलतफहमी मे है मिस्टर भडारी। आई एम मोर ए महाराष्ट्रियन दन यू आर। पर मैं जनलिस्ट हूँ। सरकार के स्कंडल सामने लाये, इसलिए पेपर की बिक्री बढ़ी। एक भी स्कैंडल्स झूठा नही था।"

'दैटस आल राइट। बट आई डाट वाट देट काइड ऑफ जनलिज्म हम लोगो के इश्तहारो पर असर पडता है। आई वाट समथिंग कस्ट्रक्टिव।"

"ओ के ओ के।"

'एक बात और' भडारी हँसते हुए बोला। कौन-सी बात, इसे अय्यर अच्छी तरह जानता था। वजह यह कि शिवसेना की हल्लेबाजी हमेशा से थी।

'आज की आपकी स्टोरी मुझे कतई पसद नही आयी।'

'आई एम श्योर, अवर रीडस हैव लाइक्ड इट। कल आपके पेपर की बिक्री बढ़ेगी देख लीजियेगा।'

आई डोंट मीन देट' भडारी अपने खास अदाज मे हँसते हुए बोला, 'वस स्टोरी ठीक है पर कुछ क्वाटस म वह खपेगी नही। हम लोगो का पेपर ब्लैकलिस्ट म चला जायेगा।"

'सो व्हॉट ? आप पेपर की बिक्री भी बढ़ाना चाहते हैं और ब्लैकलिस्ट में भी आना नही चाहते। एसा कैसे हो सकता है ? एक बात तो माननी ही होगी" अय्यर कुछ समझाने के स्वर मे बोला।

'नो। ऐसा नही है। दोनों बातें हो सकती हैं। पपर भी खप सकता है और व्हाइट लिस्ट मे भी रह सकते हैं। वाई वाट टू डू दैट।"

"आई सी!'

"यस मस्ट सी," भडारी अब खुश होकर बोल रहा था। 'यू सी, आई डोंट वाट टु रन इनटु ट्रबल। मुझे पेपर चलाना है दीवाला नही निकालना।

अय्यर झटके से कुर्सी से उठा। उसने कोट कधे पर चढ़ाया।

बस यही इस्टक्शन्स हैं न आपके ? ओ के दन। मुझे और कुछ काम है यहाँ ?'

बस अभी तो इतना ही। पर मिस्टर अय्यर आप बेहद सेंसेटिव हैं। इट्ज बिजनस, यू सी।"

'ओ, आल राइट। मुझे कोई एतराज नही है। आपकी इन्स्ट्रक्शन्स पर ध्यान दूँगा।'

'चाय के लिए रुकिये न बस दस मिनट और।' अय्यर को खुश करने के इरादे से मनेजर ने कहा।

रख दिये। भंडारी ने भौंहें सिकोड़कर उन कागज़ों पर निगाह डाली। उलट पलट कर देखे। फिर जेब से चश्मा निकाला और आँखों पर चढ़ाया। दोनों कागज़ पढ़ने में उसने पंद्रह मिनट गुज़ार दिये। आई विल साइन देम टुमारो ' कह कर वे कागज़ इस तरह मैनेजर के आगे सरका दिये जैसे उसके हाथ झटक दिये हों। एक काजू मुँह में डाल लिया। अय्यर को आया देखकर उसने कहा, आओ, आओ, अय्यर! तुमसे बात करने आया था।"

अय्यर कभी का आकर जम्हाइयाँ ले रहा था। वह सिर्फ हँस दिया। वह कुछ ताड़ गया था। आज की फ्रंट पेज स्टोरी। नहीं तो किसी इश्तहार वाले को मस्का लगाना होगा। ऐसा कुछ करना हो तो बुढ़ऊ अय्यर को ज़रूर बुलवाता है। मतलब अय्यर मस्का लगाने में तेज़ था यह बात नहीं बल्कि अय्यर से उस इश्तहार वाले का प्रोफाइल लिखवा लेना या कोई खबर ठीक तरह से छाप देना इसी से काम चल जाता था।

मिस्टर अय्यर, आई डोंट वांट एनी ट्रबल इन माई पेपर।'

अय्यर कुछ समझ न पाया। वह सिर्फ भंडारी की ओर देखता भर रहा।

आजकल आप महाराष्ट्र और शिवसेना के खिलाफ काफी खबरें दे रहे हैं।" कुछ रुककर बोला, यह ठीक नहीं।'

सच पूछा जाये तो अय्यर का चेहरा तमतमा गया था, लेकिन उसने अपने आप को सम्हालने की कोशिश की।

'आफ कोर्स मिस्टर भंडारी आप मालिक हैं। आप चाहें जो कह सकते हैं। पर्सनली मैंने आपकी बातों पर जर्नलिस्ट की हैसियत से आब्जेक्शन किया होता।'

इस तरह के तेवर अय्यर ही दिखा सकता था। बूढ़े के आगे और किसी की हिम्मत ही नहीं पड़ती।

भंडारी हँस दिया और उसने एक काजू मुँह में डाल लिया।

देखिये मिस्टर अय्यर आप साउथ इंडियन हैं और इसी वजह से आपकी शिवसेना पर नाराज़गी है। आई सिम्पथाइज़ विद यू। हम भी शिवसेना से ऐसी खास मुहब्बत नहीं रखते। बट यू नो, हम लोग बम्बई में रहते हैं। हमारा पेपर बम्बई और महाराष्ट्र में ज़्यादा खपता है। दिस इज़ बिजनेस।

सर ' यू नो। हमारे कर्मचारी भी कुछ बड़बड़ा रहे हैं ' मैनेजर बोल पड़ा।

सी मुझे दीवाला तो निकालना नहीं है।

'आप गलतफहमी मे हैं, मिस्टर भडारी। आई एम मोर ए महाराष्ट्रियन दैन यू आर। पर मैं जनलिस्ट हूँ। सरकार के स्कैंडल सामने लाये, इसलिए पेपर की बिक्री बढी। एक भी स्कैंडल्स झूठा नही था।"

"देटस ऑल राइट। बट आई डाउट वाट देट काइंड ऑफ जर्नलिज्म हम लोगो के इश्तहारों पर असर पडता है। आई वांट समथिंग कंस्ट्रक्टिव।"

"ओ के ओ के।"

'एक बात और' भडारी हँसते हुए बोला। कौन-सी बात, इसे अय्यर अच्छी तरह जानता था। वजह यह कि शिवसेना की हल्लेबाजी हमेशा से थी।

आज की आपकी स्टोरी मुझे कतई पसद नही आयी।"

'आई एम श्योर अवर रीडर्स हैव लाइक्ड इट। कल आपके पेपर की बिक्री बढेगी देख लीजियेगा।"

आई डोंट मीन देट' भडारी अपने खास अदाज मे हँसते हुए बोला, 'वैसे स्टोरी ठीक है पर कुछ क्वार्टर्स मे वह खपेगी नही। हम लोगो का पेपर ब्लैकलिस्ट मे चला जायेगा।'

'सो व्हाट? आप पेपर की बिक्री भी बढाना चाहते हैं और ब्लैकलिस्ट मे भी आना नही चाहते। ऐसा कैसे हो सकता है? एक बात तो माननी ही होगी" अय्यर कुछ समझाने के स्वर मे बोला।

'नो। ऐसा नही है। दोनो बातें हो सकती हैं। पेपर भी खप सकता है और व्हाइट लिस्ट मे भी रह सकते हैं। आई वांट टू डू देट।"

'आई सी!'

'यस मस्ट सी,' भडारी अब खुश होकर बोल रहा था। 'यू सी, आई डोंट वांट टु रन इनटु ट्रबल। मुझे पेपर चलाना है दीवाला नहीं निकालना।'

अय्यर झटके से कुर्सी से उठा। उसने कोट कधे पर चढाया।

बस यही इंस्ट्रक्शन्स हैं न आपके? ओ के दन। मुझे और कुछ काम है यहाँ?'

बस अभी तो इतना ही। पर मिस्टर अय्यर आप बेहद सेंसेटिव हैं। इट्ज बिजनेस यू सी।"

'ओ आल राइट। मुझे कोई एतराज नही है। आपकी इंस्ट्रक्शन्स पर ध्यान दूंगा।"

'चाय के लिए रुकिये न बस दस मिनट और।" अय्यर को खुश करने के इरादे से मैनेजर ने कहा।

"नो थैंक्यू। मेरा लच पर अपाइंटमेंट है। वैसे ही देर हो चुकी है" कलाई की घड़ी की ओर देखते हुए अय्यर ने कहा। उसे जाते देखकर भडारी ने कहा ओके अय्यर। थैंक्यू फॉर यूअर अडरस्टैंडिग।"

अय्यर हँस पडा और हाथ ऊपरकर बोला ' इटस आल राइट।' और तेजी से वहाँ से चलता बना।

वह अपने केबिन मे बौखलाया हुआ घुसा। बूढे की वजह से दो घटे बेकार हो चुके थे। सुबह के काम खतम करके रिपोटर लच के लिए चल गये थे। अदर पाक्षे फोन पर किसी से धीमे धीमे बात कर रहा था। अय्यर अग्रेज़ी मे बडबडा रहा था— इससे तो तवायफें अच्छी होती हैं — कम से-कम खुला धधा तो करती हैं वे। स्साला जनलिज्म है या हज्जामगीरी ? बूढा न जाने अपने आपको क्या समझे बठा है ! —मके पपर की बिक्री तो मैंने बढ़ाई है और वो है कि मुझे पढाने चला है। इससे तो ढाबा खोल लेना ज्यादा अच्छा है।"

'क्या हुआ, अय्यर साब ?' फोन का रिसीवर नीचे रखते हुए पोक्ष ने पूछा।

स्साला वो ओल्ड क्रूक अपने आप को तीसमार खा समझता है। जनलिज्म नहीं जानता। मुझे बताता है कि सरकार और शिवसेना के खिलाफ खबरें न दी जायें। अरे असलियत क्या हम जानते नही है ? खबर का मतलब खबर होती है।

लेकिन अय्यरसाब हमने इशारा किया था न आपको।

नाऊ टेल मी पाक्षे। बी फ्रक। मैं क्या एंटी महाराष्ट हूँ ? मैं अब तक कम से कम पाँच सौ महाराष्ट्रियन लडकियो के साथ सोया होऊगा। उनमे से दस पन्द्रह से तो मेरी मोहब्बत थी और तीन चार से तो शादी ही करना चाहता था। अब तुम खुद बताओ—ऐसा आदमी कभी एंटी महाराष्ट्र हो सकता है ?

पाक्षे ने गर्दन हिला दी और बोला पर फारस रोड और महाराष्ट्र एक बात तो नहीं है न ?

और तुम जानते हो ? दुनिया की किसी भी जगह से मुझे बम्बई ज्यादा पसद है। आई लव बाम्बे, आई लव महाराष्ट्र। आइ हेट तमिलनाडु एड आई हेट कर्नाटक।'

'हा हा वो तो ठीक है। पर हमेशा ही कहता रहा हू, हर खबर छापने की ज़रूरत तो है नहीं। जनाब, आप खुद तो कहा ही करते थे कि स्कैंडल और स्कूप लाओ। अब लो। बुढऊ स्साला बडा बदतमीज़ है। हम तो उसे मान गये।

पोंक्षे स्साले गोंडूगिरी न करो। कुछ प्रिसपल्स होत हैं। विज्ञापन के चक्कर म क्या खबरें ही न दी जायें ? पेपर जला डालेंगे इसीलिए खबरें गोल कर दी जायें। स्साले, तुम भी तो पहले शिवसैनिक थे।'

मैं तो बुढऊ की बात कह रहा था। शिवसेना की खबरें तो मैं खुद लाके देता था आप तो जानत ही हैं।"

'ठीक है तो अब न देना। आई विल सक यू समथें ?"

पोंक्षे हँस पडा और बोला, बुढऊ न शायद उस खबर पर सक नोटिस दे दी न ?'

एक दम स्ट्राग वार्निग। स्साले न उसी के लिए ही बुलवाया तो था।"

हमन तो पहल ही कहा था।"

बदमाश स्साला ! मैं क्या उससे डरता हूँ ?

आफ कोर्स। कोस्टा की एपाइंटमट क सिल कर दोगे।"

नार्मेंस। पोंक्षे तुम मुझे समझत क्या हो ? स्साला ! मैं तो कास्टा के यहाँ जान ही वाला हूँ। और एक रात स्टोरी द ही दूगा। कम आन। लेटस सी ह्वाट हैपम !'

डोंट ब्लफ।"

आनस्टली। मैं तो जाब तक छोड सकता हूँ। स्माल काम क्या मिलते नही ?

अभी इस वक्त क्या चल रहा होगा जानत हो ? जनरल मनेजर भडारी के आगे पीछे होगा। मद्रास म उसका भतीजा ही कौन बी ए गुट चीफ रिपोटर होअर। और भडारी इस कान स सुनता होगा और दूसर कान स निकाल दता होगा। वो कौन तुम्ह छाडन वाला है ?"

आइ एडमायर दट प्रक्टिकल बास्टड !

अय्यर ने कलाई की घडी की ओर देखा और माथे पर हाथ रख लिया।

माई गाड मर गया। पोंक्षे घटा डढ घटा रुकोग न ? मुझे अब भागना ही होगा। बस हो काफी लेट हो चुका हूँ।'

उसने कोट फिर कंधे पर रख लिया। केबिन के दरवाजे पर पहुँचा। तभी पोंक्षे कुर्सी से उठकर उसक करीब आया और बोला, ' अय्यर साब, सली का फान आया था। सली सीरियस है।

अय्यर रुका। वापस अदर आकर उसन ट्रे स कागज उठाया और मुँह पोंछ लिया। फुसफुनाया बास्टड ! दुबारा फोन न करन के लिए कहा था। अच्छा फिर फान करे ता कहना शाम को आऊँगा। ओके ! मैं चलता हूँ।'

नीचे उतरकर अय्यर ने अपनी पैंतीस साल पुरानी ओपल ढूंढ निकाली। चाबियों का गुच्छा निकाल कर दरवाज़ा खोला और व्हील पर बैठ गया। चाबी घुमाकर स्टार्टर दबाया। आवाज़ निकलते ही एक्सीलेटर पर पांव रखा। फट फट, गूं-गूं-गूं आवाज़ निकली और इंजिन मुंह बंद हो गया जैसे मर गया हो। अय्यर ने फिर चाबी घुमायी। एक्सीलेटर फिर से दबाया। फिर गूं गूं आवाज निकली। दो-तीन बार यूं ही होता रहा और अय्यर परेशान हो गया। चाबी निकालकर उसने दरवाज़ा खोला और पांव से धक्का देकर बंद कर दिया। एक तीखी गाली दी और बाहर आकर टैक्सी को इशारा किया। ड्राईवर से ब्ल्यू कार्नर कहते हुए उसने कलाई की ओर निगाह डाली। पौने दो बज चुके थे। मिसेज़ खान काफी गर्मा गयी होगी। शी मस्ट बी फ्यूमिंग पर बैठी रहेगी। जायेगी कहाँ ? कांफिडेंशियल एडवाइज़र पढ़ते हुए बैठी रहेगी। सच पूछा जाये तो अय्यर को मिसेज़ खान पर दया आ ही रही थी। उसे गंदी किताबों से सख्त नफरत थी और मिसेज़ खान ऐसी किताबें बेहद पसंद करती थी। सली को वैसी किताबें पसंद नहीं। सली बीमार है न ? आज शाम कुछ भी हो उसके यहाँ जाना ही होगा। वह बीमार है। जाना ही होगा। कम से-कम शाम के वक्त तो जरूर ही जाना होगा। इधर सली काफी कमज़ोर हो गयी है। दुनिया की सबसे खूबसूरत दीखने वाली औरत। क्या बदन था ! पर दो महीने पहले गया तो कैसी कमज़ोर कमज़ोर सी लगी। अब और भी बदसूरत हो चुकी होगी। मम्मी ज़रा देरी से मरी। चार पांच साल पहले मरी होती तो सली से शादी कर ली होती। पर टाइम टेबिल गड़बड़ा गया। टाटा हास्पिटल में आखिरी दम मम्मी बोली भी थी — चाहो तो सली से शादी कर लेना। मेरे मरने से पहले ही कर लेना। लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। अब सली सीरियस है। तब मम्मी थी। कैंसर की वजह से उसका सारा गला खराब हो चुका था। घुलघुल कर आखिर दम तोड़ ही दिया। सली भी घुल रही है। पर आज वह काफी सीरियस है शाम को जाना ही होगा। मैं इतना गिल्टी क्यों फील कर रहा हूं ? मैंने उसे छोड़ा तो नहीं था। हर महीने उसके लिए टली को पैसे भी काफी दिया करता था। टली शराब बेहद पीता है। पर बहन की दवा-दारू पर क्या वह खर्चा नहीं करेगा ? पर सली के यहाँ जाना ज़रूरी है। कैसे जाय ? गिल्टी फील होता है। यों ही। वैसे देखा जाये तो उससे कोई बंधा हुआ तो हूं नहीं। जाने की इच्छा नहीं रही थी। उसकी ओर देखा न जाता था। मेरे लिए उसने अपना धंधा छोड़ दिया। पर कुछ जम ही न पाया। आई एम ए ब्रूट सेल्फिश रोग! लेकिन आज शाम को जाना ही होगा। जापानी पेंटर को साढ़े पांच तक छोड़ देना

चाहिए। एक चक्कर ऑफिस का लगाना, काम देखना और साढ़े सात तक उसके यहाँ चल देना होगा। स्साला खुद का पेपर शुरू करना चाहिए। फिर भडारी क्या और चीफ मिनिस्टर क्या ? किसी की न चल सकेगी। कल कोस्टा के यहाँ जाना ही चाहिए। हाँ। और आज सली के यहाँ।

आशा के अनुरूप मिसेज खान 'ब्ल्यू कानर म कान्फिडेंशियल एडवाइज़र पढ़ते हुए बैठी थी। उसने आज कमीज़ और सलवार पहन रखी थी। हल्के नील रग की और उस पर सफेद फूल कढ़े हुए थ। बदन पर उसी रग का दुपट्टा। बाँध किये बाल जो गदन पर झूल रहे थे। लाल लिपिस्टिक और कलाई पर बड़ी-सी घड़ी। इसके अलावा उसके बदन पर गहने न थे। सच पूछा जाय तो इस वेश मे वह अजीब लग रही थी। जब वह साड़ी म होती है तो उसके बदन का मुटापा कुछ छिप-सा जाता है। कमीज़ और सलवार म उसके बदन के हिस्से जैसे बाहर निकले पड़ रहे थ। इसी मुटापे की वजह से अय्यर को वह पसद थी और इस बात को वह खूब अच्छी तरह जानती थी। अय्यर अदर आया तब उसका आधा ध्यान मैगज़ीन म था और आधा दरवाज़े की ओर। कुर्सी म बैठी वह कुसमुसा रही थी।

सॉरी मिसेज खान !

' मेरा खयाल था कि तुम आओगे ही नही।

'ओ नो मिसेज खान। मुझे परेशान न करो। कल न आ सका उसकी कुछ खास वजह थी।'

'आई नो। आई नो। मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि तुम कितने बातूनी हो !'

क्या बहुत गुस्सा हो गयी हो शायद ? अय्यर ने उसका हाथ अपने हाथ म लेते हुए पूछा। मिसेज खान इस हरकत पर पिघल गयी लेकिन जानबूझकर उसने अय्यर का हाथ परे हटा दिया।

चलो हटो मैं तुमसे बात तक नही करना चाहती' वह हँसते हुए बोली।

अय्यर भी खुश होकर हँस पड़ा। फिर उसने वेटर को बुलाकर लच का आडर दे दिया।

मिस्टर खान की कोई चिट्ठी विट्ठी ?'

मिसेज खान ने नकारात्मक लहजे म कधे हिलाए और नीचे का होठ तिरस्कार और नफरत से बाहर निकाल लिया।

"कहाँ हैं आजकल ?

' बकाक !'

सूप आने तक दोनो चुप रहे। होटल म चहल-पहल नही थी। बैठे

नीचे उतरकर अय्यर ने अपनी पतीस साल पुरानी ओपल कार निकाली। चाबिया का गुच्छा निकाल कर दरवाज़ा खोला और व्हील पर बठ गया। चाबी घुमाकर स्टाटर दबाया। आवाज़ निकलते ही एक्सीलटर पर पाव रखा। फट फट गू-गू-गू आवाज़ निकली और इजिन यू बन्द हो गया जस मर गया हो। अय्यर ने फिर चाबी घमायी। एक्सीलेटर फिर से दबाया। फिर गू-गू आवाज़ निकली। दो-तीन बार यूँ ही होता रहा और अय्यर परेशान हो गया। चाबी निकालकर उसने दरवाज़ा खोला और पाव स धक्का देकर बद कर दिया। एक तीखी गाली दी और बाहर आकर टक्सी को इशारा किया। ड्राईवर से ब्ल्यू कानर कहते हुए उसने कलाई की ओर निगाह डाली। पौन दो बज चुके थे। मिसेज़ खान काफी गर्मा गयी होगी। शी मस्ट बी फ्यूमिंग पर बठी रहेगी। जायेगी कहाँ ? 'कान्फिडेंशियल एडवाइज़र पढत हुए बठी रहेगी। सच पूछा जाये तो अय्यर को मिसेज खान पर दया आ ही रही थी। उसे गदी किताबो स सख्त नफरत थी और मिसेज खान ऐसी किताबें बेहद पसद करती थी। सली को वैसी किताबें पसद नही। सली बीमार है न ? आज शाम कुछ भी हो उसके यहाँ जाना ही होगा। वह बीमार है। जाना ही होगा। कम से-कम शाम के वक्त तो ज़रूर ही जाना होगा। इधर सली काफी कमज़ोर हो गयी है। दुनिया की सबसे खूबसूरत दीखने वाली औरत। क्या बदन था ! पर दो महीने पहले गया तो कैसी कमजोर कमज़ोर सी लगी। अब और भी बदसूरत हो चुकी होगी। मम्मी ज़रा देरी से मरी। चार पांच साल पहले मरी होती तो सली से शादी कर ली होती। पर टाइम-टेबिल गडबडा गया। टाटा हास्पिटल म आखिरी दम मम्मी बोली भी थी— चाहो तो सली से शादी कर लेना। मेरे मरने से पहले ही कर लेना। लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। अब सली सीरियस है। तब मम्मी थी। कैंसर की वजह से उसका सारा गला खराब हो चुका था। घुलघुल कर आखिर दम तोड ही दिया। सली भी घल रही है। पर आज वह काफी सीरियस है शाम को जाना ही होगा। मैं इतना गिल्टी क्या फील कर रहा हूँ ? मैंने उसे छोडा तो नही था। हर महीन उसके लिए टली को पसे भी काफी दिया करता था। टली शराब बेहद पीता है। पर बहन की दवा-दारु पर क्या वह खर्चा नही करेगा ? पर सली के यहाँ जाना ज़रूरी है। कसे जाय ? गिल्टी फील होता है। यों ही। वसे देखा जाये तो उससे कोई बँधा हुआ तो हूँ नही। जान की इच्छा नही रही थी। उसकी ओर देखा न जाता था। मेरे लिए उसने अपना धधा छोड दिया। पर कुछ जम ही न पाया। आई एम ए ब्रूट सल्फिश रोग! लेकिन आज शाम को जाना ही होगा। जापानी पेंटर को साढ़े पांच तक छोड देना

चाहिए। एक चक्कर ऑफ़िस का लगाना, काम देखना और साढ़े पाँच तक उसके यहाँ चाय देना होगा। स्साला खुद का पेपर शुरू करना चाहिए। फिर भंडारी क्या और चीफ़ मिनिस्टर क्या? किसी की न चल सकेगी। कल कोस्टा के यहाँ जाना ही चाहिए। हाँ। और आज सली के यहाँ।

आशा के अनुरूप मिसेज़ खान 'ब्लू बालर' में कांफिडेंशियल एडवाइज़र पढ़ते हुए बैठी थी। उसने आज कमीज़ और सलवार पहन रखी थी। हल्के नीले रंग की, और उस पर सफ़ेद फूल कढ़े हुए थे। कन्धे पर उसी रंग का दुपट्टा। बॉब किये बाल उसकी गर्दन पर झूल रहे थे। लाल लिपस्टिक और कलाई पर बड़ी-सी घड़ी। इसके अलावा उसके बदन पर गहने न थे। सच पूछा जाये तो इस वेश में वह अजीब लग रही थी। जब वह साड़ी में होती है तो उसके बदन का मुटापा कुछ छिप-सा जाता है। कमीज़ और सलवार में उसके बदन के हिस्से जैसे बाहर निकल पड़ रहे थे। इसी मुटापे की वजह से अय्यर को वह पसंद थी और इस बात को वह खूब अच्छी तरह जानती थी। अय्यर अंदर आया तब उसका आधा ध्यान मैगज़ीन में था और आधा दरवाज़े की ओर। कुर्सी में बैठी वह कुनमुना रही थी।

'सॉरी मिसेज़ खान!'

'मेरा खयाल था कि तुम आओगे ही नहीं।'

'ओ नो मिसेज़ खान। मुझे परेशान न करो। कल न आ सका, उसकी कुछ खास वजह थी।'

'आई नो। आई नो। मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि तुम कितने बातूनी हो।''

''क्या बहुत गुस्सा हो गयी हो शायद?'' अय्यर ने उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए पूछा। मिसेज़ खान इस हरकत पर पिघल गयी लेकिन जानबूझकर उसने अय्यर का हाथ परे हटा लिया।

'चलो हटो मैं तुमसे बात अब नहीं करना चाहती,'' वह हँसते हुए बोली।

अय्यर भी खुश होकर हँस पड़ा। फिर उसने वेटर को बुलाकर लंच का आर्डर दे दिया।

'मिस्टर खान की कोई चिट्ठी विट्ठी?'

मिसेज़ खान ने नकारात्मक लहजे में कंधे हिलाए और नीचे का होंठ तिरस्कार और नफ़रत से बाहर निकाल लिया।

'कहाँ हैं आजकल?''

'कैरो।''

सूप आने तक दोनों चुप रहे। होटल में चहल पहल नहीं थी। वैसे

सारी टेबिल भर चुकी पर आवाज़ नहीं आ रही थी। एयरकंडीशनर की वजह से बाहर का हो-हल्ला अन्दर तक न आ पा रहा था। अंदर बैठे हुए लोग फुसफुसाहट ज़रूर कर रहे थे। *नीचे मोटा-सा कारपेट* और ऊपर हल्का नीला प्रकाश। दीवारों पर गहरा नीला रंग और वेटरों के कपड़े भी नीले रंग के थे। सारा माहौल ही धूमिल और नीचे की ओर झुकता-सा था। दीवार पर लगी बत्तियाँ पानी की फिसलती बूँद जैसी लग रही थीं। यह होटल मिसेज़ खान को सबसे ज़्यादा पसन्द था और अय्यर को नापसंद। अय्यर तेज़ रोशनी और खुली हवा पसंद करता था। उसे खुली हँसी बहुत पसंद थी। लेकिन वह जानता था कि मिसेज़ खान से मिलना हो तो इसी होटल में मिला जा सकता है।

अभी कम-से-कम दो महीने तक तो मिस्टर खान साउथ ईस्ट एशिया में घूमेंगे। उनकी कंपनी वहाँ अच्छी तरह जम चुकी है। मतलब मिस्टर खान को ही सारा क्रेडिट जाता है।

आई नो। मैंने परसों ही पढ़ा था।'

कल तुम क्यों नहीं आये? मिसेज़ खान ने तीखी नज़रों से उसकी ओर देखते हुए और विषय बदलते हुए कहा।

ओ मिसेज़ खान आई टोल्ड यू। मैं बेहद बिज़ी।

झूठ तो न बोलो। मैंने तुम्हारे आफिस में और घर पर तीन चार फोन किये थे।

अय्यर सिर्फ हँस दिया।

मिसेज़ खान ने अचानक उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। उसे *धीमे से दबाते हुए वह ज़ख्मी आवाज़ में बोली—*

अय्यर! अय्यर! डॉट लाफ एट मी। तुम नहीं जानते मुझे तुम्हारी कितनी ज़रूरत है। प्लीज़ डॉट लाफ प्लीज़।

वह कुछ ऐसे अन्दाज़ में बोली कि अय्यर परेशान हो गया। बस उसकी आँखों से आँसू आने बाकी रह गये थे। अय्यर को बुरा लगा।

मैं तुम पर नहीं हँसा था सच कह रहा हूँ। मैं तो अपने ही पागलपन पर हँस रहा था। सच मुझे कल डिनर के लिए आना था। कल एक एपाइंटमेंट पर चला गया था। किसी को भी मालूम न था।

मिसेज़ खान अय्यर का हाथ वैसे ही अपने हाथ में थामे रही और उसकी ओर देखती रही।

तुम मुझ पर एतबार नहीं करती मिसेज़ खान? डार्लिंग डॉट यू बिलीव मी? अय्यर ने अपराध भाव से पूछा।

मिसेज़ खान एकदम खुश हो गयी। उसने तेज़ी से अय्यर का हाथ छोड़

दिया और हँसने लगी।

"ओ यू नाटी फूल! तुमने पहली बार मुझे डार्लिंग कहा। ओ हाऊ स्वीट।

अय्यर ने मन-ही-मन माथे पर हाथ मारा। इतनी लडकियों के साथ वह घूमा था पर सली के अलावा किसी को उसने डार्लिंग न कहा था। उस शब्द का जादू वह जानता था और वह उस शब्द का उपयोग जानबूझकर नहीं करता। लेकिन मिसेज खान जरा ज्यादा ही नाराज हो रही थी इसी वजह से उसके मुँह से भूल से वह शब्द निकल गया था। उसे लगा कि वह यह क्या कर बैठा। वह मिसेज खान के फ्लैट पर दो तीन बार गया था। लेकिन वह सब तो शौक था। सली और दूसरी दो या तीन लडकियों के अलावा दूसरी लडकियों के साथ इस शौक के अलावा उसने कुछ न किया था। शौक मतलब शौक। सली से भी उसका प्रेम था क्या? या कि उसका आब्लिगेशन ही प्रेम सा लगता रहा? वह जरूर इमान पर थी। मेरे लिए उसने अपना धन्धा तक छोड दिया था। इसीलिए मुझे शायद उससे शादी करने की इच्छा हो रही थी। पर सली जरा अलहदा ही थी। उसके बगैर मुझे एक दिन भी चैन न आता था। वह सबसे अलग थी। वह खूबसूरत थी या नहीं, पता नहीं। पर उसका बदन जरूर गदराया हुआ था। सबसे ज्यादा पैसे मैंने सली पर खर्च किये। पैसे ही क्या? टाइम भी। पर सली से प्रेम था? मोहब्बत क्या होती है खुदा ही जाने। शायद मैंने किसी से मोहब्बत की ही नहीं। नहीं तो इस तरह का सवाल उभरता ही क्यों? मेरा मम्मी से प्रेम था? टाटा हास्पिटल में जब वह तडप रही थी तो मैं सोच रहा था कि यह दुनिया कब खतम होगी? उसकी तरफ देखा न जाता था। जरूरत पडती तो उसे जहर तक दिया जा सकता था। यह क्या स्साली मोहब्बत की निशानी है? प्यार अपने लिए नहीं है या प्रेम की भावना ही गलत है? शारीरिक वासना का भावात्मक धरातल पर प्रोजेक्शन का मतलब है प्रेम। जाने दो। जिस विषय में हमारी जानकारी नहीं उस पर सोचना ही किसलिए? मिसेज खान का मिस्टर खान से प्रेम क्या नहीं है? मुझसे है? मुझे सली से है। सली बीमार है। सीरियस है। उसके पास वक्त निकालकर जाना ही होगा।

लंच के दौरान मिसेज खान मीठी मीठी आवाज में बतिया रही थी। लंच के दौरान, मतलब हर डिश के दौरान। गरज यह कि वह ज्यादा खाती न थीं। अय्यर जरूर बोर हो चुका था। उसे मिसेज खान जरूर पसन्द थी, पर उसकी बातें नहीं। वह पूरी तौर पर खुल चुकी है इस बात को भी वह जान चुका था। अब उसने फ्लैट पर जाना होगा। उसकी साँस

तेज़ हो गयी। पर वह ईज़ी है। इसलिए ऐन वक्त पर मज़ा नहीं आता। वह कितनी आसानी से करीब आ जाती है। ज़रा भी हिचकिचाहट नहीं। इसीलिए ज़रा यूँ ही लगती है। खुद करीब आती है इसलिए ऐसा लगता होगा। सली क्यों पसन्द आती थी? वह हमेशा विरोध करती थी, खुद तो कभी भी करीब न आती थी। अय्यर को पूरा-पूरा दिन उसके लिए बरबाद करना पड़ता था। तब कहीं वह राज़ी हो पाती थी।

'यू मस्ट प्रामिज़ मी। रोज़ाना मुझसे मिलना होगा," मिसेज़ खान ने कहा।

'रोज़ाना? कैसे हो सकता है? तुम तो मेरे काम के बारे में अच्छी तरह जानती हो।'

'ओ यू नाटी! तुम फिर मेरे साथ दगा कर रहे हो।"

नहीं मिसेज़ खान। पर वाकई रोज़ाना मिलना कैसे हो सकता है? तुम मिल सकती हो?

हाँ रोज़ाना तो मुश्किल है। लेकिन सप्ताह में तीन चार बार तो सही।'

देटस गुड। वी कैन मनेज।

प्रामिज़?'

'प्रामिज़।

आज ही हम लोग चलते हैं।'

'ओ, मिसेज़ खान!"

ओह येस डार्लिंग!

'अभी?'

अभी।

ओके।

'यू आर सिंपली वंडरफुल अय्यर!'

'वाकई?'

ऑफ कोर्स! तुम जैसा आदमी तो मैंने ज़िन्दगी में देखा नहीं।"

माई गाड!"

मिस्टर खान तुम्हारे आगे कुछ नहीं।"

'और किसे देखा है?'

देखे हैं तीन चार और भी। लेकिन आई लव यू। दूसरे किसी से भी मैंने मोहब्बत नहीं की है।

'नानसेंस! चलो चलते हैं।'

'नो। आई एम टाकिंग सेंस। मिसेज़ खान ने उसका हाथ फिर अपने

हाथ म ले लिया था 'तुम्हें यह सब नानसेंम लगता है, अय्यर ?'

'क्या कहती हो मिसेज खान ? डोंट बी टू सेंटिमेंटल हीअर। चलो चलत हैं।'

'ओह! अय्यर तुम मुझे दगा नही दोगे न ?'

'चलो। मैं जरा जल्दी हूँ।

'ओ यू नाटी! इतनी जल्दी है?

मिसेज खान ने उसकी ओर तिरछी नजरो से देखा। जल्दबाजी का मिसेज खान न खास अथ लगाया था, इस बात पर अय्यर को मजा आ गया। उसने मिसेज खान को हाथ पकड कर कुर्सी से उठाया और बाहर ल आया। मिसेज खान तो इतनी खुश थी कि बिल के बचे नौ रुपय तक वापस लेना भूल गयी। वह अपने पति की जेफर' लायी थी। ह्वील पर बैठी और अय्यर को उसने अपने बिल्कुल करीब बिठा लिया, सटा कर। उसका बदन गरम था। अय्यर को कार की गद्दियाँ अच्छी लग रही थी।

'आई एम प्लीज्ड। आई एम प्लीज्ड टुडे' कहते हुए मिसेज खान ने एक्सीलेटर पर पाव रखा और अपन कोलाबा के फ्लैट की ओर गाडी तेजी से बढा दी। मिसेज खान ह्वील पर बैठी हों, ऐसे किसी अवसर पर अय्यर कभी गाडी मे न बैठा था। इसी वजह से उसकी ड्राइविंग से वह खुश था। मिस्टर खान के साथ वह काफी बार गाडी म बैठा था। पर मिस्टर खान की जगह मिसेज खान ही उस ह्वील पर ज्यादा अच्छी लगती है। अपने मुटापे की वजह से वह वहाँ बेहद अच्छी लगती है। अय्यर को लगा कि उसकी च्वाइस बुरी नही। और तभी अय्यर ने उसके घुटनो पर अपना हाथ रख दिया। मिसेज खान खुश हो गयी। वह किस तरह खुश होती है, यह बात अय्यर अच्छी तरह जानता था। एक खास मौके पर मिस्टर खान ने खुद मिसेज खान के वीक पाइंट अय्यर को बताये थे। मिस्टर खान अय्यर से बेहद खुश थे। उनके एक्सपोर्ट प्रमोशन पर अय्यर ने 'वेस्टर्न स्टार' म एक कालम लिखा था। तबसे मिस्टर खान अय्यर पर फिदा थे और तभी मिसेज खान से भी गहरी दोस्ती हो गयी।

गेराज म गाडी रखकर मिसेज खान अय्यर को लेकर सीधी फ्लैट म जा पहुँची। उससे अब रहा न जा रहा था।

अय्यर मिसेज खान के बैड रूम से बाहर आया तब पौने चार बज चुके थे। मिसेज खान सो चुकी थी। वह पसीने स तर था। गले मे टाई सुहा नही रही थी। दिन का मजा कुछ और ही होता है। लेकिन पसीने की वजह से अब

वह परेशान हो रहा था। आज का दिन जाया नहा गया था। मिसज खान आज बहुत ग श थी। वह जापानी पेंटर जरूर राह देखते-दखन परेशान हो उठा होगा।

वहां स निकलन स पहल अय्यर एक और वजह स परेशान हो उठा। इन दो-तीन घटा क दौरान उसन आफिस फान नहीं किया था। अगर कुछ हो-हुआ गया तो नाहक परेशानी। आज रिपोटर कम हैं। आफत न आ जाये ? मिसज खान क बेड रूम का दरवाजा बद कर उसन डायल घुमाया।

वस्टन स्टार रिपोर्टस।

'क्या रे शर्मा, अभी तक घर नही गया ?'

यू ही बैठा था। बस निकल ही रहा हू।'

'कोई गडबड ?

कुछ नही बिलकुल ठडा।

इवनिग का लीड कौन-सा है डिरेलमट।

ना। चीफ मिनिस्टर का अधेरी वाला फक्शन।

वास्टड, स्साला ! गाली इवनिग स्टार' क चीफ सब एडीटर क लिए थी। 'लोगा को डिरेलमेंट म इटरेस्ट होगा कि मत्रिया के हगने मूतने म ? कुछ एनाउसमट या पालिसी मटर दिया है क्या सी० एम० ने ?

कुछ नही अय्यर साब। सी० एम० रैप्स इडस्ट्रियलिस्टस दटस आल।

'ओके। फारगट इट। अच्छा बाई। मैं आ रहा हूं। घटे दो घटे म। नोट कर रखो। ताज जाकर आता हूं।

ओके—बाई !"

हलो हलो मेरे लिए फोन था क्या किसी का ?'

हां। स्मगलिग क स्टोरी पर काफी फोन आये थे। एकदम सेंसेशनल स्टोरी बास। हां हां एक फोन और आया था, किसी टली आदमी का था अभी पद्रह मिनट पहले।

'स्साला खराब आदमी। क्या कह रहा था ?'

'टली का था। पता लगत ही पोक्षे ने ल लिया।

व्हेअर इज़ पोक्षे ?

अभी यहां नही है।

ठीक है। मैं आ ही रहा हूं।

रिसीवर रखकर अय्यर न टाई ठीक कर ली। जूत क फीत कस लिये और फ्लट का दरवाजा बद करक नीचे चला आया। टली को शायद पैसे की जरूरत होगी। इसीलिए सता रहा है स्साला। शायद सली के

दवाई के पैसे खुद ही डकार गया होगा बदमाश। फिज़ीकली स्साले को पीटना होगा। या हो सकता है सन्नी बीमार है। इसलिए घबरा गया हो। यस आज उसके यहाँ जाना ही होगा। येस येस। आई मस्ट मस्ट गो। इन एनी केस। बीमार जो है। अय्यर तभी भावुक हो गया। उसे अच्छे दिन याद हो आये और उसके सीने की धड़कन तेज़ हो गयी और उसने तय कर लिया कि आज उसके यहाँ जायेगा ही। आज शाम को जाना ही होगा। फूलों का गुच्छा लेकर। सन्नी को खुश हो जाना चाहिए।

अय्यर ने टैक्सी ली और ताज की ओर बढ़ लिया। आज उसे भंडारी का मामला बेहद परेशान किये जा रहा था। वह पूरी तौर ,पर जानता था कि भंडारी उसे छोड़ेगा नहीं। मेरे बल पर उसका पेपर चलता है। मेरे पमनेन्ट कालम जैसा दूसरा कैसे लिख सकता है? आज मुकामुरा के कालम में भी हो-हल्ला मचा देंगे। एकदम सुन्दर विषय। लेकिन कल कोस्टा से मिलना ही होगा। पीठ दिखाने से कुछ होना-हवाना नहीं। हम पोंक्स को गालियाँ देते रहते हैं। लेकिन शहाणे का फोन आने के बाद और भंडारी की बातों के बाद से मेरा ही मन मुझे खाये जा रहा है। 'शहाणे के यहाँ न गया तो क्या होगा? पर कोस्टा के यहाँ जाने से भी क्या होगा? देखेंगे। देखेंगे। कोस्टा से मिलेंगे तो सही। उसके पास है क्या देखेंगे ज़रा और आज मुझे जाना ही होगा। कुछ भी क्यों न हो—आज बहानेबाज़ी न चल पाएगी। टली ने दुबारा फोन किया था। तो उसके यहाँ जाना ही होगा।

वह पेंटर बोर हो गया होगा। शायद मुझे गालियाँ निकाल रहा होगा। अब उसे देरी के लिए क्या वजह बतायेंगे? कुछ भी बताया जा सकता है। आई एम ए चीफ रिपोर्टर—ए बिज़ी मैन।

मुकामुरा जापानी पेंटर?"

मुकामुरा जापानी पेंटर।'

'रूम ३११—आउट।'

ओह आई एम लेट। कब चला गया?

काफी वक्त हो गया। लंच के बाद ही।'

अब लाउंज में राह देखनी चाहिए। वहाँ की स्प्रिंगदार कुर्सी पर अय्यर बैठा। रंगीन रईसी कपड़ों में लोग आ-जा रहे थे। पोर्च में बड़ी बड़ी कारें। टैक्सियाँ आतीं रुकतीं और चली जातीं। पोर्टर तेज़ी से लपकते। आने-जाने वालों में कई लोग अय्यर के पहचान के थे। हर बार हलो और शेक हैंड के लिए अय्यर को खड़ा होना पड़ता था। दो बातें करनी पड़ती थीं। अय्यर बोर हो गया। मुकामुरा का पता ही न चलता

था। दूसरा वक्त होता तो अय्यर वहाँ से चल भी देना। अपाइटमट मतलब अपाइटमट। तय किये वक्त पर मिलना चाहिए। एक बार मध्य एशिया क एक शेख ने वक्त पर न आकर अय्यर को परेशान कर दिया था और गुस्से म अय्यर वहाँ से चलता बना था। उस शेख ने बाद म काफी हाय तोबा मचायी थी। पर आज खुद ही देर से पहुँचने का अपराध बोध अय्यर को परेशान किये जा रहा था। वह इसी वजह से वहाँ रुका हुआ था। उसे सिगरेट कतई पसद न थी। बस इस तरह किसी की राह देखना हो तो सिगरेट जरूरी होती है। लेकिन पसद ही न हो तो क्या किया जा सकता। अब यह जापानी बूढा कहाँ चला गया है पता नही। बारह मिनट से ज्यादा वक्त हो गया यहाँ इतज़ार करते हुए। अब अगर पाँच मिनट म नही आया तो आफिस को फोन कर देना पडेगा। वसे दोपहर ठीक कट गयी। मिसेज खान न आज काफी मजा दिया था। पिछली बार के मुकाबल आज वह कुछ और ही महसूस हुई थी। ओह यस सली! सली बीमार है। सीरियस है। शाम को कोई काम नही है उसके यहाँ जाना ही होगा। उसकी ओर देखने तक की हिम्मत न होगी। उसकी सूरत बिगड चुकी है। पर कुछ भी हो जाना होगा। आज बहानेबाजी नही चल पायेगी। कई दिना स बात टल रही है। आज नही। टली कहता है वह सीरियस है। कुछ भी कहो उसके पास जाना ही होगा।

यू अय्यर आफ वेस्टन स्टार?

एड यू आर मिस्टर मुकामुरा?

करेक्ट। माफ कीजिये मुझे देर हो गयी।

ओह ऑल राइट।"

मुकामुरा अय्यर को अपन कमरे म ले गया। अय्यर के मना करने के बावजूद भी उसने बीयर के दो मग मगवाये। बाद म बूढे ने अपने ब्रीफकेस म से कुछ स्केच निकाले। अय्यर एकदम ठडा पड गया। वे सारे ही चित्र सभोग क थे।

'हात? यू दिद नात नो आय स्पेसलाइज्ड इन दिस सब्जवन?' अय्यर की हालत देखकर बूढे ने हँसते हुए पूछा।

ना। आई मीन यस। पर आपका यह विषय होगा मुझे मालूम था। इटरेस्टिग। गुड स्टोरी।

फिर बूढे ने देश विदेश म बनाये हुए चित्र दिखाये। देश विदेश के लोगो क प्रेम करन के तरीके कैसे अलग-अलग हुआ करते हैं यह सब उसन अय्यर को समझाया। यर न खुद अपने अनुभवो क आधार पर कुछ बातें बतायी। कोणा र खजुराहो जाने की सलाह भी दी और

बम्बई म इस विषय पर माडल कहा मिल सक्त हैं, यह भी बताया।

मो यू सी दिस इज मास्त चलेंजिंग सब्जेक्त। यह मजाक का विषय हो ही नहीं सकता। जिन्दगी का मूल तत्व इसी विषय म है। आज के मशीनी युग म एक यही बात मौलिक रूप म बची हुई है जिन्दगी के अन्य पहलुओं पर यत्रीकरण का प्रभाव है। पर यह शारीरिक क्रिया अमर है। यू नो मैंने मारी जिन्दगी इसी खोज पर लगा दी है। आज तक तीन हजार चित्र बनाये हैं। पर अभी तक मन क लायक एक भी नहीं बना सका हूँ। काफी अध्ययन करना पडता है। सेक्स की सायकालोजी उनके गुण दोष उनके हालात उनकी एनातोमी—यू नो दिस इज द मोस्ट चलेंजिंग तास्क यू सी।

सर्टेनली एंड मोस्ट इटरेस्टिंग टू, गदन हिलाते हुए और साफे स उठत हुए अय्यर ने कहा मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ आपके साथ हैं। आपके मन का चित्र तो हिंदुस्तान म ही बन सकता है। यहाँ के लोग दिल खोलकर प्रेम करत हैं। गुड बाइ।

थक्यू। एंड गुड बाई। बूढा दिल खोलकर हसा।

अय्यर का काफी वक्त वह ल चुका था। लेकिन वक्त बेकार नहीं गया था। उस इसी बात की तसल्ली थी कि एक अलग तरह का चित्रकार उस मिला था। बूढा काफी होशियार चित्रकार मालूम दता था। उसन काफी अध्ययन किया होगा। उस वह पसद भी आया था। मतलब आज का दिन अच्छा गुजरा था। बस एक ही बात कि ऑफिस के उस बूढ़े का चेहरा देखना पडा था। मिसेज खान के फायनर पाइटस समझ म आ गये थ और मुकामरा से पहचान हो गयी थी। अय्यर आफिस म पहुँचा तब पौने छ बज चुके थे।

पाशे अभी टेबल पर ही बैठा हुआ था। अय्यर का देखत ही वह चट से उठ खडा हुआ।

क्यों बे यहाँ क्या कर रहा है? सचिवालय नहीं गया।

सर दद कर रहा था। पालकर को वहाँ भेज दिया।'

पालकर को? तुम चीफ रिपोटर कब स हो गये?'

अय्यर की नाराजगी देखकर पोशे कुछ न बोला। केबिन म और भी दो-तीन रिपोटर बैठे हुए थे। पोशे न अय्यर का कोट उतार दिया। फिर उसे धीरे से केबिन के बाहर बुला लिया।

क्या है रे खराब आदमी? सिर दद का बहाना कर कामचोरी करत हो?'

"वसा नहा अय्यर साब।

फिर ऐसी कौन-सी आफ्त है कि इतनी सीक्रेसी ?'

नही वसी बात नही है। मुझे और कुछ कहना था।" पोशे अय्यर क चेहरे का पढ़त हुए बोल रहा था।

बोला बेटा क्या है ? कौन सी छोकरी ढूढ ली है ?"

पोक्ष न अजीव नज़रा से अय्यर को देखा और फिर अय्यर की नज़रों से नज़रें बचाते हुए बोला—

'टली का आधे घटे पहले फोन आया था। सली इज डेड।

किशोर वझे

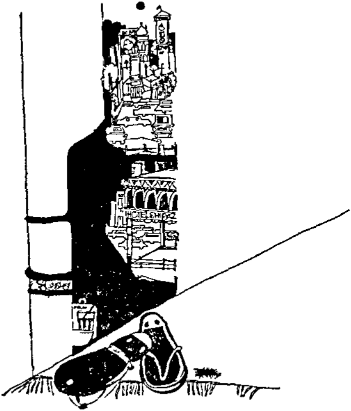

"वसा नही, अय्यर साब।

फिर ऐसी कौन-सी आफत है कि इतनी सीत्रंसी ?"

नही वसी बात नही है। मुझे और कुछ कहना था।" पोश अय्य क चेहरे का पढत हुए बोल रहा था।

'बोला वेटा क्या है ? कौन सी छोकरी ढूढ ली है ? '

पोक्षे न अजीब नजरा से अय्यर को देखा और फिर अय्यर की नजर से नज़रें बचाते हुए बोला—

'टली का आधे घटे पहले फोन आया था। सली इज डड।'

किशोर वझे

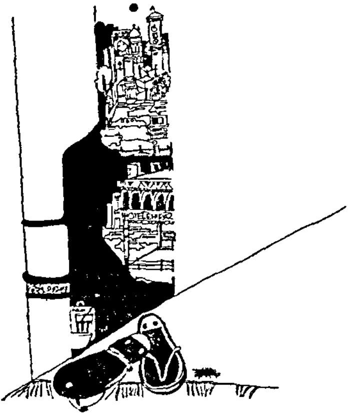

किशोर बस जब उठा तब सारी बम्बई बदन झटककर काम में जुट गयी थी। साढ़े आठ बज चुके थे और दादर पुल पर वाहनों की कतारें सरकती जा रही थी। खोदादाद सर्कल अम्बेडकर रोड वाहनों में खचाखच भरा हुआ था। फोर्ट के सभी दफ्तर खुलने लगे थे। बढ़िया कपड़े पहने पुरुष और स्मार्ट दीखती लड़कियाँ तेजी से कदम बढ़ाती हुई आफिस की ओर जा रही थी। बिलकुल सुबह खुलने वाले आफिस बड़ी कम्पनियों के थे। चर्चगेट और बोरीबन्दर की ओर से रंगीन कपड़े पहने लोगों की भीड़ बाहर निकल रही थी। सारी बम्बई अपने काम में जुट रही थी। अय्यर बाहर निकलने की तैयारी कर रहा था। नीला कभी की बाहर निकल चुकी थी। दयानन्द पानिटकर ने अपनी गाड़ी चालू कर दी थी। डीकोस्टा का दिन कभी का शुरू हो चुका था। मुख्यमंत्री शिवाजीराव शिंदे काम के चक्कर में कभी के डूब चुके थे। किशोर जरूर अभी उठकर बैठा था।

घर के बाकी लोग सुबह के काम से निबटकर कभी के अपने अपने काम पर निकल गये थे। चार खाट के उस कमरे में किशोर औंधा लेटा हुआ था। अकेला। बदन पर नेकर और सैंडो बनियान। उसकी आँखें खुली तभी से नजरों के आगे छत से टँगा जंग लगा पंखा घूम रहा था। पंखे के बीच वाले गोल हिस्से में उसका मुँह प्रतिबिम्बित हो रहा था। रोजाना उसकी खुद से यों ही अजीब मुलाकात हो जाया करती थी।

आँख खुलने के बाद किशोर पहला काम यह करता कि अपने हाथ पाँव फैलाकर सुस्ती दूर करता और फिर लम्बा हाथ करके करीब के टेबिल पर रखा चारमीनार का पैकिट उठाता और तीली जलाकर सिगरेट फूँकने लगता। हमेशा की तरह पंखे में अजीब शक्ल देखकर उसने सिगरेट सुलगा ली। एक लम्बा कश खींचा। धुआँ उसके सीने में अन्दर तक चला गया। उसकी इच्छा उस गन्दे धुएँ को बाहर निकालने की नहीं होती। अपने सीने में और पेट में वह उसे छिपाये रखना चाहता है। अपने खून में शामिल कर लेना चाहता है। इसके लिए वह जी तोड़कर कोशिश करता है। खाट पर वह अपना बदन एकदम ढीला छोड़ देता है। इसी वजह से वह वाकई क्या कर रहा है इस बात का अन्दाज देखने वाले को नहीं हो सकता। पर वह धुएँ को अपने में पूरी तौर पर समेट लेने की कोशिश में लगा रहता है लेकिन वह उससे नहीं हो पाता। आखिर हारे हुए योद्धा की

तरह वह निढाल होकर पने में अपनी शक्ल देखते हुए साँस बाहर की ओर छोड़ देता है।

दिन की पहली हार। दिन भर में इस तरह कई बार हारना पड़ता है। और कितने दिनों तक हार स्वीकार करनी होगी? तीस साल तो किसी तरह गुज़ार दिये। काफी साल हो चुके हैं।

रोजाना इसी तरह की हार की सुबह क्याकर आती है? और कल मैंने कौन-कौनसे बोझ सपने देखे थे? वाकई रात की बातें सुबह याद आते ही अजीब शर्म महसूस होती है। ऐसे खयालात मन में कैसे आ जाते हैं? मन की विकृति हो सकती है। नहीं तो सुबह उठकर उन बातों के लिए इतनी शर्म क्यों महसूस होती है? हार की ऐसी आत्मनिंदक आत्मघाती सुबह विश्वास लिये आती दोपहर आशा की किरण चमकाती साँझ और सपनों की हलकी सी माला गूँथने वाली रात फिर सुबह होते ही हार का एहसास। यही हमेशा होता है। यह घेरा मुझसे कभी न टूट पायेगा। कारण मैं अजीब दब्बू हूँ। नहीं तो पिछले पन्द्रह सालों में एक भी हँसती सुबह का मुझे एहसास हुआ है? जिस रात हमेशा के लिए सो जायेंगे उस रात के बाद सुबह कभी होगी? वह सुबह कैसी होगी? माई गाड, वह सुबह भी इसी तरह की नहीं होगी न?

खत्म होने वाले सिगरेट के टोटे से किशोर ने दूसरी सिगरेट सुलगा ली और बिस्तर को एक ओर लात जमाते हुए वह फुसफुसाया— डैम इट। आई एम अनइम्पार्टेन्ट।

और सुबह उठकर सिगरेट पीने के बावजूद भी सीने के अन्दर से चूहे की तरह हरकत करने वाली बातें निकल क्यों नहीं जातीं? वे सारे एहसास जैसे मेरे जागने की राह ताकते रहते हैं। बदन से ऐसे चिपटते हैं कि सिर भन्ना जाता है। सच एकबार बाबूजी को खत लिख ही देना होगा इसके बगैर अपराधी भाव कम न हो पायगा। और दीगर एहसास तो ऐसे हैं कि ज़िन्दगी भर दिल में सजाये रखने होंगे। सिगरेट के धुएँ में वे ख़त्म हो जायें तो चैन हो जाये।

बाबूजी के खयाल से किशोर हमेशा की तरह बेचैन हो उठा। नीला का खयाल भी उसे बेचैन कर डालता है। पर वह बेचैनी इतनी परेशान नहीं करती। वह हार तो मन अब पूरी तौर पर स्वीकार कर चुका है। पर बाबूजी? सच—एक बार दिल खोलकर खत लिखने में हर्ज ही क्या है? बाबूजी बूढ़े भले ही हो गये हों पर मेरी भावनाएँ तो समझ ही सकते हैं। लेकिन क्या मुझे खुद अपनी भावनाएँ समझ में आती हैं?

पूज्य बाबूजी, सादर चरण... सिगरेट के कश के साथ किशोर

मन का मजमून सोचने लगा—'पत्र लिखने की वजह यह कि आपके सारे ही खत मुझे मिल चुके हैं।' फिर एक बार। 'पूज्य विचार' 'पूज्य बाबूजी' यही एक वाक्य बार-बार दिमाग में चक्कर काटता है। किशोर ने गत्ते को सरका दिया और उसने कोशिश छोड़ दी। खाट के करीब रखे टेबिल के नीचे पड़े कागज के टुकड़ों की ओर उसका ध्यान चला गया। कल रात सिगरेट का अन्तिम सेवन शुरू करने के पहले किशोर ने पहले खत लिखने की कोशिश की थी।

'पूज्य बाबूजी सादर चरण स्पर्श।' कितने दिनों से यह वाक्य मन में घुलता रहा है? सात-आठ महीने तो हो ही चुके होंगे। वाकई आज खत लिख ही देना चाहिए। मन में जो कुछ है वह सब न लिख सकें तो कम-से-कम एक कार्ड तो लिख ही देना होगा। जयन आयेगा तो पहला सवाल यही करेगा—बाबूजी को खत लिखा? कम-से-कम कार्ड आज ही चला जाना चाहिए। पूज्य बाबूजी सादर चरण स्पर्श!'

उस खत में मुझे क्या लिखना है? अपनी सब हारें, अपनी सारी वेदनाएँ, अपनी विकृतियाँ? नीला? अपना दब्बूपन? बाबूजी शायद हँसेंगे या शायद समझेंगे भी या गुस्सा भी हो सकते हैं, लेकिन गुस्सा होने की ताकत उनमें नहीं है। हार, वेदना, विकृति, दब्बूपन! इस तरह के सारे शब्द मैं क्या इस्तेमाल कर रहा हूँ? ये शब्द अजीब हैं। अपनी कमजोरी छिपाने के इरादे से हम इन शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन अपनी बेचैनी दूसरों के आगे जाहिर करने के लिए ऐसे शब्दों की जरूरत होती है। नीला इन शब्दों को समझ सकती है? उसे सब-कुछ समझ लेना चाहिए।

उसी तरह लेटे-लेटे किशोर ने टेबिल पर रखा 'वेस्टन स्टार' उठाया। पहले पन्ने से लेकर आखिरी पन्ने तक वह उसे चाट गया। कहीं उस आत्महत्या की खबर नजर नहीं आयी। तब उसे बेहद निराशा हुई। 'थर्ड क्लास पेपर', फुसफुसाते हुए उसने फिर एक बार पहला पन्ना टटोलना शुरू कर दिया। उसमें छपी स्मगलिंग-कहानी उसने पढ़ डाली। स्मगलिंग की बात आते ही कोस्टा का चेहरा उसके आगे आ गया।

नीला कोस्टा के बारे में इतना कैसे बोलती रहती है। कोस्टा द्वारा एंटी-स्मगलिंग आन्दोलन शुरू करते ही नीला ने कितने उत्साह के साथ बातें शुरू की थीं। उसके ऑफिस में काम करती है तो इतना उत्साह किसलिए? बेचैनी की एक ज्वाला उसके सीने में उभर आयी और तभी उसने तेजी से तीसरी सिगरेट सुलगा ली। वेस्टन स्टार की वजह से कोस्टा की बात उठना और उससे नीला की बात दिमाग में आना इस पर उसे गुस्सा आ गया। उसने गुस्से से उस पेपर को फेंक दिया। कोशिश करने के

बावजूद भी नीला का खयाल उसके दिमाग से हटता नहीं है। उसकी हर बात मन को घेरे रहती है। इस बारे में वह हताश था, पर कास्टा के साथ साथ उसकी बात कैसे दिमाग में आती है ? ऐसा बार बार क्यों होता है ? किशोर ने लम्बे लम्बे कश खींचकर नीला के बारे में उठे खयालों को जलाना शुरू कर दिया। यह एहसास कहीं-न-कहीं छिपा बैठा ही रहता है। किसी खयाल के पीछे काम के लिए गर्दन पर सवार भूत की तरह जाने के लिए कहने पर भी वह जायेगा नहीं। उसे इस तरह जला ही देना होगा हर कश के साथ।

तीसरी चारमीनार खत्म होते ही किशोर उठ बैठा। पौने नौ बज चुके थे। आज उसे उठने में पन्द्रह मिनट की देर हो चुकी थी। सब कुछ कर लेने के बाद नौ बजकर ग्यारह मिनट पर चल दिया जाये तभी नौ-तेईस की लोकल हाथ आ सकती है। वह नौ बावन तिरेपन तक चर्चगेट पहुंचती है। तभी तो आराम से चलते हुए चारमीनार का पैकिट खरीदते हुए सचिवालय में आकर लिफ्ट की राह देखते हुए अपने ऊपरी मंज़िल के डिपार्टमेंट में साढ़े दस तक पहुँचा जा सकता है। दो चार मिनट इधर उधर हो जाये तो गड़बड़ हो जाती है। अब पच्चीस मिनट में दाढ़ी स्नान और खाना कैसे हो सकता है ? कैज़ुअल सिर्फ एक ही बची थी। इसलिए दाढ़ी को छुट्टी देने की बात उसने तय की।

आफिस में गोता लगाने की बात दिमाग में आते ही किशोर और भी सुस्त पड़ गया। उसे लगने लगा कि उससे बिस्तर से हिला तक न जायेगा। बदन वाकई भर्रा रहा है। बुखार तो नहीं है ? किशोर ने लम्बी साँस ली। उसे लगा कि उसे वाकई चक्कर आ रहे हैं। वैसे भी आफिस न जाने से फाइलें तो रुकी नहीं रहेंगी। लगाते हैं स्साला गोता। साब चीखेगा और फिर चुप हो जायेगा। कल ठोक देंगे कि बीमार था। वैसे भी सारा बदन जैसे टूट रहा है।

किशोर कुछ तय करने की हालत में आ गया। बदन को एक झटका देकर वह उठा। जयंत इंटरव्यू के लिए बम्बई आने वाला है और कैज़ुअल तो एक ही बची है। उसके साथ एक दिन तो बिताना ही होगा। छुट्टी बेकार करने से कोई फायदा नहीं है।

भारी बदन के साथ वह उठा। जयंत के खयाल से वह उठा। उठते ही ज्यादा खिन्न हो गया। अपने छोटे भाई के सामने हार की बातें नहीं खुलनी चाहिए। उसके लिए कोशिश ज़रूरी है। उत्साह दिखाना होगा। सच पूछा जाये तो जयंत को भी टाला जा सकता था। पर यह ठीक न लगेगा। एक दिन तो उसके साथ बिताना होगा। जयंत अपनी ज़िन्दगी में

ज़रूर कामयाब होने वाला है। उसके चेहरे से कोई भी जान सकता है। मुझसे बिलकुल अलहदा। पाँच साल मुझसे छोटा ज़रूर है पर हर तरह से मुझसे बड़ा है। महीने के आखिर में वेतन मेरे हाथ में आते हैं—पूरे दो सौ सत्ताईस रुपये। इस इंटरव्यू के बाद जयंत को कम-से-कम तेरह-चौदह सौ रुपये तो मिलेंगे ही। तब दिन उसके साथ बिताना ही होगा। उसके आगे उससे क्या वास्ता पड़ने वाला है?

किशोर उठा। चारमीनार सुलगाकर संडास गया। संडास-बाथरूम खाली ही था। दूसरे लोगों की गंध से बाथरूम भरा हुआ था। कइयों के बदन की गंध, मूत की गंध मिलकर कैसी अजीब गंध तैयार हो जाती है! उसी गंध को मारने के लिए किशोर हमेशा अपने मुँह में चारमीनार रखता है।

और बाथरूम में ही नीना की याद तेज़ी से क्यों आती है? उस याद को ज़्यादा-से-ज़्यादा क़ाबू में रखने का काम भी चारमीनार ही करती है। सुबह की पाँचवीं सिगरेट के बाद जीभ पर जलन होती है। तब तक सब-कुछ यूँ ही निजलिजा लगता। लेकिन सच पूछा जाय तो इस जीभ की जलन से नीला की याद कम नहीं हो पाती। दिन भर इस जलन के साथ याद और गहरी होने लगती है। फिर तो जलन और याद एक हो उठते हैं। हर वक़्त बदन जलाने लगता है। या कि उस याद को ताज़ा रखने के लिए किशोर सिगरेट पीता है? नीला से पहचान तो सिर्फ छह साल की है। पर सिगरेट का इतना शौक नीला की पहचान के बाद में ही बढ़ा। पहले वह मज़ाक के लिए सिगरेट पीता था, यूँ ही मौज के लिए। नीना से पहचान होने पर उसे चारमीनार की आदत लगी और नीला से शादी करने की हिम्मत उसमें नहीं इस एहसास के साथ यह हमेशा के लिए उँगलियों से चिपक गयी।

नीना ही क्यों, हम किसी भी लड़की के क़ाबिल, मतलब—जीने के ही क़ाबिल नहीं हैं इस बात का तीखा और झुलसा देने वाला एहसास किशोर को था। यह एहसास उसे कभी भी खत्म कर सकता था। लेकिन जानलेवा एहसास और उदासीनता। सिर्फ सिगरेट के धुएँ से ही वह इस दुनिया से बँध सकता है। कमज़ोरी के हर एहसास के बावजूद अस्तित्व और बड़प्पन के एहसास को वह भूल न सकता था। इसी वजह से वह दुनिया को सिगरेट के टोटे की तरह निरर्थक समझा करता था। मन में आ जाये तो सारी दुनिया जीत सकता है उसे खुद इस बात का यक़ीन था। लेकिन उसके मन में यह आता क्यों नहीं, इस बात को भी वह जानता था। दुनिया जीतकर कोई फायदा नहीं। एक बार जी में आ जाये तो सिर्फ नीला के

पिता के आगे मुंह खोलने की देर है कि नीला मेरी बांहों में लौट सकती है। लेकिन विवेक की वजह से वह ऐसा नहीं करता। इस बात को वह गर्व के साथ कह सकता है। और तिस पर भी वह उसके ख्वाब देखा करता था। उन ख्वाबों से वह उसे अलहदा नहीं कर सकता था। बम्बई के दायरे में वह अपनी कमजोरी भूलने की कोशिश किये जा रहा था।

कश खींचते हुए किशोर ने कपडे निकाले और सिगरेट खत्म होने तक वह यूं ही खडा रहा। फिर टोटा बाहर फेंककर वह ठंडे पानी से नहाने लगा। अपने बदन और अपने चेहरे पर उसे गर्व न था। अपने व्यक्तित्व के बारे में वह उदासीन था। लेकिन नहाने के दौरान उसे खुद ही शर्म महसूस होने लगती थी। पीला पडा कमजोर बदन अंदर धंसा चेहरा। अपने मां बाप की हर कमजोरी उसने पायी है इस बात का उसे तीखा अहसास था। उसी का सगा भाई लंबा चौडा रोबीला है। जयंत के सामने खडे होने में भी उसे इसी वजह से तकलीफ हुआ करती थी। नहाने का यह वक्त सुबह में चढने वाली उदासीनता पर एक और परत बिछा देता था। और नीला? इस तरह के बदन को नीला को अपना समझने का कोई अधिकार नहीं। वह सांवली भले ही हो, पर देखने में सुंदर है। नल से बाल्टी में गिरने वाले पानी की आवाज के साथ किशोर के अजीब स्वर उभरने लगते। जब बाहर निकलता है तो हार के एहसास के साथ।

'कहिये हो गया नहाना वहाना?' लाज में गल्ले पर बैठे चाचा यों ही पूछते। किशोर सिर्फ हंस देता। चाचा को यों ही सवाल करने की आदत है। नहाने के बाद बाथरूम से निकलते ही चाचा पूछ लेते हैं कि 'कहिये हो गया नहाना वहाना?' खाना हो जाने के बाद गल्ले पर से सौंफ खाते हो पूछते हैं 'हो गया खाना?' और आफिस से अधमरी हालत में लौटने पर 'खत्म हो गया आफिस?'

शुरू शुरू में किशोर को चाचा पर बेहद गुस्सा आता था। पर बाद में आदत पड गयी। बातें करने के लिए चाचा इसी तरह के सवाल करके भूमिका बनाया करते हैं। जवाब के लिए कोई मुंह भर खोले तो चाचा की गप्पें चालू हो जाती हैं। इसीलिए किशोर सिर्फ हंस देता है।

चाचा के लिए कोई भी विषय चलता है। प्रेसिडेंट निक्सन की ग्लोबल पालिसी से लेकर बंबई के राशनिंग तक और आजकल की लडकियों के फैशन तक। चाचा अब सत्तर के हो चुके होंगे। सिर पर चांद मोटा चश्मा, कमजोर बदन और हजार झुर्रियां पडा चेहरा। ठंड हो गर्मी हो तेज हवा हो या बारिश हर वक्त गल्ले पर चाचा धोती कुर्ता और बंडी पहने बैठे रहते हैं। चाचा की प्राइवेट लाइफ के बारे में जानकारी किसी को भी नहीं

थी। लाज के मालिक का जरूर थी, ऐसा लोग कहते हैं पर मालिक लाज पर अवसर आता ही न था। चाचा ही सब देखभाल करते थे और हिसाब भी रखते थे। जब से लाज शुरू हुआ है तब से वे यहां चिपके हुए हैं। उनके बच्चे वगैरह हैं या नहीं, यह भी कोई नहीं जानता। इस बात पर चर्चा वे अक्सर टाल देते थे। दूसरे विषयों पर वे जरूर बड़े हौसले के साथ चर्चा किया करते थे। हमेशा हंसता चेहरा और चौकस वृत्ति इसी वजह से लाज में रहने वाले युवा लोगों में चाचा बेहद प्रिय थे। चाचा के ज्ञान की वजह से बहुत-से लोग अपनी परेशानियां लेकर उनके पास आया करते थे। चाचा में इतना उत्साह कहाँ से है इसी बात पर किशोर को अचरज था। चाचा किसके लिए जिंदा रहते हैं? किस प्रेरणा से जिंदा रहते हैं इस उम्र में? चाचा का खाना-सोना सब कुछ लॉज में हुआ करता था। लाज के अलावा उनकी दूसरी जिंदगी नहीं थी। वैसे किसी सप्ताह वे सिनेमा चले जाते थे। बस यही। फिर वे किसके लिए जिंदा रहते हैं? उन्होंने क्या जिंदगी में हार निराशा देखी ही नहीं है? ऐसे कैसे हो सकता है? सच पूछा जाय तो इस उम्र में जिंदा रहना ही कितना दुखपूर्ण है। पर चाचा के चेहरे पर कभी शिकन तक नहीं आती। किसी भी विषय पर वे चर्चा करने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। या यह भी कहा जा सकता है कि व्यक्तिगत मसलों पर सलाह देना उनके लाज की जिंदगी का एक खास हिस्सा था। उनके इसी स्वभाव की वजह से लाज के कई लोग अपने अपने रहस्य चाचा के आगे खोल दिया करते थे। किसी की मुहब्बत का मसला तो किसी का रुपये-पैसों का मसला, किसी का पारिवारिक झगड़ा, किसी की नौकरी का सवाल। सभी को चाचा अपनी सलाह दिया करते थे। गल्ले के एक ओर रखी कुर्सी पर हमेशा कोई न-कोई उनसे सलाह मशविरा लेते हुए बैठा रहता था। और उसी के साथ चाचा की बातें धीमे धीमे चलती रहती थीं। अगर यह न होता तो टेबिल खाली होने की राह देखने वालों के साथ वे राजनैतिक मसलों पर बातें किया करते थे। चर्चा मतलब, चाचा का भाषण। आज 'वेस्टर्न स्टार' ने चाचा के लिए अच्छी सामग्री पेश कर दी थी और उनका स्मगलिंग पर भाषण अपने रंग पर था।

"अरे स्साले सब नम्बरी चोर हैं। क्या मंत्री और क्या आफिसर! वह शाह वाला केस याद है आपको? दो करोड़ रुपये वाला? कुछ हुआ उस केस के बारे में? कुछ भी तो नहीं। कुछ होना-हवाना नहीं है। सब स्साला नाटकबाजी। सभी जो चोर हैं। अजी आप नहीं समझ पायेंगे। बड़े बड़े लोग इस चक्कर में फँसे रहते हैं। पिछली बार तो एक मंत्री ने साफ-साफ — दिया था कि वे उनको नहीं पकड़ सकते, इतने बड़े हैं वे। वह दुनिया

पिता के आगे मुह खोलन की देर है कि नीला मेरी बाँहों म लोट सकती है। लेकिन विवेक की वजह से वह ऐसा नही करता इस बात को वह गव के साथ कह सकता है। और तिस पर भी वह उसक ख्वाब देखा करता था। उन ख्वाबो से वह उसे अलहदा नही कर सकता था। वम्बई क दायरे म वह अपनी कमजोरी भूलने की कोशिश किये जा रहा था।

कश खीचत हुए किशोर ने कपडे निकाले और सिगरेट खत्म होन तक वह यू ही खडा रहा। फिर टोटा बाहर फेंककर वह ठडे पानी से नहाने लगा। अपने बदन और अपने चेहरे पर उसे गव न था। अपने व्यक्तित्व के बारे म वह उदासीन था। लेकिन नहान के दौरान उसे खुद ही शम महसूस होने लगती थी। पीला पडा कमज़ोर बदन अदर धँसा चेहरा। अपने मा बाप की हर कमजोरी उसने पायी है इस बात का उसे तीखा अहसास था। उसी का सगा भाई लबा चौडा रोबीला है। जयत क सामन खडे होन म भी उसे इसी वजह से तकलीफ हुआ करती थी। नहाने का यह वक्त सुबह स चढने वाली उदासीनता पर एक और परत बिछा देता था। और नीला ? इस तरह क बदन को नीला को अपना समझने का कोई अधिकार नही। वह सावली भले ही हो पर देखन म सुदर है। नल से बाल्टी म गिरने वाल पानी की आवाज़ के साथ किशोर के अजीब स्वर उभरने लगते। जब बाहर निकलता है तो हार के एहसास के साथ।

'कहिये हो गया नहाना वहाना ?' लाज मे गल्ले पर बठे चाचा या ही पूछत। किशोर सिफ हँस देता। चाचा को यो ही सवाल करने की आदत है। नहान के बाद बाथरूम से निकलत ही चाचा पूछ लेते हैं कि 'कहिये हो गया नहाना वहाना ?' खाना हो जाने के बाद गल्ले पर स सौंफ खाते ही पूछते हैं 'हा गया खाना ?' और आफिस से अधमरी हालत म लौटने पर खत्म हो गया आफिस ?'

शुरु शुरु म किशोर को चाचा पर बेहद गुस्सा आता था। पर बाद म आदत पड गयी। बातें करने के लिए चाचा इसी तरह के सवाल करके भूमिका बनाया करते हैं। जवाब के लिए कोई मुह भर खोले तो चाचा की गप्पें चालू हो जाती हैं। इसीलिए किशोर सिफ हस देता है।

चाचा के लिए कोई भी विषय चलता है। प्रेसिडेंट निक्सन की ग्लोबल पालिसी स लेकर बबई के राशनिंग तक और आजकल की लडकियो के फशन तक। चाचा अब सत्तर के हो चुके होंगे। सिर पर चाँद मोटा चश्मा कमज़ोर बदन और हज़ार झुर्रियाँ पडा चेहरा। ठड हो गर्मी हो, तेज हवा हो या बारिश, हर वक्त गल्ले पर चाचा धोती, कुर्ता और बडी पहने बठ रहते हैं। चाचा की प्राइवेट लाइफ के बारे म जानकारी किसी को भी नही

थी। लाज के मालिक को ज़रूर थी ऐसा लोग कहते हैं पर मालिक लाज पर अक्सर आता ही न था। चाचा ही सब देखभाल करते थे और हिसाब भी रखते थे। जब से लाज शुरू हुआ है तब से वे यहीं चिपके हुए हैं। उनके बच्चे वगैरह हैं या नहीं, यह भी कोई नहीं जानता। इस बात पर चर्चा वे अक्सर टाल देते थे। दूसरे विषयों पर वे ज़रूर बड़े हौसले के साथ चर्चा किया करते थे। हमेशा हँसता चेहरा और चौकस वृत्ति इसी वजह से लाज में रहने वाले युवा लोगों में चाचा बेहद प्रिय थे। चाचा के ज्ञान की वजह से बहुत-से लोग अपनी परेशानियाँ लेकर, उनके पास आया करते थे। चाचा में इतना उत्साह कहाँ से है इसी बात पर किशोर को अचरज था। चाचा किसके लिए ज़िंदा रहते हैं? किस प्रेरणा से ज़िंदा रहते हैं इस उम्र में? चाचा का खाना-सोना सब कुछ लाज में हुआ करता था। लाज के अलावा उनकी दूसरी ज़िंदगी नहीं थी। वैसे किसी सप्ताह वे सिनेमा चले जाते थे। बस यही। फिर वे किसके लिए ज़िंदा रहते हैं? उन्होंने क्या ज़िंदगी में हार निराशा देखी ही नहीं है? ऐसे कैसे हो सकता है? सच पूछा जाये तो इस उम्र में ज़िंदा रहना ही कितना दुखपूर्ण है! पर चाचा के चेहरे पर कभी शिकन तक नहीं आती। किसी भी विषय पर वे चर्चा करने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। या यह भी कहा जा सकता है कि व्यक्तिगत मसलों पर सलाह देना उनके लाज की ज़िंदगी का एक खास हिस्सा था। उनके इसी स्वभाव की वजह से लाज के कई लोग अपने अपने रहस्य चाचा के आगे खोल दिया करते थे। किसी की मुहब्बत का मसला तो किसी का रुपये-पैसों का मसला किसी का पारिवारिक झगड़ा, किसी की नौकरी का सवाल। सभी को चाचा अपनी सलाह दिया करते थे। गल्ले के एक ओर रखी कुर्सी पर हमेशा कोई न-कोई उनसे सलाह-मशविरा लेते हुए बैठा रहता था। और उसी के साथ चाचा की बातें धीमे धीमे चलती रहती थीं। अगर यह न होता तो टेबिल खाली होने की राह देखने वालों के साथ वे राजनैतिक मसलों पर बातें किया करते थे। चर्चा मतलब, चाचा का भाषण। आज वेस्टर्न स्टार' ने चाचा के लिए अच्छी सामग्री पेश कर दी थी और उनका स्मगलिंग पर भाषण अपने रंग पर था।

"अरे स्साले सब नम्बरी चोर हैं। क्या मंत्री और क्या आफिसर! वह शाह वाला केस याद है आपको? दो करोड़ रुपये वाला? कुछ हुआ उस केस के बारे में? कुछ भी तो नहीं। कुछ होना हवाना नहीं है। सब स्साला नाटकबाज़ी। सभी जो चोर हैं। अजी आप नहीं समझ पायेंगे। बड़े बड़े लोग इस चक्कर में फँसे रहते हैं। पिछली बार तो एक मंत्री ने साफ़-साफ़ कह दिया था कि वे उनको नहीं पकड़ सकते, इतने बड़े हैं वे। वह दुनिया

ही और है साहब ! आपकी बम्बई अलग है और उनकी बम्बई कुछ दूसरी ही है जनाब ! वहाँ का सारा हिसाब लाखों में हुआ करता है। और पेपर वाले भी क्या लिखेंगे खाक ? इसी वेस्टर्न स्टार के मालिक के क्या क्या लफड़े हैं जानते हैं आप ? अजी यहाँ के किसी भी आदमी पर भरोसा नहीं करना चाहिए। जरा फोर्ट के होटल में घूम के तो देखिए कैसा पैसा बहता रहता है ! और वह कोस्टा ? गप्पें लगाता है यह करेंगे, वह करेंगे। किसी दिन आप लोग देखेंगे कि वह कैसे चुप बैठा हुआ होगा। अजी पैसा किसे नहीं चाहिए ? और यह लोग तो किसी को भी खरीद सकते हैं। कोस्टा क्या है उनके आगे ? अपनी कीमत जरूर बढ़ाए हुए है बस्स। कोस्टा इतनी हाय तोबा मचाये हुए है पर आज तक किसी ने मुकद्दमा किया है उसकी गरज ही नहीं किसी को। वजह यह कि वे जानते हैं कि उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। एक ही क्या हजार कोस्टा भूँकते रहें पर उनकी मूँछों का एक बाल भी कोई तोड़ नहीं सकता। चाचा का भाषण चल रहा था। सामने कोई न हो तो जरूर रुकावट आ जाती थी।

तेजी से कपड़े जूते पहनकर किशोर कमरे से बाहर आ गया। नौ ग्यारह हो चुके थे। मतलब नौ उन्नीस की गाड़ी मिलना नामुमकिन ही था। खाना वाना छोड़ना जरूरी था। किशोर काउंटर के सामने से जाने लगा तो चाचा ने पूछा 'कहिये क्यों साहब आज खाने की छुट्टी ?'

''हाँ। जरा देर हो गयी है।'

यह तो ठीक नहीं। लाज का फायदा किये जा रहे हो।'

किशोर सिर्फ हँस दिया और उसका ध्यान चाचा की बगल में बैठे अनिल पवार की ओर गया। पवार ने कहा बस एक सेकिंड में भी जा रहा हूँ स्टेशन पर।

चाचा फिर मैं आप पर छोड़ूँ न ?

'बिलकुल। आज दोपहर ही फोन किये देता हूँ।''

थैंक्स।

पवार किशोर का रूम मेट है। महिंद्रा में असिस्टेंट इंजीनियर है। एकदम स्मार्ट और बड़ा ही उत्साही।

बाहर आते ही उसने किशोर के कंधे पर जोर से हाथ रखा और कहा बस यार, काम हो गया। चलो आज, कहाँ खाना खाते हो ?'

क्यों क्या हुआ ? '

अरे हर शाम क्या कहता रहता हूँ मैं ?'

' अच्छा अच्छा—वह ?'

अजी यह पूछो कि वाकई हुआ क्या ? बसंती को अपने पिताजी की

बड़ी फ़िक्र है। मेरा नाम पता चल जाय तो चीखेंगे चिल्लायेंगे।"

'फिर ?"

'मुझे खुद डर लगता है। पर चाचा मान गये हैं। वे खुद बात करने वाले हैं। उनकी पुरानी पहचान है। उनका कहना है कि बस काम हुआ ही समझो।"

'गुड लक!"

ओह हेल!" अनिल ज़रा ज़ोर से बोला "हम तो इतना बता रहे हैं और तुम हो कि बस गुड लक कह रहे हो। वाकई बड़े ठंडे मिज़ाज के आदमी हो यार। इसी बात पर तो गुस्सा आता है।'

कुछ देर तक तो कोई न बोला। गाड़ी पकड़ने के लिए दोनों तेज़ी से कदम बढ़ाए जा रहे थे। वे अब तक तिलक ब्रिज पर चढ़ रहे थे। पुल पर काफी रेल-पेल थी।

यार मैं तुमसे यों ही बक झक करता रहता हूँ। तुम ठंडे-के-ठंडे। तुमने कभी प्यार किया है?'

किशोर ने चेहरा ऐसा बनाया जैसे हँस रहा हो। पवार की ओर न देखते हुए उसने कहा, 'मेरे चेहरे से तुमको लगता है कि मैं किसी से मोहब्बत कर सकता हूँ।"

दोनों दादर के पुल पर आ गये और उलटी तरफ की गाड़ी पकड़ने के इरादे से पवार निकल गया।

चर्चगेट की ओर जाने वाले प्लेटफार्म पर बेहद भीड़ थी। गाड़ियों में कुछ गड़बड़ हो गयी थी। क्या हुआ था, कुछ समझ में नहीं आ रहा था। लेकिन प्लेटफार्म पर पाँव रखने के लिए भी जगह न थी। तभी एक भरी हुई गाड़ी प्लेटफार्म पर आयी। गाड़ी के चारों ओर लोग चिपके हुए थे। दरवाज़ों पर खिड़कियों पर आदमी लटके हुए थे। चींटियाँ जिस तरह किसी दाने को ढकेलते हुए ले जाती हैं उसी तरह जैसे लोग भी गाड़ी को ले जा रहे हों। गाड़ी रुकी तो उतरने-चढ़ने वालों में काफी धींगामुश्ती हुई।

किशोर के बदन में काँटे उभर आये। प्लेटफार्म की भीड़ देखकर उसे लगा था कि आज वह आफ़िस न पहुँच सकेगा। वजह यह कि इस भीड़ में घुसने की उसकी हिम्मत न थी। फिर घंटे डेढ़ घंटे तक भीड़ कम होने के आसार नज़र न आ रहे थे। भीड़ तो और भी बढ़ने वाली थी। रोज़ाना की भीड़ में ही किशोर को चढ़ने में तकलीफ होती थी और आज तो बात ही और थी। एक ही छुट्टी बची है। जयंत के लिए उसे बचाये रखना ज़रूरी है। पर अब कोई फायदा नहीं। वैसे देखा जाये तो कुछ कोशिश करने पर

गाडी मिल भी सकती है और आज देर भी हो जाये तो चल सकता है। गरज यह कि गाडी की गडबड की बात आफिस तक पहुँच चुकी होगी। कोशिश करने म कोई हर्ज भी नहीं है। लेकिन आज मन नही हो रहा है। आज सुबह से ही उस उदासीनता ने बुरी तरह घेर रखा है। आज सुबह जल्दी नही उठना चाहिए था तिस पर अनिल पवार। मैं उस जैसा क्यो नही कर पाता ? मैं अपनी प्रॉब्लम चाचा को बता दूँ तो ? इपॉसिबल ! पवार ने पूछा था तो मैंने ऐसा सलूक क्यो किया था ? वैसे मेरे सीने म भी कितनी आग है। पवार की समस्या मेरी समस्या के आगे कुछ भी नही है। बसती का बाप ब्राह्मण है। वह इस मराठा को अपनी बेटी देने म हिचकिचायगा ही। पर अनिल की कोई प्राब्लम नही। वह स्मार्ट है होशियार है। हर महीने की तनखाह खासी अच्छी है। घर की खेती बाडी है। और खास बात यह कि बसती उस पर मरती है। हो सका तो वह उसके साथ भाग भी सकती है। वह बेकार ही डरता है। रोज़ाना लबी साँसें भरता रहता है। स्साले को मालूम ही नही मोहब्बत सिगरेट के टोटे जैसी जलने वाली मोहब्बत क्या होती है मालूम हो भी नही सकता। मेरी बात और है। इतनी सरल नही। किसी को बताने से प्राब्लम हल न हो सकेगी। कहने से क्या फायदा ?

भीड की वजह से किशोर को पसीना आ गया। काफी देर से उसने सिगरेट न पी थी। जेब से चारमीनार निकालकर उसने सुलगा ली। दो तीन सिगरेट वह पी गया। गाडी पकडने की हिम्मत अपने म पैदा करना चाहता था। इसी वजह से वह बैठ गया। प्लेटफाम पर खडे लोगो के पाँवो की ओर वह देखने लगा। हर तरह के पाँव। कुछ ऊचे जूतो म बँधे हुए कीमती पैंटो म छिपे हुए फटी चप्पलो म उलझे हुए। कुछ मोटे कुछ नगे। कुछ हिलती साडियो म तो कुछ घुटनो तक खुले हुए गोरे हसीन पाँव।

वह जिस बेंच पर बैठा था उसके नीचे दो काले काले पाँव उसे नजर आये। उसने मुडकर देखा तो एक आदमी आधी खाकी नेकर और काला कुर्ता पहने लेटा नजर आया। अभी तक किस चीज की बू आ रही थी इस बात को किशोर समझ गया। उसके सारे बदन पर धूल बुरी तरह चिपकी हुई थी। औंधा पडा होने की वजह से उसका मुँह नजर न आ रहा था। पर उसके मुँह से निकली हुई गदी चीज जरूर नजर आ रही थी। उस पर मक्खियाँ बैठी हुई थी।

पल भर किशोर को लगा कि वह आदमी मर चुका है। और उसके सारे बदन पर काँटे उभर आये। लेकिन तभी उसे उसकी ऊपर नीचे होने

वाली पीठ दिखायी दी और उसे कुछ राहत मिली। आफिस न जाने वाली बात कुछ देर के लिए उसके मन मे हट गयी।

मन इस तरह हलका हो जाता है इस बात का अचरज किशोर को न हुआ। बम्बई की यही खासियत है। आदमी कितना भी उदास क्यो न हो, असफलता के आखिरी छोर तक पहुँच जाये—फिर भी उसमे दुबारा उत्साह आ जाता है। इधर-उधर देखें तो अपने से भी बदतर ज़िन्दगी नजर आ जाती है। फिर उसे अपने दुख-दर्द महसूस नही हो पाते। अपनी गरीबी का एहसास जाता रहता है। उस दुख-दर्द या गरीबी के बारे में किसी से बातें करना भी अजीब हास्यास्पद लगने लगता है इसीलिए बम्बई हमें ग्रेट लगती है। बम्बई छोड़ने का दिल नही होता। बम्बई में विसंगतियाँ भी कम नही हैं। बम्बई मे आदमी आ जाय तो परेशान हो जाता है। लेकिन साथ-साथ वह उसे चाहने भी लगता है। बम्बई की भीड़ बदन पर काँटे खड़े कर देती है। लेकिन उसे भूलने में मदद की पूरी गुंजाइश भी रखती है। एक पल बम्बई अच्छी लगती है तो दूसरे पल उससे नफरत भी होने लगती है। कई चीजें इर्द गिर्द होती हैं। किसी में भी मन रमाया जा सकता है। क्या करें यह सवाल कभी उभरता ही नही। ज़िन्दगी तेजी से भागने लगती है। सोचने के लिए वक्त ही नहीं मिलता। इसी वजह से हरेक को बम्बई अपनी ही लगती है। एक अजीब अपनापा महसूस होता रहता है। गरीब की बम्बई राजे महाराजाओं की बम्बई, चोरों की बम्बई स्मगलर्स की बम्बई, क्लर्कों की बम्बई फिल्मी एक्टर एक्ट्रेस की बम्बई बेकारों की बम्बई—और इन सब के लिए बम्बई काफी है।

सिगरेट के लंबे और गहरे कश खींचता हुआ किशोर स्टाल के करीब खड़ा हो गया। प्लेटफार्म पर लहरों की तरह भीड़ आ रही थी। और एक के पीछे दूसरी आती हुई गाड़ियाँ उस भीड़ को अपने पेट में समाकर चल देती थीं। पल-दो पल खामोशी आसमान से उतर कर धरती को छू लेती है और फिर जैसे कहीं खो जाती है। एक अजीब तरह से वह क्षण आता है और किसी भयाक्रान्त स्थिति का आक्रमण हो जाता है। आदमी उस समय एक-दूसरे की ओर देखते भर हैं। लेकिन उन नजरों में भी अदृश्य भय छिपा रहता है। लेकिन केवल पल भर ही। लगता है वह जड़ता सारी दुनिया को अपने में समेट लेती है और दूसरे ही पल फिर हो हल्ला शुरू हो जाता है और यह क्षण आदमी भूल जाता है।

लाल-नीली हरी पीली, गुलाबी स्कर्टें और साड़ियाँ पहने औरतें, तरह-तरह के कपड़े पहने आदमी एक ही दिशा में नदी की लहरों की तरह बहे चले जा रहे हैं। और मैं जैसे किसी चट्टान से टिका उसी तरह सिगरेट

का कश खीचता हुआ खडा हूँ। वे लोग क्यो भाग रहे हैं? बास गुस्सा होगा इस वजह से? पैसा के लिए? महीने की तनख्वाह के लिए? बस इतनी ही उनकी जिन्दगी है? इन गाडियो से बँधी इस प्लेटफाम के इर्द गिर्द बम्बई जैसे अजीब तरह से बँधी हुई है। क्या इस बात का एहसास उन लोगों को नही है? दूसरी तरफ के रास्तो पर होने वाली रेल-पेल का एहसास क्या उन्हे नही है? और उधर आधे मील की दूरी तक फैले समदर की जानकारी उन्हे नही है? समदर पहाड जमीन पेड पशु पक्षी आसमान-तारे आदमी—कितनी बडी दुनिया इर्द-गिर्द है। फिर भी इन लोगो की दुनिया जैसे प्लेटफाम तक सीमित हो गयी है।

और मैं भी यहाँ सिगरेट फूँकता हुआ क्यो खडा हुआ हूँ? किस की राह देख रहा हूँ? मेरी दुनिया भी इन की तरह ही छोटी सी है। मैं किसके लिए रुका हुआ हूँ? मेरा महाकाव्य किसके लिए रुका हुआ है? नीला के लिए—मेरी मौत के लिए? महायुद्ध के लिए या महा प्रलय के लिए? अपनी कमजोरी का एहसास कराने के लिए इतनी भीड, यह प्लेटफाम और स्टेशन ही काफी है उसके लिए समदर और आसमान की ज़रूरत नही है। और आज ही ऐसा एहसास किस लिए? मैं पैदा हुआ तभी से इस एहसास को चिपटाये हुए हूँ। सभी की दुनिया के लिए इस देश की मर्यादा है। अपनी दृष्टि के आगे जो दिखायी दे वह अपनी दुनिया है। इससे परे की दुनिया की फिक्र किसलिए? उसका शायद अस्तित्व ही न हो। नीला का इस समय अस्तित्व है यह मैं किस तरह जान सकता हूँ? अपनी याद के सहारे ही न? इस पल वह मरी हुई भी हो सकती है। लेकिन नज़रो से देखे और उसकी मौत कानो से सुने बगैर वह मेरी दुनिया मे होगी और मरने के बाद भी होगी ही—ऑफिस लॉज चाचा, बाबूजी जयंत, घर—सभी कुछ इस दुनिया मे है।

सिगरेट का टोटा फेंककर किशोर खुद पर ही हँस पडा। मैं किसी भी खयाल का आखिरी सिरे तक नही पहुँचा सकता। उलझकर उल्टी बात ही सोचता रहता हूँ। इस बात का एहसास उसे हुए जा रहा था। सिगरेट का टोटा पाँव के तले कुचलकर वह हँस पडा। सामने खडी एक गुजराती गोरी लडकी उसकी ओर ही देखे जा रही है उसे ऐसा लगा। वह जामुनी साडी पहने हुए थी। मैंचिंग ब्लाउज था और एक बच्चे की उँगली वह पकडे हुए थी। उसके जैसा ही वह छोटा लडका भी खूबसूरत था। वह भी किशोर की ओर देखे जा रहा था। किशोर की नज़रें उस तरफ हुई और उस औरत ने अपनी आँखें दूसरी ओर फेर ली। वह अब इंडीकेटर की ओर देख रही थी। हम काफी देर से खुद पर ही हँसे जा

रहे थे—इस बात को वह समझ गया। उसने धीरे से उस औरत से नजर हटायी और फिर वह धीमे धीमे सीढ़ियों की ओर बढ़ने लगा।

पुल पर आते ही किशोर के कंधे पर किसी का हाथ आया और अनिल पवार हँसते हुए बोला, 'वाह खूब! मुझे लगा था कि तुम आज आफिस से गोता लगा दोगे। दूसरी ओर के प्लेटफार्म से मैं तुम्हारी ओर ही देख रहा था।"

'और तुम? तुम नहीं जा रहे आफिस?' किशोर ने पूछा।

"हां भीड़ देखी और मूड बदल गया। ऊपर का ट्रंक शायद खराब हो गया है। आज आफिस में वैसे भी जी न लगता यार।'

किशोर को कुछ अच्छा लगा। आफिस जाना अखरता है लेकिन बस दिन भर क्या करेंगे इस सवाल से भी बदन पर कांटे उभर आते हैं। अब अनिल की कम्पनी में समय अच्छा गुजर जायगा।

'यार आज दिल बहुत खुश है। अच्छी-सी सिगरेट पीयेंगे" अनिल ने कहा। पुल उतरकर उसने एक पान वाले की दुकान से कीमती सिगरेट का पैकेट खरीदा। अनिल कभी-कभार ही सिगरेट पीता है। लेकिन अमीर घराने का होने की वजह से उसकी आदतें शाही हैं। जब सिगरेट पीता है तो काफी कीमती पीता है। किशोर चारमीनार के अलावा दूसरी नहीं पीता, इस बात को वह अच्छी तरह जानता था। इसी वजह से उसने खुद सिगरेट सुलगा ली और बोला आज तुम्हारा और कोई प्रोग्राम नहीं है न? फिर चलो हमारे साथ। कुछ घूमते घामते हैं। फिर बढ़िया खाना खायेंगे। तीन चार बजे तक लाज की ओर मुझे नहीं जाना है।

किशोर को कोई काम न था। बिना कुछ कहे ही वह अनिल के साथ हो लिया।

'आज फस्ट क्लास मुर्गा खायेंगे। शाम को खाना खा सकेंगे या नहीं, पता नहीं। पेट में तो अभी से न जाने कैसा-कैसा हो रहा है यार।' अनिल कह रहा था आज किस्मत का फैसला होने वाला है। क्या होगा, खुदा ही जाने। फैसला हो जाने तक बसती से मिलने को भी दिल नहीं करता। शाम को मिलने वाली है वह। लग रहा था जैसे अनिल आज काफी बात करना चाहता है।

अनिल बोले जा रहा था। किशोर को खुशी हो रही थी। वह खुद चुप ही था। लेकिन अनिल की बातों में बहक न जाये, इस बात का भी खयाल रख रहा था। अनिल की बातें उसे अच्छी लगती हैं कुछ भी अर्थ न हो तो भी। उसकी बकवास से एक ऊब सी आ जाती है। काफी कुछ भूल जाते हैं। बाबूजी को लिखा जाने वाला खत, जयंत नीला, सीने में

का कश खींचता हुआ खडा हूं। वे लोग क्या भाग रहे हैं? काम गुस्सा होगा इस वजह से? पैसों के लिए? महान की तनखाह के लिए? बस इतनी ही उनकी ज़िन्दगी है? इन गाडियों से बँधी इस प्लेटफार्म के इर्द गिर्द बम्बई जैसे अजीब तरह से बँधी हुई है। क्या इस बात का एहसास उन लोगों को नहीं है? दूसरी तरफ के रास्तों पर होने वाली हलचल का एहसास क्या उन्हें नहीं है? और उधर आधे मील की दूरी तक फैले समन्दर की जानकारी उन्हें नहीं है? समन्दर पहाड ज़मीन पेड पशु पक्षी आसमान-तारे आदमी—कितनी बडी दुनिया इर्द-गिर्द है। फिर भी इन लोगों की दुनिया जैसे प्लेटफार्म तक सीमित हो गयी है।

और मैं भी यहाँ सिगरेट फूँकता हुआ क्यों खडा हुआ हूँ? किस की राह देख रहा हूँ? मेरी दुनिया भी इन की तरह ही छोटी सी है। मैं किसके लिए रुका हुआ हूँ? मेरा महाकाव्य किसके लिए रुका हुआ है? नीला के लिए—मेरी मौत के लिए? महायुद्ध के लिए या महा प्रलय के लिए? अपनी कमज़ोरी का एहसास कराने के लिए इतनी भीड यह प्लेटफार्म और स्टेशन ही काफी हैं, उसके लिए समन्दर और आसमान की ज़रूरत नहीं है। और आज ही ऐसा एहसास किस लिए? मैं पैदा हुआ तभी से इस एहसास को चिपटाये हुए हूँ। सभी की दुनिया के लिए इस देश की मर्यादा है। अपनी दृष्टि के आगे जो दिखायी दे वह अपनी दुनिया है। इससे परे की दुनिया की फिक्र किसलिए? उसका शायद अस्तित्व ही न हो। नीला का इस समय अस्तित्व है यह मैं किस तरह जान सकता हूँ? अपनी याद के सहारे ही न? इस पल वह मरी हुई भी हो सकती है। लेकिन नज़रों से देखे और उसकी मौत कानों से सुने बगैर वह मेरी दुनिया में होगी और मरने के बाद भी होगी ही—ऑफिस, लाज चाचा बाबूजी जयंत घर—सभी कुछ इस दुनिया में है।

सिगरेट का टोटा फेंककर किशोर खुद पर ही हँस पडा। मैं किसी भी खयाल का आखिरी सिर तक नहीं पहुँचा सकता। उलझकर उल्टी बातें ही सोचता रहता हूँ। इस बात का एहसास उसे हुए जा रहा था। सिगरेट का टोटा पाँव के तले कुचलकर वह हँस पडा। सामने खडी एक गुजराती गोरी लडकी उसकी ओर ही देखे जा रही है उसे ऐसा लगा। वह जामुनी साडी पहने हुए थी। मैचिंग ब्लाउज़ था और एक बच्चे की उँगली वह पकडे हुए थी। उसके जैसा ही वह छोटा लडका भी खूबसूरत था। वह भी किशोर की ओर देखे जा रहा था। किशोर की नज़रें उस तरफ हुई और उस औरत ने अपनी आँखें दूसरी ओर फेर ली। वह अब इंडीकेटर की ओर देख रही थी। हम काफी देर से खुद पर ही हँसे जा

रहे थे—इस बात को वह समझ गया। उसने धीरे से उस औरत से नज़र हटायी और फिर वह धीमे धीमे सीढ़ियों की ओर बढ़ने लगा।

पुल पर आते ही किशोर के कंधे पर किसी का हाथ आया और अनिल पवार हंसते हुए बोला, "वाह खूब! मुझे लगा था कि तुम आज आफिस से गोता लगा दोगे। दूसरी ओर के प्लेटफार्म से मैं तुम्हारी ओर ही देख रहा था।'

और तुम? तुम नहीं जा रहे आफिस?" किशोर ने पूछा।

'हाँ भीड़ देखी और मूड बदल गया। ऊपर का ट्रैक शायद खराब हो गया है। आज आफिस में वैसे भी जी न लगता यार।'

किशोर को कुछ अच्छा लगा। आफिस जाना अखरता है लेकिन बस दिन भर क्या करेंगे इस सवाल से भी बदन पर काँटे उभर आते हैं। अब अनिल की कम्पनी में समय अच्छा गुज़र जायेगा।

'यार आज दिल बहुत खुश है। अच्छी-सी सिगरेट पीयेंगे" अनिल ने कहा। पुल उतरकर उसने एक पान वाले की दुकान से कीमती सिगरेट का पैकेट खरीदा। अनिल कभी-कभार ही सिगरेट पीता है। लेकिन अमीर घराने का होने की वजह से उसकी आदतें शाही हैं। जब सिगरेट पीता है तो काफी कीमती पीता है। किशोर चारमीनार के अलावा दूसरी नहीं पीता, इस बात को वह अच्छी तरह जानता था। इसी वजह से उसने खुद सिगरेट सुलगा ली और बोला आज तुम्हारा और कोई प्रोग्राम नहीं है न? फिर चलो हमारे साथ। कुछ घूमते घामते हैं। फिर बढ़िया खाना खायेंगे। तीन चार बजे तक लाज की ओर मुझे नहीं जाना है।'

किशोर का कोई काम न था। बिना कुछ कहे ही वह अनिल के साथ हो लिया।

'आज फर्स्ट क्लास मुर्गा खायेंगे। शाम को खाना खा सकेंगे या नहीं, पता नहीं। पेट में तो अभी से न जाने कैसा-कैसा हो रहा है, यार।" अनिल कह रहा था 'आज किस्मत का फैसला होने वाला है। क्या होगा खुदा ही जाने। फैसला हो जाने तक बसती से मिलने का भी दिल नहीं करता। शाम को मिलने वाली है वह।' लग रहा था जैसे अनिल आज काफी बात करना चाहता है।

अनिल बोले जा रहा था। किशोर को खुशी हो रही थी। वह खुद चुप ही था। लेकिन अनिल की बातों में बहक न जाये इस बात का भी खयाल रख रहा था। अनिल की बातें उसे अच्छी लगती हैं कुछ भी अर्थ न हो तो भी। उसकी बकवास से एक ऊब-सी आ जाती है। काफी कुछ भूल जाते हैं। बाबूजी को लिखा जाने वाला खत, जयंत नीला, सीने में

उठता हुआ तूफान। पर बाबूजी को आज खत लिख ही देना होगा। आज वक्त भी है। वैसे भी आफिस से गोता लगा ही चुके हैं। लिख ही देंगे, मन की मुराद निकाल ही देंगे। नीला के बारे में भी लिख दूँ ? हर्ज ही क्या है ? गधा कहेंगे, कहते रहें। वह खत कैसा ज़हर-सा बदन में फैला रहा है। एकबारगी दिल कड़ा कर लिख ही देना चाहिए— पूज्य बाबूजी—सादर चरण स्पर्श।'

'आज बसती से मिलने आओगे ? अनिल पूछ रहा था।

ना। तुम लोगों के बीच आकवर्ड लगता है।'

स्टुपिड ! मेरे साथ तो दूसरा कोई लगा ही रहता है यार। तुम जानते ही हो। मुझमें कंट्रोल करने की ताकत ज़रा कम ही है।

नहीं आज बचे हुए काम कर डालने हैं।'

'दोपहर नहीं शाम के लिए कह रहा हूँ। दोपहर को चाचा उसके पिताजी को फोन करने वाले हैं। मेरे दिल की धड़कन तो अभी से तेज़ होने लगी है यार।'

तुम तो पागल हो। तुम्हें किस बात का डर है ?"

तुम्हें पता नहीं है यार बसती का बाप बड़ा सख्त आदमी है और वह बाप की सुनने वाली लड़की है।"

नानसेंस ! वह तो तुम्हारे साथ भाग भी सकती है।

अनिल ज़रा चुप हो गया। बसती को बुरा भला कहा जाये यह उसे पसंद न था। कई बार उसने किशोर के साथ बसती के बारे में बातें की थीं लेकिन एक बार भी वह उसके बारे में बुरा नहीं बोला था।

तुमने अभी उसे पहचाना नहीं है वह बोला।

मैं तो चेहरे से लड़कियों को भाँप लेता हूँ।'

तुम—?" कहकर अनिल हँस दिया। फिर उसे लगा कि हँसने से किशोर को बुरा लग सकता है इसलिए रुक गया।

किशोर के कंधे पर हाथ रखकर उसने उसे एक एयरकंडीशंड होटल के दरवाज़े की ओर मोड़ दिया। अन्दर के धीमे प्रकाश और ठंडक में उसे अच्छा लग रहा था। अनिल ने आर्डर दिया। फिर कीमती सिगरेट सुलगा ली। अब वह ज़रा गंभीर हो गया था।

'सच कहता हूँ किशोर मैंने अपने कई एडवेंचर्स तुम्हें बताये हैं। यह उनमें से नहीं है।

उसकी आवाज़ की टोन से किशोर का मन चकृत हो गया। उसे लगा, उसने बेकार ही उसे परेशान किया। अपनी सिगरेट बुझाकर उसने

पर इस तरह कहा किसने ? तुम शादी की बात कर रहे हो, उसी से

मतलब है कि ?"

अनिल चुप रहा। उसे वाकई सिगरेट पीना नहीं आता। लेकिन इस वक्त जरूर उसने जोर से कश खींचा था। धुएँ की ओर ताकती उसकी नजरों को देखकर किशोर को भी अचरज हुआ। उन आँखों में कभी भी आँसू आ सकते थे। उस वक्त वह एकदम भावुक हो गया था।

कुछ पल बाद अनिल ने उसकी ओर देखते हुए कहा, तुम खुद देख चुके हो कि मैं कितने सलीके से उससे पेश आता हूँ। सच कह रहा हूँ, मैं जब अकेला होता हूँ न तो बहुत सभ्यता से पेश आता हूँ।

कुछ पल रुककर अनिल ने फिर कहा, यार सच इस छोकरी ने मुझे पूरी तौर पर गुलाम कर लिया है। तुम नहीं जानते किशोर, वह सामने न हो तो मैं किस तरह जलता रहता हूँ। पहले काफी लड़कियों को होटलों में ले गया हूँ, पर मी कसम उसका हाथ छुआ तक नहीं। रास्ता चलते बदन छू जाय तो बदन में आग सी निकलती है। एक बार होटल में बिल देने के दौरान नहीं नहीं कहते हुए उसने हाथ पकड़ लिया था। तो माइ गाड! सननननन! एकदम जैसे बिजली का करंट छू गया हो। मैं इस तरह ओर देखता रहा कि वह रुकती सी रह गयी, एकदम घबरा गयी। उस दिन कोलाबा पहुँचने पर भी वह हालत खत्म न हो पायी।'

अनिल फिर रुक गया। दो-तीन कश खींचने तक चुप रहा। फिर कुछ हँसा।

तुम्हें शायद हँसी आ रही होगी। पर मेरा तो बस यों ही है यार। मोरेलिटी मेरी समझ में नहीं आती। किसी भी वर्कशाप का डिजाइन मुझे दिखाओ, मैं खुश हो जाऊँगा। इस मामले में पूरी फैक्टरी में मुझ जैसा कोई न होगा। लेकिन इथिक्स का यह लफड़ा मेरी समझ से बाहर है। इतनी बात जरूर है, कोलाबा में चाहे जितने पैसे खर्च हो जायें, बमनी को हाथ नहीं लगाऊँगा। इसमें भी क्या कोई मोरेलिटी है?'

'कमाल है! मुझे नहीं मालूम था कि तुम इतना सोचते हो।' किशोर ने कहा।

छोड़ो यार, सोचता कौन है? पर सिर्फ दमती की वजह से ऐसा होता है। [illegible]। किशोर, सच तुम्हें कैसे समझाऊँ, इसी को प्यार कहते हैं यार।'

किशोर हँस दिया। उसे खुद अपनी हँसी में कड़वाहट नजर आयी। अनिल अभी भी उसे मेलोड्रमेटिक लगता था। मेरी समस्या उससे अधिक गहरी है। क्या इसी बात का एहसास उस कड़वाहट में था? अनिल की मोहब्बत अभी भी इतनी गहरी नहीं है। वह छिछली है। नीला! उसने

बदन पर काँटे उभर आये। सिर भन्ना गया। उसे लगा जैसे इसी पल वह नीला के बारे मे अनिल को बताने जा रहा है। उसकी साँस तेज हो गयी। पेट मे अजीब खालीपन महसूस हुआ। किशोर ने हाथ की मुटि्ठयाँ कसकर बंद कर ली। आँखे मूंदकर सिर को एक झटका सा दिया और बड़ी कोशिश के साथ अपने आपको सम्हाला। अनिल का ध्यान मेरी इस हालत की ओर नहीं है यह देखकर उसे कुछ तसल्ली हुई। अनिल अभी कहीं दूर पर ही देख रहा था।

'तुम कुछ भी कहो किशोर पर सच कहता हूँ मोहब्बत इतनी परेशान करने वाली होती है यह न जानता था। एकदम खराब। तुम नहीं समझ पाओगे। मोहब्बत की जाती है बतायी नहीं जा सकती। तुम तो पागल हो। तुम कुछ बताते नहीं इसलिए तुम्हारी बात मैं नहीं जानता। कोलाबा चलने के लिए कहता हूँ तो चलते नहीं हो। सच पूछा जाये तो बसंती के बारे में इस तरह सोचना ही पाप है। लेकिन मेरे दिमाग में हमेशा आता है कि कोलाबा की बात एकदम थंडरफुल है। माई गाड! बसंती के साथ तो स्वर्ग मिल जायेगा स्वर्ग!'

अनिल की हालत देखकर किशोर को कोई अजूबा महसूस नहीं हुआ। यह तो अनिल की खास आदत है। लेकिन बसंती के बारे मे उसे उसकी फिलासफी जानकर अचरज हुआ। बसंती देखने मे खूबसूरत है। वह अपने पिताजी के कहे में भी हो सकती है। लेकिन उसकी आँखें कुछ अलग ही हैं। अनिल कुछ भी महसूस करे पर मेरा जजमेंट गलत हो ही नहीं सकता। अनिल अपने-आप को अनुभवी समझता है लेकिन बसंती के बारे में वह एकदम पगला है जैसे मैं नीला के बारे में हो जाता हूँ। यह बात ऐसी ही है कि मोहब्बत आदमी को पागल बना देती है। मैं अपनी सारी जिन्दगी तबाह किये जा रहा हूँ यह पागलपन नहीं तो और क्या है? देश के लिए समाज के लिए ज़िन्दगी होम करना अलग बात है पर नीला के लिए? ठीक है। अनिल ज़रूर पागल है। बसंती को उसने कस कर पकड़ रखा है।

अनिल ने जेब से लिफाफा निकाला। उसके अंदर से एक चमकीला कागज निकाला। किशोर को लगा कैडबरीज़ चाकलेट है लेकिन उस पर छपा लाल त्रिकोण देखकर वह सकपकाया। अनिल हँस दिया।

'देखा?' वह कागज उसने वापस जेब में रख लिया। 'बसंती से पहचान हुई तभी से खरीदकर रखा है। हमेशा की आदत। हमने किसी भी छोकरी को दगा नहीं दी लेकिन तभी से यह अपने पास है।'

किशोर ज़ोर से हँस दिया। लेकिन अनिल अभी भी गंभीर ही था।

'और अगर उसका बाप मना कर देगा तो जानते हो मैं क्या करन

वाला हूँ ? सीधे समदर पर चला जाऊँगा। मैं तरना नही जानता हूँ।'

'तुम तो एकदम बेवकूफ हो। तुम समदर जाओगे और वसती ? तुम कभी उसके बाप से मिले हो।'

'मैं खुद उसके घर गया हूँ। वह ऐसी नजरों से देखता है जसे खा जायेगा।'

'अरे, तुम बेकार ही ऐसा सोचते हो। तुम जसा इजीनियर, पसेवाला तुम्हें कौन मना करेगा ?

तुम नही जानते वसती का बाप बडा सरल है।"

'कोई बात नही। सिविल मैरिज कर लो। वसती माइनर तो है नहीं ?

अनिल न लबी और गहरी सास ली। किशोर को फिर हँसी आ गयी। कहता है समदर पर जायेगा। अनिल क्या समदर पर जायेगा ? लकिन उसे बात पसद आयी। अनिल के बोलने का भी स्टाइल पसन्द आया। समन्दर की ओर दोनों हाथ पसारे हुए जाना। किनारे से लहरें टकरा रही हैं उसकी परवाह किये बगैर उन लहरों का सामना हाथ फलाकर करना सीने म आक्रोश—नीला —और इस दुनिया की परवाह किय बगर समदर म दाखिल हो जाना। अनिल मुझे इतना क्या पसन्द आने लगा ? मतलब उसकी स्मार्टनस की वजह स वह पसन्द है लेकिन अब उसके बारे म अपनापा महसूस होने लगा। बसती के बारे म वह हमेशा ही बोलता रहता है। लेकिन अब उसकी भावनाएँ इतनी गहरी हैं, यह कब जान पाया था।

खाना हो जाने पर अनिल ने बिल चुकाया। सिगरेट सुलगाई और बोला 'अब क्या प्रोग्राम है ?'

लाज पर जाऊगा।"

'ना मैं तो चार पाँच बजे तक उधर नहीं जाऊँगा। अपनी तकदीर का फसला है। पिक्चर चलते हो ?'

'हुँह—तुम भी खूब हो।"

'ओ के, आई नो। हम तो चले अकेले।'

किशोर कभी पिक्चर नहीं चलेगा इस बात को अनिल जानता था।

अनिल जब ओ के' कह कर चला गया तो किशोर को अजीब-सा महसूस होने लगा। पूरा-का पूरा दिन अभी बचा हुआ था। बाबूजी का खत और नीला—इन दो बातों से कैसे मुकाबला किया जाय ? 'पूज्य बाबू जी सादर चरण स्पर्श।'

किशोर लाज पर वापिस आया तब डेढ़ बज चुका था। चारों ओर सन्नाटा

था। काउंटर पर चाचा नहीं थे। तकरीबन सभी कमरे बंद थे। ताला खोलकर उसने पंखा चलाया तो कुछ राहत मिली। अब बाबूजी को खत लिख देना चाहिए। या कुछ देर सो लें। सिगरेट पीयें कपड़े निकालकर बिस्तर पर लेटें और खत का मजमून सोचकर खत लिख दें।

किशोर ने कपड़े निकाल दिये। उसे अच्छा लगा। जलती सिगरेट मुँह में लिये ही वह बिस्तर पर पसर गया। पंखे की गोलाई में उसका बदन फिर दीखने लगा। धुआँ छोड़कर वह हँस पड़ा।

पूज्य बाबूजी—सादर चरण स्पर्श। खत लिखने की वजह यह कि काफी दिनों से आपका खत नहीं आया। आपकी तबियत कैसी है? माँ की तबियत बीच में खराब हो गयी थी जयंत के खत से मालूम हुआ था। अब वह कैसी है? मेरी चिंता न करें। अगले डिपार्टमेंटल टेस्ट में जरूर बैठने वाला हूँ।

नहीं। यह तो कार्ड पर लिखा जा सकता है। मुझे तो एक दूसरा ही खत लिखना है। बाबूजी को पता चलना चाहिए कि मैं कौन हूँ! मैं जयंत की तरह होशियार भले ही न होऊँ पर रंगीला जरूर नहीं हूँ। पैसा तो कोई भी कमा लेता है। लेकिन आदर्शों के लिए कौन अपनी जिन्दगी तबाह करता है?

किशोर फिर कड़वाहट से हँस दिया। कैसा आदर्श? उसे फिर एहसास हुआ कि वह कितना दंभी है। लेकिन एहसास हुआ यही क्या कम है! हम अपने आप को धोखा नहीं दे सकते। लेकिन धोखा देते रहते हैं और एहसास भी रहता है। हरेक को इसी तरह का एहसास रहता है पता नहीं? पर मुझे मालूम है कि यह मेरी कमजोरी है। मेरी कमजोरी और विकृति इसी एहसास से बनी होगी।

बस नीला के बारे में ऐसा मैंने क्यों किया? केस तो एकदम क्लीयर है। मैं नीला से जी जान से मोहब्बत करता हूँ। नीला खूबसूरत है होशियार है। नौकरी में आगे जरूर बढ़ेगी। मैं उसका हाथ माँग लूँ तो मना नहीं करेगी। उसका बाप तो मुझे देवता समझता है अगर तय कर लूँ तो नीला मुझे मिल सकती है। पर उसके दिल में मेरे लिए मोहब्बत है या नहीं इसकी शंका मैं क्यों करता हूँ? वह बहुत अच्छी तरह पेश आती है। मैंने उसके पिताजी की बीमारी में अपनी शायद छह साल की कमाई लगा दी होगी। पर उस बात का इससे क्या वास्ता? मुझे उससे प्रेम है—सीधी बात है। इसमें कौन सी उलझन है?

यही धोखा है। नीला मेरी खोज में नहीं है। आँखें मूँद कर वह अपना हाथ मेरे हाथ में दे देगी लेकिन सिर्फ अपने बाप के लिए। अपनी ज़िद के

लिए लेकिन उसकी आँखें कुछ और तलाशती रहेंगी। नीला अलग ही है। महत्त्वाकांक्षी है। वर्ना अपना कर्ज़ा चुकाने की ज़िद उसने न की होती। सच नीला! ज़िन्दगी भर तुम्हारी तलाश में रहा। तुम किसकी तलाश में हो? उसने पहली ही मुलाकात में जो तूफ़ान मेरे कलेजे में उठाया है वह अभी भी क़ायम है। तुम्हारे स्पर्श के बग़ैर वह शांत न होगा। और तुम कहाँ हो? मैं यहाँ अपना बदन जला रहा हूँ। तुम सिर्फ़ आ भर जाओ। यहाँ सिर्फ़ जलन है जलन। रोम रोम से चिनगारी उठ रही है। मैं हवा में टँगी मशाल की तरह तड़प रहा हूँ। धरा कहाँ है? आसमान कहाँ है? नीचे सिर्फ़ आग की लपटें हैं। हाय नीला तुम बड़ी कठोर हो। मेरी ज़िन्दगी में आयी ही क्यों? नीला! कान के क़रीब सैकड़ों वाद्य कर्कश सुर में बज रहे हैं।

किशोर की तड़पन जब रुकती है तो वह पसीने से तर होता है। हार की घनी छाया उसके चेहरे पर उभरी रहती है। आँखों में अजीब घृणा का भाव उभरा रहता है। वही तिरस्कार!

वह नारी बदन में यों ही पड़ा रहता है। ऊपर पंखा चलता रहता है, उसके बदन का पसीना सुखाते हुए।

कुछ देर बाद किशोर उठता है जैसे ऊँघ से उठा हो। पाँव में अजीब भारीपन था। बदन गर्म। कमरे में कोई नहीं है। वह टॉवेल लपेट लेता है। बाथरूम में जाकर ठंडा पानी बदन पर डालता है। तब उसे कुछ चैन आता है।

बाथरूम से लौटकर बाबूजी को खत लिखने का इरादा वह कुछ देर के लिए टाल देता है। कुछ चैन आ रहा था। नींद आ जाय तो ठीक रहे। इसी वजह से किशोर ने बदन फिर बिस्तर पर पसार दिया। एक सिगरेट सुलगा ली। वह कब बुझी उसे पता ही न चला। ऊँघ ज़रूर आयी पर नींद न आ सकी। बेचैनी थी। सपना था या क्या पता नहीं। शायद वह सपने में खत लिख रहा था।

पूज्य बाबूजी—सादर चरण स्पर्श। खत लिखने की वजह यह है कि ।

एक के बाद एक कागज़ लेकर वह यही मज़मून लिखे जा रहा था। कागज़ फाड़े जा रहा था। जब काफ़ी फटे हुए कागज़ इकट्ठे हो गये तब नीला पीछे से आयी और उसने उसके हाथ से पेन ले लिया। फिर वे दोनों सिर्फ़ एक-दूसरे की ओर देखते हुए बैठे रहे। कितनी देर बैठे रहे पता न था। तभी सीढ़ियों की आवाज़ आयी। फिर उसके ध्यान में आया कि वह नीला की ओर देख ज़रूर रहा है पर नीला का ध्यान उसकी ओर नहीं है। वह कहीं और देख रही है। उसकी नज़रें किस तरफ़ हैं, उसने देखा।

तभी कोस्टा जोर से जीप चलाता नजर आया। इतनी जोर से कि नीला ने अपने कानों पर हाथ रख लिये। सीटियों की आवाज तेज हो गयी। अरे यह तो अनिल पवार सीटियाँ बजा रहा है। उसने बसंती के कंधे पर हाथ रख दिया है। और वे दोनों नाचते गाते आ रहे हैं।

सीटियों की आवाज खत्म हुई तो सामने की कुर्सी पर जयंत बैठा हुआ था। जयंत एक पेपर पढ़ते हुए बैठा था। सच पूछा जाये तो इस सपने में जयंत के आने की कोई वजह ही नहीं थी। कोई संगत नहीं थी। जयंत की जगह कुछ और दीखेगा, इस इरादे से किशोर ने कुछ राह देखी। लेकिन जयंत अपनी जगह पर ही था। कुछ पल बाद किशोर को ध्यान आया कि वह ऊँघ नहीं रहा है। उसकी आँखें पूरी तरह खुली हुई हैं। जयंत वाकई सामने वाली कुर्सी पर बैठा हुआ है।

किशोर ने आँखों पर हाथ फिराया और वह उठ बैठा।

अरे तुम तो अगले सप्ताह आने वाले थे न ?"

ना। आज ही।'

अरे मैं तो भूल ही गया था। मतलब दिन ध्यान में नहीं रहा। आज छुट्टी ली अच्छा ही हुआ।'

दस बजे यहाँ आया था। फिर तुम्हारे आफिस में फोन किया तो पता चला आफिस गये ही नहीं हो।

हाँ। छुट्टी ले ली है।

किशोर जानता था कि जयंत के साथ इससे ज्यादा बातें नहीं हो पायेंगी। वाकई देखा जाये तो जयंत को मेरा आदर रखने की कोई जरूरत ही नहीं है। लेकिन वह बातें करते वक्त खास खयाल रखता है शायद मेरी उम्र का लिहाज करता होगा। मन में आदर भाव रखता है यह सच है। क्या वजह है पता नहीं। लेकिन उसके इस तरह के सलूक की वजह से मुझे अजीब शर्म-सी महसूस होती है। मेरे पास कितने रुपये हैं ? पच्चीस तीस होंगे। चाचा हो तो उनके पास से चालीस पचास उधार लेने चाहिए। जयंत के सामने अपनी गरीबी का प्रदर्शन नहीं होना चाहिए।

तुम बैठो। मैं चाय मँगाता हूँ और हाथ-पाँव धो आता हूँ।'

मुँह पर पानी मार कर किशोर ने हाथ-पाँव धोये। ठीक ठाक कपड़े पहन और किचन मे जाकर चाय के लिए बोल आया। काउंटर पर चाचा बैठे हुए थे। किशोर के माँगते ही चाचा ने तीस रुपये बिना झिझक के दे दिये।

गाँव हो आये ?' कमरे मे आते ही उसने जयंत से पूछा।

'पिछले सप्ताह ही गया था। बाबूजी ने आपको खत लिखने के लिए

कहा है।

'हूँ।'

आज कार्ड तो भेज ही देना चाहिए। पूज्य बाबूजी—सादर चरण स्पर्श। काफ़ी दिनों ।'

माँ की तबियत तो ठीक है न?"

'हाँ। ठीक है।"

खामोशी। सिर्फ पंखे की आवाज। चाय आने में अभी कितनी देर है? जयंत और भी स्मार्ट और रोबीला नजर आने लगा है।

"इंटरव्यू कब—कल ही है न?"

फाइनल इंटरव्यू तो कभी का हो चुका। यहाँ तो बस नामिनल टेस्ट है। सिलेक्शन हो ही चुका है।'

'गुड। पोस्टिंग कहाँ होने वाली है?'

चार ही जगह हैं—बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता और मद्रास। कुछ दिनों के लिए बम्बई रहना पड़ेगा।'

'अरे वाह!'

माई गाड! किशोर के पेट में कुछ अजीब सा महसूस हुआ। जयंत बम्बई में रहेगा मतलब आफत! उसे कार एलाउंस भी मिलेगा। सब्सिडाइज्ड फ्लैट मिलेगा—दीगर सुविधाएँ भी होंगी। यंग डशिंग एक्जिक्यूटिव! और उसका बड़ा भाई? सचिवालय में फाइनेंस डिपार्टमेंट में क्लर्क! किशोर के सीने में अजीब-सा दर्द उठा। वैसी बात नहीं। जयंत पर तो उसे अभिमान है। सीने में दर्द तो इसलिए कि वह अब बार बार मिलता रहेगा।

किशोर को लगा कि एकदम सिर पर बिजली गिर गयी। जयंत अब शादी का विचार कर रहा होगा और मैं उसके रास्ते में आड़े आ रहा हूँ। अभी तक यह बात मेरे दिमाग में क्यों नहीं आयी? जयंत छब्बीस साल का है। इस महीने से तेरह-चौदह सौ कमाने लगेगा।

आज मैं बाबूजी को खत लिखने वाला हूँ,' किशोर जल्दबाजी में बोल पड़ा।

जयंत चुप रहा। कुछ पल यों ही चुप्पी में निकल गये। पंखे की आवाज कुछ तीखी और तेज हो गयी है। पहले इतनी कर कर की आ नहीं आती थी। चाय अभी तक नहीं आयी।

अरे, अभी तक चाय नहीं आयी?

'कोई जल्दी नहीं। आज पूरा दिन मैं खाली ही हूँ।"

'कहाँ रुक रहे हो?'

तभी कोस्टा ज़ोर स जाप चलाता नज़र आया। इतनी ज़ोर से कि नीला न अपने कानो पर हाथ रख लिये। सीटियो की आवाज़ तेज़ हो गयी। अरे यह तो अनिल पवार सीटियाँ बजा रहा है। उसने बसती के कधे पर हाथ रख दिया है। और वे दोनो नाचत गाते आ रहे हैं ।

सीटियो की आवाज़ खत्म हुई तो सामने की कुर्सी पर जयत बठा हुआ था। जयत एक पेपर पढत हुए बठा था। सच पूछा जाये तो इस सपने म जयत के आने की कोई वजह ही नही थी। कोई सगत नही थी। जयत की जगह कुछ और दीखेगा, इस इरादे से किशोर ने कुछ राह देखी। लेकिन जयत अपनी जगह पर ही था। कुछ पल बाद किशोर को ध्यान आया कि वह ऊँघ नही रहा है। उसकी आँखें पूरी तरह खुली हुई है। जयत वाकई सामन वाली कुर्सी पर बठा हुआ है।

किशोर न आँखों पर हाथ फिराया और वह उठ बठा।

अरे तुम तो अगले सप्ताह आने वाले थे न ?'

'ना। आज ही।

अरे, मैं तो भूल ही गया था। मतलब दिन ध्यान म नही रहा। आज छुट्टी ली अच्छा ही हुआ।

दस बजे यहाँ आया था। फिर तुम्हारे आफिस म फोन किया तो पता चला आफिस गये ही नही हो।

हाँ। छुट्टी ले ली है।

किशोर जानता था कि जयत के साथ इससे ज्यादा बातें नही हो पायेंगी। वाकई देखा जाये तो जयत को मेरा आदर रखने की कोई ज़रूरत ही नही है। लकिन वह बातें करत वक्त खास खयाल रखता है शायद मेरी उम्र का लिहाज़ करता होगा। मन म आदर भाव रखता है यह सच है। क्या वजह है पता नही। लेकिन उसके इस तरह के सलूक की वजह से मुझे अजीब शर्म-सी महसूस होती है। मेरे पास कितने रुपये हैं ? पच्चीस तीस होंगे। चाचा हो तो उनके पास से चालीस पचास उधार लने चाहिए। जयत के सामन अपनी गरीबी का प्रदशन नही होना चाहिए।

'तुम बठो। मैं चाय मँगाता हूँ और हाथ-पाँव धो आता हू।'

मुह पर पानी मार कर किशोर ने हाथ-पाँव धोये। ठीक ठाक कपड़े पहन और किचन मे जाकर चाय के लिए बोल आया। काउन्टर पर चाचा बठे हुए थ। किशोर के माँगते ही चाचा ने तीस रुपये बिना झिझक के दे दिये।

गाँव हो आये ?' कमरे म आते ही उसने जयत से पूछा।

पिछले सप्ताह ही गया था। बाबूजी ने आपको खत लिखने के लिए

कहा है।"

'हूँ।'

आज कार्ड तो भेज ही देना चाहिए। 'पूज्य बाबूजी—सादर चरण स्पर्श। काफ़ी दिनों ।

माँ की तबियत तो ठीक है न ?'

'हाँ। ठीक है।'

ख़ामोशी। सिर्फ़ पंखे की आवाज़। चाय आने में अभी कितनी देर है? जयंत और भी स्मार्ट और रौबीला नज़र आने लगा है।

'इंटरव्यू कब—कल ही है न ?"

'फ़ाइनल इंटरव्यू तो कभी का हो चुका। यहाँ तो बस नॉमिनल टैस्ट है। सिलेक्शन हो ही चुका है।"

गुड। पोस्टिंग कहाँ होने वाली है ?'

चार ही जगह हैं—बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता और मद्रास। कुछ दिनों के लिए बम्बई रहना पड़ेगा।"

'अरे वाह!"

माई गॉड! किशोर के पेट में कुछ अजीब सा महसूस हुआ। जयंत बम्बई में रहेगा मतलब आफ़त! उसे कार एलाउंस भी मिलेगा। सब्सिडाइज़्ड फ़्लैट मिलेगा—दीगर सुविधाएँ भी होंगी। यंग डैशिंग एक्ज़िक्यूटिव! और उसका बड़ा भाई? सचिवालय में फाइनेंस डिपार्टमेंट में क्लर्क! किशोर के सीने में अजीब-सा दर्द उठा। वैसी बात नहीं। जयंत पर तो उसे अभिमान है। सीने में दर्द तो इसलिए कि वह अब बार बार मिलता रहेगा।

किशोर को लगा कि एकदम सिर पर बिजली गिर गयी। जयंत अब शादी का विचार कर रहा होगा और मैं उसके रास्ते में आड़े आ रहा हूँ। अभी तक यह बात मेरे दिमाग में क्यों नहीं आयी? जयंत छब्बीस साल का है। इस महीने से तेरह चौदह सौ कमाने लगेगा।

'आज मैं बाबूजी को ख़त लिखने वाला हूँ,' किशोर जल्दबाज़ी में बोल पड़ा।

जयंत चुप रहा। कुछ पल यों ही चुप्पी में निकल गये। पंखे की आवाज़ कुछ तीखी और तेज़ हो गयी है। पहले इतनी घर्र-घर्र की आवाज़ नहीं आती थी। चाय अभी तक नहीं आयी।

अरे, अभी तक चाय नहीं आयी?

कोई जल्दी नहीं। आज पूरा दिन मैं ख़ाली ही हूँ।"

कहाँ ठहरे हुए हो?

कंपनी के गेस्ट हाउस में। घाटकोपर। शाम को हम लोगों की मीटिंग है।

और ज़रा घूमते घामते।

घूमेंगे कल या परसों।

चाय आ गयी। किशोर ने लंबी साँस ली। चाय पीने के दौरान बोलना ज़रूरी नहीं है।

जयंत ने अपने ब्रीफ़ केस में से एक कागज़ निकाला और फिर एक डिब्बा। इलेक्ट्रिक शेवर आपके लिए लाया हूँ। स्मगल्ड है अच्छी क्वालिटी का है।

और मेरे लिए क्या? ब्लेड से दाढ़ी बनाने का मन नहीं होता अपने लिए ही रहने दो।

मेरे पास एक और है। यही रहने दीजिये,

जयंत ने डिब्बा खोला। अंदर से चमकती हुई मशीन निकल आयी। एक प्लग में वायर लगाकर कैसे चलाया जाय और कैसे साफ़ किया जाय यह सब जयंत ने बताया। फिर डिब्बे में रख दिया। किशोर को वह मशीन नहीं चाहिए थी। पर उससे मना भी न किया जा रहा था। जयंत बुरा मान जायेगा।

सिगरेट पीते हो या नहीं? चारमीनार सुलगाते हुए किशोर ने पूछा।

हम तो इसके स्वाद का ही पता नहीं अभी तक। बस कभी-कभार पी लेता हूँ। एक बार तो चुरुट पीकर देखा लेकिन एकदम उल्टी हो गयी।

जयंत हँस दिया। ऐसी स्नेहिल बात! चलो यहाँ तक तो पहुँचे। आत्मविश्वास बढ़ गया। या सिगरेट की वजह से आत्मविश्वास बढ़ा होगा।

आराम करोगे? सफ़र में थक गये होगे।'

ना। बिलकुल सोता हुआ आया हूँ।'

जयंत फ़र्स्ट क्लास से आया होगा। हम तो उस दर्जे की आदत ही नहीं। हर बार पढ़ाई में डिफ़ीकल्टीज़ पूछने वाला जयंत। मेरी निगाह में वही जयंत है अभी तक। उससे बातें करते वक्त उसका ओहदा कभी ध्यान में नहीं आता। यही तो कमजोरी है। किशोर ने सिगरेट खत्म की।

चलें बाहर?"

'चलते हैं। आपको कोई काम तो नहीं है न?"

ना-ना। तुम्हारे लिए ही तो छुट्टी ली है।'

किशोर ने अटैची से अच्छे कपड़े निकालकर पहन लिये। जूते पहने। सच पूछा जाय तो बाहर जाकर करेंगे क्या, यह सवाल सामने था। जयंत

क्या सोच रहा है पता नही। शाम को उसकी मीटिंग है। मतलब अभी दो-तीन घटे वह साथ रहेगा।

दोनो बाहर आ गये और धीमे धीमे चलते रहे। कुछ बोलने की जरूरत ही नही थी। करीब के एक अच्छे उडपी होटल म चल गये। दो प्लेट खायी और काफी पी। किशोर ने ही बिल चुकाया। जयत ने अपने मनी बग की ओर हाथ तक नही बढाया। किशोर को अच्छा लगा। अपने भाई म काफी समझ है इस पर गव भी हुआ। लेकिन तभी लगा कि कहा जयत मुझ पर दया तो नही कर रहा ? शायद मुझे बुरा लगे, इस वजह से वह इस तरह कर रहा हो।

किशोर बेचैन हो गया। उसके कान गर्म हो गय। झटके के साथ सिगरेट निकालकर उसने सुलगा ली और वे दोनों होटल स बाहर आ गय।

'बीच म आप बीमार हो गये थ ?' जयत ने पूछा।

हां। अब ठीक हूं।"

तब सिगरेट कम कर दी थी न ?"

सिगरेट से कुछ नही होता।' किशोर यो ही बोल गया, लेकिन बाद म उसे खुद ही अजीब लगा।

फिर कुछ देर तक चुप्पी। दोनो जसे निर्धारित दूकानों म निगाह डालते हुए चल रहे थे। एक दुकान से जयत ने बाबूजी के लिए दो धोतियां खरीदी। किशोर के दिमाग मे जैसे एकदम चिनगारी उभरी। चलते चलते उसने कुछ सोचा और एक दुकान म जयत को ले गया। कई चीजें देखी और अत म उसने कफ लिक्स पसद किये। उन्हे एक अच्छे पकिट म रखवाकर चालीस रुपये गिन दिये। जयत भी सकते मे आ गया। वे कफ लिक्स वाकई खूबसूरत थे।

कुछ देर यों ही भटकने के बाद जयत बेचैन हो उठा है किशोर ने ताड लिया।

"तुम्हें जाना है न ? वक्त हो गया होगा।

नही वसी कोई बात नही। जाऊंगा कुछ देर बाद।

अरे अभी चले जाओ तो भी कोई हर्ज नही। वैसे भी हम भटक ही तो रहे हैं।'

फिर कल या परसों मिलेंगे फुरसत मिलते ही। ज्वाइन करने से पहले गांव जरूर जाऊंगा।

अच्छा।'

कुछ देर तक दोनो रास्ते पर खडे रहते हैं। गांव जायेगा यह कहने म जयत का क्या उद्देश्य था ? देखो, मैं किस तरह बाबूजी और अम्मा की

लेन बीच-बीच म जाता रहता हू। यह वह नही कहता [illegible] लेकिन इस तरह की बातें जयत के मन म कभी नही आयेंगी। मैं जयत को समझ सकता हूँ और बात दरअसल यह है कि जयत भी मुझे समझ सकता है। मुझसे बातें करने के दौरान यह समझ उसकी आँखो म बसी रहती है। मेरी सारी कमज़ोरियाँ अच्छाइयाँ और बुराइयाँ वह जानता है। इसी वजह से वह इतनी अच्छी तरह से पेश आता है। लेकिन क्या वह नीला के बारे म जानता होगा? होगी जानकारी। मैं उसके यहा रोजाना ही तो जाता रहता था। उसके बाप को पैसे देने की बात भी उसे मालूम होगी। लेकिन उसने मेरी जिन्दगी को इस तरह बर्बाद कर दिया है, यह क्या वह जानता होगा? फिर भी वह मुझे समझने की कोशिश करता है। किशोर का मन भर आया। उसने कफ लिंक्स का पैकिट निकाला और जयत से बोला 'रखो इसे अपने पास।

'अरे, मेरे लिए लिया?

'मतलब? तुम सोचते होगे कि मैं अपने लिए ले रहा था?'

जयत हस दिया। पैकिट अपने हाथ म लेते हुए बोला, 'तुम्हारी पसद बेहतरीन है।

किशोर फिर कुछ कड़वाहट से हस दिया। हँसी की कड़वाहट इस बार भी न छिपा पाया यह उसे बुरा भी लगा।

'ठीक है। जाने से पहले मिल लेना।'

कफ लिंक्स बैग म रखते हुए जयत चला गया। किशोर ने राहत की सास ली। उसने चट से एक चारमीनार सुलगा ली। भाई के साथ भी हम दो-ढाई घटे नही बिता पाते। अजीब धुरधर हैं हम! जयत मुझे पसद है। उसके लिए मन म स्नेह है। गर्व है उस पर। लेकिन उसका साथ मुझे क्यो अच्छा नही लगता? उसके मन मे मेरे लिए आदर है। लेकिन वह मेरी ओर बड़ी बारीकी से देखता है। अपनी तबाही अपने ही हाथो कर रहा हूँ यह वह जानता है। इसी वजह से उसकी नजरें वैसी दीखती हैं। मुझे ही हर पल इस बात का एहसास होता रहता है। जयत दो-ढाई साल बाद मिल रहा है। पहले भी यही एहसास था पर अब तीव्रता से होता है। खतो म भी वह ऐसी-वैसी बातें न लिखता था, लेकिन मुझे ही पता नही क्यों वैसा लगा करता था। इसी वजह से उसका साथ मुझे अच्छा नही लगता। उसकी मूक निंदा की बेशर्मी से मैं पचा जाता हूँ और ऊपर से कड़वी हँसी हँसता रहता हूँ। मुझमे जरा भी इसानियत नही है।

किशोर ने कश तेजी के साथ खींचना शुरू कर दिये। खुद के कड़वेपन से वह बेचैन हो उठा। लेकिन तभी दूसरी शका ने उसे घेर लिया। यह सब

मन ही मन सी— [illegible]ाएँ तो नहीं हैं? जयंत मुझे जैसा समझता है, वैसा केवल [illegible]ाता है। लेकिन जैसा मैं सोचता हूँ वैसा जयंत है क्या? पिछले आठ दस सालों में जयंत से ऐसा वास्ता भी कौन सा पड़ा है! मेरी गैरहाज़िरी में ही वह कुछ बन पाया है। हो सकता है, वह मेरा तिरस्कार भी करता हो। मुझे मूर्ख भी समझता होगा। इन बातों से किशोर और भी परेशान हो गया। उसके सिर में एकदम गर्माहट भर गयी लेकिन दूसरे पल ही खुद शर्मा गया। जयंत के लिए मैं मन में ऐसे ख़यालात कैसे ला सकता हूँ, इसी बात की शर्म! अपने छोटे भाई के लिए उसके मन में फिर स्नेह उभर आया। और तभी उसके साथ किये बर्ताव का उसे पछतावा हुआ। कल या परसों जब वह मिलेगा तो उसे कुछ और करना चाहिए। जयंत अच्छा है। उसे शादी ज़रूर करनी चाहिए। हो सकता है उसने कोई लड़की पसंद भी कर रखी हो। बाबूजी को खत लिख ही देना चाहिए।

किशोर के पेट में फिर कुछ अजीब-सा हुआ। कार्ड खरीदना रह गया था। कार्ड नहीं इनलैंड ही चाहिए। लेकिन अब कहाँ से लाये? चाचा से ले लेंगे, उनके पास रहते हैं। लेकिन आज किसी भी हालत में बाबूजी को खत लिख देना होगा। उसके बगैर बात बन न पायेगी। सीधे मुद्दे पर ही लिख देना चाहिए। 'पूज्य बाबूजी को सादर चरण स्पर्श। खत लिखने की वजह यह है कि आ[illegible] सभी खत मिल गये थे। आपकी और अम्मा की तबियत अब ठीक है' यह जानकर प्रसन्नता हुई। आज ही जयंत मिला। मेरी तबियत ठीक है। ठीक है ठीक है [illegible]। हूँ अब असल मुद्दे पर कैसे लिखा जाये? 'पूज्य बाबूजी सादर चरण स्पर्श। खत लिखने की वजह यह कि अभी शादी का कोई विचार नहीं है। इसलिए मेरी वजह से आप परेशान न हों। वैसे ही जयंत के रास्ते में मैं आड़े नहीं आना चाहता। मेरी राह देखना छोड़कर जयंत की शादी कर दीजिए। अरे यह तो काफी सख्त हो गया। पहले लिखा था, वही ठीक था।

पूज्य बाबूजी—सादर चरण स्पर्श। खत लिखने की वजह यह कि आपके सारे खत मिले। आपकी और अम्मा की तबियत ठीक है, यह जानकर प्रसन्नता हुई। आज ही जयंत मिला [illegible]।'

लेकिन जिस गत से इधर दिन मैं घूम रहा हूँ जिसकी वजह से रातें खराब कर रहा हूँ वह सब कब लिखूँगा? वह भी इसी में लिख देना चाहिए। बाबूजी गलत न समझ लें। अम्मा को भी बुरा लगेगा। सलीके से लिखना चाहिए। पूज्य बाबूजी—सादर चरण स्पर्श। खत लिखने [illegible]।'

चलते हुए सोचते-सोचते किशोर शिवाजी पार्क तक आ गया। शाम होने लगी थी। अब उसके आगे नया संकट खड़ा हो गया था। जयंत कमा

गया। अब इस बम्बई में शाम अकेले बितानी होगी। बिलकुल अकेले! इस खयाल से वह हड़बड़ा गया। अकेलेपन की कभी आदत ही नहीं पड़ती। अकेलेपन की पीड़ा बड़ी गहरी होती है। उसमें भी शाम तो बड़ी भयङ्कर होती है। लाज पर अब अनिल पवार के होने की संभावना कम ही है। दूसरे किसी और के साथ बाहर होंगे। नीला नीला इस वक्त तुम क्या कर रही होगी? तुम्हें अकेलेपन की पीड़ा नहीं होती? तुम किसके साथ के लिए परेशान हो?

और इसी वक्त पर कोस्टा की याद क्या उभरती है? कोस्टा मेरे सपनों में कैसे आया? वह और भी परेशान हो गया।

वह चौपाटी पर कब पहुँचा वह खुद ही न जान पाया। तट पर भीड़ थी ही नहीं। हवा बदन को छू रही थी। भीड़ हो तो समंदर पर जाने का जी नहीं करता। तब समंदर भी हमसे इतना अपनापन नहीं दिखाता। और भीड़ न हो तो वह अपना हमदम लगता है।

अभी सूरज डूबा नहीं था। सूरज बस डेढ़ हाथ ऊपर था। लेकिन आसमान पश्चिम की ओर पीला लाल हो चुका था। चौपाटी पर भेल पूरी वाले चीख रहे थे। कुछ युगल भी थे। पर इसे भीड़ नहीं कहा जा सकता। और शायद ज़्यादा भीड़ होगी भी नहीं। वजह यह कि आज इतवार नहीं है।

शाम होते ही मन इतना अजीब सा हुआ जाता है। खास तौर पर जब अकेले हों? लगता है जैसे एक कचोट अन्दर ही अन्दर कतरे जा रही है। लगता है एक बोझ मन पर सवार है। इसका स्पष्टीकरण हो ही नहीं सकता। यह बोझ ज़िन्दगी भर ढोना पड़ेगा शायद।

चौपाटी पर एक कोने में हाथ पीछे किये समंदर की ओर देखते हुए किशोर बैठ गया। दिन भर की थकान से वह परेशान हो चुका था। जयंत के मिलने से बेचैन हो गया था। अब उस अकेलेपन में शाम बितानी थी। उसी लड़ाई की वह तैयारी कर रहा था। दिन भर की परेशान हालत से उसकी थकान और भी बढ़ गयी थी। जयंत ने जो धमकी दी थी उसकी वजह से वह अजीब तरह से परेशान हो गया था। दिमाग में बाबूजी को लिखे जाने वाले खत की बातें घूम रही थीं। आज की गैरहाज़िरी की वजह से कल आफिस में धूम होगी। अब चारों ओर से शाम उस पर हमला करने के लिए आ चुकी थी।

यह शाम खुद मैंने अपने ऊपर ओढ़ ली है। जैसे सारी ज़िन्दगी ओढ़ी है। उस वक्त ही अनिल के साथ पिक्चर चल देता तो दोपहर की थकान तो न होती और यह शाम भी करीब से धीरे में निकल गयी होती। कम

से कम जेवन के साथ भी कुछ देर रहा जा सकता था। मौज में आता तो कोई-न-कोई तो मिल ही जाता। चाचा ही मिल जाते। पेपर ही पढ़ लिया होता।

लेकिन मैं जानबूझकर इधर आया। समंदर के ख्याल से शाम अपने कन्धे पर लेने के लिए। यह मेरी अजीब ख्वाहिश है। निराशा अपने ऊपर ले लेना। ज़िन्दगी बर्बाद कर डालना। बचपन में भी मुझमें महत्त्वाकांक्षा कहाँ थी? जो कुछ है वह सब हवाई पुल। मेरे दिवा-स्वप्न! पहले इस तरह के सपने भविष्य के लिए हुआ करते थे। अब भूत में जो नहीं हुआ वे सपने उसके लिए होते हैं। क्या यह बूढ़े होने का सबूत है? मेरी सारी इच्छाएँ मर जाने की वजह से तो ऐसा महसूस नहीं हो रहा!

मैं कैसे इतना कमज़ोर हो गया हूँ?

मुझे किसी बात में रस ही महसूस नहीं होता। किसी में भी रस नहीं। उदासीनता का एहसास इतना ज़बरदस्त है कि नीता के बारे में उठने वाली भावनाएँ भी कभी-कभी झूठी और बनावटी लगने लगती हैं। नीता—यह विषय मैंने खुद अपने आपसे चिपटा रखा है। इसलिए कि इस रसहीन ज़िन्दगी में कुछ तो रस आयेगा। उसके मिलने में वाकई ज़िंदगी का रस नहीं है। अगर होता तो मैंने कुछ तो हाथ-पाँव हिलाये होते। मुझे पढ़ने लिखने में कहाँ रस आ पाता है? सारे तथाकथित दर्द दिखावटी हैं, खुद के बनाये हुए। सोचा जाय तो यह दुख-दर्द दुख-दर्द ही नहीं रह पायें। वे तो सिर्फ कल्पनाएँ हैं। हम ज़िन्दा हैं यही बात कितनी बड़ी है। अब इस तरह ज़िन्दा रहने को ही कोई दुख समझ ले तो अलग बात है। हर आदमी की दुख की व्याख्या भिन्न हुआ करती है। मुझे अपनी ही व्याख्याएँ अभी तक समझ में नहीं आ पायी हैं यह भी सही है।

दसों दिशाओं को सुनहरी गुलाबी छाया से भरते हुए सूरज मखमली समंदर पर टिक गया था। चौपाटी पर भीड़ बढ़ी न थी। कुछ प्रेमी युगल ज़रूर एक-दूसरे की कमर में हाथ डाले टहल रहे थे। एक युगल ने तो किशोर के करीब का ही एक कोना पकड़ लिया था। लेकिन किशोर का ध्यान उस तरफ न था। उसकी नज़र डूबते सूरज की ओर थी। उसे लगने लगा कि आज की शाम अकेली ज़रूर है पर हमेशा के अकेलेपन से अलग है। शायद समंदर की नज़दीकी की वजह से ऐसा महसूस हो रहा होगा। हो सकता है डूबते सूरज को देखने की वजह से हो, लेकिन उसे कुछ हलकापन महसूस हुआ। कुछ ताज़गी महसूस हुई। हवा के बदन छूते ही दिमाग की परेशानी कुछ कम होती नज़र आयी। समंदर पर आकर ठीक किया। लाज पर तो और भी परेशान हो जाते। और यहाँ कौन अकेलापन है?

साथ में समंदर है—लहराता समंदर! इस तरह लहराता समंदर देख लिया जाये तो बेहोशी छाने लगती है। सारे सपने खिलते नज़र आने लगते हैं। मन होता है दोनों बाहें फैलाये समंदर के करीब हो लें जैसे अनिल पवार कहता है। लेकिन वह उसके जैसा नहीं। समंदर से मिलने—उसका आलिंगन करने के लिए लगता है अब तक यूँ ही ज़िंदगी बर्बाद कर दी। बचपन से यों ही उफनते रहना चाहिए था। ये लहरें सीने में तूफान ले आती हैं। ऐसे वक्त दूर बिछी गुलाबी शाम तन में रोमांच भर देती है। इस वक्त कोई भी बात असम्भव नहीं लगती। इसी तरह उठ और नीला को समंदर पर ले आयें—उसे वह रहस्यमय क्षितिज दिखाया जाय मखमल-सा समंदर। लहराती बलखाती लहरें दिखायी जायें। उसका हाथ हाथ में लेकर रेत में टहला जाये और कहा जाय नीला! छोड़ दो और बातें। मेरा हाथ हाथ में ले लो। मैं तुम्हें सुला दूंगा। तुम्हारी क्या दिक्कतें हैं बताओ। हमारे प्रेम के सामने हर दिक्कत छोटी है। इस समंदर को साक्षी रखकर कहता हूँ कि तुम मेरे लिए ही बनी हो, और मैं तुम्हारे लिए। फिर हम दोनों इस तरह का पागलपन क्यों किये जा रहे हैं? हमारा यह मूक संघर्ष निरर्थक है। इसका कोई भी आधार नहीं है। यह तो हम दोनों की कमज़ोरी है। हमारी ज़िंदगी की असलियत यही है कि हम दोनों का मिलन हो। उसी के लिए हम दुनिया में आये हैं। इतना ही नहीं यह दुनिया युगों से ही इस बात की राह देख रही है। इसका हेतु यही है। इसी बात के लिए यह दुनिया बनी है। सिर्फ हमारे लिए हम दोनों इस दुनिया के केंद्र बिंदु हैं। इस दुनिया को निराश न करो नीला हो जाने दो सफल। आओ मैं तुम्हें सुख दूंगा। फिर नीला भी तो ना नहीं कहेगी। हम दोनों हाथ थामे समंदर में चले जायेंगे। लहरें कदमों को चूम लेंगी। पैरों पर गुदगुदी करने वाली वे लहरें क्यों न इस गुलाबी रंग में हम एक-दूसरे को देखें—यही सहज संभावना है। बस इस वक्त नीला के पास जाने की देर है।

लेकिन किशोर ने कुछ भी नहीं किया। वह उसी तरह बैठा हुआ समंदर की ओर देख रहा था। अब तो समंदर काला पड़ने लगा था। किशोर का हलकापन अब जाता रहा। जैसे जैसे समंदर पर काला रंग छाने लगा था वैसे-वैसे किशोर के सीने में दर्द बढ़ता जा रहा था। निराशा उदासीनता अकेलेपन तिरस्कार तुच्छता और अपने पर आया गुस्सा—इन मनोभावों ने उस पर इतनी गहरी छाया डाल दी थी कि अब सिर्फ रोना ही बचा था। उसकी आँखों में पानी आ गया। लेकिन किशोर ने अपने को रोका। अगर वह अपने को ज़रा ढीला छोड़ देता तो उसकी आँखों से

आँसू बहने लगते। उसने लबी साँस ली। सीधे खड़े होकर हाथ फैला देना चाहिए और धीमे धीमे चलकर सीधा समदर के करीब पहुँच जाना चाहिए। जुबान पर नीला का नाम तक न होना चाहिए। किसी के लिए आक्रोश न हो। सीधे और सरल समदर की ओर जात समय वह भी न हो सकेगा। समदर के लिए लगनेवाला आकषण भी बनावटी ही है। अनिल पवार वाकई समदर म चला जायेगा? वह ऐसा कर भी सकता है। पर मुझसे न हो सकेगा। मुझसे तो कुछ भी न हो सकेगा। कारण, मुझम अपना कुछ है ही नही। मेरा कुछ हो जायेगा लेकिन हम खुद कुछ न कर पायेंगे। अनिल कर सकता है। नीला करती है। जयत भी। काफी लोग कर लत हैं क्योंकि उन लोगों मे अपना कुछ होता है।

शाम ढल चुकी थी। आसमान म धुँधला गुलाबीपन बचा था। समदर की लहरें जैसे शात हो चली थीं। उनका रग स्याह हो गया था। भेल-पूरी वालो न गैस की बत्तियाँ जला दी थी और उन बत्तियो की ओर देखकर किशोर के मन म एक अनजान चुभती याद सिर उठा रही थी।

काफी देर बाद किशोर को ध्यान आया कि वह सिफ समदर की ओर देखता हुआ रेत मे बैठा हुआ है। हवा अब बदन को चुभ रही थी। किशोर उठ बैठा। हवा की ओर पीठ कर उसने सिगरेट सुलगा ली। दीवार के सहारे अब कई युगल आ बैठे थे। उसकी तरफ देखकर किशोर चल पड़ा। लहरों ने रेत पर जहाँ निशान बना दिये थे, उन्ही के साथ-साथ वह आगे बढ़ने लगा। एक शाम बिताने की तसल्ली उसे चाहिए थी। दिमाग़ जरूर खाली-खाली महसूस हो रहा था। कुछ एहसास जरूर मन म थे। बाबूजी को लिखे जाने वाले खत के शब्द भी नाग की तरह ऊपर आ रहे थे। पूज्य बाबूजी—सादर चरण स्पश। खत लिखने की वजह यह कि । लेकिन अब उसे काफी अच्छा महसूस हो रहा था। वह सोच रहा था कि दिन में कुछ पल के लिए ही सही, ऐसा ही महसूस होता रहे तो क्या ही अच्छा हो। उसके जूतो म गीली रेत घुस रही थी। लेकिन उस ओर उसका ध्यान न था। चौपाटी पर लगी गैस बत्तियो की ओर भी उसका ध्यान नही था। वह सीधे लहरो के किनारे किनारे चला जा रहा था। जैसे उसके निर्विकार मन ने कोई निणय ले लिया हो, इस अदाज मे वह कदम बढाये जा रहा था।

वह कहाँ जा रहा है यह उसके दिमाग म आ चुका था। लेकिन इलाज न था। जाने की उसकी इच्छा भी न थी। मगर वह खुद को रोक भी न सकता था। कई बार उसने कोशिश की थी। पर जम न पाया था। उसके अन्तमन ने एक निणय ले लिया है। उसकी इच्छा के विरुद्ध। वह

उसे तबदील नहीं कर सकता। उसके पाँव उसकी बात मानते ही नहीं। वे उसे आगे की ओर खींचते रहते हैं। इस अवस्था में भी किशोर को लगता रहता है कि यह सब भ्रम है। हम अभी भी तय कर लें तो वापस जा सकते हैं। लेकिन हम खुद को भले ही धोखा देने की कोशिश करते रहें पर यह सही है। वह अंदर-ही-अंदर सोयी हुई इच्छा है। इसी वजह से पाँव उस ओर खिंच रहे हैं। इस इच्छा को जब तक नेस्तनाबूद न कर दें तब तक यही होता रहेगा।

और किशोर चलता ही रहता है। हताश, अधीर होकर! वह सब कुछ समझता है। उसमें सारी समझ है। और इस तरह आगे बढना निरर्थक है इस बात को भी वह जानता है। खुद की निराशा और भी गहरायेगी यह भी वह जानता है। इस वक्त का निर्णय तर्कपूर्ण नहीं है लेकिन फिर भी वह बढता ही रहता है। जैसे खुद के बदन पर कोड़े लगाता जा रहा हो। उसे पता नहीं कौन-सा करुण आनन्द आ रहा है? कैसा समाधान है! जाने से परेशानी और भी बढने वाली है। जलन बढ़ने वाली है। फिर किसलिए जा रहे हैं? चलो, वापस लौट चलें।

और किसी अदृश्य शक्ति से खिंचा किशोर चलता ही रहा। चौपाटी छोड़कर उसने शिवाजी पार्क पार किया और जैसे पहले से ही निर्धारित रास्ते पर वह चलता रहा। आस-पास की भीडभाड की ओर उसका ध्यान ही न था। फिर भी वह बिना किसी रुकावट के तेज़ कदम बढाते हुए चलता ही रहा। जब उसका ठिकाना पास आने लगा तो कदम अपने-आप धीमे पड गये। तेज़ी से चलते हुए जाना ठीक न होगा।

पानिटकर

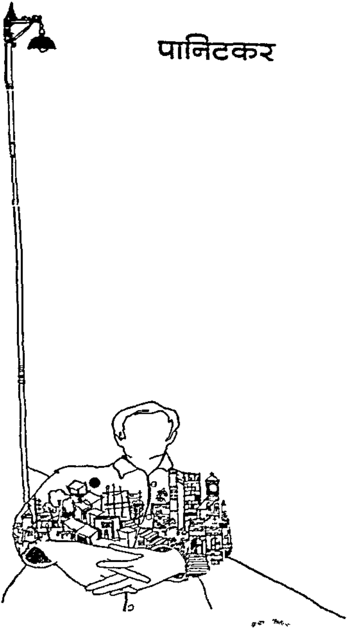

सुबह के पांच। बम्बई अलसाये अदाज मे नीद से जाग रही है। लोकल्स दौडने लगी हैं। डबल डेकस भी रास्ते पर अपनी अजीब तीखी आवाज़ के साथ घूमने लगी है। पूरी बम्बई अभी जागी नही है। लेकिन धीरे धीरे जाग रही है। लोकल्स के स्टेशन ज़रूर पूरी तौर पर जाग चुके हैं। वहाँ अब लोगो की भीड भी नजर आने लगी है। अखबारा के गटठे लिये छोकरे, दूधवाले, सब्ज़ीवाले और रात की पाली के मजदूर और रात के वक्त फस्ट क्लास मे बठने से डरने वाले अफसर सभी लोकल म जमे हुए है। शहर भले ही न जाग पाया हो, पर छोटे छोटे शहरो के घर कभी के जाग चुके हैं। नौकरी करन वाली औरतों का नहाना धोना, रसोई चल रही है। पुरुष दाढी बनाने मे लगे हैं और जिसे दो-ढाई घटे मे काम पर पहुचना है वह जल्दबाज़ी से काम कर रहा है। दूध की गाडिया की आवाज़ आ रही है। लोग दूध की बोतलें लिये आ रहे है। बम्बई जाग रही है। अंधेरे की शाल धीरे धीरे खिसक रही है। लेकिन कारखाने, बस की चिमनिया से निकलते धुएँ म बम्बई अभी भी लिपटी हुई है। कफ रोड, मेरीनड्राइव, बीच कडी, शिवाजी पाक, बड स्टड जुहू म समदर के करीब की ठडक का अब एहसास होन लगा है। समदर से मीठी हवा का झोंका आ रहा है, बदन का बेहोश कँपकँपी मे तबदील कर देने वाला, सीने म तूफान पैदा कर देने वाला, सुनहरे सपनो के गान गानेवाला। मुलायम हवा पख के-से स्पश वाली हवा। लेकिन गिरगाव कुभारवाडा नागपाडा भायखला परेल लालबाग दादर कुर्ला विक्रोली अधेरी और ऐसी ही घनी बस्तियो म बम्बइ की वही मुरझाई-सी सुबह निकल रही है। झुग्गी बस्ती की औरतें और मर्द अलग-अलग जगहा पर हाथ म डिब्बे लिये बठे हुए हैं। रेलव लाइन की तरफ खुले मदान मे दो इमारतो के बीच मे हाउसिग बोड की कालोनी की खुली जगह म वे अपना सुबह का काम निपटा रहे हैं। लोग बाग जाग उठें उससे पहले ही उन्हे यह काम खत्म कर लेना है। और अब तो हर जगह जाग हो रही है। बम्बई जाग रही है।

दयानद पानिटकर अपने घाटकोपर वाले कमरे म जाग गया है। मतलब, अभी वह आधी ऊँघ मे ही है। कल रात वह काफी देर से वापस आया था। इसी वजह से अभी उसकी नीद पूरी नहीं हो पायी है। पर उससे सटकर सोने वाली उसकी बीवी के बदन के गम स्पश का उसे

एहसास हो रहा है। उसकी साँस की आवाज़ भी वह सुन रहा है। दूसरी तरफ के छोटे-से बरामदे मे उसकी इकलौती लडकी बारह साल की, जया सो रही है। उसे खुर्राटे लेने की बुरी आदत है। इसी वजह से यह सहज ही जाना जा सकता है वह सो रही है। अधेरी के फ्लैट मे उसके लिए अलहदा कमरा रखा गया है। कल का सारा दिन उसने उस फ्लैट म लगा दिया था। उसके लिए कल ही सत्ताईस हज़ार रुपय भरे है। कल ही वह फ्लैट देख आया है। इतना बहतरीन कि उसकी बीवी सुनदा एकदम खुश हो जायेगी। सच पूछा जाये तो अभी भी उसके सपने म वही फ्लैट है।

दयानद न लबी जमुहाई ली ता सुनदा उठ बैठी। उसे देखकर उसने उसे करीब सटा लिया।

अरे अरे—धीरे ।'

'कल मैं जब वापस आया तो तुम आधी नीद म ही थी।'

'फिर?'

'फिर क्या?'

अरे धीरे से, कह रही हूँ न कितनी आवाज करत हो?'

डर किसका है?"

'हू। बाहर जया सो रही है न? वह उठ ही रही होगी।"

वह क्या उठेगी इतनी जल्दी?'

ऊँहूँ। वह अब सब कुछ समझने लगी है। वह अब छोटी नहीं है। एक दो साल म वह ।"

दयानद उठ बैठा।

तुम सो लो। मैं काम मे लग जाती हू।'

नही। आज ज़रा जल्दी जाना है।'

'कल बहुत देर से आये थे।"

'आज सेठ का एक खास काम है। इसी वजह से जल्दी जाना है आज।'

सुनदा का बदन डर के मारे काप गया। क्या कापा वह खुद भी नही समझ पायी। लेकिन अपने पति के काम के बार म उसे डर ही ज्यादा लगा करता था। अधेरी-कुर्ला रोड पर मेथा सेठ के पेट्रोल-पप पर वह काम करता है इतना ही उसे मालूम था। दयानद भी अपने काम के बारे म उससे कभी कोई बात नही किया करता था। वह अगर कभी काफी सारे पैसे या कोई कीमती चीज ले आता है तो उसके मन म एकदम डर समा जाता था। सुनदा ज्यादा पढी लिखी भल ही न हो पर होशियार ज़रूर थी। वह जानती थी, दयानद जिस नौकरी पर है उसमे इतना पसा नही

मिल सकता। उसके सवालो के जवाब वह अक्सर नही दिया करता था। लकिन उसका डर ज्यादा देर तक न टिक पाता था। उन पसा से साडियाँ, गहने रडियो फ्रिज इस तरह की चीजें आने लगती तो वह अपना डर भूल जाया करती थी।

कल फ्लैट के पसे चुका दिये हैं।

“हाय राम वही न जिसके बारे म बता रहे थे। दो कमरे और किचन ?”

ना—पाँच कमर और किचन।

सच ? कितने पसे भर हैं ?

‘पद्रह हजार। इतनी कम रकम नही बतानी थी पहले दयानद को यही लगा। मतलब बाद म उस पता तो लग ही जायेगा। लकिन तभी उसने तेज साँस लकर आँखें बडी-बडी की तो उसे लगा रकम कुछ और कम बतानी थी।

सुनदा का खिला चेहरा एकदम मुरझा सा गया। वह समझ ही न पायी कि क्या कहे। उसने बनावटी हसी हसने की कोशिश की लेकिन जमी नहा। वह रुआँसी-सी हो गयी। फिर बडी हिम्मत करके उसन पूछा, “कहाँ स लाये इतन रुपये ?

‘एँ ?’

बताओ न तुम तो कभी बताते ही नही।’

सठ ने दिये है।’

‘इतने— ?”

“हाँ कर्जे के तौर पर।’

‘पर इतने ? और अभी तक यह जा कुछ सामान आया वह सब ?”

तुम क्या मुझ डाकू या लुटेरा समझती हो ? मेरी पसीने की कमाई है। समझी ? और बाकी कुछ तो सेठ ने खुश होकर इनाम के तौर पर दिये है। जो मिल सो ले लेना चाहिए। बेकार जिरह करन से क्या होता है ? पहल कुछ नही मिलता था तो तुम्हारी किटकिट थी। अब मिल रहा है तो भी किटकिट। अजीब बात है।

मुझे तो डर लगता है सुनदा की आँखो म एकदम आँसू आ गये।

उसके आँसू देखकर दयानद कुछ नरम पड गया। चौदह साल की जिन्दगी म हर दुख दर्द म उसने साथ दिया था। झुग्गी बस्ती का रहना डबल रोटी और चाय पर दिन भर गुजार देना—इन सबको उसने बिना शिकवा शिकायत के सहा था। किटकिट करना अलग बात है। मुझे ऐसा नही कहना था।

डर किस बात का ? उसने नरम आवाज म पूछा "मुझे मेरे काम के पसे मिलते है। और सुनो, दो-तीन महीने बाद मे यह काम छोड देन वाला हूँ। हम लोग अपनी छोटी-सी दुकान चलायेंगे।"

सुनदा कुछ देर के लिए शात हो गयी और आँसू पोछकर काम म लग गयी। दयानद एकदम नवस हो गया था। सच, क्या यह काम छोडा जा सकता है ? इस तरह या ही छोडा जा सकता है ? उस पहले ही इसमे फँसना ही न था।

बेचन-सा वह बाहर की ओर आ गया। पलग पर उसकी बारह साल की लडकी सो रही थी। उसकी ओर देखते ही उसके बदन पर काटें उभर आये। इसके लिए काम छोडना ही पडेगा। धोखे की जरूरत नही। बडी होने पर यह क्या कहेगी! उसने उसके सिर पर हाथ फेरा। उसके बाल ठीक किय और बेचन होकर चहलकदमी करने लगा। काम छाडना ही होगा। पर कमे ? इस झमेले मे उलझना ही न था। पर कब उलझ गये यह भी कहाँ पता चल सका ? धीम धीमे उलझते रहे और जब गले तक फँस गये तब समझ म आया कि पूरे ही उलझ चुके है। इससे छूट पाना मुश्किल ही है।

उम्र के सोलहवें साल म दयानद गाव छोडकर बम्बई आया था। मटिक तक पहुचने से पहले ही उसके पिता गुज़र चुके थे और उसकी मा ने उस बम्बई मे एक रिश्तेदार के यहाँ काम के लिए भेज दिया था। पहल तीन साल तक उसन रामा के यहा बतन माजन और कपडे धोने का काम दादर मे किया था। उम्र के साथ उसके बदन म ताकत भी बढती जा रही थी। जवानी के शुरू दौर में इसे वह काम रास न आ रहा था। लेकिन दयानद मिठबोला था। इसी वजह से सभी घरों म वह पसद किया जाता था। दिन भर काम करके रात म वह पढने के लिए एक स्कूल म जाया करता था। पढाई लिखाई तो खास न हो पाती थी लेकिन दयानद होशियार था। कोई भी काम उसे ज्यादा कठिन न लगता था। सहज ही वह कई काम एक साथ कर लिया करता था।

उसकी होशियारी पर दादर के एक समझदार आदमी की निगाह पडी। बतन माँजने मे ही इसकी ज़िदगी बर्बाद न हो जाये इस इरादे स उसने दयानद को पहचान की एक मिल मे चिपकवा दिया। उसकी पढाई लिखाई ठीक-ठाक हो जायेगी यह भी उसका मशा था। दयानद खुश हो गया। नौकरी मिल गयी थी और अब पढाई ठीक होने लगी थी।

तभी से दयानद लालबाग म रहने वाले एक रिश्तेदार के यहाँ टिक

था। यह दयानद की माँ क दूर रिश्ते म था। एक कमरा और छोटा सा दालान। सोने और खाने-पीने के बदले वह दयानद से बीस रुपये लिया करता था। और घर के दूसरे काम भी उससे करवा लिया करता था। घर का सामान लाना बतन माँजना बच्चो को सम्भालना—इस तरह क काम काज। कारखाने म काम करके लौटने के बाद उसे इस तरह के काम करने का ज़रा भी दिल न करता था। पढाई तो हुई अलहदा बात। रात क स्कूल म जाना मकान वाले को खलता था। वह ऐन जाते वक्त ही उस काम बताया करता था और न करने पर ताने मारना शुरू कर देता था। इस वजह स दयानद परशान था। दिन भर खटने के बाद रात को सोते वक्त लगता कि वह कही भाग जाये। बारिश म कमरे म पानी आ जाता था। काम के चक्कर म उसका स्कूल डूबने लगा। वह परेशान हो गया।

इसी वजह स दयानद अपना ज्यादा-से-ज्यादा वक्त कारखाने क दोस्तो क साथ बाहर ही बिताया करता। इसी बीच उसकी पहचान यूनियन लीडर डीकोस्टा स हो गयी। डीकोस्टा हट्टा-कट्टा जवान था। एक बार पहचान हो जाये तो उसे कोई भूल न पाता था। इसी वजह से दयानद से उसकी गहरी पहचान हो गयी।

फिर दयानद यूनियन क चक्कर म उलझ गया। घर के ताने सुनकर यूनियन के काम करने लगा। बीच के खाली वक्त मे कोस्टा साब ज़िन्दा-बाद' कहकर लाल झडा उठाये मजदूरो के साथ नारा लगाने लगा। कोस्टा का भाषण हो तो काम छोडकर वह तालियाँ बजाने के लिए हाज़िर रहता था। पेपर म छपा कोस्टा का फोटो काटकर उसने एक तख्ते पर अच्छी तरह चिपकाया था और घर म उसे इस तरह लटका दिया था कि सदूक के ऊपर से सबको दिखायी दे।

यूनियन क आफिस म दयानद लिखने-पढने का काम करता था। एक बार लिखत समय कोस्टा की नजर उस पर पड गयी।

कितना पढा है रे?' कोस्टा ने पूछा।

मट्रिक नही कर पाया कोस्टा साब।'

फिर तो पहले मट्रिक कर लो और तब तक यूनियन म पाँव भी न रखना। कहाँ रहत हो?'

दयानद ने बता दिया।

ठीक है। कल शाम को आना। एक प्राईवेट कालिज क प्रिंसिपल से पहचान करवाये देता हूँ। तुम जसा लडका बर्बाद हो यह मुझ कतइ पसद नही। पहले पढ लिख लो, फिर यूनियन का काम अच्छी तरह कर सकते हो।'

खुद डीकोस्टा मट्रिक पास नही है यह दयानद ने सुन रखा था।

लेकिन दयानद मान गया। वह जवान था। काम करने की धुन उस म थी। सिफ उसे मौका मिलने की देर थी। एक बार मट्रिक कर लूं तो फिर कुछ भी कर सकता हूँ, उसे यह उम्मीद थी। सिफ घर की परेशानी की वजह स उसने रात का स्कूल छोड दिया था।

दूसरे दिन जब वह आया तब डीकोस्टा आफिस म न था। वह किसी मीटिंग में गया हुआ था।

दो चार दिन के दौरान ही बोनस के मामल को लेकर आन्दोलन हुआ। डीकोस्टा और दूसरे नेताओं को पुलिस पकड ल गयी। लाल झडा लिये कारखाने के आगे प्रदर्शन म दयानद भी शामिल था। उसे भी पुलिस ने पकडा। रात म खूब मार लगायी और सुबह छोड दिया। दयानद की नौकरी स्थायी न थी। आन्दोलन मे भाग लने के कारण उसे नौकरी से निकाल दिया गया।

उसके रिश्तेदार को जब यह पता चला तो उसने उसे घर से भी निकाल दिया। सदूक और बिस्तर लिये दयानद बाहर निकल आया। एक फूल वाले के पास अपना सामान रखकर वह सीधे यूनियन के आफिस म दाखिल हो गया। लेकिन वहाँ पुलिस का पहरा था और आफिस म ताला। कोस्टा अभी जल म ही था। कोस्टा की वजह स उस नौकरी मिल जायगी यह आशा उस थी।

वह दिन उसने यों ही गुजार दिया। दूसरे दिन भी यूनियन के आफिस म ताला देखकर उसने नौकरी तलाशना शुरू कर दिया। पहल उसने कारखान के दोस्तो क घर जाना शुरू किया लेकिन उनकी हालत भी वैसी ही थी। किसी ने उसे अपने घर पर रहन बुलाया, किसी ने खाने पर। लेकिन दयानद को नौकरी चाहिए थी।

पहल-पहल वह लगन से नौकरी तलाश कर रहा था। कारखानो म जाकर तलाश करता था। लेकिन चार दिन घूमने पर उसके पास बच दस-पन्द्रह रुपये भी खर्च हो गये। आखिर उसने अपने सदूक और बिस्तर का सामान बेचना शुरू कर दिया। बम्बई म घूमा पर नौकरी कही नही मिली।

तीन दिन तो सामान बेचकर उसने किसी तरह गुजारा किया लेकिन चौथे दिन घबरा गया। बदन पर मैली-कुचली शर्ट और नेकर बची थी। गाव वापस जाने के लिए किराये के पैसे पास न थे। उस हालत म दादर के पहल वाले मालिक के पास जाने मे उस शर्म लग रही थी। क्या खाये अब ? चोरी करना उसक बस की बात न थी। खुदकुशी करने का उसका

इरादा न था।

दो दिन तक वह पेट भरने के लिए खूब पानी पीता रहा। एक बार भीख माँगने का भी ख्याल आया। लेकिन उस ख्याल को उसने छोड़ दिया। उसमें हिम्मत न थी। नंगे पाँव घूमने की वजह से पाँवों में छाले पड़ गये थे। अब बिस्तर भी न था और सोने के लिए जगह भी न थी। रात जहाँ भी होती वहीं वह फुटपाथ पर पसर जाता था। तीसरे दिन के बाद से जो सामने पड़ता वह उसी से काम माँगने लगता। चिलचिलाती धूप से वह बेहद परेशान था। एक आदमी से काम माँगने पर उस आदमी ने चार आने उसके हाथ पर रख दिये। सच पूछा जाये तो दयानन्द भीख न चाहता था। लेकिन नकारने का होश ही न था। वह एक ही दिशा में बढ़ रहा था। रास्ते पर और हर दुकान में वह पूछता 'कुछ काम मिलेगा?'

चार-पाँच दिन पहले दयानन्द की हालत इतनी बुरी नहीं थी। वह काम माँगता तो लोग पूछते—कितने पढ़े हो? टाईपिंग आती है? कहाँ से आये हो? किसी की पहचान ले आओ।

वह चलते चलते कहाँ जा रहा है, इस का भी होश दयानन्द को नहीं था। उसने हर दुकान में जाकर काम माँगना शुरू कर दिया। कुर्ला अंधेरी के रास्ते पर जब वह आया तो धूप तेज़ हो चुकी थी। सूरज सिर पर था और तारकोल की सड़क पाँवों को जला रही थी। नज़र कहीं टिकती न थी और पाँव थक चुके थे। उसे छाँह चाहिए थी। इस वजह से वह रास्ते के किनारे बने पेट्रोल-पंप की ओर बढ़ गया। वह रास्ते से पच्चीस क़दम के फासले पर था, लेकिन दयानन्द को लगा न जाने कितनी दूरी पर है।

पंप के क़रीब पहुँचा तो चौकीदार ने टोका—"है, है किधर जाता है?'

दयानन्द उसके करीब जाकर खड़ा हो गया। उसके मुँह से शब्द ही न निकल पा रहे थे। आँखें लाल थीं। चेहरा अजीब परेशान-सा था। साँस तेज़।

'क्या है? क्या माँगता?'

पूछने पर भी दयानन्द चुप रहा। चौकीदार ने उसकी तरफ शंका की नज़रों से देखा और उसपर हाथ चलाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया ही था कि दयानन्द उसके कदमों पर गिर पड़ा।

तभी से दयानन्द उस पंप पर है। पंप पर जो भी काम हो वह उसे कर देता। जितने पैसे मिलें उतने ले लेना और गराज में सोता। जल्दी ही

पैट्रोल भरने का काम करने लगा। उसकी लगन ओर तज़ी देखकर पप का मनजर नूर अब्राहिम उसे और भी काम सौंपन लगा। पप पर कभी कभार आने वाला मालिक भी दयानद के काम से खुश था।

मेथा पप पर हफ्ते मे एकाध बार आता था। शाम को वह आता और रात बारह बजे तक रहता था। उस दौरान पैंट्रोल लेन के लिए मोटरो की कतारें लग जाती थी। दयानद को बडा अजीब लगता था।

इसी दौरान उसका काम देखकर मालिक न उसकी तनख्वाह सौ रुपया बाँध दी। दयानद हर काम करने के लिए तयार रहता था। मोटर साफ करने से लेकर बिल तयार करने तक के सभी काम कर लिया करता था। पप पर काम न हो तो वह पास के गराज मे पडा रहता था। मोटर के हर हिस्से को वह देखते ही पहचानने लगा था। वहाँ के मकेनिक की मदद करते-करत वह खुद भी गाडियाँ ठीक करने लगा। दा साल म वह इतना तेज़ हो गया कि वह सिफ इजन की आवाज़ सुनकर खराबी जान जाना था। अब तो वह मालिक का चहेता बन बठा था। नूर अब्राहिम से भी ज़्यादा उसकी चलती थी।

इधर उसकी बुढिया माँ न उसके पीछे शादी का लफडा लगा दिया। हर सप्ताह वह खत डाल देती। लडकिया के नाम लिख कर भेज देती। आखिर तग आकर वह गाव पहुँच गया और बुढिया ने जो लडकी देख रखी थी उससे शादी कर ली। तीसरे ही दिन बुढिया ने आँखें मूद ली और वह अपनी बीवी के साथ वापस बम्बई आ गया।

और पहली बार उसे पता चला कि उसके पास अपने कपडो क अलावा कुछ भी नही है। अभी तक उसने कुछ भी सामान इक्ट्ठा नही किया था। बीवी को साथ लेकर रहेगे कहाँ यह बात सोची भी न थी। अभी तक तो वह गैराज म ही सोया करता था। पहले दो दिन बीवी क साथ एक होटल म रहा। पसे खत्म होने पर एक रात उसने गराज म खडे एक ट्रक म ही काट दी। दूसरे दिन मालिक से चार सौ रुपये लेकर उसने अधेरी मे ही एक झोपडी ले ली।

मेथा पप पर आता और मोटरो की कतारें हमशा की तरह लग जाती। तजी स मोटरें रुक्ती और पट्रोल लेकर चल दती। एक बार दयानद गराज म कार्ब्युरेटर साफ करने म लगा हुआ था तभी हडबडाते हुए नूर वहा आया।

मेथा साहब बुला रहे हैं।'

हाथ धोकर दयानद कशियर क अदर वाले कमरे म दाखिल हुआ तो देखा कि मेथा के सामने वाली टेबिल पर एक रौबीला आदमी बठा हुआ

है।

काम करोगे ?

'क्या नहीं साब!"

मेथा ने सामने बैठे आदमी को इशारा किया। तभी उस आदमी ने अपने ब्रीफकेस से एक कोट निकाला। दयानंद की ओर देखकर बोला, इसे फिट होगा?'

मेथा ने कहा पैसे जरूर मिलेंगे, पर मुँह से एक शब्द भी बाहर नहीं निकलना चाहिए।'

दयानंद कोट की ओर देखता रहा। उसके बदन पर काँटे उभर आये। उसने भाँप लिया था कि काम किस तरह का है। आज तक वह पप पर आँखें बंद रखे न बैठा था। उसने भी कुछ योजनाएँ बनायी थीं।

क्या—?' मेथा ने उसकी ओर देखा। मेथा की नजर जरा कड़ी थी। दयानंद को लगा कि अगर इस वक्त उसने मना किया तो वह उसका गला दबा देगा।

उसने हँसकर कहा, 'देखिये तो साब, मुँह से आवाज तक न निकलेगी।'

मेथा हँस दिया। फिर वह आदमी चला गया। मेथा ने कहा, 'देखो, मैं तुम्हें एक पता देता हूँ। कोट पहनकर वहाँ टैक्सी से जाना और वापस आ जाना। यह लो तुम्हारे खर्चे के लिए दो सौ रुपये।"

'और बीच में कोई पूछे तो?"

इसीलिए तो तुम्हें भेज रहा हूँ। तुम कुछ भी नहीं कहोगे, इस बात को जानता हूँ मैं।'

दयानंद ने रुपये कोट की जेब में ठूँस लिये। पैंट मैली थी। उसने कोट बदन पर चढ़ा लिया। कोट बगल से ढीला-ढाला था, लेकिन काफी भारी महसूस हो रहा था।

साब पैंट जरा ज्यादा मैली है। किसी को शक हो सकता है। घर जाकर पैंट बदल आऊँ?

नहीं वक्त जरा भी नहीं है।' मेथा की आवाज कुछ हड़बड़ाहट वाली थी।

'ठीक है।'

और सुनो, टैक्सी घर से पहले ही रोक देना। लौटते वक्त दूसरी टैक्सी कर लेना।

काम बहुत ही आसान था। घर से पाँच मिनट आगे चलते ही टैक्सी मिल गयी। बीस मिनट बांद्रा पहुँचने में लग गये। दयानंद ने उस फ्लैट

की बैल बजायी तो एक बूढ़े ने हसत हुए दरवाज़ा खोला। दयानद के अदर आते ही दरवाज़ा बद कर लिया। उसके बदन पर से कोट निकालकर उसन उसे सोफे पर बिठाया और अदर चला गया। दस मिनट म वापस लौटा। दयानद ने कोट फिर से पहना तो काफी हल्का महसूस हो रहा था।

दयानद पप पर वापस लौटा तो मेथा पसीने से तर था। दयानद को देखत ही उसका चेहरा खिल गया।

हो गया ?

एकदम।'

'बहुत अच्छे ! मैं याद रखूगा। इसी तरह काम करते रहे तो तुम खुद ऐसे दस पप खरीद सक्त हो।

दयानद हँस दिया और फिर कोट उतारन लगा।

'नही।' फिर हसकर बोला कोट तुम्हारा ही है। अब घर जाओ। आज छुट्टी।'

तभी स दयानद के दिन पलट गये। पप पर अब भी वह चाह जो काम करता हो लेकिन यह आदमी मुझसे तेज़ है इस बात को नूर जानता था। दयानद की कमाई भी बढ गयी। काम भी बढ गये—कोट पहनकर जाना मेथा के कुछ कागजात इधर उधर ले जाना कार ले जाकर हवाई अड्डे पर किसी का स्वागत करना इधर की चीजें उधर पहुँचाना। चार पाच बार मेथा ने उसे बम्बई से बाहर भी भेजा था। मेथा का विश्वास बढा तो उसे और भी काम सौंपे जाने लगे। बम्बई के बाहर क काम जोखिम वाले हुआ करते थे।

मेथा के पास कोड सदेश आया करते थे। अमुक पडाव अमुक जगह लगने वाला है। बस उसके अनुसार आगे के काम किये जात थे। मेथा का जाल काफी दूर तक बिछा हुआ था। किनारे के मछुआरो से सपर्क करना बल गाडी या ट्रक की यवस्था करना, उनके रास्ते तय करना इसका ध्यान रखना कि टक ठीक तरह से आ रहा है या नही पुलिस की निगाह पडने पर क्या करना—इन तमाम बातो मे दयानद होशियार हो चुका था। वह एक अलग ही दुनिया थी। बाहर की दुनिया को इस दुनिया का खास पता न था। दयानद खुद भी कहा जानता था ! कभी कभी तो ऐसी बात हो जाती कि दयानद भी उलझ जाता था। उसे लगता जसे उसे न का जरा भी अता पता नही है।

जया जब पाच साल की थी, क ।

में दयानंद माल सहित पकड़ा गया था। उसे लगा था कि बस अब हो गया सब कुछ खत्म। लेकिन बम्बई पहुँचते पहुँचते कुछ ऐसा हुआ कि दयानंद छोड़ दिया गया।

मेथा का सारा ही काम रहस्यमय था। सफेद पाजामा सफेद शर्ट और सिर पर सफेद फर की टोपी। इस हालत में मेथा कुर्सी पर बैठता तो किसी को शक भी नहीं हो सकता था कि उसकी जेब में पचास हज़ार का माल है। उसकी जेब की छोटी सी डायरी में पाँच छह करोड़ का हिसाब लिखा रहता था। अपनी उँगलियों की हीरे की अँगूठी वह घुमाने लगता तो एकदम बेवकूफ नज़र आता था। लेकिन निगाह पैनी रहती थी। उसके पाजामे की जेब में पिस्तौल रहती है यह बात दयानंद जानता था। लेकिन इन सभी बातों को वह धीरे धीरे जान सका था।

मेथा के फोर्ट वाले आफिस की जानकारी तो उसे काफी बाद में मिल सकी। उसे कहाँ से संदेश आते हैं और उसका बॉस कौन है यह उसे आज तक पता नहीं चल सका है। मेथा के कांटैक्टों की जानकारी उसे धीरे धीरे होने लगी थी।

लेकिन दयानंद महत्वाकांक्षी था। इन सभी बातों की जानकारी उसे हो रही थी कि सारा जाल कहाँ तक बिछा हुआ है सिलसिले कहाँ कहाँ फैले हुए हैं। वह यह तो जान गया था कि मेथा ही सबसे बड़ा आदमी नहीं है। कभी कभी फोन पर बातें करते हुए मेथा सनक हो जाता था और बेहद अदब से बातें करने लगता था। उसकी अँग्रेज़ी बेहद अच्छी थी। लेकिन मेथा फोन पर यस सर सर्टेनली सर आई वुड डू माई बेस्ट सर आई अंडरस्टैंड सर' से आगे कुछ बोलता ही न था।

मेथा का घर कहाँ है दयानंद नहीं जानता था। दो तीन जगह आलीशान फ्लैट में मालिक के से रौब में बैठे दयानंद ने उसे देखा था। बांद्रा वरली और जुहू पर। हर जगह एयरकंडीशंड फ्लैट आधुनिक फर्नीचर उम्दा गलीचा और चार पाँच फोन। हर जगह मेथा का रौब मालिक जैसा था।

मेथा को उत्सुकता बिलकुल पसंद न थी। बताया काम करना और पैसे लेना बस वह इतना ही चाहता था। दयानंद बहुत कम बोलता है यही उसकी सबसे बड़ी योग्यता थी। शुरू शुरू में दयानंद ने कुछ सवाल पूछने की कोशिश की थी। लेकिन मेथा का चेहरा देखकर उसने फिर सवाल करने की गलती नहीं की। नूर अब्राहिम का तो दयानंद के बराबर भी जानकारी नहीं थी। लेकिन नूर के काम दयानंद से बिलकुल अलग तरह के थे। नूर आस पास लोग इकट्ठा किये रहता था। मेथा के इशारे पर

की बैल बजायी तो एक बूढ़े ने हँसत हुए दरवाजा खाला। दयानद के अदर आते ही दरवाजा ब-द कर लिया। उसके बदन पर से काट निकालकर उसने उसे सोफे पर बिठाया और अदर चला गया। दस मिनट म वापस लौटा। दयानद ने कोट फिर से पहना तो काफी हल्का महसूस हो रहा था।

दयानद पप पर वापस लौटा तो मेथा पसीने से तर था। दयानद का देखत ही उसका चेहरा खिल गया।

‘ हो गया ?

एकदम।

बहुत अच्छे ! मैं याद रखूगा। इसी तरह काम करते रहे तो तुम खुद ऐसे दस पप खरीद सकते हा।

दयानद हँस दिया और फिर कोट उतारने लगा।

नहा।' फिर ह सकर बोला, काट तुम्हारा ही है। अब घर जाओ। आज छुट्टी।

तभी स दयानद के दिन पलट गये। पप पर अब भी वह चाह जो काम करता हो लेकिन यह आदमी मुझसे तेज है इस बात को नूर जानता था। दयानद की कमाई भी बढ गयी। काम भी बढ गय—कोट पहनकर जाना मेथा के कुछ कागजात इधर उधर ले जाना कार ले जाकर हवाई अडडे पर किसी का स्वागत करना, इधर की चीजें उधर पहुँचाना। चार पाच बार मेथा ने उसे बम्बई से बाहर भी भेजा था। मेथा का विश्वास बढा तो उसे और भी काम सौंपे जाने लगे। बम्बई के बाहर क काम जोखिम वाले हुआ करते थे।

मेथा के पास काड सदेश आया करते थे। अमुक पडाव अमुक जगह लगने वाला है। बस उसके अनुसार आगे के काम किये जाते थे। मेथा का जाल काफी दूर तक बिछा हुआ था। किनारे के मछुआरो से सपक करना बल गाडी या टक की व्यवस्था करना, उनके रास्ते तय करना इसका ध्यान रखना कि ट्रक ठीक तरह से आ रहा है या नही पुलिस की निगाह पडन पर क्या करना—इन तमाम बातो मे दयानद होशियार हो चुका था। वह एक अलग ही दुनिया थी। बाहर की दुनिया को इस दुनिया का खास पता न था। दयानद खुद भी कहाँ जानता था ! कभी कभी तो ऐसी बात हो जाती कि दयानद भी उलझ जाता था। उसे लगता जसे उसे इस काम का ज़रा भी अता पता नही है।

जया जब पाच साल की थी, तब मुरबाड के करीब ऐसे ही एक काम

में दयानंद माल सहित पकड़ा गया था। उसे लगा था कि बस अब हो गया सब-कुछ खत्म। लेकिन बम्बई पहुँचते-पहुँचते कुछ ऐसा हुआ कि दयानंद छोड़ दिया गया।

मेथा का सारा ही काम रहस्यमय था। सफ़ेद पाजामा, सफ़ेद शर्ट और सिर पर सफ़ेद फर की टोपी। इस हालत में मेथा कुर्सी पर बैठता तो किसी को शक भी नहीं हो सकता था कि उसकी जेब में पचास हज़ार का माल है। उसकी जेब की छोटी-सी डायरी में पाँच छह करोड़ का हिसाब लिखा रहता था। अपनी उँगलियों की हीरे की अँगूठी वह घुमाने लगता तो एकदम बेवकूफ़ नज़र आता था। लेकिन निगाह पैनी रहती थी। उसके पाजामे की जेब में पिस्तौल रखी है यह बात दयानंद जानता था। लेकिन इन सभी बातों को वह धीरे धीरे जान सका था।

मेथा के फोर्ट वाले आफिस की जानकारी तो उसे काफ़ी बाद में मिल सकी। उसे कहाँ से संदेश आते हैं और उसका बॉस कौन है यह उसे आज तक पता नहीं चल सका है। मेथा के कांटैक्टों की जानकारी उसे धीरे धीरे होने लगी थी।

लेकिन दयानंद महत्त्वाकांक्षी था। इन सभी बातों की जानकारी उसे हो रही थी कि सारा जाल कहाँ तक बिछा हुआ है, सिलसिले कहाँ-कहाँ फैले हुए हैं। वह यह तो जान गया था कि मेथा ही सबसे बड़ा आदमी नहीं है। कभी कभी फोन पर बातें करते हुए मेथा सनक हो जाता था और बेहद अदब से बातें करने लगता था। उसकी अँग्रेज़ी बहुत अच्छी थी। लेकिन मेथा फ़ोन पर यस सर, सर्टेनली सर, आइ वुड डू माई बेस्ट सर, आई अंडरस्टैंड सर से आगे कुछ बोलता ही न था।

मेथा का घर कहाँ है दयानंद नहीं जानता था। दो-तीन जगह आलीशान फ्लैट में मालिक के से रौब में बैठे दयानंद ने उसे देखा था। बान्द्रा, वरली और जुहू पर। हर जगह एयरकंडीशंड फ्लैट, आधुनिक फर्नीचर, उम्दा गलीचा और चार पाँच फोन। हर जगह मेथा का रौब मालिक जैसा था।

मेथा को उत्सुकता बिलकुल पसंद न थी। बताये काम करना और पैसे लेना बस वह इतना ही चाहता था। दयानंद बहुत कम बोलता है, यही उसकी सबसे बड़ी योग्यता थी। शुरू शुरू में दयानंद ने कुछ सवाल पूछने की कोशिश की थी। लेकिन मेथा का चेहरा देखकर उसने फिर सवाल करने की गलती नहीं की। नूर अब्राहिम को तो दयानंद के बराबर भी जानकारी नहीं थी। लेकिन नूर के काम दयानंद से बिलकुल अलग तरह के थे। नूर आस-पास लोग इकट्ठा किये रहता था। मेथा के इशारे पर

किसी को भी पाठ पढ़ाने का काम नूर किया करता था। दयानंद के डिपार्टमेंट से उसके डिपार्टमेंट का कोई वास्ता ही न था।

दयानंद ने चार साल सुनंदा के साथ अंधेरी की झुग्गी-बस्ती में बिताये थे। पैसे मिलते ही उसने अंधेरी वेस्ट में ही दो कमरों का मकान किराये पर ले लिया। वह मकान छोटा लगने लगा तो उसने घाटकोपर की जगह ले ली। पैसे आने लगे तो सुनंदा भी खुश हो गयी। वह गरीब बाप की बेटी थी, इस वजह से अंधेरी की झुग्गी-बस्ती में उसे कुछ बुरा न लगा। हां गंदगी से तकलीफ जरूर होती थी। जिन्दगी में उसकी खास तमन्नाएं न थीं। उसे बम्बई ही कौतुक लगा करती थी। लेकिन जब पैसा मिलने लगा तो उसकी तमन्नाएं भी उभरने लगीं। दयानंद पर विश्वास बढ़ गया। बीच में उसे भय भी लगता था। किसी अदृश्य डर से वह घबरा जाती थी। डर किस वजह से है यह वह न बता पाती थी। अपना पति इतना पैसा कमा रहा है इस बात से तो उसे खुशी होनी चाहिए। लेकिन घर में पैसों और दूसरी चीजों की आमद जैसे जैसे बढ़ने लगी वैसे वैसे उसकी हालत अजीब-सी होने लगी। उसे पैसा और चीजें चाहिए थीं लेकिन उसे स्वीकारने में हम कोई बड़ी गलती कर रहे हैं इस बात का एहसास भी उसे हुआ करता था। समाधान उन पैसों में न था। सुख न था। इतना पैसा आता कहां से उसे इसी बात पर आश्चर्य था। लेकिन पूछने के बावजूद भी दयानंद कुछ बताता न था। उल्टे उस पर नाराज हो जाया करता था। इसी वजह से धर्म भक्ति की ओर सुनंदा का झुकाव हो चला था।

दयानंद सुनंदा की हालत अच्छी तरह जानता था। लेकिन कोई इलाज न था। वह अनजाने में ही उलझ चुका था। उसमें से निकलना अब मुश्किल ही था। पैसे मिलते ही उसके मन में बाहर जाने की इच्छा जागने लगती थी। हाथ में पैसा आ जाये तो गांव में एक दुकान डाली जा सकती है। यह बात नहीं थी कि उसे पैसा नहीं चाहिए था। लेकिन वह इस झंझट से बाहर निकलना चाहता था। उसका विश्वास था कि दुकान डाल दी जाय तो किस्मत से काफी कुछ कमा सकते हैं। गांव में दुकान डालने की बात कई बार कह भी चुका था।

एक बार मेथा ने उसे पप के अंदर वाले कमरे में बुलवाया। वह काफी अच्छे मूड में था। ऐसे वक्त पर मेथा इतनी मीठी आवाज में बोलता था कि कोई भी किसी काम के लिए राजी हो जाय। नूर इसी बात पर उसके काबू में था।

मेथा इम्पोर्टेड सिगरेट पी रहा था। एक सिगरेट उसने दयानंद को दी और उसकी ओर देखते हुए वह हंस दिया।

तुम्हारे काम पर हम बेहद खुश हैं।" गुजराती के बजाय मेथा मराठी अच्छी बोल लेता था। उसकी एक बीवी मराठी है इसकी जानकारी नूर को थी।

पैसा की तो कोई दिक्कत नहीं है न? जरूरत हो, ले लेना। अब एकाध फ्लैट भी खरीद लो।" सिगरेट के कश खींचता हुआ मेथा दयानंद की ओर लगातार देखे जा रहा था।

'अभी तो खास जरूरत नहीं है,' दयानंद ने कहा।

वह सोच रहा था कि मेथा ने किसी और ही काम के लिए उसे बुलवाया होगा।

सुना है कि काम छोड़कर गाँव में दुकान डालने का इरादा है, तुम्हारा? सुना था, इसी वजह से पूछ रहा हूँ।

दयानंद के चेहरे पर रौनक आ गयी। मालिक को मेरे काम में इतनी दिलचस्पी है उसे अचरज हुआ।

'हाँ, सोच तो यही रहा हूँ।"

"अच्छा!" मेथा ने सिगरेट का लम्बा कश खींचा। वह फिर हँस

ा। चार पाँच कश खींचने तक वह कुछ न बोला। फिर लगातार दया की ओर देखते हुए बोला तुम्हारी लड़की कितने साल की है?"

"आठ।'

'अभी तो उसका सभी-कुछ होना बाकी है। तुम्हारी बीवी अकेले उसे

ा कर सकती है?"

एँ?'

मेथा ने पथरीली निगाह से दयानंद की ओर देखा और दयानंद के

ाथे पर पसीना आ गया। उसका गला एकदम खुश्क हो गया और उसे

गा जैसे उनके दाँत एक-दूसरे से चिपक गये हैं।

लेकिन मेथा की वह पथरीली नजर कुछ ही पल बाद दयानंद पर

टकी और फिर दूसरी ओर फिर गयी। अगले क्षण वह फिर हँस दिया।

ूसरी सिगरेट सुलगाते हुए हँसने-हँसते ही बोला 'दुकान से क्या आमदनी होने वाली है? एँ? यहाँ तो न जाने कितना कमा लोगे।"

फिर मेथा एकदम गंभीर हो गया। अब उसकी आँखों में न तो हँसी ही थी और न खूंखारपन। कुछ सहानुभूति जरूर थी। टेबिल पर कुछ आगे की ओर झुकते हुए उसने कहा, सुनो, इस इरादे को छोड़ दो। इसमें तुम्हारी भलाई नहीं है।'

दयानंद का गला अभी भी सूखा हुआ था।

'मैंने खुद शुरू में ऐसा ही सोचा था—बिलकुल तुम्हारी तरह। लेकिन

वह नामुमक्नि है।'

मेथा फिर कुर्सी पर अक्डकर बैठ गया। एक क्श खीचकर उसने गदन हिलायी।

'एक बार उलझ गये तो बाहर निकलने की कोई गुजाइश नही रहती। दुनिया बडी धोखेबाज़ है। यहाँ हरेक को अपनी जान का डर लगा रहता है। फिर तुम कितना कुछ जान चुके हो। तुम्हे जाने देना न तो तुम्हारे हित म है और न हा घधे के हित मे।"

दयानन्‍ चुप रहा। मिगरेट पीता हुआ धुएँ की तरफ देखता रहा। कुछ देर तक दानो चुप रह। फिर दयानद हँस न्यिा।

मैं तो यो ही सोच रहा था। अभी तय तो किया नही ।

इस खयाल को न्मािग स निकाल दो मेथा हाथ की अगूठी को घुमात हुए बोला। यहाँ बम्बई म तुम जो चाहो सो कर सकते हो।

मतलब ?'

अरे पसा आन्मी को क्या नही दे सकता ? अब तक तुम्हारे पास पद्रह हजार तो हो ही चुके होगे।'

दयानद चुप था।

सुनो। मेरी बात मानो। मानोग तो तुम्हारा ही भला होगा। पसा तुमने बक मे न रखा होगा। दो अलग अलग बका म एकाउन्‍ खोल ला। सारा पसा एक जगह न रखना। सच देखा जाये तो एकाध गाडी भी तुम्हारे पास होनी चाहिए। लेकिन एकन्म मत खरीद लेना। किसी को शक हो जायेगा। पहले तुम अच्छा खासा तीन चार कमरो का फ्लैट ल लो। वहा तीन चार साल रहने के बान्‍ तुम मलाबार हिल पर बँगला खरीद लेना। तब किसी के भी नज़र म भी नही आयेगा।

कुछ पल रुककर मेथा ने बात आगे बढायी। 'एक बात और कहनी है। नूर से मत कहना। आग से मैं तुम्हे कमीशन दूगा। किस पर और कितना यह मत पूछना।

दयानद की आँखो म सवाल था।

तुम होशियार हो' उसकी ओर देखता हुआ मथा बोला मेहनत से काम करोगे और मरी सुनोगे तो कहीं के-कही जा पहुँचोगे।

मेथा ने लबी साँस ली। उसकी आँखें ऊपर धुएँ म उलझी हुई थी। कमीशन के कितन पसे मिलेंगे ? क्या सोचते हो ? बाहर का एक काम करोगे तो मैं तुम्ह दस हज़ार कश न्यिा करूगा।'

दयानद की आँखो म चमक आ गयी। मेथा हँस दिया। फिर बोला, 'देखा ? पसो स सभी कुछ हा जाता है।

कुछ देर और सिगरेट पीने के बाद मेथा ने धंधे की बात शुरू की। उसने अचानक दयानंद से पूछा—

'सुनते हैं तुम्हारी कोस्टा से पहचान है ?'

'कोस्टा ?''

दयानंद उलझन में था। फिर एकदम चमक उठा।

'आ, यूनियन-लीडर कोस्टा ?''

मेथा लगातार उसकी ओर देखे जा रहा था।

'जान-पहचान मतलब, कारखाने में था तब यूनियन का मैं काम किया करता था। उस बात को काफ़ी साल गुजर चुके हैं। अब पता नहीं, वह मुझे पहचान पायेगा या नहीं।'

मेथा की नजरें कुछ ढीली पड़ गयीं। वह हँसा।

'मैंने सुना था पर पक्का कर लेना चाहता था।''

'क्या उससे कुछ काम है ?'

'वह जरा डेंजरस आदमी है। हम लोगों के धंधे पर उसकी नजर है। उससे कोई संबंध न रखना अब।'

'ओ के।'

'मैं जानता हूँ तुम एक अच्छे आदमी हो। मेरे कहे पर चलोगे तो काफ़ी आगे बढ़ जाओगे।'

मेथा हँसते हुए कुर्सी से उठ गया। आगे बढ़कर उसने दयानंद की पीठ थपथपायी। एक बार फिर उसकी निगाह में सख्ती पैदा हुई और झटके के साथ दरवाजे से बाहर जाने से पहले बोला धंधे से बाहर जाने का इरादा छोड़ दो।'

कोस्टा का ज़िक्र मेथा ने क्यों किया यह बात दयानंद की समझ में न आ सकी। पैट्रोल पम्प पर काम करने के बाद से तो वह यूनियन की बात भूल ही चुका था। कोस्टा उसे पहचान भी नहीं पायेगा। असलियत यही थी। लेकिन मेथा को कहाँ से पता चला कि मेरी कोस्टा से पहचान है ? मेरा संबंध उससे जोड़ना जरूर गड़बड़ की बात है दयानंद समझ गया। लेकिन इसका कोई इलाज न था। उसे लगा कि अब मेथा के दिमाग़ से यह बात निकालनी चाहिए। उसने गर्दन को एक झटका देकर इस गुमान को परे कर दिया।

दयानंद की हालत अजीब हो गयी। पैसे की क़ीमत अब वह जानने लगा था। लेकिन पैसा कैसे खर्च किया जाय इस बात को वह अभी तक न समझ पाया था। उसके दिमाग़ में बस एक ही ख़याल बसा हुआ था, गाँव में एक दुकान डाल देना और ख़ुशी से ज़िन्दगी बसर करना।

"इस बार का माल बड़ा है।' मेधा ने फहरिस्त उसके आगे कर दी। दयानंद ने लिस्ट पढ़ी। उसकी आँखें चमकने लगी।

चार लाँच आने वाली हैं। उन लोगों के पास एक मशीनगन भी है। तुम अपने साथ कुछ न ले जा सकोगे।"

फिर दोनों ने मिलकर किनारे का नक्शा बारीकी से देखा। निशान बनाये, जगह तय की इशारे तय किये और यह भी तय किया कि ट्रक में पहले क्या-क्या और कितना कितना माल रखना है।

मेधा ने कहा 'आपरेशन जरा खतरनाक है। हम लोगों ने पहले कभी यहाँ माल नहीं उतारा है कस्टम वाले इधर कभी नहीं फटकते। लेकिन मुझे जरा शक है कि पता नहीं कहीं खबर तो नहीं लग गयी।"

फिर तो जगह बदल देनी चाहिए।"

पर अब संदेश जा न सकेगा। माल बड़ी होशियारी से वहीं उतारना होगा। दो-तीन दिन तक वहीं पड़ रहो तो भी चलेगा। ट्रक वहीं के चाहिए। इससे किसी को शक नहीं होगा। और ऐन वक्त पर कोई आ ही जाये तो क्या करना होगा यह तो तुम जानते ही हो' उसकी पीठ को थपथपाते हुए मेधा ने कहा।

दयानंद हँस दिया। एहसास उसे कई बार हुआ है कि पैसा क्या नहीं कर सकता है। इस बार माल जरा ज्यादा था—बस।

'पर उन लोगों के पास हथियार हैं? वे यदि हमला कर दें तो बड़ी गड़बड़ हो जायगी।

'सुना हम लोगों की तीनों लाँच अभी अफ्रीका गयी हुई हैं। उन्हें लौटने में दस पंद्रह दिन और लगेंगे। यह जो आ रही हैं वे अपनी नहीं हैं। उन लोगों को लौटानी हैं। ज्यादा-से-ज्यादा यही हो सकता है कि पुलिस को डराने के लिए वे गोली चला दें।

"काम जरा जोखिम वाला ही है।"

हाँ। मेहनताना तिगुना मिलेगा।'

इतने में तो काम नहीं चलेगा। खतरे वाला काम है।"

ठीक है तो बीस हजार—बस?'

'ठीक है। अब निकलता हूँ।

सारा दिन इसकी व्यवस्था करने में ही बीत गया। फ्लैट बुक करने का काम सिर्फ़ फ़ोन पर ही हो गया। नये फ्लैट में फ़ोन लगाने की बात भी उसने तय कर ली। रात सोते वक्त भी उसे मेधा की बतायी लिस्ट नजर आ रही थी। लगभग सभी माल पीला था। पूरी क़ीमत लगभग डेढ़ करोड़

होगी। उस हिसाब से मेरे लिए बीस हज़ार रुपये बहुत कम हैं लेकिन कोई हर्ज नहीं। नीद म एक हाथ सुनदा के बदन पर रखे होने के बावजूद उसके सामने वही लिस्ट नाच रही थी।

कल आप मोटर से आये ?' सुनदा ने पूछा।

'हाँ मेथा ने दी है।'

मतलब वह जो सामने खडी है ? मुझे तो लगा था कोई आपको छोडने आया हुआ है।'

'नही। मैं खुद ही चलाते हुए लाया हूँ।"

'हाय राम !'

सुनदा की आँखें गव से चमकन लगी। घर का काम करते हुए वह गाना गुनगुनाने लगी। उसने जया को उठाया।

देख तो, बाबूजी तेरे लिए मोटर लाये हैं।

तो अब मुझे रोज़ाना स्कूल मे मोटर से ही पहुँचाना बाबूजी।'

'अरी पगली अपनी नहीं है वह।" सुनदा ने कहा।

तो कौन बडी बात है ? नये फ्लट म जान पर हम भी मोटर खरीद लेंगे।'

सुनदा अचरज से देखन लगी। हँसकर बोली 'चलो हटो आप ता यों ही , लेकिन उसके सीने म फिर दद उठा था। कहाँ से इतन पैसे लाते हैं ? उनके लिए तो कोई भी चीज़ मुश्किल नही लगती। कल अगर कहा जाये कि हवाई जहाज़ खरीद लीजिये तो सीधे कहगे देखते है अगले महीने। कालोनी मे औरतें न जाने क्या क्या कहती रहती है। मेथा सोने का चोरी-छुपे धधा करता है और यह उसकी मदद करते हैं—इसलिए इतना पसा है। सुनदा बेचन हो गयी।

अपने बाप की पीठ से टिक कर सुनदा की तरफ न देखत हुए जया ने कहा 'बाबूजी आप रोजाना देर से घर आते हैं और जल्दी घर से चले जाते हैं। मुझसे तो बातें ही नही करते।"

'अरे म रे तो खयाल मे ही नही आया।

आज काम पर नही जाइये। मेरे सवाल हल करा दीजिये।"

अरे यो कसे चलेगा ? हम लोगो को मोटर खरीदनी है न।"

सच ?'

और नही तोक्या ?"

"फिर मज़ा आयेगा। मैं तो रोज़ाना मोटर से ही स्कूल जाया करूँगी हमारे स्कूल मे दो बच्चे अपनी मोटर म आते हैं। एस अकडते हैं ।'

'देखो, तुम भी अकडने लगोगी।"

'हाँ ।''

दयानद ने उसकी पीठ प्यार से थपथपा दी और फिर बाहर जाने की तयारी करन लगा। उसे खुद को शिक्षा-दीक्षा मिली नहीं सुनदा भी ऐसी खास पढी लिखी न थी। लेकिन जया को अच्छी तरह पढाना-लिखाना चाहिए। इसी वजह म उसने उसे कान्वेंट स्कूल म दाखिला दिलवा दिया था। उसके संस्कार अच्छे हों इस तरफ वह खास ध्यान देता था। इसी वजह से उसके सीने में कभी-कभी दद उठना अपना धंधा। उसे पता चल जाये तो वह क्या सोचेगी। सुनदा की फिक्र नहीं है। वह ज्यादा-से-ज्यादा उसका तिरस्कार करेगी। लेकिन जया? वह क्या सोचेगी? जया देखने मे सुंदर है होशियार है। उस पर इन बातों का जरा भी असर नहीं पडना चाहिए। उसकी जिंदगी शांतिपूर्ण होनी चाहिए। मेरी जिंदगी भी आखिर किसके लिए है? मेरा पैसा किसके लिए है? अगर उसे पता चल जाये कि यह पसा किस तरह आ रहा है तो उसे कैसा लगेगा? यह धंधा क्या वाकई छोडा जा सकता है? मेथा की आँखें? नूर अब्राहिम मेथा की लडकियाँ शराब ट्रक ड्राईवर पपर की बातें सान की छडें सुनदा की फूलती साँस और जया की भोली भाली आँखें—बाथरूम के शॉवर के नीचे दयानद इन ख्यालों से परेशान हो गया। क्या नहीं छोडा जा सकता? क्यों नहीं? हज क्या है? अब मेरी जानकारी भी काफी हो गयी है। मेथा के छक्के पंज समय म आ गये हैं। फिर क्यों नहीं?

अब जो जाऊँगा तो कल दोपहर तक नही लौट सकूगा।'

बाहर आकर दयानद ने कहा।

सुनदा कुछ न बोली। इस बात की उसे आदत हो चुकी थी। कोई नयी बात न थी। वह तेजी से रोटी सेंकने लगी।

जया बाथरूम मे गयी तो दयानद ने सुनदा का चूम लिया।

हटिये हमेशा देर से लौटते हैं और जल्दी जाते हैं। देखा जया कैसे कह रही थी?

कल लौटकर दो दिन की छुट्टी ले लेता हूँ, बस?" उसका हाथ दबाते हुए दयानद ने कहा।

'कोई सुन लेगा।'

'अच्छा देख लेना।'

देख ही रही हूँ इतने दिनों से।'

देखो भई, नया फ्लैट देखने चलना है? पूरा बन ही चुका है अब। महीने भर मे वहाँ रहने चल चलेंगे।

"पाँच कमरे मतलब, कितना बडा फ्लैट!"

फिर ?"

' तुमने वाकई पद्रह हजार रुपये भरे है ?

'और क्या ? '

सुनदा ने तरकारी छौंक दी। फिर दयानद की ओर बिना देखे ही बोली 'औरतें ताने मारती है। पप के मैनेजर को क्या कोई इतने रुपये मिल सकते हैं ?'

अरे औरतें तो पागल हुआ करती हैं। उनसे कहना कि तुम्हारा पति सिफ मनेजर ही नही है हिस्सेदार भी है।'

और अपने नये फ्लट के आस पास ऐसी जिरह करने वाली औरतें होगी ही नही। सभी मोटर वाले होंगे।"

वहाँ जाने पर तो आपका घर की तरफ बिलकुल ध्यान नही रहेगा।'

'मतलब ?"

अभी कौन-सा ध्यान होता है ? घर की कुछ जानकारी है ?

क्यो किसी बात की कमी है ? अभी परसो ही तो दो सौ रुपये दिये थे। मैं तो पहले ही कह चुका हूँ कि घर म किसी बात की कमी नही पडनी चाहिए।

सुनन्दा उसकी ओर पीठ किये गस की ओर देख रही थी। कुछ दर वह चुप रही फिर बोली 'मुझे दो महीने चढ चुके है, जानत हैं आप ? '

'ऐं ?'

सुनदा न थाली परोस दी तो दयानद चुपचाप खाने के लिए बठ गया। सुबह के वक्त खाना खाया नही जाता। लेकिन घर खाना खाने के मौके भी कम ही आ पाते है। अब सुनदा के पेट म एक जीव और आ गया है इसस हडबडाहट कसी ? इससे तो खुशी होनी चाहिए। वैसे हुई भी हैं लकिन बचेनी भी बढी है। दिमाग मे घूमत चक्र की गति कम नही हो पाती। अब यह दूसरी जिम्मेदारी। जया के वक्त कितना डर लगता था! सुनदा को अस्पताल ले जाने के लिए भी पैसा न था। अब उसे बम्बई के सबसे अच्छे अस्पताल मे भेज सकते है। पर फिर भी बेचैनी ? यह धधा क्या छोडा नही जा सकता ? ज्यादा स ज्यादा क्या होगा ? मथा की नजर नूर अब्राहिम ट्रक पीली छडें—!

जया नही खायेगी ?

उसे अभी तयार होना है।

कल लौटने पर छुट्टी ले लेता हूँ। तुम्हे डाक्टर के पास ल चलेंगे।"

क्यो ? मैं खुद जो चली जाऊँगी।'

"नहीं। गाडी से ही चलेंगे। कुछ दिन के लिए हमारी ही है।"

"मुझे तो डर लगता है।"

'इसमे डर कैसा? दूसरी बार है अब तो?"

'मुझे नहीं आपके लिए? चाहे जब आते हो चाहे जब जाते हो।'

औरतों की ऐसी आदत क्यों होती है? सुनदा के ऐसा कहने से मुझे चिढ़ क्यों आती है? वाकई अगर देखा जाय तो वह जो कुछ कहती है वह सभी सच है। डर लगना स्वाभाविक ही है। धोखाधडी तो है ही। मैं सब बातें उसे क्यों नहीं बता पाता? मैंने मन की बात उसे कभी बतायी ही नहीं। कभी भी नहीं। इसी वजह से वह चिढ़ती है। उसका चिढ़ना वाजिब ही है। लेकिन इलाज नहीं। मुझे कुछ बताने की इच्छा ही नहीं होती। पति-पत्नी होने के बावजूद हम दोनों एक-दूसरे से काफी दूर हैं। माँ ने ज़िद न की होती तो मैंने सुनदा से शादी की होती?

दयानद ने उसकी ओर देखा। सुनदा घुटनों पर मुह रखे बैठी हुई थी और बतन में रखी दाल चला रही थी। वह सावली थी लेकिन खूबसूरत। भरे बदन की गदरायी हुई। और अब तो उसके चेहरे पर अलग ही नूर था। पर उसकी खूबसूरती से वह कभी पिघलता नहीं था। भैया के बंगले की लड़कियों या नूर की बीवी को देखकर वह जिस तरह पगला जाता था वैसे सुनदा की ओर देखकर कभी नहीं पगलाया। उसके सौंदर्य को वह तटस्थ नजरों से देखा करता था। अपनी इस आदत से वह खुद बेचैन हो जाया करता था।

लेकिन आज की बेचैनी कुछ अलहदा ही है। क्यों ऐसी बेचैनी महसूस हो रही है? आज का काम खतरे का है लेकिन क्या ऐसे काम पहले कभी किये नहीं। आज ही ऐसा क्यों लग रहा है? यह सब छोड़ देना चाहिए। कोई रास्ता ढूढना ही होगा। क्या कोई रास्ता नहीं निकल सकता? भैया को भी उसकी हालत मालूम है। उसका पासपोर्ट है। लंदन स्वीटजरलैंड के बैंकों में पैसा है। दुबई में आदमी हैं। उसकी कुछ तो योजनाएँ होंगी ही। क्या हम भी कुछ कर सकते हैं?

'आपका खाने में मन नहीं है।'

'भूख ही नहीं है। बाहर खा लूगा।'

'अरे बाबूजी आपका तो खाना भी हो चुका? आप आज इतनी जल्दी जायेंगे काम पर?'

'पर कल हम छुट्टी लेंगे। शाम को घूमने चलेंगे। कहीं अच्छा खाना खायेंगे। है न?'

एक भारी खामोशी। गंभीर मौन। फिर दयानद ने हाथ धोये और—

अंदर के कमरे में आकर वह कपड़े पहनने लगा। आज टाई बाँधनी चाहिए। कामर्शियल एजेंट जैसा दीखना चाहिए। पैंट पहनकर जब वह खिड़की के करीब आया तो कॉलोनी के सभी लोग स्टेशन की ओर जाते नजर आये। हाथ में बैग लटकाये गाड़ी पकड़ने के इरादे से तेज़ी से भागे जा रहे थे। औरतें भी थीं। इधर-उधर न देखते हुए हर कोई गाड़ी पकड़ने की जल्दबाजी में था। कलाई की घड़ी की ओर देखते हुए साड़िया के पल्लू सम्हालते हुए बालों पर हाथ फेरते हुए वे तेजी से बढ़े जा रहे थे।

दयानंद ने लम्बी साँस ली। वह रेलिंग पकड़े कुछ देर यों ही खड़ा रहा। जया बड़ी होगी। बेचारी! इस दुनिया में जैसी कशमकश में हम जिये उस तरह की जीने की ताकत क्या उसमें होगी? हम उसे मदद दे सकते हैं? लेकिन आखिर में तो उसे खुद ही दुनिया के सामने जाना होगा। कौन होगा जिसका हाथ थामे वह इस दुनिया में रहेगी? और सुनंदा? बादल की तेज़ गड़गड़ाहट जैसी आवाज़ उसके कान में हुई। मैं उसका खयाल ही नहीं करता। उसे हमेशा नज़रअंदाज़ करता रहा हूँ। अब एक नया जीव पनप रहा है। वह पल पल बढ़ रहा होगा। और जब वह जन्म लेगा और पूछेगा—मेरे पिता कौन हैं तब सुनंदा क्या बतायेगी? हम क्या बतायेंगे?

उन खयालों को दूर हटाने के लिए उसने अपने सिर को एक झटका दिया। आज इस काम की वजह से हम नर्वस हो रहे हैं लेकिन क्या ऐसे काम कभी पहले किये नहीं हैं? आज भी कर गुज़रेंगे! फिर तो अलग होने की राह तलाशेंगे। रास्ता तो ढूँढना ही होगा। रास्ता तो कोई होगा ही। क्या नहीं होगा? नहीं भी हो तो हम खोज लेंगे।

दयानंद को अचानक डीकोस्टा की याद आयी। कोस्टा कोई राह बता देगा। उसे यह खयाल ही हास्यास्पद लगा। और उसने वह खयाल ही दिमाग से झटक दिया।

पर कोस्टा उसके दिमाग से हट नहीं रहा था। डेंजरस आदमी है’ भैया के शब्द उसे याद आये। कोस्टा यूनियन-लीडर था। और उसने कई बातों के खिलाफ आंदोलन चला रखा था। इस बात को वह जानता था कि उसने हमारे धंधे के विरुद्ध भी खिलाफत छेड़ रखी थी। लेकिन कोस्टा से मिल कैसे सकते हैं? और वह हमें राह कैसे दिखा सकता है? खुद कोस्टा के खिलाफ ही लोग हो गये हैं।

कोस्टा का खयाल उसके दिमाग से हटता न था। उसने हिसाब लगाया—अगर कोस्टा से चुपचाप मिला जाय तो क्या होगा? ज्यादा से ज्यादा हम उसे कुछ जानकारी दे सकते हैं। उस जानकारी का उपयोग वह

कर सकता है। लकिन क्या उससे मेरा कुछ फायदा हा सकेगा ? हम
,बाहर निकल सकेंगे ? हम इस धंधे म गल तक फँस चुक हैं। मेया की
तरह। इस तरह बाहर निकलना मुश्किल है। कास्टा के पास जाते वक्त
अपने हाथ ता साफ हान चाहिए। फिर क्या फायदा ?

और फिर कास्टा के पास चले भी गय तो ? कोस्टा कैसा आदमी है
इसकी भी पूरी जानकारी नही है। मेया कहता जरूर है कि डेंजरस
आदमी है लेकिन वह किस अथ मे डेंजरस आदमी है ? इस बम्बई म
और इस दुनिया म कौन कसा आदमी है यह बताना मुश्किल है। यह बात
वह खूब जानता है। वह खुद क्या काम करता है, कालोनी के कितने लोग
जानते हैं। कास्टा और मेया के आपसी सबध हो तो ? हो सकता है
सबध न भी हा। लकिन नही होंगे यह क्या विश्वास के साथ कहा जा
सकता है ? मेया के सबध बड़े-बड़े लोगा के साथ हैं, इस बात का वह
जानता था। दोना ओर से खतरे की सभावना हो सकती है। चाहे कोस्टा
अच्छा आदमी हो फिर भी खतरा है।

कुछ देर बाद उसका सिर भिन्नाने लगा। धधे स बाहर निकलने की
इच्छा तो खत्म ही न होगी। पता नही निकल भी सकेंगे या नहीं ? ऐसे ही
जिन्दगी भर पैसा कमाना नसीब म लिखा है शायद। दाँतों से होंठ चबाते
हुए उसने टाई बाँध ली। बस्स। अब बस। धधे स जितना जल्दी हो बाहर
निकलना है।

बाहर के कमरे म आकर उसने जया को ऊपर उठा लिया। जया की
नजर बचाकर सुनदा के गाल मसल दिए। फिर वह बाहर आ गया।

शायद मैं रात को घर न आ सकूँगा। बहुत जरूरी काम है।"

हूँ।

'बाबूजी पर कल सुबह जरूर आ जाना, मेरे स्कूल जाने से भी
पहले। मुझे मोटर म ही स्कूल ले चलना।

लेकिन भई हो सकता है कि मैं रात को देर से आ जाऊँ। नहीं हुआ
तो सुबह तक तो आ ही जाऊँगा। ठीक है ?"

"ठीक है।'

और खर्च के लिए पैसे हैं न ? परसों ही दिए थे।'

हाँ है। जल्दी आना।

'टा-टा।"

'टा-टा।'

दयानद रोड म नीचे उतर आया। गाड़ी का दरवाजा बद कर ऊपर
गैलरी की तरफ हाथ हिलाया। फिर चाबी घुमाकर उसने स्टार्टर दबा

और गाडी तजी से आगे वढा दी। सुनदा गैलरी से तब तक देखती रही जब तक गाडी माड पर घूम न गयी। फिर जया को लेकर वह अदर आ गयी।

दयानद का जाना उसे कुछ अच्छा नहीं लगा। जया को उसने समझाया। उसे खाना खिलाया। लकिन उसका ध्यान उस तरफ नहीं था। वह खुद ही गुनगुनाए जा रही थी। धीमे धीमे मुस्करा रही थी। अपने पेट पर हौले हौले हाथ फेर रही थी। वह जानती थी कि पेट का वह जीव अब बढता ही जायेगा। अब तक तो उसके हाथ-पाँव भी बन चुके होंगे। और वह जरूर गोरा गोरा लडका होगा। सुनदा काप रही थी। किसके जैसा होगा ? दयानद-सा ?

दयानद ने गाडी कालोनी से बाहर निकाली और स्पीड बढा दी। तभी दूसरे घुमाव पर किसी ने उसे रोकने का इशारा किया। कोई लिफ्ट मागने वाला होगा इस इरादे मे उसने स्पीड कम कर दी। ब्रेक दबाया। उस आदमी को देखकर दयानद हक्का-बक्का रह गया।

वह डीकोस्टा था।

'क्या लिफ्ट देंगे ?' कोस्टा ने हसते हुए पूछा और दयानद कुछ कहे इससे पहले ही वह दरवाजा खोलकर अपने आप अदर दाखिल हो गया।

माई गाड पानिटकर तुम !' कोस्टा भी हक्का बक्का था।

इस बात का अचम्भा दयानद को था कि कोस्टा ने मुझे पहचान लिया।

दयानद कुछ कहने की स्थिति मे न था। गाडी की स्पीड बढाते हुए उसने पूछा 'कोस्टा साब कहा जायेंगे ?'

अरे शीव के नाके के करीब। कितनी देर से खडा हुआ था इधर के टक्सी वाले अपन को पहचानते नही न। पर तुम क्या करते हो आजकल ? गाडी तुम्हारी ही नजर आती है ।'

धधा एजेंसी का। पैट्रोल पप है।' दयानद ने टुकडो मे जवाब दिया। लकिन वह कुछ परेशान हो उठा था। कोस्टा अचानक इधर कहाँ से आ टपका ? गाडी मे किसी ने उसे देख लिया तो। तो गाडी मे कोस्टा की उपस्थिति उसे जहर-सी लगी। जितनी जल्दी हो कोस्टा को उसकी जगह पर पहुँचा देना चाहिए। एक्सीलैरेटर पर पाँव दबाकर उसने गाडी की स्पीड तेज कर दी। स्टीयरिंग पर रखे हाथो पर पसीना आ गया।

धधा जोरो पर चल रहा है शायद !' कोस्टा ने पूछा। अच्छा नाम कमाया लेकिन यूनियन से कोई वास्ता तुमने नही रखा ! मेरा तो ख्याल था कि तुम नौकरी छूटने के बाद गाव चले गये होगे।

''नहीं जम पाया, और अब यहाँ की दुनिया कुछ और ही है !'

'पर कभी-कभार मिल तो लेते। अपने को आन्दोलन से इस तरह तो नहीं तोड़ लेना था। हमारे लिए कुछ तो उपयोग होता ही तुम्हारा और हमारा उपयोग तुम्हारे लिए ।'

दयानद हँसा। गाड़ी जिस गति से भाग रही थी, उसी गति से उसके दिमाग में पिछले विचारों की रीलें घूम रही थीं। कोस्टा से मिला जाये?

अभी सब-कुछ बताना ठीक न होगा। लेकिन मौक़ा तो है ही। अभी मुलाक़ात तय कर ली जाय?

आगे की सभी गाड़ियों को पीछे छोड़ते हुए दयानद आगे बढ़ा जा रहा था। कोस्टा की बातें, तेज़ी से भागने वाली गाड़ियाँ, हॉर्न की आवाज़, उसकी गाड़ी की आवाज़, मेथा की नज़रें साने की छडें, जया सुनदा के होंठों की रहस्यमय हँसी—इन सबकी फिल्म एक साथ उसकी आँखों के आगे घूमने लगी।

'कभी तो यूनियन के दफ्तर में आना।' कोस्टा उससे कह रहा था। शीव करीब आ रहा था।

'ज़रूर आऊँगा।'

'हाँ आना। ज़रा इतमीनान से बातें करेंगे। अभी तो तुम बोलने के मूड में ही नहीं दीखते।"

'नहीं वैसी बात नहीं पर आऊँगा कभी।" दयानद नर्वस हो रहा था। लेकिन तब तक वह तय कर चुका था। बिलकुल नामुमकिन असभव मुझसे यह न हो सकेगा। धोखा। बड़ी स्टेक्स हैं। हम तो मामूली आदमी हैं। झटके से दूर फेंक देंगे। पहले ठीक था। सब-कुछ ज़िद में किया था। जान तक दे देते। लेकिन अब मुमकिन नहीं है। ज़िम्मेदारियाँ हैं। जया, सुनदा और उसके चेहरे की रहस्यमय हँसी।

गाड़ी की स्पीड और बढ़ गयी तो कोस्टा बेचैन हो उठा। लेकिन वह कुछ न बोला।

शीव के नारे पर दयानद ने इतने ज़ोर से ब्रेक दबाया कि उस तीखी आवाज़ से रास्ते के सारे लोग एकदम हड़बड़ा गये। गाड़ी का दरवाज़ा खोलते हुए उसने कहा 'माफ़ कीजिये कोस्टा साब बातें न कर सका। अभी ज़रा जल्दी में हूँ, बाद में ज़रूर मिलूँगा।"

कोस्टा की ओर बिना देखे ही उसने गाड़ी फिर तेज़ कर दी। कोस्टा के उतरने के लिए बस एक सैकिंड गाड़ी रोकी होगी।

किंग्स सर्कल के सिगनल के क़रीब गाड़ी रोकनी पड़ी। वजह यह थी कि उसे बहुत पसीना आ रहा था। कालर और शर्ट पसीने में तर थी। माथे पर भी पसीना था। जेब से रूमाल निकालकर उसने पसीना पोंछा तो

लगा कि उसके हाथ बुरी तरह से कांप रह हैं।

कोस्टा की मुलाकात से हालत ऐसी हो जायेगी। इसी स पता चलता है कि हम इस धधे मे कितन गहरे म हैं। वाकई देखा जाये तो इसम ऐसा कोई अजीब बात भी न थी। कोस्टा ने लिफ्ट मांगी और मैंने दी। मेथा को गाडी को हाथ दिखाया जाता तो मेथा भी गाडी रोक देता। फिर इसमें ऐसी कौन सी घबराने की बात है।

लेकिन कोस्टा से उसकी पुरानी मुलाकात है इस मेथा अच्छी तरह जानता था। कोस्टा से सबध न रखन की हिदायत मेथा ने दी थी। अब किसी न कोस्टा को मेरी गाडी म बैठा देख लिया और मेथा को पता चल गया तो ? उसके पेट म अजीब गोला-सा उठा। मैंने कोस्टा को लिफ्ट हा तो दी है लेकिन मेथा बडा शकालु आदमी है। वह न जाने क्या-क्या सोच लगा। मैं अगर उस सही बात बता भी दू तो क्या वह मानेगा ?

शायद किसी ने देखा भी न हो। ज्यादा-से-ज्यादा दस बारह मिनट कोस्टा गाडी म रहा था। दयानद ने खुद को समझाने की कोशिश की।

लेकिन उसकी बचैनी बनी रही। सुबह से हम क्यो नवस हैं ? कही यह कोस्टा म मुलाकात हो जाने की निशानी तो नही ?

दयानद ने सिगनल स गाडी आगे निकाली तो उसे हँसी आ गयी। मैं बडा डरपोक हो गया हूँ। धधे स बाहर निकलने की इच्छा शात जिदगी जीन की कामना से उत्पन्न नही हुई है--धधे म कहीं पकडे जाने के डर म पैदा हुई है। धधे म आगे बढने की ताक्त क्या मुझम नही है ? लगन स काम करें चौकस रह तो मैं भी मेथा की तरह बन सकता हूँ। लेकिन हर कदम पर डर जाता हूँ। बाहर जान की बारी आ जाये तो हम घबरा जाते हैं।

मेथा के और मेरे सबध भी अजीब है। प्रेम आदर द्वेष और भय--इन सबसे बने सबध। मेथा न मुझे काम दिया और आगे लाया इसलिए मन म प्रम। उसकी बुद्धि और होशियारी के लिए किसी के भी मन म उसके लिए आदर हो सकता है। लेकिन जबसे उसस धधे के बारे मे बातें हुई हैं तबसे एक अजीब-सा डर हर वक्त बना रहता है। मेथा बडा भयकर आदमी है। हरामी है। वह लोगो को पकड लेता है तो फिर छोडता नही है। कई बार मन म आया कि उसका सिर फोड दे या उसके सीने पर गोली चला दे। उसके मन के मुताबिक रहा जाये तो उसके जसा मीठा आदमी दुनिया म और कोई नही हो सकता।

मेथा कहता है धधा छोडना नामुमकिन है। उसके लिए भी नामुमकिन है। बहुत साल पहले उसने इस बारे म सोचा था ऐसा लोग कहते हैं।

लेकिन हो नहीं पाया। वह किससे डरता है? उसका बास कौन है? उसी को अपने साथ खींच लूं तो? उसे पटा लिया जाये तो बाहर निकलना मुमकिन है तो ?

दयानद के वदन पर कांटे उभर आये। अपने ही मनसूबा पर उसे हँसी आ गयी और उसका तनाव कुछ कम हो गया। कोस्टा की मुलाकात की बात तो एकदम मामूली है। मुझे उसे खास महत्व न देना चाहिए। यही सोचते हुए उसने गाडी आगे बढाना शुरू कर दिया।

मन की बेचैनी दूर हो जाने की वजह से उसने यो ही दो-तीन बार हॉर्न बजाया और गाडी बाद्रा की ओर बढा दी।

दयानद खुश न था। लेकिन सुबह वाली बेचैनी कम थी। हो सकता है कि कोस्टा की मुलाकात के वक्त जो विस्फोट उसके मन मे हुआ था उसमे उसका मन अजीब तरह से खाली-खाली हो गया हो। लेकिन अब वह सही मन से गाडी चला रहा था।

एक अनिश्चित और स्थिर चित्त के साथ दयानद आगे बढ रहा था। अब तक उसने कुछ तय नही किया था। हम आगे क्या करने वाले हैं यह बात उसने सोची ही नही थी। उसे यही विश्वास था कि आज का काम वह जरूर करेगा। आने वाले दिनों म वह क्या करेगा इस पर वह अभी सोच भी नहीं सकता था। कई रास्ते थे लेकिन किसी भी रास्ते के बारे म वह सोच नहीं सकता था। उसके सामने जैसे एक कोरा परदा था। उसे लगता था कि भविष्य के बारे म अभी कुछ सोचने की खास जरूरत नहीं है। जया मुनशी और सुनदा के चेहरे की रहस्यमय हँसी की याद जरूर उसके मन की तह म छुपी हुई थी। अपनी जवानी की, जिन्दगी की और खुद की ताकत की समझ भी वहाँ मौजूद थी। उसी मस्ती म एक खास अकड एक खास गति के साथ गाडी चलाते हुए दयानद पानिटकर अपने काम पर जा रहा था।

मन में जो हो उसे पूरा करने की जिद कोस्टा में थी। लेकिन कई बातें ऐसी भी थीं, जिन्हें वह समझता जरूर था पर वे मन में जम नहीं पाती थीं। इस बात का एहसास उसे परेशान करता था कि हर बार कहीं-न-कहीं कोई गलती हो रही है। गलती कौन-सी है उसे वह सही तरह से जान न पाता था। पर गलती हो जाने का एहसास जरूर उसे हर वक्त चुभता रहता था।

वह सुबह इसी वजह से उसे बेचैन कर देने वाली थी। भायखला के उसके फ्लैट में जब उसकी नींद टूटी तब साढ़े छह बज चुके थे। उसे एक आदमी को घाटकोपर के अस्पताल में भर्ती कराने के लिए जाना था। लेकिन आज नींद देर से टूटी। सच पूछा जाये तो सात बजने से पहले ही उस आदमी के यहाँ पहुँच जाना जरूरी था। कभी ऐसा नहीं हुआ। लेकिन कल नींद ही जरा देर से आ पायी थी। सच बात तो यह थी कि डीकोस्टा को वहाँ जाने की ऐसी कोई खास जरूरत भी न थी। वह अगर कह भी देता तो दस लोग उसका काम करने के लिए आगे बढ़ आते। लेकिन गंगाराम कासरे बड़ा जिद्-वाला आदमी था। किसी की बात सुनने के लिए तैयार ही नहीं होता था। अस्पताल से उसे डर लगता है। इसी वजह से कहता है कि वह अस्पताल जायेगा ही नहीं। इसी वजह से कोस्टा का जाना जरूरी था। कोस्टा को वह बहुत मानता है। कोस्टा के साथ एक आन्दोलन में पुलिस की लाठियाँ खाकर वह बेहोश हो गया था। कोस्टा के लिए जान भी दे देगा। अब बीमारी की वजह से पीला पड़ गया है। बीमारी काफ़ी बढ़ चुकी है। घर पर बीवी-बच्चे हैं। दो महीने से घर पर ही है। खाने-पीने की अलग परेशानी है।

मुँह धोकर वह कपड़े पहनने लगा। आज नहाना-वहाना खत्म। तभी किचिन का दरवाज़ा खोलकर सिल्विया अन्दर आयी। वह दूसरी ओर के फ्लैट की मालकिन है। डायवोसी। उसका और कोस्टा का किचन एक दूसरे में लगा हुआ है।

सिल्विया ने कहा, 'अरे तुम भी रेडी ?'

हाँ पहले ही देरी हो चुकी है।

'कल रात भी काफ़ी देर तक नहीं आए थे।'

कल आयी थी ?

आफ कोर्स' सिल्विया हँसते हुए बोली।

डाक्टर बत्रा कहाँ है? इधर नहीं है?

टूर पर हैं। पर टी ब्रेकफास्ट के बगैर ही चल दिये?

वाकई देरी हो गयी है।

वेट ए मोमेंट प्लीज़ फार मी!'

आधे मिनट में ही सिल्विया अपने किचिन से एक ट्रे ले आयी। सैंडविच खाने के दौरान कोस्टा ने कहा, थैंक यू वेरी मच! वह इस समय सुबह के पेपर पर निगाह डाल रहा था।

'मुझे तो तुम जैसा फार्मल होना आता नहीं' जरा नाराजगी के साथ सिल्विया ने कहा। कोस्टा सिर्फ हँसता रहा और चाय पीने के दौरान उसकी निगाहों को टालता रहा।

मैंने तो पहले ही कहा। हम अपनी दोस्ती तोड़ दें ऐसा अभी मुझे नहीं लगता। वी कैन रिमेन फ्रेंड्स।'

कोस्टा ने अपने कंधे हिलाये।

'और मैं कहती हूँ कि डाक्टर बत्रा हैज नो आब्जेक्शन। उन्हें मैं सब कुछ बता चुकी हूँ। ही इज वेरी फेयर।

सिल्विया यू आर ए गुड गर्ल!'

बस दैट्स आल?

वन वी कैन रिमेन फ्रेंड्स।

ओह कोस्टा! सच तुम कुछ भी नहीं जान पाये सिल्विया बचन सी बोली। और आगे भी वह न समझ पायेगा यह सोचकर बीच में ही चुप हो गयी।

कोस्टा हँस दिया और बोला अच्छा चलता हूँ। पहले ही काफी देर हो चुकी है।' वेस्टर्न स्टार के पहले पृष्ठ की स्टोरी पढ़कर उसने पेपर एक ओर रख दिया था। उसे बगल में दबाकर वह बाहर आ गया।

बाहर आते ही कोस्टा को ध्यान आया कि आज यूनियन की जीप रिपेअर के लिए गयी है। मतलब आज दिन भर पैदल चलना होगा। वह तेजी से चल दिया। चलने के दौरान मन ही मन आज के काम याद करने लगा। पहला काम है वह खबर जरा ढंग से पढ़ना। अय्यर ने कुछ हिम्मत करके यह स्टोरी दे दी। हैडिंग से अर्थ ठीक से लग न पा रहा था। क्या लिखा है पढ़ना चाहिए। और हो सके तो अय्यर का उपयोग अपने काम के लिए कर लेना चाहिए। उसे छोड़ने से कुछ होगा नहीं। अय्यर साहसी है। उसे अगर मेरी हालत समझ में आ गयी तो वह जान तोड़कर मेरे लिए कुछ कर सकता है। गाड़ी में पेपर पढ़ डालेंगे। गंगाराम को एक बार

अस्पताल पहुँचाकर आफिस जाया जा सकता है।

सुबह दस के करीब आफिस पहुँचकर चिट्ठी-पत्री देखनी होगी। दो तीन अर्जियाँ डिक्टेट करानी थी। साढे ग्यारह बजे लेबर-कमिश्नर के यहाँ एक केस है। तीन बजे मुख्यमंत्री से मुलाकात का टाइम तय है। अकेले हो। मुख्यमंत्री शिंदे ने मुझे किस लिए बुलाया है इसकी भनक उसे जरूर थी। स्मगलिंग की उसकी फाइल अब काफी मोटी हो चुकी थी। वक्त-बेवक्त वह अपने भाषणों में इसका उल्लेख किया करता था। उनके नाम लेता था। उसके इर्द गिर्द रहस्यमय किस्म के लोग रहने लगे हैं इस बात का एहसास उसे खुद था। उसके साथी कामरेड उसे सम्हलकर रहने की हिदायत देते रहते थे। उसे धमकी भरे खत भी आने लगे थे। पिछले महीने ही उसने गृहमंत्रालय को खत लिखकर सुरक्षा के लिए पिस्तौल का लायसेंस माँगा था। लेकिन उसके लिए मुख्यमंत्री ने मुझे क्यों बुलवाया है? डीकास्टा के मन में संशय था। उसकी फाइल में कई मंत्रियों के नाम थे। लेकिन मुख्यमंत्री शिंदे का नाम नहीं था। लेकिन कैसे कहा जा सकता है कि उनसे उनका संबंध न होगा? झूठ कहा नहीं जा सकता। कभी कभी वह स्मगलिंग के खिलाफ इस तरह अकेले लड़ने का इरादा छोड़ देता था। वह यह न जान पाता था कि कौन सच्चा है और कौन झूठा। कई लोग उसकी अच्छी पहचान के थे। कई बार तो उसे लगता कि कहीं वह खुद ही इस झमेले में उलझता तो नहीं जा रहा है? इन सभी कारणों से आज मुख्यमंत्री से मुलाकात जरा परेशानी पैदा करने वाली हो गयी।

मुलाकात कितनी देर चलेगी इस बात का उसे कोई अंदाज नहीं था। उसके बाद अगर वक्त मिला तो फिर ऑफिस में बैठना भी जरूरी था। खतो किताबत जरूरी है। उसकी सेक्रेटरी नीना बड़ी फास्ट डिक्टेशन लेती है। किसी भी कामर्शियल फर्म में वह उसे फोन पर ही अच्छी-खासी नौकरी दिलवा सकता है। लेकिन उसका मोह खुद ही नहीं छूट पाता। खतो किताबत हो जाय तो कर्मचारियों से मुलाकात। शाम को तेरह नंबर की मिल के गेट पर काले झंडों की सभा और फिर फरियास में विनीता देशमुख के साथ खाना। विनीता की याद उभरते ही उसके सीने का दर्द बढ़ गया। उसे अपराध भाव सताने लगा। मिनिस्टर की लड़की है तो क्या हुआ? अपने बाप की तरह वह मूर्ख नहीं है। तनाव ज्यादा न हो इस वजह से उसने वह ख्याल छोड़ दिया। रात को घर जाने से पहले आंटी पेगी के पास जाना चाहिए। नहीं तो बुढ़िया यूँ ही भड़क जायेगी। मरते दम तक यह परेशानी सहन करनी होगी। पाँच-सात साल और।

*

बाद में तो उसका बँगला मुझे मिल ही जायेगा। उसने फिर इस खयाल को भी झटक दिया।

रास्ते में हमीद मिला।

'बाहर जा रहे हैं कोस्टा साब ?'

घाटकोपर। गंगाराम को अस्पताल ले जाना है। इतने सुबह कैसे आये ?

कल निकाल दिया साब मुकादम ने नौकरी से।"

पीके गया होगा साले ! तू यों ही मरेगा गधे की तरह। हजार बार तेरे को बोला पीना छोड़ दे। चल, भाग अब। जान दे दे समदर में कूद के।'

कोस्टा गुस्से में आगे बढ़ गया। हमीद उसके पीछे पड़ गया। "मैंने खुद के पैसे से नहीं पी, कोस्टा साब। रामू को तेरह रुपये का मटका हाथ लग गया उसने पिलायी। अब नहीं पीऊँगा—बच्चों की कसम !" अपने ही मुँह पर थप्पड़ लगाते हुए हमीद कोस्टा के पीछे-पीछे चलने लगा। कोस्टा का गुस्सा बढ़ गया। मन यही किया कि हमीद के गालों पर झापड़ जमा दे। वह पीछे मुड़ा पर तभी उसने अपने-आप को सम्हाल लिया। एक लम्बी साँस ली।

अब मेरे पीछे मत लग। दस बजे आफिस आ जा रामू को साथ ले के। दोनों की हड्डी नरम करूँगा।'

रामू अब शिफ्ट पर है साब ! '

फिर शाम को आना।

जी। बहुत शुक्रिया।

फिर भी हमीद कोस्टा के पीछे लगा रहा। बड़ी मेहरबानी साब ! बस अब कभी नहीं पीऊँगा साब। बाल-बच्चे वाला हूँ।

कोस्टा टिकट निकालने लगा तो हमीद बोला अकेले ही जायेगा कोस्टा साब ? साथ में आऊँ ? '

कोस्टा हमीद की बातों से द्रवित हुआ। हमीद का पीला मैला पाजामा घुटनों पर से फट चुका था। मैली-कुचैली शर्ट बदन पर थी। पाँव में कुछ नहीं। दाढ़ी बढ़ी हुई। किसी झगड़े में आगे के दो दाँत टूटे हुए। आँखें अंदर धँसी हुई गाल पिचके हुए चेहरा अजीब !

कोस्टा ने कहा अब घर जाओ। शाम को मिलेंगे। तब देखेंगे नौकरी के लिए। फिर भी हमीद टल न रहा था। वह नीची गर्दन किये खड़ा था। कोस्टा समझ गया। उसने एक तीखी गाली दी। जेब से दो रुपये का नोट निकाला और हमीद को देते हुए बोला, 'हरामजादे, बाल बच्चे भूख

भरते हैं और तू है कि शराब पीता है। अब यो आया तो सिर तोड दूगा, समझे ?"

तब तक तीन चार और भी मज़दूर आ इकट्ठा हुए। आंखों का कीचड निकालते हुए दाढ़ी के खूंट खुजलाते हुए। कोस्टा के आगे बोडी पीने की हिम्मत किसी की न हो रही थी। कोस्टा का ध्यान अपनी ओर करने के लिए वे सलाम किये जा रहे थे। 'साब, वो पोस्टर लगा दिये जीप को अभी दिन भर लगेगा, साब कोस्टा साब, आपका काम ।'

कोस्टा ने तीनों को जवाब देकर भगा दिया और वह स्टेशन पर आ गया। सवा सात बज चुके थे। कोस्टा का टिकट थड क्लास का था। ठसाठस भरी कल्याण की एक गाड़ी छोड दी। अगली गाडी म खडे होने लायक जगह मिल पायी। सांकल पकडे हुए वह खडा रहा। चिंचपोकली और करी रोड पर रात की पाली के मज़दूर भीड किये हुए थे। काफी लोग उसकी पहचान के थे। कुछ तो उसकी यूनियन म काम करने वाले भी थे। कोस्टा एक-एक से बातें किये जा रहा था। यूनियन के कई लोगो को वह नाम से भी जानता था। लेकिन आज सच पूछा जाय तो वह बातें करने के मूड म नहीं था। एक तो घाटकोपर जान म देर हो चुकी थी। दूसरे, मुख्यमंत्री की मुलाकात का विषय मन म परेशानी पैदा कर रहा था। इसके अलावा विनीता और नीला भी दिमाग़ म थी। आज के केस म वह मारकई मार खाने वाला था। मार खा गया तो कांदिविली की एक मिल की यूनियन का रिप्रेज़ेंटेशन जाने वाला था। एक कारखाना चला भी जाये तो कुछ बनता बिगडता नही। लेकिन उसका असर ज़रूर दूसरे कारखानो पर होता है। यूनियन के हिसाब के बारे म कोस्टा बडा पक्का था। हर जगह के ट्रेज़ररो पर वह निगाह रखता था। मतलब एकाध कारखाना चला जाये तो उसकी तनख़ाह म कुछ कमी हो सकती थी। लेकिन कारखाना जाये या आये पैसों की बात ही वह ध्यान मे क्यों लाये ? उसे अपनी यूनियन पर गर्व था। यूनियन के लीडर की हैसियत से होने वाले फ़ायदों को वह रोक न सकता था। जीप, भायखला म कुछ कम रुपयों म मिलने वाला फ्लैट, ईनाम के तौर पर मिला हुआ फ्रिज, रोज़ाना खाने के निमंत्रण, यूनियन को मिलने वाले फायदे—वह टाल न सकता था। इसी वजह से अजीब अपराध बोध भी उसे हो रहा था। स्मगलिंग के बारे में जानकारी इकट्ठा करने की वजह से उसके संबंध लोगों के साथ और बढ़ गये थे। बड़े बड़े लोगों के साथ जान-पहचान बढ़ गयी थी। अनजाने ही कहीं कुछ ग़लती हो रही है इस बात का एहसास भी हो रहा था। उन मज़दूरों की ओर देखकर उसे बुरा भी लग रहा था। वैसे उस तरह महसूस

करने की ज़रूरत न थी। उससे जो कुछ बन सकता था वह उन लोगों के लिए करता था। उन्हें संगठित करता था, उनके अधिकारों के लिए लड़ता था, उन्हें सुधारने की कोशिश भी किये जाता था। लेकिन यह सब करते हुए उसका अंतिम लक्ष्य क्या है यह वह न समझ पा रहा था। वह स्वयं निर्णय नहीं कर पा रहा था कि इसी तरह तनख्वाह बढ़ाने और अधिकारों के लिए लड़ते हुए आज की समाज-व्यवस्था का एक हिस्सा बन जाना उद्देश्य है या सारी समाज-व्यवस्था तबदील करना जहाँ अधिकारों के लिए लड़ने की ज़रूरत ही न हो? उसे सही रास्ता नहीं दिख रहा था। पार्टी के साथ उसकी पटती न थी। पक्के विश्वास से वह यह तय नहीं कर पा रहा था कि आज के ज़माने में अपनी प्रामाणिकता कायम रखे या पार्टी को बचाये? साम्यवादी तरीके से आज की समाज व्यवस्था बदलकर नये समाज में मेहनतकश लोगों को न्याय मिल सकेगा या नहीं इस बारे में उसे ख़ुद भी शंका थी। वह संभ्रमित था। इसी वजह से हर पार्टी के लोग उसके इर्द गिर्द रहा करते थे। लेकिन वह किसी को दाद न देता था। वह युवा और साहसी लोगों के बीच लोकप्रिय था। लगातार अपनी ताकत बढ़ा रहा था।

घाटकोपर पहुँचने तक कोस्टा ने वेस्टर्न स्टार की वह ख़बर अच्छी तरह से पढ़ ली। ख़बर उसे कोई ख़ास पसंद न आ पायी थी। काफ़ी कुछ जानकारी तो कोस्टा की ख़ुद की दी हुई थी। लेकिन अगर अय्यर फैक्ट्स दे देता तो ज़्यादा अच्छा रहता। घाटकोपर आते ही तेज़ी से उतरकर वह तेज़ कदमों से गंगाराम की झुग्गी के करीब आया। तभी उसे कुछ लोगों की भीड़ नज़र आयी। उसे लगा ज़रूर कुछ झगड़ा हो गया है। तभी एक आदमी आगे बढ़ा।

कोस्टा साब अभी आपको फोन किया था।

क्यों मैं तो आ ही रहा था।

गंगाराम चल बसा।

अरे—कब?

सुबह ही साब।

कोस्टा परेशान हुआ। गंगाराम का केस होपलेस था यह वह जानता था। लेकिन आज ही वह मरा! बम्बई में आने पर उसे पहला साथी गंगाराम ही मिला था। अपनी होशियारी की वजह से कोस्टा आगे निकल गया और गंगाराम मज़दूर ही बना रहा। कुंभारवाड़ा से घाटकोपर की बस्ती में आ गया लेकिन कोस्टा पर उसकी निष्ठा कायम थी। कोस्टा को बुरा लगा। उसने सोचा, गंगाराम को पहले ही अस्पताल ले जाना

चाहिए था। बेकार ही टालमटोल की।

कोस्टा के इर्द गिर्द लोग इकट्ठा हो गये। उन सबके सामने आँखों में आँसू आना ठीक नहीं। लेकिन कोई चारा न था। उसे रोते देख दूसरों की आँखों में भी आँसू आ गये। कोस्टा ने रूमाल से आँखें पोंछ लीं। भीड़ में गंगाराम का साला था। उससे कोस्टा ने पूछा, "मैयत की क्या व्यवस्था है?'

'उसी के वास्ते तो फोन किया था कोस्टा साब।"

कोस्टा ने जेब टटोली तो बीस रुपये और कुछ खुले पैसे निकले।

'यह लो और दस बजे यूनियन के ऑफिस में आ जाना। पैसे और भी लगेंगे। अरे महीने पहले अस्पताल ले गये होते तो बच भी जाता।'

'नहीं सुनता था साब। ज़िद्दी आदमी था।'

"हूँ।' कोस्टा को फिर बुरा लगा।

'औरत क्या करती है?

'कहीं कुछ नहीं साब। बरतन माँजती है साब।'

'देखते हैं। हो सका तो कारखाने में लगवा देंगे।'

फिर कोस्टा गंगाराम की झुग्गी के पास पहुँचा। आस-पास की औरतें गंगाराम की बेवा बीवी के करीब बैठी रो रही थीं। वह सूने चेहरे से गंगाराम की लाश की ओर देख जा रही थी। कोस्टा और दूसरे लोगों को आते देखकर वह सिर पर पल्लू लेकर जोर-जोर से रोने चीखने लगी। उसके साथ दूसरी औरतें भी रोने लगीं। बच्चे नज़र न आ रहे थे। उन्हें शायद कहीं भेज दिया होगा।

वहाँ बने रहने की कोस्टा को हिम्मत न हो रही थी। लेकिन कुछ देर रुकना लाज़िमी था। किसी ने गंगाराम के सिर पर से चादर एक ओर हटायी। उसका पीला चेहरा मौत के बाद भी दयनीय नज़र आ रहा था। कोई एक हार ले आया था। कोस्टा ने उसे लाश पर रखा। नमस्कार किया और झुग्गी के बाहर आ गया। आसपास खड़े लोग गंगाराम की तारीफ किये जा रहे थे।

कुछ देर बाद कोस्टा ने गंगाराम के साले से पूछा, 'बहन का क्या करने वाले हो?'

साले की आँखों में आँसू आ गये।

'क्या करेगा कोस्टा साब? जवान है। बच्चे हैं।

एक ने कहा, गाँव भेज देना। दूसरे ने दुबारा शादी कर देने की सलाह दी। कुछ और बातें सुझाने लगे।

कोस्टा ने कहा, घबराओ नहीं। गंगाराम की अठारह-बीस साल की

नौकरी हो चुकी है। प्राविडेंट फंड होगा। और भी कुछ सोचेंगे। कल-परसों आफिस आना।'

फिर कोस्टा वहाँ ज्यादा देर नहीं रुका। कुछ देर वहाँ पूछताछ की। लोकल से जाना उसे परेशानी वाला लगा। टक्सी की तलाश म वह पैदल ही चल दिया। कालोनी के नाके पर काफी देर तक खडा रहा। सभी टक्सियाँ मीटर पर जा रही थी। परेशान हो गया। आखिर उसने एक नीली एंबेसेडर को लिफ्ट के लिए इशारा किया।

सेबशियन कोस्टा बचपन म ही होशियार आदमी था। बम्बई की कई भाषाएँ वह सफाई स बोल लेता था। इसी वजह स वह कहा का रहने वाला है यह जल्द न जाना जा सकता था। वसे वह रहने वाला गोवा का था। पोर्चुगीज भाषा कुछ पढ़ा लिखा था। कोस्टा की पूरी पढाई लिखाई नहीं हो पायी। उसके पिता ने उसे पादरी बनाने का फैसला कर रखा था और इसी कारण जब वह चौदह साल का था तो उसे एक धार्मिक स्कूल म भर्ती कर दिया। कोस्टा को वहाँ का माहौल पसंद न आया। बाईबिल को लेकर उसकी वहाँ के शिक्षकों स कहा-सुनी होने लगी और वह समझ गया कि उसकी लाइन गलत है। एक दिन स्कूल की दीवार फलाँगकर उसने वहाँ से छुट्टी पा ली। अपना सामान बेच बाचकर पणजी भाग गया और पहले जहाज से बम्बई आ गया। तब उसकी उम्र पंद्रह के आस-पास थी। भाऊ के धक्के पर वह उतरा तब उसकी जेब मे एक रुपया था। बदन पर सिर्फ पहने हुए कपडे ही थे। किसी से उसकी पहचान न थी। वह यह जरूर जानता था कि उसके कुछ रिश्तेदार बम्बई म रहते हैं लेकिन उनके पते उसके पास न थे।

दिन भर घूमते हुए उसने पहली रात बोरीबंदर के फुटपाथ पर बिताने की सोची। लेकिन तभी उसे पता चला कि यहाँ फुटपाथ पर सोने के लिए भी पैसे भरने होते हैं या झगडा करना पडता है। वह वैसे ही फुटपाथ पर लेट गया और दूसरे ही पल उसे नींद आ गयी। रात म उसे किसी ने हाथ पकडकर उठाया 'इधर किधर सोता है? तेरे बाप का घर है क्या?' कहकर उसे भगा दिया। और दूसरी जगह पर उसने सोने की कोशिश की तो भी वही हुआ जो पहले हो चुका था। एक जगह जब उसे कमर पर लात जमाकर उठाया गया तो वह परेशान हो गया। चलते चलते वह काफी थक चुका था। उसने कुछ खाया भी न था। आँखों म भरपूर नींद थी इसी वजह से परेशान हालत म उसने उस आदमी पर धावा बोल दिया। उसे नीचे गिराया और घूसों से मारना शुरू कर दिया। हाय-तोबा मच

गयी। पाँच-छह लोग और आ पहुँचे। उन्होंने उसको नीचे खींचा और खूब पीटा। एक मोटे-से आदमी ने कोस्टा को छुडाया और पीटने वाले लोगों को अलहदा किया। उसी आदमी ने कोस्टा से पूछा, "बच्चा किधर से आया तू ?"

कोस्टा चुप रहा। उस आदमी ने कोस्टा के गाल पर एक लप्पड जमा दी। 'समझता नहीं क्या ? अब बोल, किधर से आया ?"

गोवा से।"

माँ-बाप नही क्या ? इधर काय वास्ते आया ?"

'नौकरी के लिए।'

वह आदमी हँस दिया। उसने कोस्टा के बाल खींचे और बोला, 'नौकरी क्या इधर इतना सस्ता हो गया है ?" उसने बीडी सुलगा ली कहाँ तक पढा है तू ? मट्रिक ?'

'ना।'

वह आदमी फिर अजीब तरह से हँसा। इर्द गिर्द खडे लोग भी हँस दिये। कोस्टा परेशान हो गया। चारों ओर हाथ नचाते हुए वह आदमी बोला, 'इसी सब झगडे के वास्ते यहाँ आया था!" उसने बीडी का लम्बा कश खींचा और कोस्टा से कहा, 'पैसा है पास में ?"

कोस्टा ने पैंट की जेब उलट दी।

फिर क्या मरने के वास्ते आया है बम्बई मे ? मोटे ने पूछा।

कोस्टा कुछ न बोला। मोटे आदमी ने तेज़ निगाह से उसकी ओर देखा। फिर कोस्टा की गर्दन पकडकर उसे धकेलते हुए बोला 'जा, आज इधर सो जा। देखना, नौकरी मिलती है या नही। कल पैसा नही लाया तो इधर सोने के वास्ते नहीं आने का। नहीं तो अपन बतायेगा, वैसा करना।"

दूसरे दिन कोस्टा की नींद किसी के जूते के टकराने की वजह से खुली। लेकिन वह जूता किसी स्कर्टवाली का था। थकान की वजह से कोस्टा को गहरी नींद आ रही थी। सूरज काफी ऊपर आ गया था। फिर भी उसकी नींद नही टूट पायी थी। सडक पर आफिस जाने वालों की भीड थी। तभी कुछ लोगों के पाँव उससे टकराने लगे। फिर भी उसकी नींद नहीं टूटी। आखिर में एक दौडती हुई लडकी का जूता उससे टकराया।

करीब वाले सार्वजनिक यूरिनल पर जाकर उसने सुबह का काम निबटाया। मुँह पर पानी मारा। बाल ठीक किये। एक होटल में घुसकर दो गिलास पानी पेट मे डाल लिया। और फिर नौकरी ढूँढने के लिए वह बम्बई की सडकों पर आ गया। खाली जेब और खाली पेट।

नौकरी हो चुकी है। प्राविडेंट फंड होगा। और भी कुछ सोचेंगे। कल-परसों आफिस आना।"

फिर कोस्टा वहाँ ज्यादा देर नहीं रुका। कुछ देर वहाँ पूछताछ की। लोकल से जाना उसे परेशानी वाला लगा। टैक्सी की तलाश में वह पैदल ही चल दिया। कालोनी के नाके पर काफी देर तक खड़ा रहा। सभी टैक्सियाँ मीटर पर जा रही थीं। परेशान हो गया। आखिर उसने एक नीली एंबेसेडर को लिफ्ट के लिए इशारा किया।

सेबेशियन कोस्टा बचपन से ही होशियार आदमी था। बम्बई की कई भाषाएँ वह सफाई से बोल लेता था। इसी वजह से वह कहाँ का रहने वाला है यह जल्द न जाना जा सकता था। वैसे वह रहने वाला गोवा का था। पोर्चुगीज़ भाषा कुछ पढ़ा लिखा था। कोस्टा की पूरी पढ़ाई लिखाई नहीं हो पायी। उसके पिता ने उसे पादरी बनाने का फैसला कर रखा था और इसी कारण जब वह चौदह साल का था तो उसे एक धार्मिक स्कूल में भर्ती कर दिया। कोस्टा को वहाँ का माहौल पसंद न आया। बाईबिल को लेकर उसकी वहाँ के शिक्षकों से कहा-सुनी होने लगी और वह समझ गया कि उसकी लाइन गलत है। एक दिन स्कूल की दीवार फलाँगकर उसने वहाँ से छुट्टी पा ली। अपना सामान बेच बाचकर पणजी भाग गया और पहले जहाज़ से बम्बई आ गया। तब उसकी उम्र पंद्रह के आस पास थी। भाऊ के धक्के पर वह उतरा तब उसकी जेब में एक रुपया था। बदन पर सिर्फ पहने हुए कपड़े ही थे। किसी से उसकी पहचान न थी। वह यह ज़रूर जानता था कि उसके कुछ रिश्तेदार बम्बई में रहते हैं लेकिन उनके पते उसके पास न थे।

दिन भर घूमते हुए उसने पहली रात बोरीबंदर के फुटपाथ पर बिताने की सोची। लेकिन तभी उसे पता चला कि यहाँ फुटपाथ पर सोने के लिए भी पैसे भरने होते हैं या झगड़ा करना पड़ता है। वह वैसे ही फुटपाथ पर लेट गया और दूसरे ही पल उसे नींद आ गयी। रात में उसे किसी ने हाथ पकड़कर उठाया 'इधर किधर सोता है? तेरे बाप का घर है क्या?' कहकर उसे भगा दिया। और दूसरी जगहों पर उसने सोने की कोशिश की तो भी वही हुआ जो पहले हो चुका था। एक जगह जब उसे कमर पर लात जमाकर उठाया गया तो वह परेशान हो गया। चलते चलते वह काफी थक चुका था। उसने कुछ खाया भी न था। आँखों में भरपूर नींद थी, इसी वजह से परेशान हालत में उसने उस आदमी पर धावा बोल दिया। उसे नीचे गिराया और घूँसों से मारना शुरू कर दिया। हाय-तौबा मच

गयी। पांच-छह लोग और आ पहुँचे। उन्होंने उसको नीचे खींचा और खूब पीटा। एक मोटे-से आदमी ने कोस्टा को छुड़ाया और पीटने वाले लोगों को अलहदा किया। उसी आदमी ने कोस्टा से पूछा, "बच्चा, किधर से आया तू?"

कोस्टा चुप रहा। उस आदमी ने कोस्टा के गाल पर एक लप्पड़ जमा दी। 'समझता नहीं क्या? अब बोल, किधर से आया?"

"गोवा से।

'माँ-बाप नहीं क्या? इधर काय वास्ते आया?"

नौकरी के लिए।"

वह आदमी हंस दिया। उसने कोस्टा के बाल खींचे और बोला, 'नौकरी क्या इधर इतना सस्ता हो गया है?' उसने बीड़ी सुलगा ली, कहाँ तक पढ़ा है तू? मैट्रिक?'

ना।'

वह आदमी फिर अजीब तरह से हँसा। इर्द गिर्द खड़े लोग भी हँस दिये। कोस्टा परेशान हो गया। चारों ओर हाथ नचाते हुए वह आदमी बोला, इसी सब झगड़े के वास्ते यहाँ आया था!" उसने बीड़ी का लम्बा कश खींचा और कोस्टा से कहा, 'पैसा है पास में?"

कोस्टा ने पैंट की जेब उलट दी।

फिर क्या मरने के वास्ते आया है बम्बई में?' मोटे ने पूछा।

कोस्टा कुछ न बोला। मोटे आदमी ने तेज़ निगाह से उसकी ओर देखा। फिर कोस्टा की गर्दन पकड़कर उसे ढकेलते हुए बोला 'जा, आज इधर सो जा। देखना, नौकरी मिलती है या नहीं। कल पैसा नहीं लाया तो इधर सोने के वास्ते नहीं आने का। नहीं तो अपन बतायेगा, वैसा करना।'

दूसरे दिन कोस्टा की नींद किसी के जूते के टकराने की वजह से खुली। लेकिन वह जूता किसी स्कटवाली का था। थकान की वजह से कोस्टा को गहरी नींद आ रही थी। सूरज काफी ऊपर आ गया था। फिर भी उसकी नींद नहीं टूट पायी थी। सड़क पर आफिस जाने वालों की भीड़ थी। तभी कुछ लोगों के पाँव उससे टकराने लगे। फिर भी उसकी नींद नहीं टूटी। आखिर में एक दौड़ती हुई लड़की का जूता उससे टकराया।

करीब वाले सार्वजनिक यूरिनल पर जाकर उसने सुबह का काम निवटाया। मुँह पर पानी मारा। बाल ठीक किये। एक होटल में घुसकर दो गिलास पानी पेट में डाल लिया। और फिर नौकरी ढूँढने के लिए वह बम्बई की सड़कों पर आ गया। खाली जेब और खाली पेट।

बाढ की तरह लोगों की भीड की भीड सडकों पर बह रही थी। बडी बडी लाल बसें मोटरें विक्टोरिया और आदमी ही आदमी। वह अजनबी के रूप में बम्बई देख रहा था। इस वजह से उसे हर बात अजीब लग रही थी। खोज रहा था कि वह कहाँ ठीक बैठ सकता है। कल जो कुछ हुआ, उसकी वजह से वह चिढ गया था। इतनी बडी बम्बई इतनी इमारतें इतने वाहन इतने लोग और मुझे कहीं जगह ही न मिले? एक नौकरी नहीं मिल सकती? कैसे हो सकता है? कोस्टा ने दाँतों से होंठ चबाये। उसने तय किया कि नौकरी मिलनी ही चाहिए।

मुझे क्या क्या आता है यह उसने मन ही मन सोचा। उसे पोर्चुगीज और अंग्रेजी अच्छी आती थी। टाईपिंग आती थी। मगर फुटबाल जानने का खास उपयोग होने वाला नहीं था। उसने तय किया कि वह अपनी अंग्रेजी का उपयोग करेगा।

पहले वह एक बैंक में गया। लेकिन वहाँ किसी ने उसे पूछा तक नहीं। फिर कुछ सोचकर वह एक पेपर के आफिस में गया। वहाँ के एक क्लर्क ने उसे अर्जी देने को कहा। कोस्टा ने वहीं बैठकर वहीं से कागज-कलम लेकर अर्जी लिख दी। अर्जी उस क्लर्क को दे दी। क्लर्क ने अर्जी पढी और कहा ‘यू आर नाट इविन मैट्रिक?

नो।

सॉरी कहते हुए उसने अपना मुँह बिचकाया। अर्जी एक फाइल में रख दी।

दूसरे पेपर के आफिस में उसने झूठ ही लिख दिया कि वह मैट्रिक की परीक्षा में बैठा है। लेकिन क्लर्क बोला अभी जगह खाली नहीं है। अगले महीने चपरासी की एक-दो जगह खाली होगी।’

चलेगी।

फिर दो महीने बाद आना।

चार छह जगह और घूमने के बाद वह एक गुजराती पेपर के आफिस में गया। सामने बैठे क्लर्क से कहा नौकरी के लिए अर्जी देनी है।

उस क्लर्क ने कोस्टा की हुलिया देखी। फिर दूर की एक टेबिल की ओर इशारा कर दिया।

टेबिल के पीछे रखी एक कुर्सी पर टाइ लगाये बूढा सा आदमी मोटा चश्मा पहन एक किताब पर कुछ लिख रहा था। कोस्टा उसके सामने जाकर खडा हो गया। बिना ऊपर देखे ही उस आदमी ने सामने की कुर्सी पर बैठने को इशारा किया।

पंद्रह मिनट तक उस आदमी ने उसकी ओर देखा ही नहीं। कोस्टा

करीबन ग्यारह बजे उसे मोटे आदमी ने उसे हाथ पकडकर उठाया, “क्यो ब फिर आ गया ? दूसरी जगह नहीं मिली ?”

कोस्टा अलसाया जेब से दो आने निकालकर मोटे के हाथ पर रख दिये। यह रेट कल ही उसे आस-पास के लोगों ने बता दिया था।

नौकरी मिल गयी ?”

मिल गयी वापस लेटते हुए कोस्टा ने कहा।

दूसर दिन केरकर ने कोस्टा को कुछ मजदूरो क साथ भेज दिया। कोस्टा से सामान उठाने धरमे का काम न हो पाया तो दूसरे दिन उसे कारखाने मे बदली पर भेज दिया। कारखाने का काम कोस्टा को जम गया। तीन चार रात कोस्टा ने फुटपाथ पर बिता दी। बाद म उसकी इमानदारी देखकर केरकर ने उसे आफिस के बरामदे मे ही थोडी सी जगह द दी।

कोस्टा कारखाने के काम मे काफी होशियार हो गया। यही नहीं वह आस-पास के मजदूरों मे काफी लोकप्रिय हो गया। मजदूरों की अर्जियाँ लिखना उनकी शिकायतें सुनना, उनके झगडे सुलझाना दस तरह के काम वह करन लगा। उसकी होशियारी जैसे-जैसे नजर आने लगी वैसे-वैसे केरकर उसे दूसरे काम भी सौंपने लगा।

एक दिन केरकर ने कारखाने के गेट पर बोनस के लिए एक मीटिंग आयोजित की थी। काल और लाल झडे लगाकर काफी तयारी की गयी। केरकर की पार्टी का एक नेता वहाँ भाषण देने के लिए आने वाला था। लेकिन वह आया नहीं। तब बोलने का काम अकेले केरकर पर आ पडा। केरकर न कोस्टा से कहा, ‘कोस्टा, पहले तुम बोलो, फिर मैं बोलूगा।’

मैं क्या बोलू मुझे कहाँ आता है ?’

‘अरे, कुछ भी बोलो। मराठी तो ठीक बोल लेत हो न ? यह मीटिंग ठीक होनी जरूरी है। बोनस क्यो मिलना चाहिए, यही बताओ।”

कोस्टा के गेट के करीब भाषण दने के लिए पहुँचन पर सौ सवा सौ मजदूर बठे हुए थे। काफी लोग कोस्टा की पहचान के हो गये थे। इसी वजह से उसे डर न लग रहा था। पर क्या बोले यह न सूझ रहा था। धार्मिक स्कूल मे याद की गयी बाईबिल पादरियो के भाषण केरकर और दूसरे नेताओ के सुन हुए भाषण पेपर के सम्पादकीय, मजदूरों की गरीबी धकारियों और मालिकों की हठधर्मी उनकी मोटरें—सभी एकदम आँखो के आगे घूम गया। वह वापस पलटने वाला था तभी उसे

और वह जोर से बोलने लगा—

। हम लोग सब बोनस के लिए झगडन वाले हैं। हमको

आया हुआ है। गावा का है। होशियार लगता है। उस कही लगवा दो। कही भी। नही तो यूनियन म ही। हाँ, अभी भेजता हूँ उस। सेबेशियन डीकोस्टा।'

फुटजडो ने फोन नीचे रख दिया। तज़ी से उसन चश्मा नीचे रखा। आखें पोछी। नाक पोछी। टेबिल पर रखा मोटा चश्मा उठाया उसे पोछ कर नाक पर चढ़ा लिया। पन उठाया और गिरगाव मे केरकर की यूनियन का पता एक छोटे स कागज़ पर लिखकर कोस्टा की ओर बढाया और कहा इस पत पर चले जाओ करकर से मिलो। मरा नाम बताना वह जरूर तुम्ह कोई-न-कोई काम दे देगा।'

कोस्टा जान के लिए उठा तो फुटजडो बोला 'कैसे जाओगे ?'

पूछता हुआ चला जाऊगा।'

फुटजडो कुछ रुका। उस किसी चीज़ की एकदम याद हो आयी। उसने फिर चश्मा उसी अदाज़ मे तबदील किया और जब म हाथ डालकर दो रुपय निकाले। उन्ह कोस्टा के हाथ म देते हुए बोला बस से जाना। वहा पहुँचन पर कोई भी बता देगा। खर्चे के लिए इन्ह अपन पास ही रखना। तनख्वाह मिले तो वापस कर देना।'

पस लिये जायें या न लिये जायें यह सोचने का वक्त न था। कोस्टा ने रुपये सीधे जब मे रख लिये। बूढे फुटजडो के प्रति आभार कसे जताया जाये वह न समझ पा रहा था। वह सिफ हँस दिया और बाहर आ गया।

पहले उसने चार आने का खाना खाया तब उसकी जान म-जान आ पायी। फिर गिरगाँव के पते पर जा पहुँचा।

केरकर न जब देखा कि उसे अच्छी अग्रेज़ी आती है तो उसने कोस्टा को एक लम्बी सी अर्ज़ी नकल करन के लिए दे दी। टाइप किये आठ सफे दुबारा हाथ से लिखे जाने थे। कोस्टा ने शाम तक नकल कर के तैयार कर दी।

काम होते ही केरकर ने उसके हाथ पर बारह आने रख दिये। वह बोला, यह आज के काम का मेहनताना है। रोज़ाना तो इस तरह से काम रहता नही है। मज़दूरी कर लोगे ?

कोस्टा ने कहा 'कुछ भी कर सकता हू।

तो कल सुबह आठ बजे आ जाना।

कोस्टा रात म पहले वाले दिन की जगह पर गया। यूनियन क आफिस से लाये कुछ कागज उसने जमीन पर बिछा लिये और उन पर ही लेट गया।

करीब ग्यारह बजे उसे मोटे आदमी ने उसे हाथ पकडकर उठाया, 'क्यों बे फिर आ गया ? दूसरी जगह नहीं मिली ?'

कोस्टा अलसाया जेब में दो आने निकालकर मोटे के हाथ पर रख दिये। यह रेट कल ही उसे आस-पास के लोगों ने बता दिया था।

"नौकरी मिल गयी ?"

"मिल गयी" वापस लेटते हुए कोस्टा ने कहा।

दूसरे दिन केरकर ने कोस्टा को कुछ मजदूरों के साथ भेज दिया। कोस्टा से सामान उठाने धरने का काम न हो पाया तो दूसरे दिन उसे कारखाने में बदली पर भेज दिया। कारखाने का काम कोस्टा को जम गया। तीन चार रात कोस्टा ने फुटपाथ पर बिता दीं। बाद में उसकी ईमानदारी देखकर केरकर ने उसे आफिस के बरामदे में ही थोडी सी जगह दे दी।

कोस्टा कारखाने के काम में काफी होशियार हो गया। यही नहीं वह आस-पास के मज़दूरों में काफी लोकप्रिय हो गया। मज़दूरों की अर्जियां लिखना उनकी शिकायतें सुनना उनके झगडे सुलझाना इस तरह के काम वह करने लगा। उसकी होशियारी जैसे-जैसे नजर आने लगी वैसे-वैसे केरकर उसे दूसरे काम भी सौंपने लगा।

एक दिन केरकर ने कारखाने के गेट पर बोनस के लिए एक मीटिंग आयोजित की थी। काले और लाल झंडे लगाकर काफ़ी तैयारी की गयी। केरकर की पार्टी का एक नेता वहाँ भाषण देने के लिए आने वाला था। लेकिन वह आया नहीं। तब बोलने का काम अकेले केरकर पर आ पडा। केरकर ने कोस्टा से कहा "कोस्टा पहले तुम बोलो फिर मैं बोलूंगा।'

"मैं क्या बोलूं मुझे कहाँ आता है ?"

'अरे, कुछ भी बोलना। मराठी तो ठीक बोल लेते हो न ? यह मीटिंग ठीक होनी ज़रूरी है। बोनस क्या मिलना चाहिए यही बताओ।'

कोस्टा के गेट के करीब भाषण देने के लिए पहुँचने पर सौ-सवा सौ मज़दूर बैठे हुए थे। काफी लोग कोस्टा की पहचान के हो गये थे। इसी वजह से उसे डर न लग रहा था। पर क्या बोले यह न सूझ रहा था। धार्मिक स्कूल में याद की गयी बाईबिल पादरियों के भाषण केरकर और दूसरे नेताओं के सुने हुए भाषण पेपर के सम्पादकीय मज़दूरों की गरीबी अधिकारियों और मालिकों की हठधर्मी उनकी मोटरें—सभी एकदम उसकी आँखों के आगे घूम गया। वह वापस पलटने वाला था तभी उसे ख़याल आया और वह ज़ोर से बोलने लगा—

"भाइयो ! हम लोग सब बोनस के लिए झगडने वाले हैं। हमको

आया हुआ है। गोवा का है। होशियार लगता है। उसे कहीं लगवा दो। कहीं भी। नहीं तो यूनियन में ही। हाँ अभी भेजता हूँ उसे। सेबेशियन डीकोस्टा।'

फुटजडो ने फोन नीचे रख दिया। तेजी से उसने चश्मा नीचे रखा। आँखें पोंछी। नाक पोंछी। टेबिल पर रखा मोटा चश्मा उठाया उसे पोंछ कर नाक पर चढ़ा लिया। पेन उठाया और गिरगाँव में केरकर की यूनियन का पता एक छोटे से कागज पर लिखकर कोस्टा की ओर बढ़ाया और कहा इस पते पर चले जाओ केरकर से मिलो। मेरा नाम बताना वह जरूर तुम्हें कोई-न कोई काम दे देगा।'

कोस्टा जाने के लिए उठा तो फुटजडो बोला "कैसे जाओगे ?

पूछता हुआ चला जाऊँगा।'

फुटजडो कुछ रुका। उसे किसी चीज की एकदम याद हो आयी। उसने फिर चश्मा उसी अन्दाज में तबदील किया और जेब में हाथ डालकर दो रुपये निकाले। उन्हें कोस्टा के हाथ में देते हुए बोला बस से जाना। वहाँ पहुँचने पर कोई भी बता देगा। खर्चे के लिए इन्हें अपने पास ही रखना। तनख्वाह मिले तो वापस कर देना।

पैसे लिये जायें या न लिये जायें यह सोचने का वक्त न था। कोस्टा ने रुपये सीधे जेब में रख लिये। बूढ़े फुटजडो के प्रति आभार कैसे जताया जाय, वह न समझ पा रहा था। वह सिर्फ हँस दिया और बाहर आ गया।

पहले उसने चार आने का खाना खाया, तब उसकी जान में जान आ पायी। फिर गिरगाँव के पते पर जा पहुँचा।

केरकर ने जब देखा कि उसे अच्छी अँग्रेजी आती है तो उसने कोस्टा को एक लम्बी सी अर्जी नकल करने के लिए दे दी। टाइप किये आठ सफे दुबारा हाथ से लिखे जाने थे। कोस्टा ने शाम तक नकल कर के तैयार कर दी।

काम होते ही केरकर ने उसके हाथ पर बारह आने रख दिये। वह बोला यह आज के काम का मेहनताना है। रोजाना तो इस तरह से काम रहता नहीं है। मजदूरी कर लोगे ?'

कोस्टा ने कहा कुछ भी कर सकता हूँ।'

तो कल सुबह आठ बजे आ जाना।

कोस्टा रात में पहले वाले दिन की जगह पर गया। यूनियन के आफिस से लाये कुछ कागज उसने जमीन पर बिछा लिये और उन पर ही लेट गया।

क़रीबन ग्यारह बजे उस मोटे आदमी ने उसे हाथ पकड़कर उठाया,
'क्यों बे, फिर आ गया ? दूसरी जगह नहीं मिली ?

कोस्टा अलसाया जेब से दो आने निकालकर मोटे के हाथ पर रख दिये। यह रेट कल ही उसे आस-पास के लोगों ने बता दिया था।

नौकरी मिल गयी ?"

मिल गयी' वापस लेटते हुए कोस्टा ने कहा।

दूसरे दिन केरकर ने कोस्टा को कुछ मजदूरों के साथ भेज दिया। कोस्टा से सामान उठाने धरने का काम न हो पाया तो दूसरे दिन उसे कारखाने में बदली पर भेज दिया। कारखाने का काम कोस्टा को जम गया। तीन चार रात कोस्टा ने फुटपाथ पर बिता दी। बाद में उसकी ईमानदारी देखकर केरकर ने उसे आफिस के बरामदे में ही थोड़ी सी जगह दे दी।

कोस्टा कारखाने के काम में काफी होशियार हो गया। यही नहीं वह आस-पास के मजदूरों में काफी लोकप्रिय हो गया। मजदूरों की अर्जियां लिखना उनकी शिकायतें सुनना उनके झगड़े सुलझाना इस तरह के काम वह करने लगा। उसकी होशियारी जैसे-जैसे नजर आने लगी, वैसे-वैसे केरकर उसे दूसरे काम भी सौंपने लगा।

एक दिन केरकर ने कारखाने के गेट पर बोनस के लिए एक मीटिंग आयोजित की थी। काले और लाल झंडे लगाकर काफी तैयारी की गयी। केरकर की पार्टी का एक नेता वहां भाषण देने के लिए आने वाला था। लेकिन वह आया नहीं। तब बोलने का काम अकेले केरकर पर आ पड़ा। केरकर ने कोस्टा से कहा, कोस्टा पहले तुम बोलो फिर मैं बोलूंगा।

'मैं क्या बोलूं मुझे कहां आता है ?'

"अरे, कुछ भी बोलो। मराठी तो ठीक बोल लेते हो न ? यह मीटिंग ठीक होनी जरूरी है। बोनस क्यों मिलना चाहिए यही बताओ।"

कोस्टा के गेट के क़रीब भाषण देने के लिए पहुंचने पर सौ-सवा सौ मजदूर बैठे हुए थे। काफी लोग कोस्टा की पहचान के हो गये थे। इसी वजह से उसे डर न लग रहा था। पर क्या बोले यह न सूझ रहा था। धार्मिक स्कूल में याद की गयी बाईबिल पादरियों के भाषण केरकर और दूसरे नेताओं के सुने हुए भाषण पेपर के सम्पादकीय मजदूरों की गरीबी अधिकारियों और मालिकों की हठधर्मी उनकी मोटरें—सभी एकदम उसकी आंखों के आगे घूम गया। वह वापस पलटने वाला था, तभी उसे ख्याल आया और वह ज़ोर से बोलने लगा—

भाइयो ! हम लोग सब बोनस के लिए संगठन वान हैं। हमको

बोनस क्या मिलना चाहिए मैं आपको यह बताता हूं। पहले मैं चंद सवाल करता हूं। उनके जवाब दीजिये। हमारे मालिक कारखाने में हैं?'

'नहीं। दस पंद्रह मजदूर ज़ोर से बोले।

फिर मालिक कहां गये हैं?

विलायत, कुछ लोग बोले। सभी जानते थे कि मालिक विलायत गये हुए हैं।

मालिक विलायत गये हैं तो कारखाना क्या बंद है?

बिलकुल नहीं। कोस्टा में आत्मविश्वास जाग रहा था।

वह आगे बोला मतलब यह कि मालिक न हों तो कारखाना बंद नहीं होता। अब बताओ दो साल पहले तनख्वाह के लिए आपने हड़ताल की थी, क्या तब कारखाना चलता रहा था?

नहीं। सभी की आवाज आयी।

ठीक मालिक न हों तो भी कारखाना चलता है। पर आप लोग न हों तो कारखाना बंद हो जाता है। मतलब कारखाने का असली मालिक कौन हुआ?'

लोग चुप रहे। फिर जैसे बात उनकी समझ में आने लगी। फिर वे चीखने लगे हम हम मालिक। फिर तालियों की गड़गड़ाहट।

कोस्टा ने आगे कहा कारखाना अपना है। हम लोग काम करते हैं। करघे चलाते हैं। कपड़ा बनाते हैं। इसीलिए हमें तनखाह मिलती है। तो क्या इस कपड़े को बेचकर मिलने वाला नफा हमें नहीं मिलना चाहिए?

मिलना चाहिए मिलना ही चाहिए। फिर तालियां।

ठीक है तो यही नफा मतलब बोनस हमारा है। हम लोग अपनी ही चीज मांग रहे हैं। वह हमारा हक है। हम जो बोनस मांग रहे हैं वह मेहरबानी के बतौर नहीं। हम अपनी चुराई हुई चीज़ वापस मांग रहे हैं। हम उसके लिए लड़ने को भी तैयार हैं।

उस दिन केरकर कोस्टा पर बेहद खुश हुआ। पिछले साल डेढ़ साल से उसे नहीं पहचान सका इसी बात का उसे दुःख था। रात को उसने कोस्टा को एक होटल में अपने पैसे से खाना खिलाया।

कोस्टा तुम वाकई होशियार हो। नाम कमाओगे केरकर ने कहा। कुछ देर बाद वह फिर बोला तुम्हें एक बार अध्यक्ष के सामने बोलना होगा। वे भी एकदम खुश हो जायेंगे।

खुद कोस्टा को अपनी स्थिति का सही एहसास हुआ। पहली बार। तबसे वह और भी मेहनत से काम करने लगा। घूमने लगा। दूसरों के भाषण

सुनने लगा। खाली वक्त म या ता वह लायब्रेरी म बठता या यूनियन क आफिस म किसी किताब म खोया रहता।

अखबार बड चाव स पढना। फिर यूनियन ने उस अपने आफिस म रख लिया तो उसन कारखान वाली नौकरी छोड दी।

पढन क साथ-साथ कोस्टा न झगडा फिसाद म भी हिस्सा लिया। दो साल म कास्टा पेड-सा बढ गया था। खूब काम करना और पेट भर खाना यही उसकी दिनचर्या थी। विरोधी मजदूरों को अँधेरे म पीटना विरोधी पार्टियो की मीटिंग म ऊधम मचाना इन बातो म भी उसने खूब नाम कमा लिया था। उम्र क बीसवें साल म ही उसम तीस साल की ताकत आ गयी थी। अपन भाषणो की वजह स वह काफी लाकप्रिय हा गया। अब वह लबर कोट म भी यूनियन के काम देखन लगा। केरकर म आगे तो वह कभी का निकल चुका था। काम म मदद देने के लिए रखे जान वाला डीकोस्टा लीडरी म कब आग निकल गया इसका पता केरकर को न चला।

पार्टी म और यूनियन म डीकोस्टा की जगह और रुतबा बढने लगा तो उसे उनकी कुछ बुराइया का एहसास भी होन लगा। स्वार्थ पर ध्यान जाने लगा। पार्टी क घटिया इरादे समझ म आने लगे। पार्टी के कुछ लीडरों की ओछेपन की स्थिति पर ध्यान जाने लगा। पार्टी की इज्जत बढाने क लिए आदोलन करना उसे कतई पसद न था। आदोलन के लिए वजह होनी चाहिए। और न्याय के लिए मिनिस्टर के कहने पर आदोलन वापस लना यह भी उसे पसन्द न था। अगले चुनाव म उस वक्त का यूनियन सक्रेटरी कांग्रेसी विधायक बन गया तो रहस्य उसकी समझ मे आ गया।

पार्टी और यूनियन के लीडरो के फ्लट और उनक लफडे देखकर उसे परेशानी हाने लगी। रिट्ज म अच्छी-खासी पार्टी खाकर य लोग झुग्गी बस्ती म समाजवाद की दुहाई किस तरह देते है इसी बात पर उसे अचरज था। उसका गुस्सा बढ रहा था। पार्टी के इरादे अस्पष्ट और उलझन वाल हैं यह बात उसके ध्यान म आने लगी। आज के जर्जर समाज की जगह नये समाज की रचना वाला पार्टी का मनीफस्टो रगीन जरूर था। लकिन दखकर उसे लगने लगा था कि यह सब जनता को धोखे म रखन के लिए ही है। कुछ लीडर जरूर ठीक थे ईमानदार थे।

और पार्टी का मजदूर आन्दोलन सिफ दिखावा है यह जब उसकी समझ म आया तो वह और भी ज्यादा परेशान हो गया। यह जानकर तो वह और भी भडक गया कि मजदूर यूनियन का उपयाग सिर्फ पार्टी क लिए किया जाता है। एक कारखाने का आन्दोलन तजी पर था तभी पार्टी न उस वापस लने का फसला दे दिया। डीकास्टा का गुस्सा आ गया। मजदूरा

की माँग वाजिब होने और आन्दोलन तेज़ी पर होने के बावजूद भी आंदोलन वापस क्यों लिया जाय? सिर्फ इसलिए कि मालिक बात करने का आश्वासन दे रहे हैं? पता लगाने पर असलियत सामने आयी कि मालिक ने पार्टी को चुनाव के लिए काफी पैसा दिया है।

तभी से कोस्टा के झगडे लीडरों के साथ बढ़ने लगे। ऐसे ही एक आंदोलन के समय उसका यूनियन के सेक्रेटरी के साथ मतभेद हो गया। वह सेक्रेटरी खुल्लमखुल्ला मालिक लोगों की शर्तें करार में शामिल किये जा रहा था। कोस्टा ने उसे उसकी ग़लती समझाने की कोशिश की लेकिन वह समझना ही न चाहता था। कोस्टा को भी गुस्सा आ गया। और उस यूनियन से निकलकर उसने अपनी दूसरी यूनियन बना ली। कोस्टा की लोकप्रियता की वजह से पुरानी यूनियन के पचहत्तर प्रतिशत लोग कोस्टा की ओर आ गये।

तभी से कोस्टा तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। बिलकुल अलग और नितांत मज़दूर आंदोलन चलाने की बात उसने तय की। किसी भी पार्टी के साथ संबंध नहीं जोडना है यह बात भी उसने तय कर ली। कई लालच थे धोखा भी बहुत था। कोस्टा अपनी बात पर अडा हुआ था। उसकी यूनियन बढ़ती जा रही थी। नये नये क्षेत्रों पर उसकी यूनियन का कब्ज़ा होता जा रहा था। उसकी यूनियन अपनी लडाई सफाई के साथ चलाये जा रही थी। कोस्टा जेल जाता था पुलिस की लाठियाँ खाता था और ज्यादा से ज्यादा लोकप्रिय होता जा रहा था। मज़दूर लीडर की हैसियत से उसका रौब जम गया था। यूनियन के ज़रिये वह कई तरह के आंदोलन चलाया करता था। सफाई आंदोलन ज्यादा काम आंदोलन भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन स्मगलिंग विरोधी आंदोलन—इस तरह के आंदोलनों से वह सारी बम्बई हिला देता था।

कोस्टा मज़दूर आंदोलन में इतना व्यस्त हो गया था कि उसे अपनी ज़िन्दगी का ध्यान न रहा था। पर उसका व्यक्तित्व रौबीला था और उसके जैसे काम वाले आदमी के लिए बम्बई में लडकियों की कमी नहीं थी। वह पार्टी में था तो पार्टी की लडकियाँ उस पर जान देती थीं। पार्टी में हटने पर तो और भी ज्यादा। कोस्टा भी फिसड्डी न था। कोई कहे कि वह लडकी उस पर जान देती है तो वह भी यों ही कैसे रह सकता था? कितने धर्मों ऊँचे घरानों, बडे बापों की लडकियाँ उसके साथ रहीं इसका हिसाब तक उसने नहीं रखा। लेकिन उसने ख़ुद को किसी के साथ उलझाया न था।

इधर बहुत सी बातों में उलझता जा रहा है इस का एहसास उसे

था। भायखला के पलट म तो वह अनजाने ही उलझ गया था। नयी यूनियन के रजिस्ट्रेशन का मौका आया तो उसे आफिस की जरूरत पडी। भायखला का पलट मिला। रजिस्टेशन नही था, इसीलिए खुद के नाम पर लना पडा। फिर गिरगाँव म मौक की जगह मिल गयी तो आफिस उधर ले गया। पर फ्लैट उसी के नाम पर रह गया। उसी तरह रह गयी सिल्विया। बचारी नौकरानी की तरह सेवा करती रहती है। कोस्टा क सार पलट की देख रेख वही करती रहती है। उसस कोस्टा शादी नही करना चाहता यह इरादा नहा है उसका। पर मन जरूर अटका हुआ है। यूनियन की तनखाह जीप और मिलने वाली सुविधाओं मे कोस्टा उलझता जा रहा था। जब नीना को स्टेनो के तौर पर रखा था तो यह इसकी कल्पना भी नहा थी कि उसके साथ इतना बँध जायेगा ? और विनीता ? डशिग रविशिग ब्रिलिएन्ट। विनीता ही पहली लडकी थी जिसके लिए कोस्टा खुद इतना परशान था। फिर आटी पगी न शिवाजी पाक के बँगले का लालच दे रखा है। मया हमस इतना मीठा बोलता है और हम उसे कसे पचा जाते हैं ? उसके किस कारखान म कितन गेयम हैं किस पैट्रोल पप क लिए वह मेरा उपयोग करता है यह क्या हम नहीं जानत ? या कि उसने जीप इतने सस्ते दामो पर दिलवा दी, इसलिए हम उसकी ओर ध्यान नहीं देते ?

लकिन मजदूर आदोलन म आठ साल गुजारने के बाद भी एक बात कोस्टा की समझ म नही आ पाती थी या जानकर भी वह समझ नही पाता था। पार्टी के लीडरों और यूनियन के लोगो को वह जिस बात के लिए गालियाँ दिया करता था, वही बातें अब वह खुद कर रहा था। भायखला का पलट ज्यादा अच्छा न हो पर काफी अच्छा ही था। बडे होटलो मे उसे खाने-पीने की आदत पड चुकी थी। आज ही एक गेट मीटिंग के बाद विनीता से मिलन वह होटल फरियास म रात का जान वाला था। पहले उस बडे होटल म खाना खाना मजदूरों को धोखा देने जसा लगा करता था। अब दिन भर काम करने के बाद थकान मिटाने के लिए बढिया शराब के दो-तीन पैग लेने म उसे कोई हज न लगता था। अब उसे पीन म परेशानी भी होन लगी थी। पहले से उसका सिर दद करन लगता था। डॉक्टर ने उसे बेडरूम एयरकंडीशड करा लन की सलाह दी थी। उसका आग वाला कमरा बेहद मामूली-सा रहा करता था। वह वही लोगा स मिला करता था। एक बार वह एक नेता से मिलने गया। उसने कोस्टा को अन्दर के कमरे म बुलवा लिया। कोस्टा देखते ही सकते म आ गया। मुलायम गलीचे मुलायम सोफासेट और एयरकडीशनर स निकलने वाली

मुग्ध ! तभी उसे उस नेता के ढोंगीपन पर हँसी आ गयी थी। उसे उस पर गुस्सा भी आया था। लेकिन अब वह खुद उन्हीं रास्तों पर चल रहा था। उसे अपने पुराने आदर्श ध्यान में न आते थे। दृष्टिकोण की विशालता जरूर उसे महसूस होती थी। इतनी मेहनत क्यों करते है ? मजदूरों के लिए ही न ? सुबह से रात तक हम उनके लिए सर खपाते हैं तो क्या हम अपनी तबियत की फिक्र ही न करें ? वह ऐसी बातें सोचने लगा था। बस वह खुलकर इन पर उतना न सोचता था लेकिन इस तरह के विचार उसके मन में मछली की तरह उभर जरूर आते थे। और फिर वह दूसरे रास्तों के बारे में सोचने लगता था।

लेकिन कोस्टा जिन बातों से परेशान रहा करता था वे और ही थी। इतना भ्रष्टाचार वह अपने चारों ओर अपनी ही आँखों से देखता था। मजदूरों और आम आदमी पर किस तरह के अत्याचार हो रहे हैं इस बात का उसे पूरा पूरा एहसास था। कितने भी बोनस मिल जायें और कितनी भी तनखाह बढती रहे फिर भी मजदूर की हालत में खास फर्क नही आने वाला। कुछ प्राईवेट कंपनियों के लोग जरूर ठीक जिन्दगी बिता रहे थे। लेकिन शहर की गरीबी कम होने की जगह लगातार बढ रही थी और यह सब वह अपनी खुली आँखों देख रहा था। कोस्टा को यह बात पूरी तौर पर मालूम थी कि कुछ मजदूरों के रहन सहन में बदलाव आने पर भी आज की सामाजिक व्यववस्था में कोई खास बदलाव नही आने वाला है। ऐसा सोचना भी मजदूरों को सरासर धोखा देना है। अगर वाकई बदलाव लाना है तो क्रांति की जरूरत है। लेकिन इतना जानते हुए भी क्रांति करने और अपना सब कुछ छोड देने की इच्छा उसमें न बची थी। दस साल पहले यह समझ आ जाती तो वह बिना आगा पीछा सोचे अपने-आप को उसमें लगा देता। लगता था कि अब वह वक्त जा चुका है। लगता था कि जैसे उसके पाँव जमीन में गाड दिये गये है। तनाव दोनों ओर से था। कई क्रांतिकारी उसे अपनी ओर खींचने की कोशिश में थे। उसी तरह बडे लोग भी कई तरह के लालच देकर उसे अपनी ओर खींचने की कोशिश में लगे हुए थे। इन तनावों के बीच वह कुछ भी तय न कर पा रहा था। उसका काम उसी गति से चल रहा था। काम में ढिलाई न थी। तेजी भी कम न थी बल्कि कुछ तेजी ही थी। काम भी बढते जा रहे थे। लेकिन मन की सतह पर इस तरह के विचार चींटियों की तरह काट काट कर उसे परेशान जरूर किया करते थे। कभी कभी तो वह इतना परेशान हो जाता था कि इन ख्यालों को भूलने के लिए वह सुबह से रात तक सिनेमा देखा करता था। दिन यों बीत जाय तो खुश हो जाता था। फिर दूसरे दिन से वह

अपन आप को काम मे उलझा देता था।

दयानद पानिटकर ने कोस्टा को नाके पर उतार दिया तो कोस्टा को अच्छा लगा। उसकी भी हथलियों पर पसीना आ गया था। इतनी तेज रफ्तार वाली मोटर म वह पहली बार बठा था। कई जगह लगा कि अब मोटर ट्रक से भिड जायेगी। और आखिरी ब्रेक तो दयानद न इस तरह मारा था कि कोस्टा दिल थामे बठा रह गया था। उसके हाथों को झटका सा लगा था। ब्रेक की तीखी आवाज से उसका दिल दहल गया था।

पहले कोस्टा को लगा दयानद ने शराब पी रखी है। लेकिन उसका चेहरा सफेद पडा हुआ लग रहा था। और इतनी सुबह शराब? फिर दयानद इतना उत्तजित क्यों हो गया था? उसकी आँखें तनाव से भरी क्या लग रही थी? वह किससे घबरा गया? उसका चेहरा फक पड गया था जस उसकी गदन पर भूत सवार हो गया हो। बातें करने के दौरान लगता था कि उसकी साँस तज हो गयी है। पर क्यो? क्या वह मुझसे डर गया था?

कोस्टा विश्वास न कर पा रहा था। लेकिन जब सोचन लगा तो उसे विश्वास होने लगा। नुक्कड पर कोस्टा न हाथ दिया था तब दयानद की गाडी कुछ आग बढ चुकी थी। कोस्टा ने दो-तीन बार हाथ से इशारा किया तब कहा गाडी रुकी थी। मेरी ओर देखत ही उसका चेहरा फक पड गया था। यहाँ उतरन तक उसने नजरें न मिलायी थी। उसे लगा कि वह उसे उतारन के लिए उतावला है।

चलत हुए कोस्टा सोचता रहा और पान की एक दुकान पर आ गया। दुकान क सामने दो तीन लोग खडे हुए थे। पान सिगरेट लेकर जब वे चल गय तो कोस्टा ने मसाला पान माँगा। फिर यह देखकर कि इद गिद कोई नहीं है उसने पानवाले से पूछा ‘क्यो उस्ताद सब ठीक है न?”

‘हाँ—साब। बिलकुल ठीक’ पानवाला पान लगाते हुए बोला। उसन भी इधर उधर निगाह डाली और फिर एक मुडा-तुडा कागज कोस्टा की ओर बढा दिया। पान देत हुए बोला ‘परसो राह देखी थी साब।’

कोस्टा ने पान मुह म डाल लिया और कागज जेब म रख लिया। पैसे देकर वह चल दिया। तभी दो-तीन लोगों ने उसे सलाम किया।

इधर किधर कोस्टा साब?

‘टक्सी ढूढ रहा हूँ।’

तभी एक टक्सी उसके करीब आकर रुकी।

चलना है, कोस्टा साब?’

टैक्सीवाला कोस्टा की पहचान का था।

टैक्सी में बैठकर कोस्टा ने पान वाले का दिया हुआ कागज़ खोलकर देखा। उसमें अंग्रेज़ी में कुछ लिखा हुआ था। उनमें कुछ मन्त्रियों के नाम और विदेशी बैंकों में उनका कितना पैसा है इसकी लिस्ट थी। मन्त्रियों और बैंकों के नाम अंग्रेज़ी में लिखे हुए थे।

कोस्टा हँस दिया। उसकी फाइल में एक और चीज़ आ गयी थी। उसका कांटैक्ट काफी अच्छा साबित हो रहा था। स्मगलिंग के बारे में जानकारी इकट्ठा करके जब वह अपने भाषणों में ब्योरे देने लगा तो उसे कांटैक्ट खुद ब खुद मिलने लगे। इनमें से कुछ धंधे के थे और कुछ बड़े अफसर। पान वाला कांटैक्ट तो दिल्ली की सी० आई० डी० के एक बड़े अधिकारी का था। कुछ ऐसे भी थे जो सोचते थे कि उन्हें जितनी जानकारी है उसका वे खुल्लमखुल्ला उपयोग नहीं कर सकते। इसलिए वे खुद ब खुद आकर कोस्टा को जानकारी दे जाते थे। कुछ जानकारी मज़दूरों की ओर से भी मिल जाती थी। उसकी फाइल जैसे जैसे मोटी होती जाती थी वैसे वैसे वह ज़्यादा परेशान होता जाता था। किस किसका इसमें कितना गहरा हाथ है यह जानकर वह हैरत में आ जाता था। उसकी फाइल में न जाने कितने राज्यों के मन्त्रियों के नाम थे और उनके काम भी। बम्बई के तो उसमें बहुत-से लोगों के नाम थे।

लेकिन इस तरह की फाइल बनाकर कोस्टा क्या कर सकता था ? वह खुल्लमखुल्ला किसी का नाम न ले सकता था। गरज़ कि कुछ चीज़ छोड़ दी जायें तो उसके पास लिखित में कोई सबूत न था। मन्त्रियों के माल और आर्थिक प्रगति के आँकड़े ज़रूर थे। उनके रिश्तेदारों के आँकड़े थे लेकिन उन आँकड़ों को उसी तरह छापने के लिए कोई तैयार ही न होता था। यह काम कोस्टा को खुद ब खुद करना था। अय्यर की आज की कहानी तो यों ही थी। फैक्ट्स कुछ भी न थे। इसलिए उस कहानी को कोई भी गंभीरता से नहीं लेगा। अय्यर को नाम और आँकड़े दे दिये जायें तो वह छाप देगा ? और फिर आज मुख्यमन्त्री ने बुलवाया था। किसलिए ?

कोस्टा बेचैन हो गया। उसमें असुरक्षा का भाव जागने लगा। उस वक्त पान की दुकान के करीब सलाम करने वाले कौन थे ? मज़दूर तो बिलकुल न थे, पहचान वाले भी नहीं थे। लेकिन उन्हें देखा ज़रूर है, कहीं-न-कहीं।

स्मगलिंग के बारे में जबसे वह बोलने लगा है तब से कइयों ने उसे बचकर रहने की बात कही है — ज़रा सम्हलकर इन लोगों के जाल बड़ी दूर दूर तक फैले रहते हैं। हो सकता है कि जान पर भी आ बने।

कोस्टा रोज़ाना अखबार में कोर्ट में स्मगलिंग पर चल रहे केस की खबरें पढ़ता रहता था। करोड़ों रुपयों का केस था। और अपराधी की ओर कौन-से बड़े लोग हैं इसकी जानकारी कांटेक्ट के ज़रिये उसे मिल चुकी थी। केस उसके अंदाज़ के अनुसार ही चल रहा था। लेकिन ज़रा लंबा हुआ जा रहा था। आखिर में सरकार मामला वापस ले लेगी, इस बात की जानकारी भी उसे थी। बड़े लोग बड़ा जाल बड़ा पैसा! मैं अकेला इनसे कैसे भिड़ सकता हूँ? कई पार्टियों के लोग उसकी सहायता ज़रूर करते हैं लेकिन साथ कोई नहीं देता। यही तो धोखा है। कहीं फँस गये तो? बिलकुल ही अकेले पड़ जायेंगे।

डीकोस्टा बेहद परेशान हो गया। उसने आँखें बंद कर लीं। टैक्सी तेज़ी से जा रही थी। और ड्राईवर उस यूनियन के बारे में कुछ बातें बताये जा रहा था।

कोस्टा यूनियन के ऑफ़िस में पहुँचा तो मज़दूरों की काफी भीड़ थी। यूनियन के दो-एक पदाधिकारी आना बाकी थे। अभी दस बजने में कुछ देर थी। लेकिन आफिस के सभी नौकर हाज़िर थे। कोस्टा का आफिस आलीशान भले ही न हो पर अच्छा था। एक केबिन उसका था और सेक्रेटरीज़ के लिए भी अलग दो केबिन थे। एक सेक्रेटरी लीगल एडवाइज़र था। छोटी सी लायब्रेरी भी थी।

आफिस में पहुँचते ही कोस्टा अपने केबिन में दाखिल हो गया। उसने घंटी बजाकर बॉय को बुलवाया और दो चाय का आर्डर दिया और बोला 'मामत बाई को भेज देना।'

दो मिनट बाद फाइलें लेकर नीला अंदर आयी।

'गुड मार्निंग।

मार्निंग-मार्निंग' कोस्टा ने हँसते हुए कहा। नीला को देखते ही उसके मन का तनाव जाता रहा।

कामरे के मरने की बात पता चली?' कोस्टा ने पूछा।

'नहीं।'

अरे, आज सुबह ही गुज़र गया। मैं तो उसे पहले ही अस्पताल में भर्ती करना चाहता था। एक अच्छा वर्कर चला गया।

तभी कामरे के मरने की खबर आफिस में बैठे मज़दूरों के बीच फैल गयी। दस-बारह लोग आकर कोस्टा के इर्द गिर्द खड़े हो गये।

"अच्छा आदमी था।"

'झगड़ा फिसाद से वह डरता नहीं था साब।

"उस बार पुलिस ने उसे खूब मारा था, साब।"

कोस्टा तेज़ी के साथ डिक्टेशन दे रहा था और बिना रुके नीला डिक्टेशन ले रही थी। नीला जैसी फास्ट स्टेनो उसने अभी तक देखी न थी। उसके साँवले सौन्दर्य के साथ-साथ उसकी होशियारी पर वह खुश था। महत्त्वपूर्ण पेटीशन और चिट्ठियाँ ही वह उसे डिक्टेट कराता था। बाकी के खत नीला खुद लिखा करती थी और कोस्टा सिर्फ दस्तखत मार देता था। ब्रीफ बनाने में नीला बहुत होशियार थी। किसी भी विषय पर भाषण हो, दो घंटे के भीतर नीला लायब्रेरी से ऐसे आँकड़े और जानकारी ले आती थी कि कोस्टा खुश हो जाता था। कोस्टा की लोकप्रियता की वजह से उसे बड़े-बड़े क्लबों में डिनर और भाषण के लिए निमंत्रण आया करते थे। इन क्लबों का झूठापन कोस्टा को मालूम था। लेकिन उन लोगों के मुँह पर उन्हें गालियाँ देने के लिए कोस्टा जाया करता था। ऐसे वक्त पर नीला द्वारा तैयार ब्रीफ कोस्टा को बहुत पसंद आता था। कई मीटिंगों में तो कोस्टा उसे भी साथ ले जाता था।

आधे घंटे के भीतर कोस्टा ने दो पेटीशन लिखवा दिये। उसकी अँग्रेज़ी अच्छी थी। सिर्फ अभ्यास और बोलने से ही उसने इस भाषा पर कमाल का अधिकार हासिल किया था। उसे इस बात पर गर्व भी था। डिक्टेशन देते वक्त कुछ दिक्कतें ज़रूर आ जाती थीं। कभी फोन आता। कभी कोई मज़दूर कोस्टा से मिलने अन्दर आ जाता। कोस्टा को उसकी बात सुन लेनी पड़ती। डिक्टेशन हो जाने के बाद कोस्टा ने पूछा, 'कैसा ड्राफ्ट हुआ है?'

'एक्सीलेंट।'

'टाइप करते समय गलतियाँ ठीक कर लेना।'

'आप भी अजीब ।'

'अजीब क्या? जल्दबाज़ी में डिक्टेशन दी है और तुम तो ग्रेजुएट हो।'

'आप भी अजीब!'

'अरे आज शब्द बहुत कम हैं तुम्हारे पास। अजीब शब्द के अलावा शब्द ही नहीं है?'

'आप तो ।'

'लवली। इस साड़ी में तो तुम बहुत खूबसूरत लगती हो।'

नीला एकदम खुश हो गयी। डिक्टेशन लेने में भी मज़ा है। नौकरी लगी तो यूनियन के ऑफिस का काम जम पायेगा या नहीं इसकी उसे फिक्र थी। मज़दूरों से वास्ता पड़ेगा। लेकिन कुछ ही दिनों में उसे यह नौकरी रास आ गयी। और कोस्टा? उसने तो उसकी सारी ज़िन्दगी ही बदल दी थी। उसके साथ घूमने का मतलब है सुख-ही-सुख! कोस्टा के लिए वह

चाहे जो करने के लिए तैयार थी। पर वह यह भी जानती थी कि उसी की तरह और भी लड़कियाँ कोस्टा पर मरती हैं। अमीर, खूबसूरत, उससे कई मामले में अच्छी। नीला तो सिर्फ यूनियन की नौकर थी। कोस्टा को उससे मोहब्बत है इस बात को वह जानती थी। लेकिन वे कितना आगे जा सकेंगे? क्या मोहब्बत के आखिरी मुकाम तक पहुँच पायेंगे? वह परेशान हो जाती।

तभी जैसे कुछ याद आया हो, कोस्टा ने जेब से वह कागज़ निकाल लिया।

यह इसे देखो ज़रा। आज मिला है।

नीला ने पढ़कर देखा। उसका चेहरा परेशान सा नज़र आया।

मैंने कहा था न इन बातों को छोड़ देने के लिए। अभी भी चल ही रहा है। डेंजरस है।

कुछ तो करना ही होगा।

क्या करेंगे? मेरी समझ में तो कुछ नहीं आता। आप अकेले क्या कर लेंगे?

मेरी समझ में नहीं आ पाता। कुछ और मसाला मिल जाय तो किसी पार्टी के एम० पी० के पास भेज देंगे।

लेकिन मुझे तो विश्वास नहीं है।'

आज चीफ मिनिस्टर से एपाइंटमेंट है तीन बजे।

नीला ने हाथ के कागज़ पर फिर निगाह डाली। "इसी के बारे में?"

पता नहीं। उन्होंने खुद बुलवाया है।

कुछ देर बाद कोस्टा ने कहा कुछ तो करना ही होगा वेस्टर्न स्टार की आज की कहानी पढ़ी?'

पढ़ ली।

डीटेल्स देनी चाहिए थी।

किसलिए? जो कुछ छपा है वह क्या कम है?'

क्या?'

'क्या मतलब? नीला ने कहा अय्यर ने किससे जानकारी ली है यह इसी कहानी से साफ हो जाता है।

'इसकी वजह तो तुम भी जानती हो।'

हर कोई भी जान सकता है। एंटी स्मगलिंग का नाम आये तो लोग सीधे आपका ही नाम लेते हैं।'

अच्छा! कोस्टा ज़ोर से हँस दिया। फिर बोला, "अब तो मैंने अय्यर को पूरी फाइल दिखाने का फैसला कर लिया है।'

वह क्या और भी कुछ छापने वाला है ? देखिये आई काशन यू।

वह बात नही। अय्यर सिसीयर है। वह कुछ तो रास्ता बनायेगा ही। उसस बातें करनी होंगी।"

नीला ने डायल घुमाया। कोस्टा ने अय्यर से एपाइटमट ल ली।

बाद म कोस्टा ने पूछा 'शाम को क्या करने वाली हो ?'

आप क्या करने वाले हैं ?'

गेट मीटिंग।' कोस्टा ने अजीब सा मुँह बनाया।

उसके बाद ?"

कालावा म मौसी क यहाँ जाना है।'

नीला का चेहरा मुरझा गया।

कोस्टा बोला मुझस खाना हो नही पायेगा। ऑनेस्टली। कल शाम को मरा काई प्रोग्राम नही है।

कोस्टा झूठ बालना नही चाहता था। लकिन विनीता देशमुख से उसन काफी पहल कह रखा था। उसने तय किया कि कल की शाम नीला के लिए रखेगा।

कल हम लोग कही खाना खाने चलेंगे शाम को क्यो ?

मेरी ट्यूशन है।'

"से मारो गोली। नाना क्या कहते है ?'

ठीक हैं। आपको याद करते हैं।

खाने क बाद पहुँचाने आऊँगा तब देखूँगा।'

नीला चलने लगी तो उसन पूछा—

'आज के केस की फाइल निकालकर रख दी है न ?'

'हाँ, तयार है। इसका क्या करूँ ?" कोस्टा क दिये कागज़ की ओर उसन इशारा किया।

कोस्टा ने कहा, फाइल म न रखो। लाकर म रख दो।'

आज सी० एम० से मुलाकात के समय फ़ाइल ल जायेंगे ?'

कोस्टा न कुछ पल सोचा फिर बोला "नही। बिलकुल खाली हाथ ान वाला हू।

'लच ?

आज छुट्टी। वक्त ही नही है।'

मैं डिब्बा लायी हूँ। दूँ आपको ?"

'और तुम ?'

'मैं बाद म खा लूगी।

भेज दो। कुछ खा लूगा। तुम्हारे लिए बचा रखू।"

चाह जो करने के लिए तयार थी। पर वह यह भी जानती य तरह और भी लडकियां कोस्टा पर मरती हैं। अमीर खूबसूर मामला म अच्छी। नीला तो सिफ यूनियन की नौकर थी। को मोह बत है इस बात को वह जानती थी। लेकिन वे कि सकेंगें ? क्या मोहब्बत के आखिरी मुकाम तक पहुँच पायेंग ? हो जाती।

तभी जसे कुछ याद आया हो, कोस्टा ने जेब से वह का लिया।

हू, इसे देखो जरा। आज मिला है।

नीला न पढ़कर देखा। उसका चेहरा परेशान सा नजर आ

मैंने कहा था न इन बातो को छोड दने के लिए। अभी रहा है। डजरस है।'

कुछ तो करना ही होगा।

क्या करेंगे ? मेरी समझ म तो कुछ नही आता। आप अ कर लेंगे ?

मरी समझ म नही आ पाता। कुछ और मसाला मिल जाये र पार्टी के एम० पी० क पास भज देंग।'

देखिये मुझ ता विश्वास नही है।

आज चीफ मिनिस्टर स एपाइटमट है तीन बज।

नीला न हाथ क कागज पर फिर निगाह डाली। "इसी के बारे मे

पता नही। उन्होंने खुद बुलवाया है।'

कुछ देर बाद कोस्टा ने कहा कुछ तो करना ही हागा क स्टार की आज की कहानी पढ़ी ?'

पढ़ ली।

डीटेल्स देनी चाहिए थीं।

किसलिए ? जो कुछ छपा है वह क्या कम है ?'

'क्या ?

'क्या मतलब ? नीला ने कहा अय्यर न किसस जानकारी ली है यह इसी कहानी स साफ हो जाता है।

इसकी वजह तो तुम भी जानती हो।

ना कोइ भी जान सकता है। एटी स्मगलिंग का नाम आये तो लोग सीध आपका ही नाम लेते हैं।

अच्छा! कोस्टा जोर से हस दिया। फिर बोला, "अब तो मैंने अय्यर को पूरी फाइल दिखाने का फसला कर लिया है।'

वह क्या और भी कुछ छापने वाला है ? देखिये आई काशन यू।"

वह बात नहीं। अय्यर सिंसीयर है। वह कुछ तो रास्ता बतायेगा ही। उससे बातें करनी होंगी।"

नीला ने डायल घुमाया। कोस्टा ने अय्यर से एपाइंटमेंट ले ली।

बाद में कोस्टा ने पूछा शाम को क्या करने वाली हो ?

आप क्या करने वाले हैं ?

गेट-मीटिंग। कोस्टा ने अजीब सा मुँह बनाया।

उसके बाद ?"

कालाबा में मौसी के यहाँ जाना है।"

नीना का चेहरा मुरझा गया।

कोस्टा बोला मुझसे खाना हो नहीं पायेगा। ऑनेस्टली। कल शाम को मेरा कोई प्रोग्राम नहीं है।

कोस्टा झूठ बोलना नहीं चाहता था। लेकिन विनीता देशमुख से उसने काफी पहले कह रखा था। उसने तय किया कि कल की शाम नीला के लिए रखेगा।

कल हम लोग कहीं खाना खाने चलेंगे शाम को क्यों ?"

मेरी ट्यूशन है।'

उसे मारो गोली। नाना क्या कहते हैं ?'

ठीक है। आपको याद करते हैं।

खाने के बाद पहुँचाने आऊँगा तब देखूँगा।

नीला चलने लगी तो उसने पूछा—

'आज के केस की फ़ाइल निकालकर रख दी है न ?'

'हाँ तैयार है। इसका क्या करूँ ? कोस्टा के दिये कागज़ की ओर उसने इशारा किया।

कोस्टा ने कहा फ़ाइल में न रखो। लॉकर में रख दो।'

आज सी॰ एम॰ से मुलाक़ात के समय फ़ाइल ले जायेंगे ?'

कोस्टा ने कुछ पल सोचा, फिर बोला 'नहीं। बिलकुल खाली हाथ जाने वाला हूँ।

सच ?

आज छुट्टी। वक्त ही नहीं है।

मैं डिब्बा लायी हूँ। दूँ आपको ?"

"और तुम ?

'मैं बाद में खा लूँगी।'

"भेज दो। कुछ खा लूँगा। तुम्हारे लिए बचा रखूँ।"

ना।

क्यो ? ऐसे नहीं चलेगा।"

नही। वैसे कोई बात नही। आप खा लीजिये।"

"नही, रखूंगा तुम्हारे लिए भी।

"ठीक है। शाम को आफिस आयेंगे ?"

सी० एम० से मुलाकात के बाद वक्त बचा तो आऊँगा।

राह देखूंगी।

नीला केबिन से निकल गयी तो कोस्टा के सीने मे अजीब सा दर्द उठा। आह—नीला! उसके बाल और हाथ! उसमें अपराध भाव जाग रहा था। अभी विनीता को फोन करके शाम का खाना कैंसिल कर देना चाहिए। पर उसके घर पर फोन कैसे कर सकते हैं ? नही वह तो होटल में आयेगी और बैठी रहेगी यों ही। क्या फर्क पडता है। पर नीला को परेशान न करना चाहिए। नीला पक्की है। हो सकता है रोजाना मेरा नाम लेती हो। एक-दो दिन या अगले सप्ताह तक वह मुझसे जरूर पूछेगी। फिर क्या जवाब देंगे ? हम इस तरह अनिश्चय की स्थिति में क्यों रहते हैं ? नीला जवान है। मुझसे पंद्रह साल छोटी है। वह हिंदू है। नाना मान जायेंगे ? मेरा मन क्या नही होता ? नीला जैसी साथिन हो तो जिन्दगी अच्छी गुजर सकती है। हर्ज ही क्या है ?

सच पूछा जाये तो कोस्टा ने इस विषय मे कभी ज्यादा सोचा ही न था। लडकियो के बारे इतना सोचने की आदत उसे न थी। ऐसा किया होता तो उसके बाल कभी के सफेद हो चुके होते। गले पडने वाली लडकी को मना नही करना चाहिए उसका खयाल था। पर नीला गले पडने वाली लडकी नही है। उसके पिता पार्टी के पुराने वर्कर हैं। वे बीमार पडे इसलिए लडकी को नौकरी की जरूरत पडी। कोस्टा ने नौकरी दे दी। और वह खुद नीला पर फिदा हुआ था। खुद-ब-खुद न जानते हुए। वह डिक्टेशन लेते वक्त नीची गर्दन किये बैठती थी और कोस्टा लगातार उसकी ओर देखा करता था। नीला खामोश रहने वाली लडकी थी। इसी वजह से उसकी होशियारी एकदम समझ में न आ सकी। वह डिक्टेशन लेती तो लगता, बडी होशियार है। एक बार शुरू करती तो खत्म होने पर ही रुकती थी। कोस्टा को सोचने के लिए जरूर कुछ वक्त लग जाता था। तब वह पेंसिल मुंह पर रखे धीरे से कोस्टा की ओर देख लेती थी। और कोस्टा उसके इस तरह देखने से परेशान हो जाता था। उसने पहला ब्रीफ तैयार करके कोस्टा को दिया तभी से कोस्टा उस पर बेहद विश्वास करने लगा। और कोस्टा द्वारा विश्वास किया जाना नीला को भी पसंद आया। फिर तो पहचान

बनती ही गयी। ढलान पर वाहन जैसे खुद-ब-खुद तेज़ी से उतरता है वैसे ही दोनों के बीच प्रेम तेज़ी से पनपने लगा।

विनीता देशमुख की बात कुछ और ही थी। एक क्लब की डिनर-मीटिंग में उसने पहली बार देखा और उसका भाषण सुनकर वह इतनी खुश हुई कि उसने भाषण के बाद उससे कुछ सवाल भी पूछे। उसके सवालों से यह ज़ाहिर था कि उसे राजनीति के बारे में कुछ भी नहीं पता था। लेकिन वह तेज़ है, यह ज़रूर जाना जा सकता था। कोस्टा ने सवालों के जवाब देते वक्त उसका काफी मज़ाक बनाया था। वह भी उसे अच्छा लगा था और खाने के वक्त वह खुद कोस्टा की बगल में बैठ गयी। कोस्टा के आटोग्राफ उसने लिये और भाषण बेहद पसंद आने की बात कह दी।

तभी से इस तरह क्लब के भाषणों में वह ज़रूर हाज़िर होती थी। उसे फोन किया करती थी। वह एक मिनिस्टर की लड़की है यह बात जब कोस्टा को मालूम हुई तो वह हैरत में आ गया। कोस्टा उसकी गोरी चमड़ी पर मरता था, उसकी आँखों पर रीझा हुआ था। विनीता वाकई खूबसूरत थी। बुद्धिमान भी थी। सायकालोजी में एम० ए० कर वह अब पी० एच डी० कर रही थी। न मिलने की स्थिति में वह पहले सप्ताह में एक बार फोन कर लिया करती थी।

एक दिन रात को थका हुआ कोस्टा बिस्तर पर लेटा हुआ था कि फोन की घंटी बजी।

'हलो कोस्टा आइ वांटेड टु टेल यू दिस मच बिफोर ओ कोस्टा कोस्टा आई कांट लिव विदाउट यू।'

'हलो कौन बोल रहा है? साफ सुनायी नहीं दे रहा है।'

'माई गॉड! कोस्टा यू आर ए बास्टर्ड! माई गॉड! मैं तो यहाँ तुम्हारे लिए परेशान हूँ। और तुम पूछ रहे हो, कौन हूँ? माई गॉड!'

'सच—कौन बोल रहा है? प्लीज़?' दूसरी तरफ से औरत की आवाज़ और लम्बी साँस सुनायी दे रही थी।

'डैम इट कोस्टा!'

'कौन विनीता—?'

फिर लंबी साँस। खुशी की ध्वनि भी हो सकती है।

'विनीता क्या कर रही हो इस वक्त?'

'कोस्टा यू आर ए फूल!" विनीता की आवाज़ बेहद व्याकुल-सी थी।

"क्या हुआ—?'

'कोस्टा क्या हुआ कोस्टा वाकई अभी तुम कुछ नहीं जानते। माई

एम डाइंग विदाउट यू ।'

अभी इसी वक्त ?'

फिर कब ?'

कल ।"

'कभी भी ।'

'पर मुझे काफी लोग जानते हैं । तुम पर आ जायगा । कहीं तुम मेरे साथ किसी को नजर आ गयी तो ?'

उसकी फिक्र तुम न करो कोस्टा । मैं जानती हूँ जगह । आई विल अरेंज ।'

रखना कहीं तुम्हारे पिताजी ?"

आई केअर ए डम । सच मुझे आश्चर्य है कोस्टा । तुम अभी तक कैसे नहीं जान पाये ? मैंने जब तुम्हें पहली बार देखा था तभी तय कर लिया था और यू नो आई हेट माई फादर । उनकी कुछ बातें मैं तुम्हें बताऊँगी । ही इज रिअली स्टुपिड । सिर पर टोपी पहन लें तो कैसा अजीब दिखता है !'

'अरे कोई सुन रहा होगा ।'

दूसरी तरफ से हँसने की आवाज ।

यहाँ सुनने के लिए मेरे कुत्ते और नौकर के अलावा कोई भी नहीं है । हमारे पिताश्री अभी घर लौटे ही नहीं हैं । आयेंगे तो होश में न होंगे । कहो, कल कहाँ मिलोगे ?"

नाऊ लुक विनीता आई वान यू ।

शट अप । कल सुबह फोन करूँगी ।'

कल तो मुझे बेहद काम है ।

आह कोस्टा कोस्टा यू आर ए चाइल्ड । लेकिन कोई बात नहीं मैं सब सिखा दूँगी ।'

यू सरप्राइज मी ।'

ना मुझे तुम पर आश्चर्य है । कल सुबह फोन करूँगी ।'

सात से पहले करना । सात के बाद मैं बाहर निकल जाऊँगा ।'

'डोंट वरी मैं आज सोऊँगी ही नहीं ।'

'गुड नाइट !

अरे और कुछ बोलो न ?'

विनीता, यू आर ए स्वीट गर्ल ! लेकिन मैं अभी थका हुआ हूँ, दिन भर काम करता हूँ न ?'

पुअर बाय ! मुझे तुम्हारी जरूरत है । आई विल लुक आफटर यू ।"

तुम सपने जैसी हो।

ना। देखोगे खुद ही।

गुड नाइट।

'फिर कल सुबह। गुड नाइट।'

और तब से यह शुरु हो गया। विनीता का प्रेम बहुत तेज था और कोस्टा भी उसके साथ बहा जा रहा था। उसकी उफनती जवानी के सामने कोस्टा गर्दन झुकाये जा रहा था। विनीता जो चाहती सो करवा लेती। कोस्टा को भी यह सब अच्छा लगता था। वह राजनीति में दखल न रखती थी। लेकिन अपने बाप की राजनीति उसे पसन्द न थी। उसे लगता था कि राजनेता के जो भी खिलाफ हो वह उसका अपना है।

मन मे जो आये उसको पूरा करके छोडना विनीता की यही आदत थी। उसने कोस्टा से शादी करने का फैसला कर लिया था। और इसी वजह से कोस्टा परेशान था। कोस्टा का अभी तक शादी करने का कोई विचार नही था। सिल्विया कितनी पीछे पडी थी। लेकिन कोस्टा ने उसे तरजीह न दी थी। लेकिन पता नही क्यो आठ साल उसके साथ गुजारने के बावजूद उससे शादी करने का खयाल तक उसके मन में नही आया था। कहा वह शादी से डरता तो नही कभी कभी उसे ऐसा लगने लगता था। सिल्विया डायवोर्सी थी। आखिर में चिढ़कर उसने एक बडे डाक्टर को बाय फ्रेंड के तौर पर रख लिया था। कोस्टा से उसकी पहचान भी करवा दी थी। अगले महीने वह शादी करने वाली थी। कोस्टा को जरा भी एतराज न था। उसे कुछ महसूस ही नहीं होता था।

लेकिन इस दौरान उसका मन नीला की ओर खिंचता जा रहा था। उसे खुद इस पर अचरज था। लुभावने प्रेम और माशूक अदाओ के आक्रामक सहवास का सुख विनीता देती थी फिर भी चुप रहने वाली ने उसका दिल जीत लिया था। खूबसूरती की दृष्टि से नीला विनीता के आगे फीकी थी लेकिन फिर भी कोस्टा को नीला का आकर्षण जबरदस्त लगता था। और जब विनीता शादी की बात चलाती तो कोस्टा की आंखों के आगे नीला आ जाती थी।

खाना खत्म होने से पहले ही रघू केबिन में आया। रघू अमीर बाप का बिगडा हुआ लडका था, उम्र अठाईस साल। बिगडा हुआ मतलब दुनिया की दृष्टि में। तीन साल से रघू ने दाढ़ी न बनायी थी। भारत में टोटल क्रान्ति कैसे होगी इस बात पर वह गम्भीरता से सोच विचार करता था। यही उसका पागलपन था। इसी लिए वह एशियाटिक लायब्रेरी में सुबह से शाम तक पढने के लिए बैठा रहता था। कोस्टा को क्राति

का नेता बनाना उसका लक्ष्य था।

कंधे से बैग उतारकर कोस्टा की टेबिल पर रखते हुए रघू ने कहा—

जल्दी में हैं शायद। मैंने सुना ।

हाँ बस निकल ही रहा हूँ। साढे ग्यारह बजे केस है लेबर कमिश्नर के यहाँ।'

मरो यूँ ही—यूँ ही केस लड़ते मर जाओगे। अच्छा काम तो तुम्हारे हाथों होगा ही नहीं।

कोस्टा सिर्फ हँस दिया। पास पड़ा कागज उठाकर उसने हाथ पोंछ लिये। एक गिलास पानी पिया। फिर बोला सुबह से तुमने शायद कुछ खाया नहीं है।

ना। देश के करोड़ों लोगों को एक वक्त का खाना नसीब नहीं होता और हम दोनों वक्त खाकर चरबी बढ़ाते रहें—यह तो शोषण है जनाब।"

तुम वाकई नाराज़ नज़र आते हो?'

मैं तो हमेशा के लिए नाराज़ हूँ।

चलो मैं टैक्सी से जा रहा हूँ। रास्ते में बातें करेंगे।"

रघू ने बैग कंधे पर लटका लिया और कोस्टा के साथ निकलने लगा। जाते वक्त कोस्टा ने लंच बॉक्स बंद किया और नीला की टेबिल पर रख दिया। नीला ने फाइल पकड़ा दी। उसे लेकर वह रघू के साथ बाहर आ गया।

टैक्सी में बैठने पर कोस्टा ने कहा 'अब बोलो। क्या तय किया है?'

रघू ने नाक फुलायी पीले दाँत बाहर निकाले सिगरेट सुलगा ली और बड़ी कड़वाहट से हँसते हुए बोला यही मैं तुमसे पूछ रहा हूँ। तुम क्या करने वाले हो?

कोस्टा कुछ परेशान सा हुआ। बोला मैं तो अपनी समझ से जो करना चाहिए वही कर रहा हूँ। फिर कुछ रुककर बोला तुम ज़रूर अपनी ज़िन्दगी तबाह किये जा रहे हो।

रघू ने सिगरेट के कश खींचे। फिर बोला, ढोंगीपन की भी हद होती है। अपने दिल से कहो कोस्टा तुम जो कुछ कर रहे हो वह क्या काफी है? क्या तुम यही सोचते हो? तनखाह बढ़ाने के लिए आंदोलन करना आश्वासन मिलते ही पीछे हट जाना, लेबर कोर्ट में केस लड़ना एंटी-स्मगलिंग, एंटी-करप्शन के लिए आंदोलन चलाना स्टंट छेड़ना और

प्रसिद्धि पाना—बस यही तुम्हारा लक्ष्य है ?'

'रखो तुम मुझे मत पढ़ाओ। आज की हालत में यही हो सकता है। मैं बड़ी ईमानदारी से कह रहा हूँ।'

'यही तो, यही तो' रघु की आवाज़ भारी हो गयी। 'आज की हालत, आज की हालत में जो होगा वही करोगे। हालात बदलने की तुम्हारी इच्छा ही नहीं होती। गरज़ कि तुम भी इस स्थिति के रक्षक बन बैठे हो न ? और तुम्हारा सबसे बड़ा गुनाह यह है कि मजदूरों को भी तुम इस स्थिति में रक्षक बनाये जा रहे हो। सच मुझे तो तुम पर दया आती है। और चिढ़ भी होती है। तुम समझते हो कि तुम अपनी शक्ति से यह सब कुछ कर रहे हो पर यह तो तुम्हारा भोंदूपन है। मैं तो कहता हूँ जो कुछ कर रहे हो वह नाकाफी है। तुम खुद इस बात को अच्छी तरह से जानते हो। और इतना होते हुए भी तुम यही कहते हो क्योंकि तुम भोंदू हो। ढोंगीपन में तुम भी दूसरे लीडरों से कम नहीं हो। और सच बात तो यह है कि सब-कुछ जानते-बूझते भी तुम अपने-आपको ईमानदार समझते हो। आम किस्म के लालच से तुम्हारा यह पालिटिकल करप्शन ज्यादा बड़ी धोखाधड़ी है। इसलिए तुम पर गुस्सा आता है। तुम से तो भ्रष्टाचारी लोग कम धोखेबाज़ हैं। वजह यह है कि उनकी ओर उँगली तो उठायी जा सकती है। उन्हें दुश्मन कहा जा सकता है पर तुम्हें नहीं।'

रघु की आवाज़ काफी ऊँची हो गयी थी। चेहरा लाल हो गया था। बीच में ही उसने बात बन्द की और सिगरेट का टोटा कुचलकर बाहर फेंक दिया।

फिर वह तीखेपन से हँस दिया। सिगरेट सुलगाते हुए बोला, 'तुम जरूर नाराज़ हो गये होगे, पर तुम्हें मैं यह सब सुनाना चाहता था।'

कोस्टा रुक गया। टैक्सी के दरवाज़े को पकड़कर बाहर सड़क की ओर देखने लगा। फिर कुछ देर बाद बोला 'बोलो मैं अच्छी तरह से सुन रहा हूँ। अभी तुम और भी बोलना चाहते हो।'

'बोलता हूँ। तुम्हारी यह हालत क्यों हो गयी, यही बताये देता हूँ। तुम्हें शुरू शुरू में अच्छा मार्ग-दर्शन नहीं मिल पाया। अब जब तुम कुछ समझने लगे हो तो एस्टेब्लिशमेंट के मेम्बर बन चुके हो। यूनियन की तनखाह, जीप, फ्लैट, लोकप्रियता, फैशनेबल सोसाइटी में लेक्चर, मज़दूरों की मोहब्बत और अगला कदम औरतें—इन सभी ने तुम्हें करप्ट कर दिया है। तुम अब उलझ चुके हो और इन बेड़ियों को तोड़े बगैर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।'

कुछ देर रुककर फिर बोला 'कड़वा लग रहा है न ?'

कास्टा कुछ देर चुप रहा। फिर धीमे धीमे निश्चय के साथ बोला 'तुम विश्वास करो या न करो रघू पर अभी जो कुछ तुम बोले ऐसे ही डायलाग दिन में रोजाना मैं अपने-आप से कर लेता हूँ ।"

'एक और गप्प ।'

'सुनो जैसे मैंने तुम्हारी बातें सुनी हैं वैसे ही तुम भी सुनो। मेरा रास्ता पूरी तौर से ठीक नहीं यह तो मैं भी जानता हूँ। पर इससे अच्छे रास्ते मुझे नजर ही नहीं आते। तुम्हारा रास्ता मुझे मान्य नहीं। इन हालात में तो मुझे वह सब पागलपन लगता है। और उसमें शायद सफलता भी हासिल नहीं हो सकती। मेरा रास्ता सीधा भले ही न हो पर उससे आगे जरूर बढ़ा जा सकता है। उससे कुछ बुरा तो होगा नहीं। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का कुछ तो मूल्य है ही। हिंसापूर्ण क्रांति से निर्मित व्यवस्था में व्यक्ति स्वातन्त्र्य की गुंजाइश बहुत ही कम हुआ करती है। आखिर जिंदगी में कुछ मूल्यों को तो देखना ही होता है न? मुझे भी क्रांति की जरूरत महसूस होती है पर उस रास्ते से नहीं जो तुम चाहते हो। व्यावहारिक तौर पर कुछ हद तक अपने में करप्शन होने की बात मैं भी मानता हूँ—पर पालिटिकल करप्शन की बात मुझे जरा भी मान्य नहीं। मैं जिस रास्ते पर चल रहा हूँ, वही रास्ता ठीक है। हमारे देश में तुम जैसी क्रांति चाहते हो वह होना जरा मुश्किल ही है। देश इतना बड़ा है इतने लोग इतनी भिन्नता इतनी भाषा इतने धर्म इतनी जातियाँ—इतनी उलझनें हैं कि इस देश में संपूर्ण क्रांति संभव ही नहीं है। मैं खुद में भ्रम में था—पर आज तुमसे बात कर रहा हूँ तो लगता है कि जो कुछ मैं कर पा रहा हूँ वही ज्यादा अच्छा है। और तुमने भी आज तक क्या कर लिया है? मैं कम-से-कम लोगों के साथ तो हूँ। लायब्रेरी के बाहर तो तुम कभी निकलते नहीं हो?

मतलब यह कि तुम भी बुर्जुआ बन चुके हो। तुम्हारी वह सहानुभूति सरासर झूठी थी।

बेकार की बातें न करो। तब तो मुझे भी ठीक लगता था पर अब बिलकुल नहीं।

वही तो—वजह यह कि तब तुम्हें पेट की चिंता थी और जिसे पेट की चिंता रहती है वह मूल्यों के बारे में नहीं सोच सकता। लगन होने पर क्रांति में हमेशा विश्वास हो सकता है। तुम्हें अब पेट की चिंता नहीं रही। इसलिए लगन होना भी जरूरी नहीं है। हो सकता है कि कुछ लगन भी हो और ऐसे लोगों को विश्वास ही नहीं होता कि क्रांति के जरिये कुछ नया हो सकता है। तुम भी उनमें से हो।

'बेकार के आरोप तो न लगाओ।"

तुम तो बेतरतीब बातें करत हो। अभी की गयी बाता से तो यही पता चलता है। वाकई घर छोडकर आवारा हो जाने की स्थिति मुझे तब महसूस हुई थी जब मुझे पार्टी से निकाल दिया गया था। हमारी पार्टी भी अब पूरी तौर पर बुर्जुआ बनती जा रही है। पार्टी मे बना रहता तो मैं भी तुम्हारे जसा बन जाता। घर और पार्टी छोड देने से अब मैं कुछ स्वतन्त्र रूप स सोचन लगा हूँ और इसी वजह से मुझे तो अपना ही रास्ता ठीक दिखायी दता है। तुम मुझे अडर एस्टिमेट मत करो। मैं अकेला ही नही मुझ जस कई युवक बम्बई म महाराष्ट्र म और सारे देश म हैं। और मैं उन्हें एकत्रित करने की कोशिश भी कर रहा हूँ। पार्टी से निकलने का एक तरीका और भी है। तुम्हारा मजदूर आन्दोलन हो या हमारी क्राति कारी कहलाने की बात क्यो यही दोनो वाकई क्राति के सबसे बडे दुश्मन हैं? अगर यह न होत तो समाज के दो पक्ष हो जाते और क्राति अपने-आप हो जाती। तुम्हार आन्दोलन मे यह पक्ष कमजोर करने की ताकत नही है। पर इस वजह से आप क्राति को एक तरफ ढकेल देत हैं। मैं कम स-कम इसम शामिल नही हूँ। इस बात का मुझे एहसास है। और जब मुझम ताकत आयेगी तो मेरा काम होगा आप लोगो को खत्म करना।

रघू की आवाज म पहले जसा आवेश और गुस्सा न था। वह हर शब्द पर जोर देकर बोल रहा था। आवाज म उतार चढाव न था। इसी वजह से उसके सवादो म एक पैनापन था। उसका एक एक शब्द कोस्टा को काटे जा रहा था उसके बदन पर काँटे उभार रहा था। रघू पाँच छह महीने पहले मिला था। उसके बाद आज मिल रहा है। इस बीच उसम काफी बदलाव आ गया है। उसके हर शब्द के पीछे गजब का आत्म विश्वास दिखता था। एक अजीब कडवाहट भी नजर आती थी। कोस्टा को लगा कि रघू के लिए उसक मन की, सारी आत्मीयता खत्म हो चुकी है। उससे कुछ डर भी लगने लगा है। रघू हम नष्ट कर देगा। मतलब क्या करेगा? कोस्टा हँस दिया और बोला—

तुम जब तक जनता के बीच काम करना शुरू नही करते तब तक तुम्हारे खयाल इसी तरह एकतरफा बन रहेंगे। लोगो के कधे से कधा मिलाने और राजनीति को करीब से देखने पर तुम्हारे खयाल खुद ब-खुद विकसित हो जायेंगे। कुछ बातें ऐसी भी होती हैं जो करनी ही होती है जिन्हें हम टाल नहीं सकते। यह बात तुम खुद अपने अनुभव से जान लोगे।

रघू इतनी जोर से स हँसा कि कोस्टा घबरा गया। जसे कोई हँसी

ोर से हँसता है कधे झटकता है, ठीक इसी तरह रघू
टा का रघू की हँसी पागलपन जसी लग रही है यह
पने आप को सम्हाला और बोला, ‘एक्जेक्टली—’
ूल पूजीपति क बगलबच्च की तरह बोले। तुमस एसी
लिए मुझे हँसी आ गयी। आई मीन नो इसल्ट,” कहत
न लगा।
की रुक चुकी थी। कोस्टा बहद परेशानी महसूस कर
ाज़ा खोलकर वह बाहर आया और उसने टैक्सी के पस
क उसके मन म रघू के लिए आदर और स्नेह उभर
न धोखा दिये जा रहे है, पर वह धोखा नही खा सकता।
है? गुस्सा या द्वेष? कोस्टा कुछ समझ ही नही पा
घू से पूछा—
ाओग?”
रघू ने अलसाते हुए कहा और अपना बग कधे पर

हो गया?’
रे पास पसे माँगने आया था लकिन अब मन नही

’

ाए इस तरह अप्रत्यक्ष मदद करने का पुण्य शायद तुम्ह
तुम्हारा ही नुकसान है।”
ास्कल—ए बास्टड!’
। ि्ल खोलकर हसा। कोस्टा न कुछ नोट उसकी कोट
दिये। रघू ने विरोध नहीं किया। इसे रिश्वत न

कधे थपथपा दिये।
ा फिर कभी फुसत से आना बठ कर बातें करगे।’
र मज़ा ही नही आता।’
ुम जसा बोलने वाला दूसरा नही मिलता।”
ग।

र कोस्टा परेशान सा लेकर आफिस मे आ गया। कस
वक्त था। लकिन अभी कमचारी भी नहीं आये थे। इस
भी परशान हुआ। कमचारियो पर उसे गस्सा भी आया,

खुद पर भी गुस्सा आया। रघू यों मरे ही मुह पर बोलता रहे और मैं सुन लूँ। रघू को अधिकार ही क्या है? मैं जरूर बोलन का अधिकार रखता हूँ। लाइब्रेरी क बद कमरे म ढेरो किताबो के बीच मुलायम कुर्सियो पर बैठकर रघू सोचता है। इसी वजह स उसके विचारो से अनुभव नही बालता। उसकी गरीबी नकली है। बाप अमीर है। उसकी इच्छा घर पर खाने की नही होती और वह इस तरह मुझसे बातें कर सीधे लाइब्रेरी का निकल जाता है। हम चुपचाप सुन लेते हैं और पसीना पोछते हुए यहाँ तक आ जाते है। कस म देरी है। एक भी कमचारी अभी तक हाजिर नही है। उनकी नौकरी की बस मुझ ही चिन्ता है। स्साल सब बेफिक्र। यहाँ आया हूँ तो क्या घी खान के लिए? और रघू मुझ ही सुनाता है और हम हैं कि उसकी सुन लत हैं।

रघू हम खत्म करेगा, मतलब क्या करेगा? कोस्टा को हँसी आ गयी। पर वह हडबडाया भी। रघू फनेटिक है। वह चाहे जो कुछ कर सकता था। मन म आने की देर थी बस। बाप क पैसों को यो लात मारन वाल बहुत कम होत हैं। वह क्या मुझ गोली मार देगा? कोस्टा को फिर हँसी आ गयी। और उसने उस खयाल को झटक दिया। लेकिन रघू क साथ हुई बातो को वह झटक न पा रहा था। बार बार य ही शब्द उसके दिमाग पर दस्तक दे रहे थे— तुम तो भोंदू हो।

कोस्टा को अजीब बेचनी हो रही थी। रघू पर बहुत गुस्सा आ रहा था। लेकिन उस यह पता नही चल रहा था कि यह गुस्सा रघू पर है या कि खुद पर? कमचारी आ गय। बस शुरू हो गया। लकिन उसके दिमाग म जो कुछ चल रहा था वह बाहर न निकल पा रहा था। उसकी फाइल बिलकुल तयार थी। इसी वजह स उसे ज्यादा परेशानी नही हुई। सुबह गगाराम की मौत नीला और विनीता की मुलाकात का खयाल रघू की बातें, यह केस मुख्यमत्री स मुलाकात— सभी बातें एक ही दिन आ पडी थी। तनाव ज्यादा हुआ तो कोस्टा न ट्रैंक्विलाइजर ल लिया। बस अजीब उबाऊ था। आज फ़सला हो जाने के आसार नजर नहा आ रह थे। एक तरह से ठीक भी था। दफ्तर म तनाव और बढ़ सकता था। रघू स जरा फुरसत से मुलाक़ात करनी चाहिए। हो सके तो लाइब्रेरी म ही। गलत फहमी उस हुई या मुझे? क्या मैं भायखला का फ्लैट छोड सकता हूँ? पेगी का शिवाजी पार्क वाला फ्लैट मिलन पर क्या उसकी जरूरत न होगी? लेकिन क्या सारा आन्दोलन छोड रघू जो कुछ कह रहा है वह किया जा सकता है? रघू जो कुछ कहता है उसम सच्चाई हो सकती है। हम पूरे बुर्जुआ बन भी गय होंगे। लेकिन क्या रघू का रास्ता ठीक है?

जैसी उसमें लगन है वैसी लगन क्या हममें हो सकती है? अभी तो मेरा ही रास्ता ज्यादा ठीक महसूस होता है। फिर रघू की बातें इतना परेशान क्यो कर रही हैं?

केस स्थगित हुआ तो कोस्टा परेशान हो गया। वह पूरी तौर पर थक चुका था। उसे लगा कि केस का स्थगित होना ठीक हुआ। फैसला उस तरफ होता तो तनाव और बढ ही जाता।

काफी वक्त हो चुका था। अब आफिस जाने के लिए वक्त ही नही है। तीन बजे तक मुख्यमंत्री के यहाँ पहुँचना होगा। सामने के होटल में उसने कर्मचारियों के साथ चाय पी। एक कर्मचारी ने कहा—

'कोस्टा साब आप फिकिर न करो। अगली तारीख पर मैं उनके विटनस को आने ही नही दूँगा।'

'झगडा न करो। केस हाथ से निकल जायेगा।'

दूसरा नाराज़गी से बोला 'साब उनके लोगों ने अपने पांडे को पीटा सो?

खून गिरेगा कोस्टा साब! इसके बाद किसी आदमी ने अपने आदमी को हाथ लगाया तो दूसरा बोला।

देखो हम लोगो को झगडा नही करना है—केस के दौरान तो बिलकुल ही नही। गलत असर हो सकता है।'

फिकिर न करो कोस्टा साब। अगली तारीख तक हम कुछ-न कुछ तो करेंगे ही। झगडा नही तो दूसरी ट्रिक करेंगे।''

साब उनके लोग डंडा चलाते हैं तो हम क्यो नही?'

कोस्टा चुप रहा। उसे लगा कि उसने ट्रिक करने की इजाज़त दे दी है। कुछ देर बाद वह बोला देखो यह केस ज़रा नाज़ुक है। इसलिए ज़रा भी गडबड न करना। झगडा तो बिलकुल नहीं।'

कोस्टा अकेला ही टैक्सी लेकर सचिवालय की ओर चला गया। हवा कुछ मलूल-सी थी। ऐसी हवा होने पर कोस्टा का बम्बई में अपना वह पहला दिन याद हो आता था और वह बेचैन हो उठता था। अजीब हवा और आसमान में बादल। पसीना। और फिर बम्बई की भीड भाड। मुख्यमंत्री के दिमाग में क्या है पता नही। रघू ऐसे क्यो पेश आया? और मैं भी ऐसे चुपचाप क्यो सुनता रहा? वह मुझे भ्रष्टाचारी समझता है। नीला का चेहरा आँखों के आगे से नही हटता। कहीं भीतर विनीना के साथ रात को फरियास में होने वाली मुलाकात भी है। मुख्यमंत्री के आगे कैसे पेश आयें? कोस्टा मुख्यमंत्री से कई बार मिल चुका था। किसी आन्दोलन के दौरान किसी शिष्टमंडल के साथ, बहुत से कार्यक्रमों के

दौरान। लेकिन बिला वजह इस तरह उसे कभी बुलवाया न गया था।

तीन बजने म जब तीन चार मिनट रह गये तो कोस्टा मुख्यमंत्री के सचिव के केबिन म पहुचा। सचिव ने हँसते हुए खड़े होकर उसका स्वागत किया।

सारी मिस्टर डीकोस्टा सी० एम० इमर्जेंसी मीटिंग म हैं। जरा दस मिनट रुक सकेंगे? उनकी पर्सनल रिक्वेस्ट है।

ओ इट्स आल राइट।

कुर्सी पर बैठते हुए कोस्टा ने पूछा—

आई एम वंडरिंग मुझे किसलिए बुलवाया है बता सकेंगे?

सचिव ने सिर्फ गर्दन हिलाया।

इधर तो हमारा कहीं स्ट्राइक भी नहीं चल रहा,' कोस्टा ने हँसते हुए कहा।

पंद्रह मिनट बाद कोस्टा मुख्यमंत्री के केबिन म पहुचा तो उन्होंने खड़े होकर उसका स्वागत किया।

हलो हलो मिस्टर कोस्टा! हाउ आर यू?

हाउ आर यू सर? कोस्टा ने उनसे हाथ मिलाया।

'अरे मेरा खयाल था कि आप अपनी वह मोटी फाइल लेकर आयेंगे।

मैं जानता था कि आप यह सवाल जरूर करेंगे कोस्टा ने हँसते हुए कहा 'इसीलिए जान बूझकर मैं वह फाइल नहीं लाया।'

जीवाजीराव शिदे

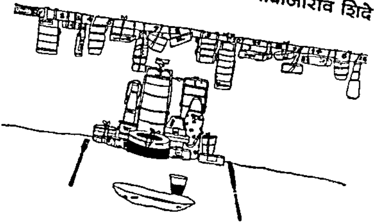

हर महत्त्वाकांक्षी की जिन्दगी में एक क्षण ऐसा आता है, जब उसे लगने लगता है कि लक्ष्य पाने के लिए किये गये सारे ही प्रयत्न बेकार और गलत हैं।

मुख्यमंत्री जीवाजीराव शिंदे अभी उस हालत तक न पहुंचे थे। सोचने-विचारने के लिए उनके पास वक्त ही न था। बुलडोज़र की तरह वे अपने सामने आने वाले सवालों को गिराते जाते थे और ज़िंदगी में आगे की तरफ बढ़ते जाते थे। किसी दिक्कत पर साहस के साथ क़ाबू पाना, उनकी जिद थी। खुद अपने ही हौसले से उन्होंने अपनी कुर्सी पायी थी। इसी वजह से उन्हें किसी का डर नहीं था। ज़िंदगी के शुरू के दौर में ही उन्होंने अपनी दिशा तय कर ली थी। ज़िन्दगी की गति इतनी तेज़ थी कि उन्हें यह तक पता नहीं चल पाया कि कब उनके बाल सफेद हो गये।

स्वभाव के अनुसार सुबह ठीक पौने छह बजे मुख्यमंत्री की नींद खुल गयी। आँखें खोलीं तो उनकी नज़र सामने की खिड़की पर चली गयी। खिड़की के साफ़ शीशे में से सामने का क्षितिज साफ़-साफ़ नज़र आ रहा था। सूरज की लाली फैलने लगी थी। मुख्यमंत्री ने उठकर खिड़की खोली तो समंदर की ठंडी हवा एकदम अंदर आ गयी। खिड़की के सामने पेड़ लगे हुए थे और उसके पार था अरब सागर। शांत और प्रसन्न। दूरी पर क्षितिज की झिलमिल-सी रेखा। नीचे पक्षियों का कलरव और समंदर से आने वाली भीनी भीनी हवा। ज़िंदगी में पहली बार समंदर देखा था, उस दिन की हल्की-सी याद आयी और काम में जुट जाने की प्रेरणा देने वाली हवा ने झकझोरा।

मुख्यमंत्री शिंदे ने साँस अंदर तक खींची और धीरे से छोड़ दी।

दिन में यही पल कुछ अपना-सा लगता था। बाद में तो धकापेल वाली ज़िन्दगी शुरू हो जाती है। हर दिन पिछले दिन से ज़्यादा व्यस्त रहा करता है। कल अखबार पर नज़र डालकर गोलियाँ लेकर वे लेट गये थे। तब कलाई की घड़ी में सवा तीन बजे थे। धुले ज़िला के आदिवासियों के शिष्टमंडल को मिलने के लिए नौ का वक्त दिया हुआ था। बाहर की एक मीटिंग खत्म कर वापस आने में ही साढ़े ग्यारह बज चुके थे। बाद में खाना। बाद में दो मिनिस्टर और उनके सेक्रेटरी से डेढ़ घंटे तक सरकारी कामकाज के बारे में चर्चा। शिंदे खुद गरीबी से निकलकर ऊपर आये हैं। इसी वजह से किसी भी शिष्टमंडल से मिलने की बात टालना उन्हें सबसे ज़्यादा

अखरता था। शिष्टमडल खुद उस क्षेत्र के विधायक के ज़रिये लाया गया था। इसलिए उसे टालना और भी असभव था। शिष्टमडल चला गया तो बाहर के कमरे म पार्टी का ट्रेज़रर बठा हुआ था। वह चुनाव के लिए पमा इकट्ठा करने के चक्कर म था। आँखो म नीद थी, फिर भी उससे बातें करना ज़रूरी था। उसके पीछे पीछे मराठवाडा का एक कायकर्ता शिकायत लकर आया था। ट्रेज़रर से बातें कर मुख्यमत्री उठे तो कायकर्ता मौज था। मुख्यमत्री न बाथरूम का दरवाज़ा खोला और अदर घुसने लगे ता वह पीछे पीछे था। अरे अब सुन तो लिया न। अब बाथरूम भी जाने दोगे या नही? इस तरह परेशान होकर बोले तो कही उसे समझ म आया कि वह बाथरूम है। फिर वह शर्मिदा होकर चला गया।

ढाई घटे की नीद सच पूछा जाय तो मुख्यमत्री के लिए पूरी न थी लकिन उ होंने अपनी ज़िदगी को इसी तरह बाध रखा था। पौने छह के बाद जीवाजीराव कभी भी बिस्तर पर नहा रहते थे।

लबी सास वाले व्यायाम के बाद मुख्यमत्री बेड पर आकर बठ गये और उ होंने बल दबा दी।

सर! कहते हुए नौकर फौरन मुह धोने का पानी और चाय ले आया। यह भी उनकी आदत म ही शामिल था। बल बराबर छह पर ही बजती है। तब तक चाय तयार हो जाती थी। मुख्यमत्री तकिये से टिककर बिस्तर पर भी बैठ गये। बठे बठ ही उ होने मुह धो लिया। पास के स्टूल पर रखी दो गोलियाँ खा ली और चाय म चम्मच चलाने स पहले फिर बल बजा दी। तभी सचिवालय का एक सचिव 'गुड मार्निग, सर!' कहत हुए अदर आया।

उसके हाथ म आज के समाचारो के सक्षिप्त अश कल के कुछ महत्त्व पूर्ण सचाचारो की कटिग्स भाषण और सम्पादकीय क सारांश और आज का कायक्रम था।

यह तरीका खुद शिदे जी का बताया हुआ था। सुबह सुबह इस तरह के समाचार और आफिस पहुचने स पहले गुप्त पुलिस की रिपोर्टों के सार पढ़ लिये जायें तो सारे राज्य की नाडी पर हाथ रहता है। मुख्यमत्री की पढ़ने की गति बेहद तेज़ है। साफ साफ अक्षरो में टाइप की गयी रिपोर्टें वे चट चट पढ़ जात हैं।

चाय पीत हुए उ होने इन कागज़ो पर निगाह दौडाना शुरू किया। राज्य की एक हाउसिंग स्कीम केन्द्र ने लौटा दी थी यह बुरा समाचार था। उस विभाग के केन्द्रीय मत्री को महाराष्ट्र स खास चिढ थी इसीलिए हमेशा ऐसा ही होता था। प्रधानमत्री को इस बारे म खत लिखना चाहिए।

पपर पर कई निशान भी बना दिय। वस्टन स्टार म छपी स्मगलिग की कहानी वाला मसला उन्ह खटक गया और उन्होन उस ढग स पढ़ा तो वह और भी खटकन लगा। उनक पास वक्त न था इसीलिए इस समाचार को उन्होन अधूरा ही छोड दिया। शहाणे इसे पढ़ेगे ही। बस। और मुख्यमत्री कल क समाचारो की ओर आये। दो बातें परेशान कर देन वाली थी लेकिन जीवाजीराव या फिर थामकर बठन वालो म से न थ। एक बार दिल म परेशानी पदा हो जाय तो अनजाने ही प्रक्रिया शुरू हो जाती थी। उन्ह सोचन क लिए ज्यादा परशान न होना पडता था। उनका मन खुद ही निणय ल लिया करता था। इस वजह स यह कभी न होता था कि एक ही बात उनक दिमाग को परेशान करती रह। उनकी इसी कुशलता की वजह स लोग-बाग और उनक राजनीतिक दुश्मन घबराते थे। कहत हैं कि उनक मन का पता लगना मुश्किल काम है।

कल क समाचारपत्रों की कटिंग्स मजेदार थीं। तीन समाचारपत्रो म उनकी तारीफ थी। वजह तो कुछ भी न थी। विरोधी पार्टी के एक नेता न मुलाक़ात क दौरान बताया था कि अगले चुनाव स पहल विधान सभा का जो अधिवेशन होगा उसी म शिंदे मन्त्रिमडल को हम हरा देंगे। मुख्यमत्री के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कराहट दौड गयी।

पढ़त-पढ़त उनकी नज़र एक छोटी-सी कटिंग पर पडी। एक बार पढ़कर उन्होने उसे दुबारा पढा। उनकी मुस्कराहट जाती रही और चेहरे पर सख्त भाव उभर आया। उस कटिंग को उन्होन अलग निकालकर रख दिया। बाकी की कटिंग्स पर नजर दौडायी। आज के कायक्रम ज़रा ज़बरदस्त थे। कबिनेट मीटिंग थी। मिलने वालों म खास मतलब का आदमी कोस्टा ही था। कोस्टा का नाम पढ़त ही उन्होन फिर स वह छोटी सी कटिंग उठा ली और पढी। कोस्टा को खुद उन्होंने ही बुलवाया था। उसे कैसे हैंडिल किया जाये इस बार म उन्होंने अभी कुछ सोचा नही था। शेष विजिटरो म ऐसा कोइ खास आदमी न था। हाँ दिन भर के कायक्रम काफी थ। सुबह नौ पर एक कारखाने का उद्घाटन था। तब से लेकर दस बजे तक आराम न था। बीच म रात आठ बज एक सभा थी। जीवाजीराव न लबी सांस ली और निकालकर रखी कटिंग्स पर निशान लगात हुए सेक्रटरी से बोल 'शहाणे से कहिय कि पता लगाये कि बापूसाहब जोशी बम्बई म कब आने वाल हैं और उन्ह यहाँ बुलवा लीजिये।

करीब वाली कुर्सी पर सुधाजी आ बठी थी। वे बोली 'बापूसाहब कल शाम ही को यहाँ आ चुक होंगे। आज दोपहर मुझस मिलने आने वाले हैं।

'अच्छा ? चलो ठीक ही हुआ। कितने बजे आयेंगे ?'

वक्त तो कोई दिया नहीं है। कभी भी आ सकते हैं।'

'काफी दिनों बाद आ रहे हैं।

'बम्बई आते हैं तो मुझसे मिले बगैर नहीं जाते। कई बार आ चुके हैं। आपकी तबीयत के बारे में पूछते रहते हैं।

मुझसे मिले नहीं।

आपको वक्त तो होता नहीं। पिछली बार आप बाहर के कमरे में लोगों के साथ बैठे हुए थे तो वे अंदर के कमरे में थे। बाद में चले गये। उनका स्वभाव तो आप जानते ही हैं ?'

मुख्यमंत्री का चेहरा कुछ सख्त हो गया। उन्होंने अपने कार्यक्रम पर फिर नज़र डाली। ताज में व्यापार मंडल के सामने उनका एक भाषण था। व्यापारी वर्ग के गैरज़िम्मेदाराना तौर तरीकों के खिलाफ वे डांट मारने वाले थे। पार्टी का ट्रेज़रर भी उसी सभा में अपने काम के लिए आने वाला था। इसलिए वहां जाना लाजमी था। ठीक तीन बजे मजदूर यूनियन के लीडर डीकोस्टा को एक खास काम के लिए बुलवाया था। साढ़े तीन पर केबिनेट मंत्रियों की बैठक थी। वह कब खत्म होगी इसका कोई अन्दाज़ नहीं था। बैठक खत्म होते ही प्रेस-ब्रीफिंग। फिर एकदम निकलना संभव नहीं था। गरज के मिलने वालों का तांता लगा रहेगा। शाम आठ बजे सार्वजनिक सभा थी।

शिंदे ने अपने सेक्रेटरी को जाने के लिए कहा और सुधाजी से बोले आज तो मैं दोपहर खाने के लिए भी घर पर नहीं आ सकूंगा। बापूसाहब आयें तो उन्हें रात के खाने के लिए रोक सकोगी ?

कहकर देखती हूं पर वे अपने यहां खाना नहीं खाते। जीवाजीराव को अपनी पत्नी का स्वर ज़रा आक्रामक लगा। ऐसे लगा जैसे पुलिस गुनहगार से बोलती है।

लेकिन इसे नज़रअंदाज़ करते हुए वे बोले कहना मैंने रिक्वेस्ट की है।

कह दूंगी।'

अब मुख्यमंत्री का तैयार होना था। लेकिन पत्नी से कुछ और बात करना लाज़मी था। सामने रखे कागजों को टटोलते हुए उन्हें एक अच्छा सा विषय याद आया।

फिर कल तुमने चेकअप करवा लिया न ?

चेकअप तो पिछले सप्ताह करवा लिया था। प्रेशर नार्मल पर आने की बात तो पिछले सोमवार को ही मैंने बता दी थी।

जीवाजीराव को लगा ज.. उनक माथे पर ठडा पानी डाल दिया गया हो। लेकिन चेहरे पर शिकन तक न लाते हुए उन्होंने कहा 'नामल है न? ठीक है। फिर कोई चिंता नहीं

आज शाम कमला आने वाली है चार-छह दिन रहने के लिए। मुख्यमत्री को चुप देखकर सुधाजी हँसते हुए बोली 'कमला मतलब मौसेरी बहन नागपुर वाली।

हाँ-हाँ मैं जानता हूँ। उसकी अच्छी खातिरदारी होना चाहिए।'

मुख्यमत्री कडे मन स उठे और बाथरूम म चले गये। आगे का पूरा दिन होगा तेज़ बहती धारा और इस प्रवाह म मुख्यमत्री को बडी सुरक्षा का एहसास हुआ करता था। सेक्रेटरीज़ का मिलना विज़िटस की लाइनें, फाइलो क गटठे बठकें सभा सम्मेलन चर्चा भाषण—तेज़ी स सारा दिन गुज़र जान वाला था। ऐसे समय मुख्यमत्री को एक नशा सा चढा रहता था।

बाहर आने पर उस सेक्रेटरी न मुख्यमत्री द्वारा लगायी गयी निशान वाली कटिंगो को पढा—

पूना सोमवार आज की भ्रष्ट सरकार का तख्ता पलटना मेरा पहला कर्तव्य है और इसीलिए आगामी चुनाव लडन वाला हूँ। यह विचार आज स्वतत्रता-सेनानी श्री बापूसाहब जोशी ने एक सभा के बीच व्यक्त किया।

श्री जोशी न कहा भ्रष्टाचार और रिश्वत इस हद तक पहुँच गये है जहाँ कभी न पहुँचे थे। जिन लोगो ने स्वतत्रता के लिए अपनी जिन्दगी की परवाह न की उन लोगो को यह बात बेहद खटक रही है।'

भ्रष्टाचार राज्य क नताओ पर पलता है। नेता यदि साफ हो कडा हो तो भ्रष्टाचार रोक सकता है। इसीलिए नेतृत्व बदलन की कोशिश करना ज़रूरी है। श्री जोशी ने घोषणा की।

मुख्यमत्री जब तक बाथरूम से बाहर आयें तब तक उनका बँगला चहल-पहल से भर गया। हर मिलने आने वाले स मिला जाये यही उनकी तमन्ना रहा करती थी। लेकिन वे ज्यादा किसी से बात न करते थे। तयार आवेदन हाथ म आते ही वे तत्काल दूसरे को बुलवा लिया करते थ। साधारण शिकायत हो तो वे सेक्रेटरी से कहते हैं 'इन्हें समझा दीजिये। दूसरे को बुलवाइये। इस तरह प्रत्यक्ष मुलाकात की तसल्ली मिलने वाले को हो ही जाती थी।

कपडे पहन कर वे अपने बगले के आफिस म जा पहुँचे। दूसरा सेक्रेटरी कमरे म था। उसने कायक्रम की लिस्ट टेबिल पर रख दी। जीवाजीराव

क्या करें? वस्त्र स्टोर के भंडारी के दो-तीन लीज़ के मसले अपने पास पड़े हैं।'

नहीं। अभी इसकी जरूरत नहीं है। बाद में देखेंगे कि क्या हो सकता है। बेकार गलत सलत जानकारी छापने में क्या तुक है? जरा समाधान की बात है बस। किसे समझायें यह आप देख लीजिये।'

अच्छा साहब।

शिंदे ने फोन नीचे रख दिया।

भेजो एक एक करके अंदर। नौ से पहले खत्म होना चाहिए।'

चक्र शुरू हो गया। जीवाजीराव को अपने तरीकों पर गर्व था। अपने हिसाब से वे ठीक ठाक सलूक करते थे। इस कारण बापूसाहब जोशी जैसे आदमी इस तरह के आरोप उन पर लगाते रहें यह बात उन्हें पसन्द न आ रही थी। किसी और पार्टी वालों ने इस तरह की बात की होती तो वे हमेशा के लिए टाल जाते। कोम्टा ऐसी बातें हमेशा कहता रहता है। लेकिन बापूसाहब! उनका खून उमड़ पड़ा। मन हुआ कि अभी इस वक्त बापूसाहब को बुलवाया जाय—मैंने कौन सा भ्रष्टाचार किया है बताइये? दीजिये कोई साक्ष्य। लेकिन बुलाते ही आने वालों में से बापूसाहब नहीं हैं यह भी वे अच्छी तरह से जानते थे। उन्होंने टेबिल पर रखी घंटी बजा दी। पहले से निर्धारित ड्रिल की तरह पहली बेल पर नौकर पानी ले आया। हाथ में रखी विटामिन की गोलियाँ उसने जीवाजीराव को दीं। गोलियाँ लेकर उन्होंने पानी पी लिया। फिर दूसरी बेल बजा दी और मिलने वाले लोग एक के बाद एक अंदर आने लगे। विद्यार्थी व्यापारी अधिकारी सामाजिक कार्यकर्ता राजनैतिक कार्यकर्ता लीडर किसान नर्सें भंगी—अलग-अलग तबकों के लोग। सबसे जीवाजीराव कुछ न-कुछ बात जरूर कर रहे थे। शिकायतें सुनते थे। निमंत्रण स्वीकार करते थे। कई लोगों के कई काम और यह सब करते हुए उन्हें अपनी भूमिका पूरी तरह याद रहती थी। एक महान राज्य की पूरी-की-पूरी ज़िम्मेदारी मुझ पर है इस बात को वे कभी नहीं भूल पाते थे और इसी एहसास के साथ उन्हें दिलासा भी मिलती रहती थी।

साढ़े नौ बज गये, फिर भी विज़िटर्स खत्म न हो रहे थे। मुख्यमंत्री उठ खड़े हुए। 'कल आने के लिए कहिए' सेक्रेटरी से कहकर कारखाने के मैनेजिंग डायरेक्टर के साथ वे कमरे से बाहर आ गये। तभी बुलढाणा के लोगों ने उन्हें घेर लिया। उनसे जैसे-तैसे निबटकर उनकी गाड़ी बँगले से बाहर आयी तो पौने दस बज रहे थे। मतलब उद्घाटन में आधे घंटे की देर हो गयी। दिन भर के सभी कार्यक्रमों में देर होती जायेगी। मुख्यमंत्री

वम्बई दिनांक

ांस ली और आंखें मूंद ली। फिर उन्होंने सीट के पीछे रखी
ठा ली और सेक्रेटरी द्वारा तैयार किया गया भाषण पढ़ना शुरू कर
भी उन्हें कुछ याद आया और उन्होंने सामने की सीट पर बैठे
त पूछा—
रे होम डिपार्टमेंट कोस्टा वाली फाइल भेजने वाला था। आ गया

टरी ज़रा रुका।
हाणे साहब को मालूम होगा सर।'
रे मतलब क्या है आखिर? आज तीन बजे वह मिलने वाला है
इल अभी तक नहीं आयी है? अब मैं पढ़ूंगा कब?' मुख्यमंत्री
ा गये। सेक्रेटरी चुप बैठा था। अभी शहाणे को कांटेक्ट कर के
क बारह बजे तक फाइल मेरी टेबिल पर होनी चाहिए और दो
किसी जानकार अधिकारी को भेजिये।
इल अभी तक न आ पायी थी इस वजह से मुख्यमंत्री नाराज़ थे।
जाय तो वह फाइल कल ही आ जानी चाहिए थी ताकि अच्छी
ल्दी से उसे पढ़ा जा सके। मुख्यमंत्री कोस्टा से कई बार मिल
किन उसकी फाइल अभी तक उन्होंने न देखी थी। इस बीच
र भाषणों के कई अंशों को देखने का मौका उन्हें मिला था। और
ग में मुख्यमंत्री की आलोचना होती थी। आरोप था कि मुख्यमंत्री
को शील्ड किये हुए हैं। भ्रष्टाचार के आरोप थे। कोस्टा के श
पहले-पहल तो जीवाजीराव ने उसकी तरफ ध्यान ही नहीं दिया।
ान टाल दी कि यह भी प्रचार ही होगा। पर कोस्टा जब प्रमाण
ात कहने लगा तो उन्हें गुस्सा आ गया। मेरे हाथ इतने साफ़ होने
द यह प्रमाण देने की बातें करते हैं? प्रमाण दें—आखिर प्रमाण
होंगे? जहाँ कुछ है ही नहीं वहाँ प्रमाण कैसे? मुख्यमंत्री को
लग रहा था। मैं राज्य के लिए अठारह घंटे मेहनत करता हूँ।
री में सारे काम करता हूँ और कोई भी ऐरा गैरा मुझ पर ही
लगाने लग जाता है। धरी रह गयी सारी ईमानदारी। कोस्टा की
र है। वह यूनियन-लीडर है। उसे तो इस तरह बोलना ही पड़ता
उससे सवाल पूछ सकते हैं। उसकी फाइल डिपार्टमेंट में तैयार है
ापूसाहब ोगा! उन्हें तो बुलवाकर भी नहीं पूछा जा सकता।
यमंत्री शिंदे ने फिर आँखें मूंद लीं। पल भर के लिए वे कोस्टा
ी का खयाल भूल गये। दूसरे ही पल उन्होंने आँखें खोलकर
ढ़ना शुरू कर दिया। शिंदे की यही विशेषता है। जैसे मशीन के

बटन दबा दिया जायें उसी तरह वे एक विषय से दूसरे विषय पर जा सकते है। वे अनचाहे खयालों को कुछ देर के लिए दिमाग़ से अलग हटा सकते है और मन चाहे खयाल को पूरी एकाग्रता से सोच सकते है। भाषण तो छोटा सा ही था। शिन्दे ने कुछ वाक्य और जोड़ दिये और भाषण के हाशिये में याददाश्त के लिए कुछ शब्द लिख लिये। लिखित भाषण उनके मन के अनुरूप न था। उन्हें पसंद आने वाला भाषण लिखने वाला सेक्रेटरी अभी उन्हें मिला ही नहीं था। यह भाषण तो उस कारखाने पर निबंध जैसा था जिसका उद्घाटन होने वाला था। इसमें निर्यात बढ़ाने की जरूरत को स्पष्ट किया गया था। राज्य की प्रगति के आँकड़े दिये हुए थे और कंपनी के संचालकों की पीठ थपथपाई गयी थी। भाषण बयान-सा था। मज़दूरों की सुविधाएँ नयी ज़िम्मेदारियाँ कार्यशीलता बढ़ाने की जरूरत—इस बारे में कुछ न था। जीवाजीराव ने भाषण की प्रति एक ओर रख दी और ऐन वक्त पर दूसरा ही भाषण देना उन्होंने तय किया।

कारखाने में मुख्यमंत्री के स्वागत के लिए उद्योगमंत्री और मालिक हाज़िर थे। हार पहनाये गये उद्घाटन के लिए रिबन काटी गयी हँसी मज़ाक हुआ। उद्घाटन के औपचारिक कार्यक्रम के लिए शामियाना लगाया गया था। सभी लोग अपनी-अपनी जगह पर बैठ गये। तीन खूबसूरत लड़कियाँ माइक पर खड़ी हो गयीं और तीनों ने स्वागत-गीत गाना शुरू कर दिया।

कार्यक्रम के दौरान आपस में बात करना या कुछ पढ़ते हुए बैठना मुख्यमंत्री शिन्दे को कतई पसंद न था। उनका खयाल था कि इससे लोगों का उत्साह ठंडा पड़ जाता है। इसी वजह से कार्यक्रम के दौरान उनका ध्यान सब जगह रहा करता था। स्वागत गीत की धुन गलत बनायी गयी है वे इस बात को ताड़ गये। लेकिन गलत होने के बावजूद भी वह मन पर असर ज़रूर डालती है। उन्हें लगा कि कुछ लाइनें मन में कुछ यादों को कुरेद रही हैं। वह धुन किसी पुराने विरह गीत की तो नहीं? मुख्यमंत्री ने अपने मन में गहरे टटोलकर देखा लेकिन कुछ याद न आ सका। उन्हें लगा तीनों लड़कियों में से सिरे वाली लड़की उन्हें कुछ याद दिला रही है। पुरानी जवानी के और गरीबी के दिनों की अव्यक्त वासना और आकांक्षा अभी भी कैसे उभर आती है इस बात पर उन्हें अचरज हुआ। उस लड़की की नाक जानी-पहचानी है या कि उसकी आँखें? जिससे मेरी अव्यक्त आकांक्षा जुड़ी होगी, उसे मेरे मुख्यमंत्री हो जाने के बाद कैसा महसूस हुआ होगा?

उद्योगमंत्री कुछ कहना चाहते हैं यह बात उनके ध्यान में तब आयी

जब मुख्यमंत्री ने अपनी गर्दन उनकी ओर की।

"वसंतराव जी का काम हो गया, साहब," उद्योगमंत्री हँसते हुए कह रहे थे।

मुख्यमंत्री कुछ समझ नहीं पाये। इसलिए उनके चेहरे पर सवाल उभर आया। उद्योगमंत्री ने फिर कहा 'उनका लायसेंस अगले महीने इशू हो जायेगा।'

'कौन वसंतराव?"

उद्योगमंत्री कुछ हकबकाये। इसका मतलब मुख्यमंत्री की बात समझ में नहीं आयी। 'वसंतराव मतलब सुधाजी के छोटे भाई।'

'अच्छा हाँ, कैसा लायसेंस?"

'इंजिनियरिंग प्लांट वाला। जगह भी दिलवा दी है। सुबह ही सुधाजी को फोन किया था।'

मुख्यमंत्री चुप रहे। उन्हें खुद पर गुस्सा आ रहा था। लेकिन वे चुप रहे। फिर सुधाजी पर गुस्सा आने लगा पर इसका कोई इलाज न था। सुधाजी से वे कभी खुरदरी आवाज में बोले ही न थे। वे बोल भी न सकते थे इसका एहसास उन्हें था। क्या हुआ होगा वे अब समझ चुके थे। सुधाजी का काम तो होगा ही! वसंतराव जरूर उद्योगमंत्री से मिले होंगे। वसंतराव ने अपनी बहिन से जरूर कहा होगा। वसंतराव को अपनी बहिन से कहने का तरीका मालूम था। वसंतराव ने अपनी बहिन से कुछ इस तरह कहा होगा 'मैंने अर्जी दी है। उद्योगमंत्री ने कहा है कि काम होगा। बस तुम उन्हें फोन कर देना।' उद्योगमंत्री को मंत्रिमंडल में शामिल किया था जीवाजीराव ने इस वजह से उनकी यह हिम्मत नहीं थी कि काम करने से मना कर दें। अब गुस्सा करने में कोई तुक नहीं थी। सुधाजी को नाराज करने से भी कोई फायदा नहीं। इस लायसेंस के बारे में क्या कानूनन सम्मत है और क्या गैरकानूनी यह सब हम ही देखना होगा। गैर कानूनी कुछ हुआ तो उस कानून में फिट करना होगा। फिर वसंतराव का यह पहला लायसेंस तो है नहीं। दो एक साल पहले उन्होंने इसी तरह पूना के पास ऐसा ही परमिट हासिल किया था। फिर मुख्यमंत्री को खुद बीच में पड़कर मामला रफा-दफा करा देना पड़ा था। मुख्यमंत्री ने लंबी साँस ली और वे आन्तन उस स्वागत-गीत की तरफ ध्यान देने लगे। तभी एक बात और उनके दिमाग में आयी। उनके बड़े भाई के लड़के ने सांगली के पास काफी बड़ी जगह खरीदी थी। उसके बारे में काफी शिकायतें आयी थीं। आज उसके बारे में भी असलियत सामने आनी थी। अगली विधानसभा की बैठक में यह मसले जरूर निकाले जायेंगे इस का अंदाज मुख्यमंत्री

शिन्दे को था। टेबिल पर रखे एक कागज पर उन्होंने नाम नोट कर लिया और कागज जेब में रख लिया। परेशान कर देने वाली यही बातें उनके लिए सिरदर्द थी, लेकिन इलाज न था। उनसे रिश्ता जोड़ने वालों में किस किस को वे रोक सकते थे? कितने अफसर हैं जिनसे यह कहेंगे कि मेरे रिश्तेदारों का कोई काम मत कीजिये! मुख्यमंत्री परेशान हो गये। पल भर उन्हें अपने शादी के पहले की बात याद हो आयी। स्वतंत्रता से पहले की यादें हमेशा ही उनके बदन में रोमांच ला देती हैं। ऐसे ही किसी क्षण में वे सुधाजी से कैसे बंध गये थे वह भी याद आया। शादी न की होती तो? इस तरह का खयाल इधर बार बार उनके मन में उभरता है? लेकिन तभी यह भी याद आया कि सुधा उन दिनों इतनी स्वार्थी न दिखती थी। कम अब भी सही अर्थों में स्वार्थी कहाँ है? स्नेहिल है —बस यही! लेकिन उसके इस स्नेह की वजह से हमें जरूर कई जगह समझौता करना पड़ता है।

ज्यादा परेशानी बढ़ने से पहले ही मुख्यमंत्री ने मशीन की तरह अपने खयाल दूसरी ओर मोड़ लिये। स्वागत-गीत खत्म हो गया था। हार पहनने के लिए उन्हें खड़ा होना पड़ा था। हार पहनाने वाली तीस साल की उम्र वाली उस औरत की ओर देखते हुए वे मुस्कराये और उसी वक्त कई फोटोग्राफरों ने अपने कैमरों के बटन दबा दिये। मुख्यमंत्री जीवाजीराव शिन्दे की यह मुस्कराहट बड़ी जानी मानी है। हजारों फोटो में यह मुस्कराहट आफिसों में स्कूलों में नजर आती रहती है। शिन्दे को कैमरे के फ्लेश के प्रकाश से परेशानी होती है। हार पहनाने वाली उस औरत के शरीर से आने वाली गंध उन्हें अवश किये जा रही थी। उनका मन खिल उठा।

उद्योगमंत्री से बोले — नानासाहब आपकी बेटी के क्या हाल चाल हैं? परसों एक रिसेप्शन में मिली थी। स्मार्ट। हमारी पत्नी हमेशा पूछती रहती है।

नानासाहब देशमुख सिर्फ हँस दिये। इसी बात से वे खुश थे कि मुख्यमंत्री इस तरह पूछ रहे हैं। समझ नहीं पा रहे थे कि क्या कहें। फिर वे कुछ आगे की ओर झुके और बोले—

सुधाजी की तबियत अब कैसी है? पिछले हफ्ते चेकअप करवाया था। बता रही थीं वे ।'

लेकिन मुख्यमंत्री का ध्यान नानासाहब की बातों की ओर न था। कंपनी के एक हिस्सेदार ज्यादा सरकारी मदद की अपेक्षा प्रकट कर रहे थे। इस बात को उन्होंने मन ही-मन नोट कर लिया।

फिर नानासाहब देशमुख बोले। उनका भाषण लोगों ने बड़े धीरज के साथ सुना। कोई हँसा नहीं। पहले ऐसे मौकों पर मुख्यमंत्री को शर्म महसूस हुआ करती थी पर अब नहीं। नानासाहब जनता के प्रतिनिधि हैं। जनता के सामने आने में कैसी शर्म? नानासाहब को मंत्री बनाकर जीवाजीराव ने उस ज़िले के सभी लोगों के मुँह बंद कर दिये थे। नानासाहब को उनकी ज़िद पर मंत्रिमंडल में शामिल किया था, इसी बात से खुश थे। एक और बात थी। नानासाहब का अनुभव कम था और समझ भी कम। इसी वजह से लगभग पूरा-का-पूरा उद्योग मंत्रालय जीवाजीराव के संकेत पर चला करता था। हाथ में अधिकार लिये बिना योजनाओं को अमल में लाना कठिन होता है, इस बात को वे अच्छी तरह जानते थे। हम चुनाव जीतने के लिए इतने परेशान क्यों होते हैं? अपने विचार और योजनाएँ अमल में लाने के लिए सत्ता का हाथ में होना लाज़मी है। यह न हुआ तो विचार धरे रह जाते हैं। सत्ता के बगैर ताकत आ ही नहीं सकती। इसीलिए सत्ता के लिए इतनी कोशिश होती है। इसमें कष्ट तो हैं ही, परेशानियाँ भी कम नहीं हैं। लेकिन सम्मान भी उतना ही है।

नानासाहब का भाषण खत्म होने पर मुख्यमंत्री ने भी तालियाँ बजायीं। फिर वे भाषण के लिए उठ खड़े हुए। एक-एक शब्द तोलकर बड़े आत्मविश्वास के साथ बोलने के लिए वे प्रसिद्ध थे। पहले उन्होंने कारखाने की योजना का स्वागत किया। आयातित माल के लिए देशी उत्पाद खोज निकालने की प्रशंसा की और कारखाने के मालिक का अभिनन्दन किया। फिर सरकारी मदद पर निर्भर रहने की प्रवृत्ति की ज़ोरदार आलोचना की। सरकारी सुविधाएँ लेना, कर्ज़ा लेना और मज़दूरों की सुविधाओं की ओर ध्यान न देना, बोनस के लिए मज़दूरों को परेशान करना, चीज़ों के बढ़ते हुए मूल्य—इन तमाम बातों पर टीका-टिप्पणी की। जब वे बोलकर बैठे तो मज़दूरों ने तालियाँ बजायीं।

"बहुत बढ़िया साहब!" उद्योगमंत्री ने कहा।

मैनेजिंग डायरेक्टर ने कहा, 'इंसपायरिंग! आपका भाषण बहुत इंसपायरिंग था साहब। अगली बार जब आप यहाँ आयेंगे तो खुद देखेंगे कि आपकी बातों पर अमल किया गया है।' वैसे उनका अपना चेहरा ज़रूर मायूस नज़र आ रहा था। मुख्यमंत्री को हँसी आ गयी। अपनी ताकत का उन्हें एहसास हुआ और बेहद तसल्ली का भी।

मेहमानों के लिए चाय-पानी की व्यवस्था की गयी थी। लेकिन मुख्यमंत्री वहाँ नहीं गये। संचालक ज़रा दुखी-से होने लगे तो अपनी गाड़ी के पास खड़े रहकर ही उन्होंने मौसंबी का रस मँगवा लिया। मैनेजिंग

डायरेक्टर से वे बोले 'अरे, अभी तक एप्रोच रोड तैयार नहीं है। यह प्रेस्टिज कारखाना है।'

कुछ न सूझने पर मैनेजिंग डायरेक्टर ने कहा 'देखिये न साहब, वी आर ट्राइंग हार्ड।'

'अरे भाई नानासाहब, यह क्या कह रहे हैं? आपके ही विभाग का काम है यह।'

'जी आनई! अभी तक क्या नहीं हो पाया? हो जाना चाहिए था अब तक।' फिर उन्होंने अपने सेक्रेटरी को बुलवाकर नोट करवाया।

जीवाजीराव बोले 'आपकी जो भी दिक्कतें हों वे हम जरूर बतायें। जिस तरह हम लोगों को आपसे कुछ अपेक्षाएं हुआ करती हैं, उसी तरह आप भी अपेक्षाएँ रख सकते हैं। आपके कारखाने को हम महत्त्व देते हैं।'

सब के चेहरे खिल गये। अपने भाषण से उन्होंने सबको परेशान कर दिया था लेकिन अब सभी खुश थे। मैनेजिंग डायरेक्टर समझ ही न पा रहे थे कि वे अपनी खुशी किस तरह जाहिर करें। बार बार हाथ जोड़कर वे कह रहे थे 'यू आर वेरी काइंड सर। वी आर ओब्लाइज्ड। थैंक्यू सर!'

पाँच मिनट के भीतर ही एक ट्रे में साफ-सुथरे रूमाल से ढके काँच के गिलास में मोसंबी का रस आ गया। मुख्यमंत्री ने खड़े-खड़े ही रस पी लिया। फिर उन्होंने एक दो बातों के बारे में पूछताछ की। सबसे हाथ मिलाये। नानासाहब को उन्होंने अपनी ही गाड़ी में बिठा लिया और अपने सेक्रेटरी को उद्योगमंत्री की गाड़ी में आने के लिए कहा।

गाड़ी में उद्योगमंत्री नानासाहब देशमुख बोले 'एकदम फर्स्ट क्लास, साहब! आपका भाषण बहुत बढ़िया हुआ।'

कुछ देर रुककर जीवाजीराव बोले "आखिरी बात का इफेक्ट कैसा रहा?'

पहले तो उद्योगमंत्री कुछ समझ न पाये। फिर बोले 'बेहद अच्छा, साहब। पहले तो वे लोग घबरा गये थे। अब एकदम खुश।'

जीवाजीराव यूँ ही हँस दिये। फिर बोले 'दृजरर का अब इन लोगों के पास भेजने में कोई हर्ज नहीं। इलेक्शन करीब आ रहे हैं। आप भी जरा ध्यान रखिये।'

फिर मुख्यमंत्री गंभीर हो गये। कुछ देर चुप ही रहे। फिर उद्योगमंत्री से बोले, 'वसंतराव की अर्जी क्लियर करने से पहले मुझसे पूछ लेना चाहिए था नानासाहब!'

नानासाहब कुछ सकपकाये "पर... पर साहब, प्रिलिमिनरी स्टेज पर

फाइल आपकी आर गयी थी। मुग लगा, यू डिज़ायड इट। सुधाजी ने भी एक बार या दिलवायी थी।'

मुख्यमत्नी को गुस्सा आ गया। फिर भी व अपन आप को सम्हाल रह। किसन कहा कि मैंने सिफारिश की थी ?"

इस सवाल का जवाब उद्योगमत्नी क पास न था। उ होंने सिर पर स टोपी उतार ली और रूमाल से माथ का पसीना पोंछ लिया। चश्मा निकालकर पाछा और फिर नाक पर रख लिया। रूमाल स नाक पाछी। जीवाजीराव को उन पर गुस्सा आ गया। व अच्छी तरह जानत हैं कि नानासाहब दशमुख जितना दिखावा करत है उतने मूर्ख नही है। फिर वे यह भी जान चुक थे कि आजकल वसतराव से उनकी काफी पटने लगी है। वसतराव क प्रोजक्ट म उनका हिस्सा होन की भी सभावना थी। वस उनक कई जगह हिस्से हाने की खबर उनक कानो तक आ चुकी थी। जीवाजीराव की आदत थी कि जब तक चीज़ें सीमा स बाहर नहीं हो तब तक ठीक है। गरज़ कि नानासाहब का मत्रिमडल म रहना उनकी दृष्टि स ज़रूरी था। उन्होंने पूछा प्रोजेक्ट कितने का है ?

नानासाहब ज़रा सकपकाये लड की कीमत छोडकर सवा करोड़ तक जायगा।

जीवाजीराव हडबडाय। इतना बडा प्रोजक्ट और मेरे ध्यान म ही नही आ पाया ? नज़रा से तो फाइल कई बार गुज़र जानी चाहिए थी।

मभी-हैवी इडस्ट्री जमा है वह साहब।

हिस्सेदार कौन-कौन है ? '

'पाँच लोग हैं तीन बड़े सेठ हैं।'

और चौथा कौन है ? '

एँ मरी बटी है साब। विनाता ! '

अच्छा !

मुख्यमत्नी कुछ देर चुप रहे। फिर उन्होंने पूछा, "इडस्ट्रीज़ कारपोरेशन ने कितना कर्जा दिया है ?

' सिक्स्टी परसट।'

मुख्यमत्री ने आँखें मूद ली। फिर उ होने लबी साँस ली। व उद्योग मत्नी स बोल देखिय नानासाहब अब इसे वसतराव को दिया जाने वाला आखिरी लायसेंस समझिय। आपकी बेटी पर आपका स्नेह मैं समझ सकता हूँ। लकिन यह ममता हम लोगो को कुछ भारी पडेगा। एसेंबली की अगली बठक म विराधी दल जरूर इस मसले को उठायेगा। कम-से कम यह बात तो आपको सोचनी चाहिए था। लोग बाग इस तरफ आँख

गढाय बठे हैं। फिर फाइनेंस मिनिस्टर का ग्रुप हम लोगा पर कसी नाराज निगाह रखता है यह बात तो आप जानत ही है। उन लोगा के लिए बोलने की जगह रखना ठीक नही है। और वसतराव की आदतें मुझे ठीक नहा लगती।'

बोलत-बोलते मुख्यमत्री मन-ही मन घबरा रहे थे। उनका लडका फ्रास म पढ रहा था। वह हर बार पसे मँगाता था। लकिन इधर पसे मगाने के खत कम आने लग थे। और सुधाजी ने बातों बाता म बताया था उसका मामा कुछ बता रहा है' इसका मतलब क्या हो सकता है? वे बान वसतराव इधर मेरे पास आने म हिचकिचाते हैं पर उन्हे एक बार पकडना हागा।'

फिर मुख्यमत्री कुछ देर के लिए विच रमग्न हो गये। उनक पट म अजीब शून्य सा उभरा पल भर क लिए। लकिन उन्हाने अपने को फौरन सम्हाला। जब तक मर हाथ साफ हैं तब तक मुझे कोई कुछ नहा कह सकना। बस य तीन-चार बातें जरूर ठीक कर लेना चाहिए।' उन्हाने आँखें मूद ली।

आगे पायलट कार क होन स मुख्यमत्री की कार तजी स आग की ओर बढ रही थी। मुख्यमत्री ने सभी विषय दिमाग से परे कर दिय और उन्हाने आँखें मूद ली। आँखें बन्द कर लन के बावजूद बायी ओर से गुजरन वाल वाहनों क प्रवाह का एहसास उन्हे हा रहा था। मुख्यमत्री का बकार म परशान हो जान की आदत नहीं हैं। लकिन कभी-कभी व इस तरह की हालत म पुरानी बातें सोचने लगत है। आँखे बद करके कुछ दर के लिए। बस एसा अक्सर नहीं होता। गरज कि अतीत की नाली म रेंगना उन्हें कतई पसन्द नही था। व हमेशा आग की बात सोचत हैं। द चीफ मिनिस्टर इज फिक्स्ड इन फ्यूचर। यह वाक्य एक पश्चिमी पत्रकार न लिखा था। पहल क्या हुआ कैसे हुआ क्या हुआ—इन बाता पर बेकार रोन का कोई अर्थ नहीं है। इससे तो अच्छा है कि आग की बातें सोची जायें। इसी वजह से व लोकप्रिय भी हैं। इसी वजह स व राजनीति म लोगों को मात दे सकते है। हमेशा आग ही बढते रहना, पीछे मुडकर देखना ही नहीं। लकिन कभी-कभी व्यक्तिगत रूप स इस तरह सहज ही पीछे देखने म भी कोई हर्ज नहीं है।

जीवाजी लक्ष्मण शिर्के सच पूछा जाय तो रोनी शक्ल का लडका था। मास्टर लाग इस चिन्ता म कि वह स्कूल म चौथी क्लास भी पास हा पायगा या नहीं। जीवाजीराव का जब जन्म हुआ तब उनके पिताजी क पास एक

गाँव में पौन एकड़ ज़मीन शेष रह गयी थी। बाप और माँ दोनों मज़दूरी करके पेट भरते थे। जीवाजीराव के दो बड़े भाई बिना पढ़े लिखे ही रह गये। लेकिन गाँव के मास्टरों के कहने पर जीवाजीराव को स्कूल में दाखिला दिलवा दिया गया। पर उनका सारा वक़्त मटरगश्ती में ही निकल जाता था। बाप ने यही निर्णय ले लिया कि चार क्लास पढ़ाकर लड़के को पशु चराने भेज देना चाहिए। लेकिन चौथी क्लास का रिज़ल्ट निकलने पर मास्टर ने ही कहा कि लड़का बिलकुल बेकार नहीं है। सांगली में परीक्षा में बैठा दिया जाये तो हो सकता है कि पास भी हो जाये। आधी फीस में पढ़ाई भी हो जायेगी। बाप का कहना था 'क्या होगा लिख-पढ़कर? नौकरी तो मिलने से रही।' लेकिन परिवार के भाइयों ने भी कहा 'घर में एक तो पढ़ा लिखा हो। हम भले ही मज़ूरी करते रहें।' और उम्र के बारहवें साल में जीवाजीराव सांगली के अंग्रेज़ी स्कूल में छह मील रोज़ाना चलकर जाने लगे।

पहले एक-दो साल लड़खड़ाते ही गुज़रे। लेकिन आगे जीवाजीराव पढ़ाई लिखाई में रुचि लेने लगे। मन लगाकर वे पढ़ने लगे। इस बात का भी एहसास होने लगा कि उनमें काफ़ी सामर्थ्य है। फिर तो मैट्रिक के इम्तहान में वे सेकिंड क्लास में पास हुए।

अब जीवाजीराव की महत्त्वाकांक्षा जाग गयी। उस वक़्त उनकी महत्त्वाकांक्षाएँ सीमित थीं—इंटर पास कर लें फिर बी० ए० फिर स्कूल में टीचर हो जायें या पढ़ लिखकर वकील बन जायें। फिर यह भी समझ में आने लगा कि इन महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा करना इतना मुश्किल नहीं है। कुछ मेहनत कर ली जायें तो सभी कुछ हो सकता है। एक साल तक उन्होंने प्राइमरी स्कूल में टीचरी की और दूसरे ही साल सीधे पूना का रास्ता पकड़ा। पहले ज़रा मुश्किलों में दिन कटे। लेकिन धीरे धीरे रास्ता तय होने लगा। पार्ट टाइम काम मिलने लगे। एक सस्ते किस्म के हास्टल में जगह मिल गयी। पूना के आस-पास का माहौल और गाँव का माहौल—दोनों का अंतर समझ में आने लगा। गाँव की उस ज़िन्दगी को भूलकर उन्होंने अपने-आप को पूना की ज़िन्दगी में घुला मिला दिया।

जीवाजीराव की ज़िन्दगी की दिशा अभी निश्चित न हो पायी थी। लेकिन ज़िन्दगी से मेहनत के साथ जूझने का निश्चय उन्होंने कर लिया था। क्षितिज भले ही दूर हो पर आगे बढ़ने की धुन पैदा हो चुकी थी। ज़िन्दगी में एक अजीब बेचैनी आ गयी थी। चौबीसों घंटे काम करके आगे बढ़ने का हौसला पैदा हो चुका था।

कॉलेज में दूसरे साल ही से वे चमकने लगे। यूनिवर्सिटी में न सही,

पर कॉलेज म उ होंने पहला स्थान पाया। काशिश की जाय तो सब-कुछ हासिल हो सकता है। ट्यूशन के जरिये पेट भरने लायक उन्हें पसे मिलने लगे। सुबह ट्यूशन करना और दोपहर को मन लगाकर पढना। बचे हुए वक्त म लायब्रेरी म बठकर किताबें पढना और शाम को विभिन्न चर्चा-गोष्ठियों म शामिल होना। सख्त मेहनत करने का वे निश्चय तभी कर चुके थे। गाँव का कोई भी आदमी आता, वह जीवाजीराव से मिल बगर न जाता था। सभी के कामों म वे मदद किया करते थे।

चर्चा-गोष्ठिया म जीवाजीराव काफ़ी मेहनत करके जाया करते थे। पूना के ब्राह्मण-समाज म अपने गवई शब्द अखरते हैं। इस बात का एहसास उ हें था। उ होंने कोशिश करके अपना उच्चारण ठीक किया। भाषण लिखकर वे पूरी तैयारी के साथ चर्चा-गोष्ठियों म बोलने क लिए खड़ा हुआ करते थ। कई बार आइने के सामने खड़े रहकर वे अपना भाषण पढकर देखत थ। गलतियाँ ठीक करत थे। और इस तरह क वाद विवादो क मौकों पर वे अव्वल आने लग। बाद म तो वे बिना तयारी क भाषण देने म सिद्धहस्त हो गये।

दूसरे साल कॉलेज क इलेक्शन क़रीब थ। अचानक एक दिन शाम के वक़्त उ हीं के कॉलेज के अगल दर्जे का एक छात्र लीलाधर आठवले होस्टल म उनके कमरे पर आया।

इस इलेक्शन म सेक्रेटरी के लिए खड़ा हो रहा हूँ।'

गुड लक !'

सिफ गुड लक ?

मैं और क्या कर सकता हूँ अपना मत दे दूगा।"

'सिफ तुम्हारे मत स क्या होगा ? मुझ तो तुम्हारी सपोट चाहिए।"

सपोट ? मैं कसे सपोट कर सकता हू ?'

आठवल ने अजीब निगाहों से उनकी ओर देखा। फिर बोला तुम सिफ कह भर दो। तुम्हारे ग्रुप के सभी के मत मुझ मिल जायेंगे।'

तब अजीब निगाहो से देखने की बारी जीवाजीराव की था। वे अपनी पढ़ाई लिखाई म इतने उलझे हुए थे कि उ हे अपनी ताकत का एहसास न था। पल भर म ही उनके दिमाग म बहुत-सी बातें उभर आयी और तभी उ होंने एक निणय ले लिया। उन्हें इस बात पर अचम्भा था कि एसा निणय उस वक्त उन्होंने किस तरह ल लिया था। लकिन तभी स महत्त्वपूण मसलो पर तुरत निर्णय लेने की खास आदत उनम पनप चुकी थी। अपना जजमट कभी ग़लत नहीं हुआ यह आत्मविश्वास उनम आ चुका था।

दोस्ती की वजह स मैं अपने मत देने की बात ज़रूर कह सकता हूँ"

जीवाजीराव ने आठवले से कहा, "पर मुझे सपोर्ट में किसने कहा।"

'मतलब क्या तुमने किसी और को भी प्रॉमिस कर रखा है?'

'नहीं, किसी को भी नहीं।'

'फिर आखिर वजह क्या है?'

'तुम पूछ रहे हो तो बताए देता हूँ।' एक-एक शब्द पर ज़ोर देते और आठवले की ओर देखते हुए वे बोले, 'वजह यह है कि मैं खुद इस इलेक्शन में खड़ा हो रहा हूँ।'

आठवले एकदम हड़बड़ा गया। कुछ पल चुप रहा। जीवाजीराव कपड़े पहनकर उसके साथ बाहर हो लिये। दोनों ईरानी होटल में आ गये। काफी देर तक चुप रहे थे, बाद आठवले ने कहा—

'तुम्हारी स्ट्रेंथ भले ही काफी हो, लेकिन जीतने के चांस नहीं है।'

'कैसी स्ट्रेंथ?'

'आड़े आयेगी तुम्हारी जाति भी।'

'इलेक्शन में जाति को कौन पूछता है?'

'तुम बच्चे तो नहीं हो?'

'नहीं, मैं जाति के बल पर इलेक्शन नहीं लड़ूँगा। तुम देख ही लेना।'

'मैं तो अब इरादा बदल रहा हूँ। मैं तो तुम्हारी सपोर्ट पर खड़े होने की बात सोच रहा था।'

'मतलब तुम्हारा मत मुझे मिलेगा?'

'तुम ऐसा मानते हो?'

'मैंने अपना व्यक्तिगत मत तुम्हें देने की बात कही थी।'

'पर और भी तो कोई रास्ता हो सकता है न।'

'औरों की बातें बाद में सोचेंगे।'

और उस साल जीवाजीराव प्रसिद्ध हो गये। कॉलेज के इलेक्शन में तो वे जीते ही, इंटर कालेज और इन्टर-यूनिवर्सिटी में भी खूब चमके।

बयालीस के आंदोलन में उन्होंने कॉलेज नहीं छोड़ा। और-तो-और जो कॉलेज छोड़ने के लिए कहते थे उन पर ही उन्होंने हल्ला बोल दिया। उन्होंने प्रचारित किया कि यह सब हमें लंगड़ा कर देने की चालें हैं। उनके विचारों को सुनकर बहुत-से लोगों का ध्यान उनकी ओर गया। बापूसाहब जोशी से उनका पहला झगड़ा हुआ था इसी बात पर। इसी झगड़े से ही उनमें दोस्ती पनपी और राजनीति में दोनों का साथ हो गया।

इसी दौरान जीवाजीराव अपनी ज़िन्दगी के बेहद नाज़ुक झमेले में अनजाने ही उलझ गये। इस झमेले में से दो साल बाद जीवाजीराव बाहर

निकले तो बिलकुल बदले हुए थे। अब उन्हें जिन्दगी का एहसास हो चुका था। कड़वाहट जाने बगैर जिन्दगी की असलियत जानी नहीं जा सकती यह वे अच्छी तरह जान चुके थे। आदमी कितना ही पढ़-लिख ले लेकिन अनुभव के बिना जिन्दगी में ठोसपन और गहराई नहीं आ पाती। इस अनुभव के बाद उनकी जिन्दगी कुछ और ही हो गयी। जिन्दगी एक आकार लेने लगी। पहले का डर और बेचैनी जाती रही और स्थिरता आने लगी।

प्रोफेसर केलकर जीवाजीराव के चहेते थे। शिंदे की बुद्धिमानी का पता उन्हें था। राजनीति शास्त्र के छात्रों में जीवाजीराव उनके लाडले थे। जाति-पाँति के बंधन दूर रखकर जीवाजीराव खुद अपने पाँवों पर खड़े होकर इतना आगे आये हैं इस बात को वे अच्छी तरह जानते थे। उनकी गरीबी को वे जानते थे। इसी वजह से वे दूसरों की अपेक्षा जीवाजीराव को ज्यादा चाहते थे। वे उन्हें प्रेरणा भी देते रहते थे। मदद करने के लिए तैयार रहते थे। घर पर बुलाते थे।

किसी से भी मदद लेने के लिए जीवाजीराव तैयार न होते थे। लेकिन चर्चा-सभाओं और कालेज के काम के लिए केलकर के यहाँ जाना उन्हें बुरा न लगता था। केलकर जी के यहाँ उनकी काफी खातिरदारी भी हुआ करती थी।

प्रोफेसर केलकर के यहाँ तीसरी या चौथी मुलाकात के दौरान जीवाजीराव शिंदे ने शालन केलकर को पहली बार देखा। पूना की दूसरी औरतों की तरह पहले उन्होंने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। पूना की लड़कियाँ और जीवाजीराव की जाति में इतना अन्तर था कि गलती से भी कोई विचार उन्हें छू न सकते थे।

लेकिन काम की खातिर शिंदे का केलकर के यहाँ आना-जाना बढ़ गया। शालन से मुलाकात के मौके भी ज्यादा आने लगे। धीरे धीरे उनकी बातों में शालन भी रस लेने लगी। तब उनमें भी कुछ तबदीली आने लगी। केलकर के यहाँ साफ-सुथरे और कम फटे कपड़े पहनकर जाने लगे। बोलने के दौरान ज्यादा दिखावा करने की चेष्टा करने लगे। उनसे बोलते समय जब शालन लगातार उनकी ओर देखने लगी तो जिन्दगी में एक खास सुगंध आने लगी। उन्हें लगा, जैसे सारी दुनिया चाँदनी में नहा गयी हो।

फिर तो दोनों का परिचय बढ़ते समय न लगा। शालन साइंस कॉलेज में थी। जल्द ही एक वाद विवाद प्रतियोगिता में दोनों का प्रत्याशी के रूप में चुनाव हो गया। उसके बाद से तो दो साल तक जीवाजीराव सपनों की

दुनिया में बहते रहे। वे दिन याद आते हैं तो आज भी उन्हें लगता है कि जैसे गुलाबजल बदन पर पड़ रहा हो। सीने में अजीब सा स्पन्द उठता है। तब वे गरीब थे। कई बार तो उन्हें भूखे पेट रह जाना पड़ता था। बदन भी कमज़ोर था। पहनने के लिए बढ़िया कपड़े भी नहीं थे। तिस पर भी ज़िन्दगी का सबसे सुहाना समय उनसे पूछा जाये तो वे कहेंगे—वही! भावुकता के माहौल में वे दो-ढाई साल मखमल से चिकने गुज़रे थे। ज़िन्दगी में आँसू, दुःख दर्द तो जैसे थे ही नहीं। फूलों की पँखुरियों पर जैसे वे चलते थे। देह में बिजली सी थी। आशा और महत्त्वाकांक्षा का क्षितिज जैसे कहीं खो गया था। लगता था जैसे सारी दुनिया उनकी ताल पर नाच रही है। जाति पाँति के भेदभाव की उन्हें परवाह न थी। घंटों राजनीति पर चर्चा, हँसी मज़ाक, रूठना मनाना, साथ घूमना, हाथ में हाथ डाल यहाँ से वहाँ भटकना, करीब आना और झिलमिल चुम्बन! ज़िन्दगी ऐसे गुज़र रही थी जैसे गालों पर मोरपंख फेर दिया हो।

उसी दौरान जीवाजीराव ने कई प्रसिद्धियाँ भी हासिल कीं। वाद-विवाद में इनाम हासिल किये। बी० ए० की परीक्षा में स्वर्ण-पदक पाया और कानून पढ़ने के लिए कालेज में दाखिला ले लिया।

बी० ए० का परिणाम निकलने के बाद केलकर जी ने जीवाजीराव को अपने घर बुलवाया। बंगले पर केलकर और उनके नौकर के अलावा दूसरा कोई न था। शालन और उसकी माँ शायद बाहर गये हुए थे।

केलकर जी ने जीवाजीराव का हार्दिक स्वागत किया। नौकर चाय ले आया। उसे पीने के बाद उन्होंने अलमारी खोलकर एक लकड़ी का बक्सा निकाला और उसमें से एक रिस्ट वाच निकालकर जीवाजीराव की कलाई पर बाँध दी।

दिस इज़ माई वे आफ कांग्रेच्यूलेटिंग यू।'

शिंदे इतने खुश हुए कि आभार जताना भी भूल गये। शालन के साथ उनका घूमना केलकर जी को मालूम है या नहीं इसकी जानकारी उन्हें न थी। लेकिन उन्हें कुछ तो भनक होगी ही। पर यह शुरुआत अच्छी न थी।

मिस्टर शिंदे, प्रोफेसर केलकर अंग्रेज़ी में बोले, मुझे लगता है कि मेरे स्नेह के लिए इस दिखावे की जरूरत नहीं थी।"

यू आर रेफ्लेक्टिंग माइ फीलिंग्स सर!

ठीक है। आप मुझ पर विश्वास करते हैं न, अब मेरी सुन लीजिये।'

शिंदे कुछ देर चुप बैठे रहे। केलकरजी ने टेबिल पर रखा पाइप उठा लिया। उसे सुलगाकर एक लंबा कश लिया।

आप मेरी लड़की का पीछा छोड़ दीजिये।

प्रोफमर कलकर न य श इतन धीरे स कहे कि शिंदे उ ह सुनकर हडबडा गय। फिर उस पूरे वाक्य का अथ उसक पीछे छिपे कारण को जानकर व गुस्सा हो उठे। लेकिन उ होंने अपने पर काबू रखा। मुट्ठी कस व कलकर जी की ओर देखत रह। शालन के साथ रहन म उ होंने उसक पिताजी का खयाल न किया था। केलकर जी पर उ ह विश्वास था। बीच म अगर किसी न टाँग अडाई होती तो अपने मा-बाप न ही। पर इन बातो का ख्याल उ ह खुद न था। और केलकर जी अब एस पेश आये।

आई सी यू आर एंग्री?”

यम सर आइ एम।’

‘आई एम सॉरी यगमैन। पर वजह बताने पर शायद तुम खुद ही समझ सकोगे।

काई ज़रूरत नही सर। आइ कन अडरस्टड।

नो। यू डू नाट।’

कुछ दर दोना चुप बठे रह। केलकरजी न पाइप के दो-तीन कश खीच। उनकी नज़रा में दुख और गुस्से का अजीब सा मिश्रण था।

कुछ दर बाद व बोल, मिस्टर शिंदे आप होशियार है। राजनीति की बातें आप समझते है। आप जरूर नाम कमायेंगे। आपका भविष्य उज्ज्वल है। इसीलिए आपक ही हित के लिए कह रहा हूँ कि यह अच्छी बात नही है। आप जम नही पायेंगे। आई नो माई डाटर मोर दन यू।’

शिंदे का गुस्सा इतना बढ गया था कि व तिलमिलाने लगे। फिर व जानबूझकर हँस दिय। उनका खयाल था कि उनकी हँसी कलकरजी को चुभ जायगी। फिर बोले सर आपस उस ढोंगीपन की अपेक्षा न थी। सही वजह आपने भले ही न बतायी हो फिर भी मैं अच्छी तरह समझ सकता हूँ।

यह बात केलकरजी को चुभ गयी। उन्होंने पाइप टेबिल पर रख दिया। लंबी साँस ली। घायल नज़रा से शिंदे की ओर देखा। फिर बोल—

वाकई मैं ग़लतफहमी म नहा हूँ। मुझे समझने की कोशिश कीजिय।

शिंदे फिर हँस दिय। बोले ‘सच। मुझे काई ग़लतफहमी नहा है सर! मैं आप पर गुस्सा नहा हूँ। मैं आपकी स्थिति अच्छी तरह समझ सकता हूँ।

‘देखिय मिस्टर शिंदे, आप कुछ नहा समझ रहे हैं।’ जस क्लास मे बोल रहे हा उसी अदाज म केलकरजी कहा आपने कभी शालन स

पूछा है? उसने कभी इन बातों का सवाल किया है? आपसे पूछा है? नहीं! आप अभी जवान हैं। अभी ठीक तरह से सोचने की शक्ति आप में नहीं है। आप दोनों साथ-साथ घूमते रहते हैं यह बात क्या मैं जानता नहीं? पर मैंने जानबूझकर नज़रअंदाज़ कर दिया था। सोचा करने दो कुछ समय के लिए मौज। लेकिन अब आपको गंभीरता से सोचना होगा। क्या आपने शालन को ठीक ठीक समझा है?

शिंदे को चुप देखकर केलकर फिर बोले "नहीं। तो मैं बताये देता हूं। शालन ऐसे ही मौज के लिए आपके साथ घूमती घामती है। उसका आप पर कुछ स्नेह भी होगा। लेकिन आप उससे शादी की बात करके देखिये। मैं जानता हूं वह क्या जवाब देगी। शालन बड़ी क्लासकॉशस है। वह बेहद डिमांडिंग है। शी विल मेक यूअर लाइफ मिज़रेबल। आप बेहद इंटेंस हैं इसीलिए कह रहा हूं। नहीं तो कहने की ज़रूरत ही न थी। आप खुद पूछकर देख लीजिये। यू विल बी सॉरी। आई एम वार्निंग यू। आप दोनों के व्यवहार, संस्कार और रुचियों में ज़मीन-आसमान का फर्क है। अभी इस बात का एहसास शायद न हो पाये पर शादी के बाद आप खुद ही जान जायेंगे। फिर जीना एकदम मुश्किल हो जायगा।"

प्रोफेसर केलकर ने और भी बहुत कुछ कहा। जीवाजीराव का ध्यान उस तरफ था भी और नहीं भी। उन्हें केलकर पर गुस्सा आ रहा था और खुद पर दया। उनकी कलाई पर बंधी वह घड़ी भी ठीक न लग रही थी। उन्हें लगा कि उस पूरे ड्राइंगरूम में न जँचने वाली एक ही चीज़ है और वह है वे खुद? केलकरजी की बातें कुछ हद तक ठीक थीं। शालन और उनके बीच स्नेह ज़रूर था लेकिन वह शायद जवानी के दौर की उपज हो सकता है। लेकिन दोनों की रुचियों में अंतर है इसका एहसास उन्हें भी कई बार हुआ था। पर इस बात की ओर उन्होंने ध्यान नहीं दिया था। इतना होने पर भी वे जानते थे कि केलकर जी के मन की तह में वही जाति वाली बात गहराई से चिपकी हुई है। इसी बात पर उन्हें गुस्सा आ रहा था।

जीवाजीराव ने फैसला लिया और पूना छोड़ दिया। वे कानून की पढ़ाई के लिए बम्बई आ गये। शालन से उन्होंने मन से प्यार किया था। दो-ढाई साल तक उनका पूरा व्यक्तित्व शालनमय हो गया था। वे पढ़ाई करते थे उसके लिए। जी रहे थे उसके लिए। उनका हर पल उसके लिए था। उनके अंग-अंग में वह समायी हुई थी। वह उनकी कल्पनाओं का सागर थी। इतना कुछ होते हुए भी उन्होंने पूना छोड़ दिया। उससे बिना मिले ही, उससे पूछे बगैर ही। उन्होंने साहस के साथ अपने मन को दबाया था।

पूछने की इच्छा हुई पर लगता कि उसने कहीं दूसरा जवाब दे दिया तो ? उन्हें अपने मन में उसकी प्रतिमा को ज्यों-का-त्यों रखना था।

दो-तीन महीने बड़े अजीब हालत में गुजरे। जीवाजीराव ने कई खत शालन को लिखे और जला दिये। दिन खत लिखने में ही गुजर जाया करता था। खत लिख लिखकर वे ऊब गये। वे तटस्थ हो गये। जिंदगी को दूसरे ही नजरिये से देखने लगे। मोहब्बत करके लोग कैसे खुदकुशी कर लेते हैं इसी पर उन्हें अचम्भा था। प्रेम पूर्णत्व तक शायद पहुँच ही नहीं पाता। इसी का उन्हें अजीब अनुभव हुआ था। इससे जिन्दगी में एक रस आता है गहरी अनुभूति पैदा होती है। एक दृष्टि बनती है। उनका ऐसा विश्वास हो गया था। शालन की एक प्रतिमा उनके मन में बन गयी थी। अब कुछ भी होता रहे यह प्रतिमा खंडित न हो सकेगी।

तीन चार महीने बाद शालन के खत लगातार आने लगे। लेकिन अब तो दुनिया बदल चुकी थी। उन्होंने जिस शालन से प्रेम किया था, वह शालन दूसरी ही थी। यह अलग है। उस शालन का स्थान स्थिर था। वह शालन टूट नहीं सकती। जीवाजीराव ने खत पढ़े और जला डाले। आदमी क्यों जीता है वे क्यों जीते हैं—इसे वे अच्छी तरह समझते थे। जिन्दगी की असली प्रेरणा कौन-सी है वे अच्छी तरह जान चुके थे।

शालन को यकायक इस तरह उन्होंने कैसे छोड़ दिया, इस बात को जीवाजीराव भी ठीक तरह से न समझ पाये थे। दो-ढाई साल उसके साथ विताने के बाद भी हम उसे नहीं समझ पाये। उन्हें लगता था कि इस बात को यदि वे समझ लें तो मन शांत हो सकता है कि उन्होंने केलकर जी की बातों पर विश्वास कर लिया है। या कि केलकर जी की बातों से नाराज होकर उन्होंने यह निर्णय ले लिया है। लेकिन उन्होंने वजह जानने की कोई कोशिश नहीं की थी। अपने निर्णय पर उन्हें पश्चात्ताप भी न था। हो सकता है कि केलकर जी के मन में जाति पाँति की भावना हो, या उन्होंने शालन के लिए अपनी जाति का कोई लड़का तय कर लिया हो या उनकी पत्नी ने विरोध किया हो, या शालन की बात जानकर उन्होंने जीवाजीराव को खुद सलाह दी हो। ऐसी सभी संभावनाएँ जीवाजीराव ने सोची थीं। पर उन्होंने खुद ऐसा निर्णय क्यों लिया इसकी तह तक वे न पहुँच पाये थे। वे खुद भी इस झमेले में न पड़ना चाहते थे। केलकर जी के घर से निकलते समय उन्होंने कलाई घड़ी उतारकर टेबिल पर रख दी थी और तब वे इस तरह का निर्णय ले चुके थे।

कुछ भी हो, पूना के वे दिन और वह शालन, दोनों को ही वे अपने सीने में संजोये हुए थे। लोगों के सामने वे अपनी जिंदगी की बहुत-सी

बातें बताते थे लेकिन पूना की बात चलने पर वे चुप हो जाया करते थे। दूर कहीं देखते हुए मुस्कराते रहते थे। उस विषय को ज्यादातर टालने की कोशिश किया करते थे। वह सब सिर्फ उनके लिए था। बाद में शादी होने पर अपनी बीवी को भी उन्होंने यह बात कभी बतायी नहीं। हो सकता है कि बापूसाहब को इस बात का पता हो। लेकिन जीवाजीराव के मन पर इसका इतना असर हुआ कि कल्पना नहीं की जा सकती।

उस दौरान पूना में इस की कुछ चर्चा ज़रूर छिड़ी थी। लेकिन लोग बाग जल्द ही भूल भी गये थे। जीवाजीराव के मन में वे यादें हमेशा ताज़ी रहीं। अपने सार्वजनिक जीवन में आगे बढ़ जाने के बाद दो-तीन बार शालन से मुलाकात ज़रूर हुई थी। लेकिन वह शालन ही कुछ और थी। जीवाजीराव ने जबरन अपने मन के दरवाज़े कसकर बंद कर रखे थे। वे दरवाज़े खुद उनसे न खुल पाते थे।

बम्बई में जीवाजीराव ने कानून की पढ़ाई पूरी की तब हिन्दुस्तान आज़ाद हो चुका था। तभी उनकी शादी एक अच्छे-खासे खानदान की लड़की से हो गयी। शिंदे अभी भी गरीब ही थे। लेकिन समाज में उनकी शोहरत एक होशियार युवक के तौर पर फैल चुकी थी। माँ-बाप ने जो लड़की तय कर दी उसके साथ जीवाजीराव ने शादी कर ली। फिर सांगली में वकालत शुरू कर दी। वकालत अच्छी चल निकली। खूब पैसा कमाने लगे। पार्टी के अधिवेशन में भी उन्होंने अपना सिक्का जमाया।

दो साल में ही जीवाजीराव जिला बोर्ड में चमक गये। एसेंबली के लिए उनके नाम की चर्चा भी शुरू हो गयी। प्रचार कैसे किया जाये इसे वे बखूबी जानते थे। उनका नाम प्रस्तावित कर दिया गया। चुनाव जीतना सरल ही था।

एसेंबली में पहुँचने पर जीवाजीराव की महत्त्वाकांक्षा का दर्जा और ऊपर उठ गया। सिर्फ मन में महत्त्वाकांक्षा रखने वालों में से वे न थे। उन्होंने एसेंबली और बम्बई की राजनीति का अध्ययन किया। आसपास के लोगों के स्वभाव अच्छी तरह से जान लिये और मौका आते ही खुद को उस प्रवाह में बहा दिया।

एक बार विधानसभा में प्रवेश पा जाने पर दुनिया की हर चीज़ हासिल हो सकती है इसे वे अच्छी तरह से जान गये। सवाल है खुद की ताकत का अपनी कुशलता का। सीढ़ी दर सीढ़ी वे एक एक पद हासिल करते गये। विधानसभा की पार्टी के सेक्रेटरी से लेकर मंत्री पद तक जा पहुँचे। जब वे उपमंत्री थे तभी अफसर उनसे घबराते थे।

राज्य-सत्ता का अंतिम छोर होता है—मुख्यमंत्री पद! हर मंत्री वहाँ

तक पहुँचना चाहता है। जीवाजीराव ने खुद कोशिश नहीं की। लेकिन विधानसभा में आने के बाद से ही उनकी नज़र उस पद पर थी। राज्य के हर विभाग और ज़िले से वे संपर्क बनाये हुए थे। राजकीय तनाव, संगठन की खींचातानी, व्यवहार, समझौता, प्रहार, स्वार्थ—इन सारे ही जंगलों से होते हुए वहाँ तक पहुँचा जाता है। वे पहली बार ज़रूर असफल हुए। लेकिन दूसरी बार वे सफल हो गये।

अखबार वालों के साथ मुलाकात के दौरान वे बताया करते थे कि देश की गरीबी को खत्म करने के लिए वे राजनीति के क्षेत्र में उतरे हैं। सच पूछा जाये तो उसमें कुछ सच्चाई ज़रूर है। लेकिन कई बार सुबह उठकर जब वे आत्मचिंतन करते हैं तब खुद उन्हें लगता है कि यह बात पूरी तौर पर सही नहीं है। गौण है। राजनीति में आने के संदर्भ में गौण। ग़रीबी तो हटानी ही है। लेकिन वास्तविक प्रेरणा कुछ और ही है। और वह जब तक क़ायम है तब तक ज़िन्दगी के काँटे सरकते ही रहेंगे।

हवा को चीरती हुई कार तेज़ी से आगे की ओर बढ़ रही थी। सामने सायरन बजाती पायलट-कार काफी दूरी पर चल रही थी। इस वजह से रास्ता खुला था। एकाध जगह रास्ता रुका हुआ भी मिला। वहाँ लोग उनकी ओर कुतूहल से देख रहे थे। कुछ उन्हें पहचान कर हाथ हिला रहे थे। बीच में उन्हें झुग्गी बस्तियाँ नज़र आ जाया करती थीं। उन्हें देखकर मुख्यमंत्री का दिल पसीज जाता था। और उनमें काम करने की ज़िद बढ़ जाती थी। आज ही केंद्र ने हाउसिंग-स्कीम रद्द कर दी थी। दूसरी कोई योजना बनानी होगी। कम से कम बम्बई के बाहर इन लोगों को मकान दिये जाने चाहिए। या यहीं सस्ते मकान इन्हें मिलने चाहिए। लेकिन केंद्र आर्थिक ज़िम्मेदारी लेने के लिए तैयार न था। राज्य की योजनाएँ पूरी नहीं हो रही थीं। एक झुग्गी हटायी जाये तो वहाँ दूसरी खड़ी हो जाती थी। कुछ ज़ोरदार चीज़ करनी ज़रूरी थी। हमेशा की तरह ऐसे विचार मुख्यमंत्री के दिमाग में आ रहे थे। अगली कैबिनेट मीटिंग में यह सवाल आयेगा। मुख्यमंत्री अचानक उद्योगमंत्री से बोले—

“इधर फाइनेंस मिनिस्टर मिले थे ?’

नहीं। इधर वे दौरे पर गये हुए हैं।

मुझसे भी कई दिन से मिले नहीं। बस कैबिनेट-मीटिंग में ज़रूर मिल लेते हैं। पता नहीं इनके मन में क्या है ?

साहब उनका प्रचार तो तेज़ी से चल रहा है। अगली बार वे ज़रूर कांटेस्ट करेंगे।’

देखते हैं। काटेस्ट की बारी आ ही गयी तो मैं रिटायर हो जाऊँगा। मुझे काटेस्ट नही चाहिए। इस बार भी पार्टी का सवसम्मति से नेता चुन लेना चाहिए।'

नानासाहब ज़रा परेशान होकर बोल, "इस बार ज़रा मुश्किल ही दिखता है साहब! फाइनेंस मिनिस्टर तो अब खुल्लमखुल्ला बोलने लगे हैं' कुछ अखबारो म भी बातें शुरू हो गयी हैं।

हाँ। वह तो मैंने भी सुना है। देखते हैं कुछ तो करेंगे ही। झगडा पार्टी के हित म नही है। किसी एक को तो रिटायर होना ही पडेगा।

कौन रिटायर होगा इस बात को जीवाजीराव शिंदे अच्छी तरह जानते थे। वे पहल गृहमन्त्री थे फिर मुख्यमन्त्री बन। तब स ही उन्होंने फाइनेंस मिनिस्टर की गोपनीय फाइल बनाना शुरू कर दी थी। अब ता वह काफ़ी मोटी हो गयी होगी। उनके पास कई तरकीबें हैं। कुछ फोटो भी हैं। इस वजह से अथमन्त्री ही रिटायर होंगे उन्हें यह विश्वास था। अगले पाँच साल उनके ही होंगे। कई बचे हुए काम पूरे हो सकते हैं। कम से-कम मकान वाली समस्या तो हल की ही जा सकती है। यह विभाग ही अपने हाथ म लिया जा सकता है।

कुछ पल रुककर जीवाजीराव बाले 'अब आप बाहर भी इस बात को कह सकते हैं। सी० एम० की मुकाबला करने की इच्छा ही नही है। मौका आ ही गया तो वे खुद रिटायर हो जायेंगे। बताते रहना ।"

ऐसे कस चलगा साहब, आप रिटायर हो यह ।

बिलकुल चलेगा दस साल काफी हा गये। अब और किस लिए? काम काफ़ी कर चुके—काम और भी करने हैं। लेकिन क्या कुर्सी पर बैठ कर ही व काम हो सकते हैं?'

नही साहब। आपकी तो बहद ज़रूरत है साहब। पार्टी आपके रिटायर होने की बात कतई नही मानेगी।'

मुख्यमन्त्री हस दिये। देखत हैं देखेंगे।'

नानासाहब की आज़िज़ी को वे खूब समझ रहे थे। चाहते थे कि मुख्य मन्त्री पद पर बने रह। वजह साफ थी। अगर फाइनेंस मिनिस्टर मुख्यमन्त्री बन गये तो नानासाहब की छुट्टी हो जायेगी। मुख्यमन्त्री फिर हँस पडे।

ठीक है। काफी आगे की बात है। लेकिन अभी जो कुछ मैंने कहा उस ज़रा याद रखिये। किसी को हायतोबा मचाने की ज़रूरत नहीं है।' उसी पल जीवाजीराव ने निणय लिया—अगले मन्त्रिमडल मे नानासाहब को लना ठीक न होगा। उनके ज़िल का दूसरा कोई आदमी देखना होगा। तत्काल दो चार नाम उनके दिमाग म घूम गये और उन्होंने तय कर

लिया। इस दौरान नानासाहब उनका प्रचार करेंगे ही। जीवाजीराव को अपने निर्णय पर तसल्ली हुई। अब जो भी तबदीली करनी हो वह बिना किसी झंझट के करनी होगी। इस विषय में जीवाजीराव को पूरा आत्मविश्वास भी था। आदमी को किस तरह जोड़ कर रखना है वे अच्छी तरह जानते थे।

अच्छा तो आप विनीता को बिज़नेस में डालना चाहते हैं?"

हाँ साहब। कोशिश तो यही है। पर उसे खास पसंद नहीं है।"

फिर?'

फिलहाल तो मैं खुद ही देखूंगा। बाद में देखेंगे। शादी हो जाये तो सवाल खत्म हो जायेगा।

उसकी शादी के बारे में क्या खयाल है?"

क्या बताऊँ साहब बड़ा कठिन मामला है। उसके मन का ठीक-ठीक पता ही नहीं चल पाता। मेरी उससे बातें ही कहाँ हो पाती हैं? इतने कामों के बीच तो।

इस बात को जीवाजीराव अच्छी तरह से जानते थे कि नानासाहब के काम कौन-से होते हैं उनकी फाइल भी उनके पास थी लेकिन मुख्यमंत्री ने कहा यह कैसे होगा जनाब? हम लोग जनता के लिए इतना काम करते हैं लेकिन अपने घर के लिए तो कुछ वक्त निकालना ही चाहिए न?

नानासाहब का दिल भर आया। मुख्यमंत्री इतने प्रेम से पूछ रहे हैं, यह जानकर ही वे खुश हो गये।

जीवाजीराव को जरूर अपने ढोंगीपन पर चिढ़-सी हुई। फिर उन्हें लगा कि जैसे वे सु से वह वाक्य कह बैठे हों। एक लंबी साँस लेकर वे चुप ही रहे।

तब तक गाड़ी मरीन ड्राइव पर आ चुकी थी। तेजी से दौड़ रही थी। समन्दर की लहरें उफान पर थीं। आसमान साफ था। लेकिन गर्मी ज्यादा अनुभव हो रही थी। कोट का ऊपरी बंद बटन उन्हें नहीं सुहा रहा था। पसीने से अजीब चिपचिपापन महसूस हो रहा था। गाड़ी एयरकंडीशंड करवा लेनी चाहिए। मुख्यमंत्री ने निर्णय ले लिया। आज ही सेक्रेटरी को नोट करवाना चाहिए। दिन भर हम परेशान होते रहते हैं। कष्टों के बीच इतनी राहत तो मिलनी चाहिए।

नानासाहब की ओर बातें करने की इच्छा थी लेकिन तभी सचिवालय आ गया। चौकीदार ने फाटक खोला। ड्यूटी पर तैनात पुलिसवाले ने सलाम ठोंका। सलाम स्वीकारते हुए मुख्यमंत्री अपने केबिन में

ाय। सात्रे बारह वज चुके थे।
क्मरे से उनके पी० ए० अदर आये। टेबिल पर फाइलो का

फाइल पर दस्तखत करने हैं ? मुझे अभी बिलकुल वक्त नही
त्री ने कलाई की घडी देखते हुए कहा।
ने चुपचाप दो फाइलें आग कर दी। जीवाजीराव न कहा,
रूरत है ?'
ली ह साहब। एडमिनिस्टेशन की रिपोट का एप्रूवल है

त्री न हस्ताक्षर कर दिये। टेबिल के दायी ओर अभी और भी
उनकी आर इशारा कर वे बाल और य ?
नी अर्जेंट नही। कल भी हा सकेंगी। उनम कुछ पढ़ना भी

ी डेली रिपोट म कुछ है ?'
मुख्यमत्री के दायी आर खडे थ। यककर टेबिल पर हाथ टिका
मे से बोले खास कुछ नही। पर एफ० एम० की हरकतें बढ
जकल वे काल्हापुर मे ही जम हुए हैं पिछल तीन दिन से।
नके साथ ही है।'
डिप्टी रवेन्यू ?'
ाहब।
ी सोचता था कि वे बदल जायेंगे। अच्छा तो यह बात है!

ने दो कागज आगे सरका दिये। मुख्यमत्री न चट से पढ लिय।
ी। ठीक है। अच्छा हुआ जा पहले ही पता चल गया। नही
गलतफहमी म रहत।'
त्री कुछ दर के लिए सोच म पड गये। फिर उन्होंन ही पूछा
?
डेली रिपोट म कुछ नही है।
त्री का शहाण पर पूरा भरोसा था। शहाणे पिछले नौ साल से
० थ। मुख्यमत्री क आधे काम व ही दखा करत थे। खद
ही वाहर क जिल से उ ह वुलवाया था। काफी मामलो म व
तबार करत थे।
वस्टन स्टार' को फोन किया था ?'
त्री ने सप्रश्न चहर से उनकी ओर देखा। शहाणे ने कहा उनक

चीफ रिपोर्टर अय्यर को तो आप जानते ही हैं? उसी ने यह खबर दी थी।

'हां, अय्यर। पर वह इतना चीफ नहीं है। अच्छा आदमी है।'

'यस। एंड ही इज टफ। मेरा तो यही खयाल है। उससे एक बार मिल लेना चाहिए। मैंने उसे बुलवाया है।"

'कोई हर्ज नहीं, पर हमें क्या करना है? जो कुछ आरोप लगाने हों खूब लगाते रहें। प्रमाण तो दें वे। कम-से-कम हम कोर्ट में तो जा सकते हैं। यों छपकर तीर चलाने में क्या रखा है? मुझे तो इन सब में एक लिंक नजर आती है।'

'बिलकुल सही है साहब। अय्यर और डीकास्टा के अच्छे संबंध हैं। फोन और मिलना-जुलना भी।'

'अच्छा।'

मुख्यमंत्री चुप रहे। फिर बोले, "कास्टा की फाइल आ गयी?'

'हां साहब, अभी चाहते हैं?'

'देखता हूं। अभी कुछ वक्त है।'

शहाणे ने टेबिल पर रखी घंटी का बटन दबाया। तभी चपरासी अन्दर आया।

'देखो, जरा सबनीस साहब को अंदर भेजो।'

तत्काल एक रोबीला सी० आई० डी० अफसर अंदर आया। आते ही उसने मुख्यमंत्री को सलाम ठोका। उसके दायें हाथ में एक मोटी सी फाइल थी।

'बैठिये,' कुर्सी की ओर इशारा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा। शहाणे अन्दर चले गये।

सबनीस बैठे नहीं। खड़े खड़े ही उन्होंने फाइल मुख्यमंत्री के सामने कर दी।

'यह तीन पेजेज की समरी है, साब। पाइंट टु पाइंट। और हर पाइंट के डिटेल्स अंदर हैं।'

मुख्यमंत्री ने फिर कलाई की घड़ी पर निगाह डाली। पौन बज रहा था। और बीस पच्चीस मिनट रुका जा सकता था। उन्होंने कहा, 'बैठिये।'

जीवाजीराव ने फाइल पढ़नी शुरू की। वे उस पन्ने में पूरी तरह मशगूल हो गये। समरी में संक्षेप में काफी जानकारी दी हुई थी। कास्टा की पूरी भूमिका उसमें थी। मुख्यमंत्री को वह बड़ी आकर्षक लगी। कास्टा की गरीबी। उसका बम्बई में बेजार हालत में आना और नेता

तौर पर उसकी प्रगति ! कास्टा के लिए उनके मन म बडी सहानुभूति-सी पैदा हो गयी। वह पढ़ते समय जीवाजीराव को अपने दिन याद आ रहे थे। उन्होने खुद पहले मुफलिसी मे दिन गुजारे थे।

समरी म कोस्टा को मिला फ्लट जीप, ईनाम---सबकी जानकारी दी गयी थी। किस किस म उसकी खास पहचान है इसकी जानकारी भी थी। उसको जानकारी दने वाले कौन कौन थे, दिल्ली से आन वाली जानकारी कहा से आती है---इस बारे म छानबीन चल रही थी। यूनियन की तनखाह ऊपर से मिलने वाले पैसे की जानकारी उसमे थी। किस किस लडकी के साथ उसके सबध हैं इसकी भी लिस्ट थी। विनीता देशमुख का नाम आया तो मुख्यमत्री रुक गये। उन्होने ऊपर नजर उठायी।

विनीता देशमुख—नानासाहब की बेटी ? '

यस सर।

हाऊ डीप इज इट ? '

वेरी मच, सर। डिटेल्स पीछ दिय हुए हैं।

' देखें।'

सवनीस न खडे होकर फाइल से कागज़ निकालकर सामने कर दिय। मुख्यमत्री ने अच्छी तरह पढ लिये। कोस्टा और विनीता की मुलाकातो के डिटल्स थे। एक होटल म हुए सवाल भी दिये हुए थे। मुख्यमत्री को अपन सी० आई० डी० पर गव हुआ। उनके चेहरे पर मुस्कराहट खिल आयी। सुराग मिलन की खुशी हुई। उन्होंने फाइल एक ओर रख दी।

और कुछ ? '

सवनीस कुछ देर ऐसी हालत म रहा कि कहे या न कहे। फिर वह बोला कोस्टा पर हम लोगा की पक्की निगरानी है। और भी लोग उसे ट्रैक करते हैं। '

यह लोग कौन है ?

एक को पकडने की कोशिश की गयी थी पर सफल न हो सके। फिर हमन ही ट्रकिग रोक दिया। '

अब फिर ट्रकिंग शुरू कीजिये और दूसरे लोग कौन है जरा पता लगाइये। मुख्यमत्री ने कडे शब्दों म कहा।

यस सर। इन फक्ट वी आर अवेटिंग आडस, सर।'

नाऊ डू इट क्विक।

' यस सर।

एक बात और मुख्यमत्री ने आराम से कहा "कोस्टा के जो आरोप हैं, उनके बारे म इस फाइल मे कुछ है ?"

सबनीस कुछ परेशान हुए। उन्हें पसीना आ गया। मुख्यमंत्री ने कहा 'परेशान होने की जरूरत नहीं। आप जो कुछ कहना चाहते हैं कहिये। मेरे पास वक्त कम है।'

'सर मैं आई वाज टोल्ड कि डीकोस्टा की काम्प्रिहेंसिव फाइल आपको चाहिए। आई वण्डर हाउ ।"

आई नो आई नो और फाइल वाक़ई अच्छी है।"

मुख्यमंत्री ने बेल बजायी और चपरासी से कहा 'शहाणे को भेजना।' शहाणे अंदर आये। जीवाजीराव ने कहा—

कोस्टा के एलिगेशन्स क्या हैं?"

शहाणे ने कुछ सोचकर कहा "साहब मेरे खयाल से इसके लिए आपको एम० सबशान की हरेक फाइल देखनी होगी। आई० जी० की एडवाइस है कि फाइलें तैयार करना डेंजरस है।'

'ठीक है।" फिर शहाणे को रुकने का इशारा कर के मुख्यमंत्री ने सबनीस से कहा 'यू नो कोस्टा क्वाइट वेल?"

वेल यस सर, फ़ेअरली वेल।'

अच्छा अब साफ़-साफ़ बताओ कि यह आदमी कितना स्ट्रांग है? मतलब पालिटिकली नहीं प्रेशर पर कितना झुक सकता है?"

सबनीस ने सोचा और कहा "डाइरेक्ट प्रेशर का उल्टा ही रिएक्शन हो सकता है मुझे ऐसा लगता है। पर आई थिंक ही कैन बी वनरेबल टु सर्टेन प्रेशर्स। मतलब सीधे उसके आयडियाज को चलेंज कर दिया जाये तो ही इज क्वाइट वीक। मतलब इफ यू परमिट मी सर आई विल से— वह बड़ा महत्त्वाकांक्षी आदमी है। आई मीन उसकी महत्त्वाकांक्षा को बल दिया जाये तो ही कैन बी टैकल्ड। आई एम सारी। वाक़ई असलियत कहनी नहीं बनती, सर। पर वह आदमी कैसा है यह मैंने बता दिया सर। आप अगर लिबर्टी दें तो तो ।'

'यस।'

'छोटी-मोटी बातों से वह नहीं खरीदा जा सकता, सर।'

अच्छा। आपने ठीक काम किया। थैंक्यू वेरी मच।'

सबनीस उठा और सलाम ठोककर चला गया। मुख्यमंत्री ने शहाणे से पूछा, "आपने फाइल पढ़ी?'

'यस, सर।"

एम० सेबान की फाइल पर नोट तैयार होने में कितना वक्त लग सकता है?'

"इट डिपेंड्स। पर मैं होम-सेक्रेटरी से कहता हूँ।"

कास्टा तीन बजे आने वाला है। आई वांट द नोट हाफ एन अवर बिफोर दैट। उसके आरोपों में कितना दम है, यह जानकारी मिल जाये तो काफी है।"

'यस सर।"

फिर कुछ देर सोचकर मुख्यमंत्री ने कहा, "आपको क्या लगता है? आर० जी० को कंसल्ट किया जाये?"

मैं ऐसा नहीं सोचता साहब। ही इज टफ दैट वे। मेरा खयाल है आप ही पर्सनली उसे अच्छी तरह हैंडिल कर सकते हैं।"

ऐसी बात है?"

यस, सर।'

'ठीक है।

मुख्यमंत्री उठ गये। एक बज चुका था। तभी पार्टी का ट्रेज़रर भी बाहर आकर बैठ गया था। बाहर एक दो शिष्टमण्डल भी आये हुए थे। मुख्यमंत्री ने उनके आवेदन ले लिये और वे शहाणे को दे दिये। हार लिये और वे गाडी में आ बैठे। ट्रेज़रर भी गाडी में बैठ गया। एक सेक्रेटरी ने भाषण के कागज साथ में दे दिये। उन्हें बिना देखे ही जीवाजीराव ने सिर के पीछे रख लिये। फिर वे आँखें मूंद कर गद्दे से टिक कर बैठ गये। गाडी सचिवालय से बाहर आयी तो बिना आँखें खोले ही वे ट्रेज़रर से बोले, 'कहिये, शुरूआत तो अच्छी हुई न?

हाँ, साहब।'

नानासाहब आपको और भी पार्टियाँ देंगे। मैंने उनसे कह दिया है। उनसे मिलते रहिये।'

ताज आने तक जीवाजीराव वैसे ही आँखें मूंदे पडे रहे। बस इतना ही आराम। पहले तो उन्हें इतने आराम की ज़रूरत भी महसूस न होती थी। लेकिन इधर यों आँखें मूंदकर पडे रहना अच्छा लगता था। नींद तो आती नहीं लेकिन ताज़गी जरूर महसूस होती है। जीवाजीराव ने इसकी आदत ही बना ली थी। आँखें मूंद ली जायें तो दिमाग में चल रहे सारे ही विचार अलग हो जाते हैं। मन एकदम खाली-खाली सा हो जाता है। लगातार चलती मशीन बंद कर दी जाये तो कैसी शांति महसूस होती है। उन्हें कुछ ऐसा ही लगा करता था। मशीन रूम का दरवाज़ा बंद कर देने पर जैसा महसूस होता है वैसा ही उन्हें लगा करता था। शांत निश्चल, और निर्विकार। इतने ही वक्त में वे अपनी थकान से मुक्ति पा जाते थे और नये जोश के साथ काम में जुट जाते थे।

ताज' के दरवाज़े पर व्यापारी संघ के लोग उनके स्वागत के लिए

तैयार खड़े थे। लंच-मीटिंग थी और मुख्यमंत्री खास मेहमान थे। उनके भाषण का विषय था— व्यापारी संगठन और सरकार की अपेक्षाएँ। सभी जाने-पहचाने चेहरे थे। बैठ जाने पर मुख्यमंत्री ने पत्रकारों की ओर नज़र डाली। सभी कुर्सियाँ भरी हुई थीं। एक-दो चेहरे जाने पहचाने थे। पत्रकारों ने नमस्कार किया। जीवाजीराव भी मुस्करा दिये। वे सोचने लगे कि भाषण में ऐसा क्या कुछ कहा जा सकता है कि जिससे यह पत्रकार ज़ोरदार रिपोर्ट लिख दें।

जीवाजीराव के आते ही लंच शुरू हो गया। हाल एयरकंडीशंड था। कंडीशनर से सुगंध बह रही थी। महीन और मधुर संगीत की धुन चल रही थी। बत्तियाँ भी धूमिल थीं। खाना अच्छा था। पत्रकारों को छोड़ दिया जाय तो बाकी सभी अच्छे लिबास में थे। वेटर्स के कपड़े भी टिपटाप थे। जीवाजीराव शिंदे खुश हो गये। पहले उन्हें ऐसी जगह पर अजीब लगा करता था। लगता था कि दम घुटा जा रहा है। लेकिन अब आदत हो चुकी है। अपराध-बोध होता ही नहीं। आखिर यह पैसा इन्हीं चार-लोगों का है। उनके खाने का अपनी बुद्धि पर असर न हो जाय, बस। फिर इन लोगों का भी कुछ हक़ तो है ही। उनके बगैर सरकार के भी काफी काम रुक सकते हैं। इन्हें जोड़कर रखना चाहिए।

लंच के दौरान संगठन के अध्यक्ष करणजी देसाई मुख्यमंत्री को संगठन का महत्त्व समझा रहे थे और उनके करीब बैठा पार्टी का सेक्रेटरी ट्रेज़रर में राजनीति पर बातें कर रहा था।

लंच खतम हुआ और काफ़ी के दौरान ही करणजी भाई बोलने के लिए उठ खड़े हुए। उन्होंने बतलाया कि संगठन की उपयोगिता कितनी है। संगठन के ज़रिए व्यापारी वर्ग की माँगों पर सरकार से कुछ करने को कहा जा सकता है। व्यापारियों और सरकार के बीच संबंध ठीक रहे तो बहुत-सी ग़लतफ़हमियाँ दूर हो सकती हैं। संगठन के सामाजिक कार्यों के बारे में उन्होंने बताया कि संगठन ने डिनर बंद करके लंच से काम चला-कर सात हज़ार रुपये बचाये हैं और वे अध्यक्ष को दे दिये गये हैं।

उनकी बात सुनकर मुख्यमंत्री को हँसी आ गयी। अपने भाषण के शुरू में ही उन्होंने कहा कि वाकई अगर सोशल-वर्क करना हो तो आज के लंच की भी ज़रूरत न थी। केवल दिखावा करने से कुछ होना नहीं है। ठोस काम करने सख्त ज़रूरत है। कीमतें स्थिर रखने के लिए व्यापारी वर्ग सरकार और जनता के प्रतिनिधियों की एक समिति बनाने का सुझाव कैबिनेट की मीटिंग में आया था। इसकी घोषणा भी उन्होंने कर दी। पत्रकारों को सामग्री मिल गयी। ज्यादा नफा कमाने के लालच पर भी

उन्हाने प्रहार किया। उन्होंने कहा कि संगठन के सदस्यो को याद रखना चाहिए कि उनकी कुछ सामाजिक ज़िम्मेदारी भी है। समाज ज्यादा देर इंतज़ार नहीं करेगा।

भाषण के दौरान मुख्यमंत्री पत्रकारो की ओर जरूर देख लेत थे। सभी पत्रकार गदन नीची किये नोटस लेने म मशगूल थे। उन्ह अच्छा खासा मसाला मिल गया था। इसी वजह से वे खुश थ। भाषण खत्म होने पर तालियां बजी। बाद म पत्रकार मुख्यमंत्री के इद गिर्द आ खड़े हुए।

एकदम फस्ट क्लास कापी साहब ! '

'फ्रंट पेज स्टोरी सर ! '

जीवाजीराव सिफ तसल्ली से हँस दिय।

शिंदे साहब आप जो समिति बनान वाल हैं वह कब तक बन जायगी ?'

बस जल्दी ही।

पर उससे कीमतें घटेंगी क्या आप ऐसा सोचते हैं ?'

हाँ। इसीलिए तो समिति बनायी जायेगी जीवाजीराव ज़रा कड़े शब्दों म बोले। फिर हँस कर बोल और अगर सभी मदद करें तो क्या मुश्किल है ? खास तौर पर आप लोग और इनका संगठन।"

इस पर सभी हँस दिये और मुख्यमंत्री चल दिये। गाड़ी म बठने पर मुख्यमंत्री ने ट्रजरर स पूछा कहिये आपका काम हुआ कुछ।

बस हुआ ही समझिये सर। वाकई आपका भाषण बड़ा ज़ोरदार रहा। सभी पत्रकार एकदम खुश थे।' मुख्यमंत्री फिर हँस दिये।

जीवाजीराव ने खाना खास नहीं खाया था। सेक्रेटरी दो गोलियां ले आया था उन्हें वे ल चुके थे। फल का रस चिकनसूप कुछ उबली तरकारियां और काफी। इतने स चुस्ती बनी रहती है। भारीपन महसूस नही होता। नींद भी ठीक आती है। इसी वजह से जब वे अपने केबिन म वापस पहुचे तो ताज़े लग रहे थ।

शहाण ज़रा बचन नज़र आ रहे थे।

नोट तैयार हो गया ?

'हाँ साहब। आई० जी० खुद ही आय हुए है।

अरे ! फिर उन्हें अंदर भजिये।

साहब घर से सुधाजी का फोन था ।

क्या—कुछ खास ?"

आने पर कांटैक्ट करने के लिए कहा है।"

डायल कीजिए।'

शहाणे ने डायल किया और रिसीवर जीवाजीराव के हाथ में देकर वे केबिन के बाहर खुद ही चले गए।

'हूँ" जीवाजीराव ने फोन में सिर्फ़ आवाज़ भर दी।

'अजी, आपको अभी तक खबर नहीं लगी शायद?' सुधाजी की आवाज़ काँप रही थी।

'क्या, क्या हुआ?'

'पेरिस से मिलिंद का केबिल आया है!'

'क्या?"

सुधाजी परेशान हुईं। दूसरी तरफ़ से नाक पोंछने की आवाज़ आयी। फिर वे रोनी आवाज़ में बोलीं, 'अजी, वहीं की एक फ्रेंच लड़की के साथ वह परसों शादी कर चुका है।'

जीवाजीराव के पेट में गोला-सा उठा। ज़रा साँस भी तेज़ हुई। पर जीवाजीराव ने खुद को सम्हाला। कुछ देर रुककर वे इतना ही बोले, 'अच्छा!"

सुधाजी भी कुछ न बोलीं। कुछ देर बाद फिर नाक पोंछकर बोलीं, 'अजी अच्छा क्या? अब क्या करना होगा?"

'सुनो, ज़रा तसल्ली से काम लो,' जीवाजीराव ने शांत स्वर में कहा। कुछ देर रुककर बोले, 'अब किया ही क्या जा सकता है? बेकार हायतौबा न मचाओ। चारों तरफ़ खबर फैलेगी। लोग-बाग तुम्हें बधाइयाँ देंगे। उन्हें स्वीकार करो। तमाशा खड़ा करने में कुछ नहीं रखा। इधर मैं उसे बुलवाए लेता हूँ। क्या?' उधर से कोई स्वर नहीं उभरा। तब उन्होंने दुबारा पूछा, 'क्या?' सुधाजी ने सिर्फ़ 'हाँ' कहा।

'अच्छा, वह रकम आयी होगी न?'

'आयी है।'

'उसे लेकर किसी अच्छे सिनेमा में चली जाओ। अपनी दूसरी गाड़ी वर्कशाप से आ गयी है न?"

'हाँ।'

'ठीक है। और सुनो, मिलिंद ने तार में कुछ खुलासा किया है?"

'नहीं। सिर्फ़ शादी करने की बात लिखी है।'

'अच्छा, मैं देखता हूँ।'

फोन नीचे रखकर जीवाजीराव चुपचाप बैठे रहे। मिलिंद उनका अकेला लड़का था। दूसरी लड़की थी। जीवाजीराव वैसे बड़े दिलदार आदमी थे। लेकिन यह खबर अनपेक्षित थी। इसी वजह से हल्का-सा

धक्का लगा था। बस।

एक मिनट के भीतर ही उन्होंने अपने-आप को सम्हाल लिया, घंटी दबा दी। शहाणे के आने पर उन्होंने हँस कर पूछा 'आप को मालूम हुआ?

सुधाजी ने ही बताया था।

जीवाजीराव कुर्सी से टिककर बैठ गये। फिर हँसकर शहाणे से बोले—

खैर जाने दो जो हुआ सो हुआ।' शहाणे खड़े थे।

अब ऐसा कीजिये—कांग्रेचुलेशन्स का तार कर दीजिये।'

यस सर।

और रात अपने घर से उसे काल कीजिये। नंबर है न?

है सर।'

ठीक है। उससे जरा डिटेल्स पूछ लीजिये। कौन सी लड़की है, बैकग्राउंड क्या है? यू नो, मैं आप पर छोड़ता हूँ और उसे इधर बुलवा लीजिये। वह चाहेगा तो मुझे या अपनी माँ को फोन कर सकता है। क्या? व्हाट डू यू थिंक?'

कोई हर्ज नहीं सर।

ओ के०। आई० जी० को भेज दीजिये।

इंसपेक्टर जनरल के अंदर आने पर मुख्यमंत्री ने कहा 'इट वाज ए गुड जाब। दैट कोस्टा फाइल। एट मच ए शार्ट नोटिस।'

थैंक्यू सर!'

शहाणे ने नोट आगे कर दिया। एक ही पृष्ठ था। जीवाजीराव ने नोट पढ़ लिया और वे कुछ हड़बड़ाये। सोच में पड़ गये। दिमाग परेशान हो गया। उन्हें लगा जैसे पैरों तले की जमीन खिसक रही है। सिर भन्ना गया। पर तत्काल उन्होंने अपने आप को सम्हाला। इतनी जल्दी हार मानने में कुछ नहीं रखा। ऐसे वक्त ही मजबूती से खड़े होने की जरूरत होती है।

मतलब यह कि उसके आरोपों में कुछ सच जरूर है।"

कुछ देर तक कोई कुछ न बोला। खामोशी। जीवाजीराव ने होंठ चबाये। इसे केबिनेट में माफ करने की बात उन्होंने तय कर ली। कुछ देर बाद आई० जी० बोले डायरेक्ट संबंध तो किसी का दिखता नहीं। पर कम-से-कम दो का संबंध तो है ही। लीगली पाइंट आउट तो कोई करेगा नहीं। लेकिन मॉरल इम्प्लिकेशंस काफी हैं।

आई नेवर इमेजिंड' मुख्यमंत्री बोले।

आई० जी० ने कुछ अचरज दिखाया। 'मेरा खयाल था कि आपको

पहले से ही खबर होगी। फाइल में सब कुछ है ही।"

मुख्यमंत्री ने गर्दन हिलायी 'फाइल मैंने पूरी तौर पर पढ़ी नहीं। धीरे धीरे एक-आध पीस देखा है। इसी वजह से वे इम्प्लिकेशंस ध्यान में नहीं आ पाये।'

कुछ देर बाद मुख्यमंत्री ने आई० जी० से कहा 'ठीक है। यह नोट तो पर्सनली आपने ही तैयार किया है न?'

'यस सर। मेरी ही हैंडराइटिंग में है। जानबूझकर टाइप नहीं करवायी।'

'गुड' मुख्यमंत्री ने वह कागज मोड़कर जेब में रख लिया। 'आई विल हैंडिल इट।'

'मेरी आवश्यकता है?'

'नो-नो यू कैन गो नाऊ। थैंक्यू वेरी मच।'

शहाणे ने कहा 'सर वर्ल्ड बैंक आफिस की [illegible] टीम कर्टसी कॉल के लिए आयी हुई है।'

'ठीक है भेजिये उन्हें। काम तो कुछ नहीं है न?'

'सिर्फ कर्टसी कॉल। साथ में फाइनेंस-सेक्रेटरी हैं। दस-पंद्रह मिनट।'

'ठीक है।'

'कास्टा भी आया है। उसे रुकने के लिए कहता हूँ।'

मुख्यमंत्री ने गर्दन हिलायी और अंदर आने वाली टीम का खड़े होकर हँसते हँसते स्वागत किया। हरेक से हाथ मिलाया। यह टीम दूसरे एक की थी। पहली टीम के साथ जिस प्रोजेक्ट पर मुख्यमंत्री और अर्थमंत्री ने चर्चा की थी उस योजना और उसके आर्थिक परिणाम की जांच के लिए यह टीम आयी हुई थी। मुख्यमंत्री ने उनसे बातें कीं काम के बारे में सवाल किये चाय ली और उनके साथ फोटो खिंचवाये।

घंटी बजाने से पहले उन्होंने अपने हाथ मसले। मुँह पर हाथ फेरा। आँखें बन्द कर कुछ सोचा और घंटी दबा दी।

सबिशियन डोकास्टा के अन्दर आने पर मुख्यमंत्री ने हँसते हुए उसका स्वागत किया।

'हलो हलो मिस्टर कास्टा हाऊ डू यू डू?'

'हलो सर। हाऊ डू यू डू?'

'काफी दिनों बाद मिल रहे हो और कभी अजीब बात है कि आपके पास वह फाइल नहीं दिखायी दे रही?' जीवाजीराव ने हँसते हुए पूछा।

'मैं जानता था कि आप यह सवाल जरूर करेंगे इसीलिए मैं अपने साथ वह फाइल नहीं लाया।' कोस्टा भी उसी स्वर में बोला।

मुख्यमत्री जीवाजीराव शिदे फिर हँस दिय। बैठ गये। बाले, 'बठिये।"

आपकी फाइल के बारे म काफी सुना है।'

सिफ सुना है ?"

आपकी फाइल से भी मोटी फाइल मेरे पास है इफ यू बिलीव मी।'

वेल आई डोंट हेव एनी रीज़न नॉट टु बिलीघ यू सर। लक्नि वह आपका जाब है। मैं तो एक मिशन के तौर पर काम कर रहा हूँ।"

' आई एप्रिशिएट।'

और यह सब अकेला ही कर रहा हूँ। आपको तो उन मुश्किलो की जानकारी होगी। मुझे जान से मारने की धमकियाँ तक मिल चुकी हैं।

बाई द वे आपकी पिस्तौल की अर्ज़ी स्वीकार कर ली गयी है।'

थैंक्यू।'

पर मेरा खयाल है कि आप यदि सरकार और पुलिस पर विश्वास रखें तो उसकी जरूरत आपको नही पडेगी।'

सरकार और पुलिस पर विश्वास ?

ह्वाई नाट ?"

आप मुझे हसने के लिए मजबूर कर रहे हैं।'

नही। आई एम स्पीकिंग विद आल सीरियसनस। आप यदि हम पर विश्वास करत रह तो आपकी कई मुश्किलें हल हो सकती हैं।

'आप क्या कह रहे हैं यह मैं नही समझ पा रहा हूँ।'

' मैं तो बिलकुल सीधी बात कह रहा हू कास्टा साहब। कोई रहस्य वाली बात नही। हम आपका विश्वास ही तो चाहते हैं।"

पर विश्वास किस पर किया जाये ? कुछ पल बाद कोस्टा न कहा, ' मैं सच कह रहा हूँ शिदे साहब जितनी ज्यादा जानकारी मिलती जाती है उतना ही लोगो पर स विश्वास जाता रहता है।

मैं मानता हूँ पर आपसे ज्यादा जानकारी तो हम हासिल कर सकते है। गरज कि हमारे पास साधन हैं। तिस पर भी हम लोगो पर विश्वास करते हैं। करना ही पडता है। अब देखिये न, मैं तो आप पर पूरा विश्वास करके बोल रहा हू,' पास रखी फाइल पर हाथ रखते हुए मुख्यमत्री ने कहा।

मतलब ? '

मतलब पूरे विश्वास के साथ। मुख्यमत्री की हैसियत से नही। बिलकुल मन टू मैन।'

मैं यह नही जान पा रहा हूँ कि आपका इशारा किस तरफ है।' कोस्टा ने हँसते हुए कहा आपने मुझे क्यों बुलाया, यह भी नही समझ पा

रहा हूँ ?'

मुख्यमत्री जीवाजीराव शिन्दे दिल खोलकर हँस दिये। उन्हें लगा पहली बाजी वे जीत गये है। स्थिति हाथ मे आने से उनका आत्मविश्वास भी बढ गया। हसते हुए ही वे बोले 'बातें जरूर करेंगे। मैंने आपको दूसरे ही काम के लिए बुलवाया है। आपकी फाइल के बारे मे आज एक कमिंग पढी इसलिए । इतना कहकर उन्होंने घटी दबा दी और चपरासी स चाय लाने क लिए कहा। शहाण को इटरकाम पर बुलाया और कहा—

कबिनेट का वक्त तो तय हो चुका है न ?

साढ तीन का वक्त था। लेकिन अभी तक एफ० एम० कोल्हापुर स नही लौटे हैं सर।

ठीक है। कलाई की घडी की ओर निगाह डालते हुए उन्होंने कहा, मैं पांच दस मिनट दर से ही आऊगा। अभी सवा तीन हुए हैं।

ओ के सर।'

चाय आने तक मुख्यमत्री ने इधर उधर की जानकारी ली। एक-दो फोन भी इसी बीच आये। एक सेक्रेटरी फाइल लेकर आया। उस पर हस्ताक्षर किये। चाय वाला जब चला गया तो कोस्टा से धीम से बोले—हू जिन्दगी मे सटिल होने की बात नही सोचत आप ?

मतलब ?'

'नही यों ही पूछ रहा हूँ। हमने सुना है कि नानासाहब देशमुख की लडकी क साथ आपक गहरे सबध हैं।

कोस्टा हडबडाया। उसकी और विनीता की एक-दूसरे से जान पहचान है यह बात जाहिर थी। लेकिन बात मुख्यमत्री तक पहुँच गयी, यह बात नही जानता था।

'नहीं। वह तो मेरी गुड फ्रैंड है।'

एड यूअर वेरी क्लोज एडमायरर।'

वेल आई डोंट नो।

बट आई नो।

मुख्यमत्री हँस दिये। 'उसके पिता को भी मालूम है' फाइल की ओर दखत हुए उन्होंने कहा 'यू डोंट हैव टु अपोलोजाइज। जसे मैं अपने वीक पाइन्ट जानता हू वसे आपके भी समझ सकता हूँ। डोंट बी एवेरेस्ड ।'

मुख्यमत्री को एहसास हुआ कि वे जरा ज्यादा ही भावना और प्यार से बोल गये। खुद के वीक पाइट की याद कोस्टा के सामने ही कैसे आयी? यह उसकी फ़ाइल से मालूम होता है कि कोस्टा **बड़ा जीवट** का आदमी है। हमन जरूर अपनी जवानी म अपनी आकांक्षाएँ **दबाकर रखी** थीं।

कोस्टा कुछ न बोला। लेकिन इस बात को वह ताड़ गया था कि मुख्यमंत्री के पास जो फाइल है, उसमें क्या हो सकता है। ज्यादा से-ज्यादा क्या हो सकता है उसमें ? मेरे फ्लैट की बात जीप फ्रिज, लड़कियों के बारे में जानकारी मुझे जानकारी देने वाले कांटैक्ट। लेकिन इस जानकारी के बल पर मुख्यमंत्री कर ही क्या सकते हैं ? वे मुझे खरीद तो सकते नहीं। विनीता देशमुख को लेकर इतने इम्प्रेशंस तो हो नहीं सकते। उस लड़की को तोड़ा नहीं जा सकता। वह मासूम है और जिद्दी भी। मौका आ जाये तो बाप को धक्का देकर मेरे पास आ सकती है।

मुख्यमंत्री गंभीर स्वर में बोले मैंने आपको एक जरूरी काम के लिए बुलवाया था। आपकी पिस्तौल की अर्जी परसों मेरे पास आयी इसीलिए याद हो आयी आपकी फाइल की ।'

शिंदे फिर बोले मैं आपकी लेबर मूवमेंट बारीकी में देख रहा हूँ। बिलकुल शुरू से ही।

ठीक है" कोस्टा ने हँसते हुए कहा आपकी पुलिस ने हमें डंडे भी लगाये हैं।

अजी अपना काम आपने किया और हमने अपना काम। लेकिन क्या आप समझते हैं कि हमने यह काम दुश्मनी की वजह से किया ? फ्रैंकली बताइए। मजदूरों की सभा में ना बातें कहते हैं यह नहीं।'

नहीं। सभाओं में भी मैंने आप पर दुश्मनी के आरोप नहीं लगाये हैं। मैं तो व्यक्तिगत रूप से कह रहा हूँ।'

एक्जैक्टली। और हम जो करना हो वह हम कर सकते हैं यह भी आप जानते हैं।'

आप जरूर कर सकते हैं कोस्टा कड़वेपन से बोला।

पर वे तो मामूली बातें हैं। आपके बड़े-बड़े साथियों के बारे में इतनी बात होने पर भी आप कुछ नहीं कर पा रहे।

आइ एम सारी। आपकी बातें जरा कुछ और ही हुई जा रही हैं। मुझे इस विषय पर बात ही नहीं करनी है।

कोस्टा कुछ न बोला। यह देखकर मुख्यमंत्री मुस्कराये। वे बोले आपको यह तो नहीं लगता कि मैं आप पर प्रेशर डाल रहा हूँ ?'

ना बिलकुल नहीं।

नहीं अगर वह बात हो तो आज बातें यहाँ बंद करते हैं। दूसरी बात कभी और कर लेंगे। मैं किसी खास उद्देश्य से कुछ कहूँ और आप कुछ और ही समझ लें तो ठीक नहीं। हमारे मन साफ हों तो ही बातचीत का कुछ अर्थ है।'

बिलकुल ठीक। मैं भी यही सोचता हूँ।

फिर ठीक है। मैंने तो पहले ही कहा था मैं आपके काम को अच्छी तरह दख रहा हूँ। एड आई लाइक यूअर मथडस। हमारे काम मे आप मदद कर सकते है?"

अपने मजदूरों के कल्याण के लिए मैं कुछ भी करने के लिए तैयार हू।

हर डिपाटमट क लिए हम सलाहकार समिति बना रहे हैं। मजदूर सलाहकार समिनि का काम आप देखिय।"

आपकी पार्टी म भी ता कई मजदूर-नेता हैं।'

फिर भी पसनली आपस रिक्वस्ट है कि आप ही इस मभालिये।'

कुछ देर रुककर वे बाल वसे अभी लेबर मिनिस्टर को पता नही है पर आपको काफिडेंस म नकर कह रहा हू।'

ख्याल तो अच्छा है पर मुझे जरा सोचना होगा।

जरूर सोचिये पर इसम सोचन लायक क्या है?

है तो। आप एक जिम्मेदारी का काम सौंप रहे ह। सिफ मबरशिप के लिए पूछने तो काई बात न थी। लकिन आप तो समिति की जिम्मेदारी मुझ पर डाल रहे हैं।

ठीक है पर मुझे एक बात और पूछनी है। मजदूरों के कल्याण और अधिकारो के बारे म कुछ खयाल तो आपके हागे ही। क्या आप यह नहीं साचते कि ऐसा जरूर होना चाहिए?'

बिलकुल लगता है। इसीलिए तो इतनी जानमारी कर रहे हैं हम लोग।

राजनीति और मजदूरों के बारे म आपके यह विचार है। उसक लिए आप इतनी जानमारी कर रहे हैं। और इतना होन पर भी उनका भला होगा या नही यह विश्वास नहीं है आपको?'

'मतलब?

मतलब यह कि अपन राजनतिक खयाल अमल म लान क लिए हाथ म सत्ता जरूरी होती है और बिना सत्ता के कुछ नहं। हा सकता। हम लोग सत्ता प्राप्त करन या उस हाथ म बनाय रखन की कोशिश क्यो किये जात है इस बारे म कभी आपने सोचा है?

पर मेरा अनुभव तो यह है कि सत्ता आदमी को करप्ट कर देती है।

'वह तो आदमी के केरेक्टर पर निभर करता है। अपने विचारो और विश्वासों पर निभर होता है यह सब। और इसी डर म सभी सत्ता

से भागने लगें तो कस चल सकता है ?'

'पर शिदे साहब यह सब आप क्यो पूछ रहे हैं ?"

आप समझ ही गये होगे ?'

'इसे निमत्रण मान लिया जाये ?'

खुद मैंने दिया है, बीच म कोई भी नही है।

'मुश्किल है ज़रा।'

इसम मुश्किल क्या है ?'

कोस्टा ने अदर तक सांस खीची। वह सपन म भी न सोचता था कि मुख्यमत्री के बुलवाने के पीछे यह बात हो सकती है। लकिन शायद मुख्य मत्री जीवाजीराव शिदे ने इसी बात के लिए बुलवाया होगा। वह अस्थिर था। कडवी चीज़ मुह मे हो और वह यकायक मीठी लगने लग उसका चेहरा कुछ उस तरह का हो गया। अपने चेहरे की घबराहट वह छिपा न पाया। मुख्यमत्री हँस दिये।

देखिये मिस्टर कोस्टा,मैं आपके बारे म काफी दिनो से सोच विचार कर रहा हू। और जैसे-जैसे मुझे आपके बारे म जानकारी होती गयी वैसे वैसे आपके बारे मे आदर भाव भी बढ़ता गया। मुझे अपनी सरकार को एक खास तरफ मोडना है और इसी बात के लिए मुझे ऐसे लोगो की सख्त जरूरत है। जब भी मैंने सोचा तब आनेस्टली कह रहा हूँ मेरे सामने आपका ही नाम सबसे पहले था।'

जीवाजीराव रुक गये। उन्होने अपनी कलाई की घडी को ऐसे ही इधर उधर घुमाया और खिडकी से बाहर की ओर देखते हुए बोले, 'बिना किसी को बीच म रखे हुए मैंने सीधे आपसे काटक्ट किया है। इसी से सब कुछ समझ लीजिये। माई काड स आर ओपन। अब चुनाव आप पर है।"

कोस्टा कुछ परेशान सा हुआ। वह इन सब बातो स परे था। इस दृष्टि स उसने सोचा तक न था। सपन म भी न सोचा था। इस वजह से वह सुन्न सा हो गया। एक मिनट तक बिना बोले बाहर की ओर देखता रहा। फिर धीमी आवाज़ म बोला—

मेरी आज तक की सारी ज़िदगी सरकार की ख़िलाफत म गुज़री है। आपकी पार्टी के खिलाफ भी रहा हूँ। उसी पार्टी का साथ देना मुझे गलत लगता है।

मुख्यमत्री शिदे जोर से हँस पडे।

आपकी बातें इतनी बचकानी हो सकती है यह मैंने नही सोचा था।"

कुछ देर बाद फिर बोले—

और सच पूछा जाये तो इसम गलत क्या है मैं तो समझ ही नही

पाता। आपकी निगाह से सोचूं तो भी नहीं सोच पाता। सत्ता के साथ रहकर आप मजदूरों का जितना भला कर सकते हैं, उतना सत्ता के बाहर रहकर नहीं। क्या आप यह नहीं सोचते कि ऐसे मौके को नकारना गलत है।'

'आप मुझे परेशानी में डाल रहे हैं। एक तो आप इस की चर्चा आज करेंगे इसका जरा भी अंदाज मुझे नहीं था और आज तक सपने में भी मैंने इस बात पर नहीं सोचा था।'

'आपका रिऐक्शन एकदम विरोधी होगा इसे मैं अच्छी तरह जानता था। लेकिन आप सोच लीजिये वक्त ले लीजिये। हमारी पार्टी में आपको पूरा स्कोप मिलेगा।

कोस्टा सिर्फ हँस दिया।

और मैं आज आपसे यह बात कर रहा हूँ, उसकी भी वजह है।' आवाज धीमी करते हुए मुख्यमंत्री शिंदे ने कहा, 'अगले चुनावों को अब डेढ़ साल रह गया है। हमारी केबिनेट कैसी है यह आप दूसरों से ज्यादा जानते हैं। सारे सेटअप की मुझे पुनरचना करनी है। देखिये और सोच लीजिये।"

मुख्यमंत्री कुर्सी की पीठ से टिक गये और बोलना बंद करके हँस दिये। उन्हें इस बात की तसल्ली थी कि वे बातें जिस रुख में करना चाहते थे बातें उसी रुख में हुई। कोस्टा के चेहरे पर उनकी निगाह जमी हुई थीं। उसकी हड़बड़ाहट से वे समझ चुके थे कि आधी लड़ाई तो वे जीत चुके हैं। कोस्टा को लेने से पार्टी में काफ़ी विरोध होगा, इस बात को भी वे जानते थे। लेकिन उस विरोध को वे काबू कर सकते थे। केबिनेट बनाने में अध्यक्षजी का गुट आड़े आयेगा। पर देखेंगे। जो कुछ कहा है वह करना ही होगा। कोस्टा का क्या रिऐक्शन है देखना चाहिए। उसने हामी भले ही न भरी हो पर वह हायतोबा नहीं मचायेगा।

कोस्टा बोला 'मुझे सोचना होगा। आप जो कुछ कह रहे हैं उसमें वज़न है। लेकिन आपकी पार्टी के सेटअप में मुझे कहाँ तक स्वीकार किया जायेगा मैं नहीं जानता। एक कार्यकर्ता के तौर पर काम करने के बजाय यदि सरकार का प्रतिनिधि बनकर काम किया जाय तो कैसा रहेगा, मुझे इस पर भी सोचना जरूरी है।"

'आप जरूर वक्त लीजिये और सोचिये। कोई जल्दी नहीं है।'

"ठीक है, देखता हूँ। बस इतनी ही बात न ?"

मुख्यमंत्री हँस दिये और बात खत्म होने का संकेत देने के लिए उन्होंने दाईं ओर रखी फ़ाइल सामने रख ली।

ठीक है ' मुख्यमत्री ने कहा, पर जरा सभलकर रहिये। आप सोच भी नही सकते कितने दुश्मन आपने बना रखे हैं ।'

कोस्टा उठ खडा हुआ। मुख्यमत्री ने बैठे-बैठे ही हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ आगे कर दिया। फिर वे खुद ही बोले कोई बात नही। भले ही आपका हम पर विश्वास न हो पर हम आपको धोखे मे न रखेंगे।"

कोस्टा को उनका व्यग्य समझ मे आ गया लेकिन वह कुछ न बोला। महीने बाद मिलने की बात कह कर चला गया।

मुख्यमत्री शिदे तसल्ली से कुर्सी से टिक गये। घटी का बटन दबाया। चपरासी अदर आया और उसके पीछे शहाणे। केबिनट का एजेंडा उन्होने देखा। फाइलें भेजने की बात पक्की कर ली। उनको खुश देखकर शहाणे के चेहरे पर भी मुस्कराहट आ गयी। उन्होने कलाई की घडी देखते हुए कहा, तीन चालीस हो गया साहब। अब मत्री अभी अभी केबिनेट रूम मे दाखिल हुए है।

चलो अब चलते हैं कहते हुए मुख्यमत्री खडे हो गये। फिर हसते हुए शहाणे से बोले आई थिंक आइ हैंडल्ड हिम एक्स्ट्रीमली वेल।

जाते जाते दरवाजे पर रुके और शहाणे से फिर बोले बस सौदा जरा मॅहगा पडने वाला है पर देखते हैं।'

शहाणे सिर्फ मुस्करा दिये।

डी कोस्टा

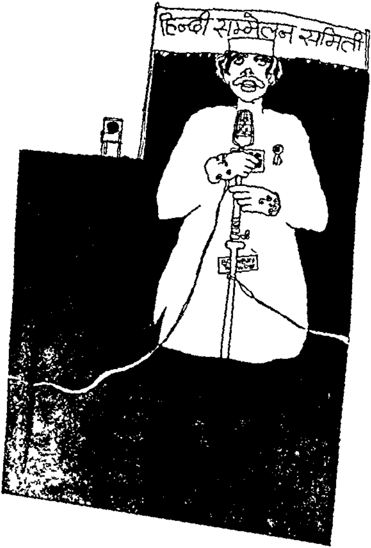
हिन्दी सम्मेलन समिती

डाकोस्टा जब कॅबिन के बाहर आया तो काफी परेशान था। उसे इसी बात की परशानी थी कि वह उनके सामने इस तरह ठडा कसे बैठा रहा। उसे या तो ज़ोरदार विरोध करना था या ज़ोर ज़ोर से हँसना था या फिर मुख्यमत्री का मज़ाक ही बनाना था। लेकिन हम कुछ बोले ही नही। मरे चुप रहने स हामी की गध आती है।

यह सोचकर वह हडबडा गया। क्या मैंने वाकई हामी भर दी है? असभव। सारी ज़िदगी मज़दूरो के लिए सरकार का विरोध करने म गुज़ार दी मत्रियों के खिलाफ भाषण दिये और अब उसी सरकार का साथ देना कोस्टा को जच नही रहा था। लेकिन अदर-ही-अदर उसे लगता था कि वह एकदम ठडा पड चुका है। उसे लग रहा था कि उसने कोई निणय ले ही लिया है जो तर्क से परे है। बिलकुल शारीरिक लालसा की तरह । ऊपर से क्रूर बनकर कितने भी निर्णय क्यो न ल लिये जायें पर जो निणय शरीर ल चुका है वह तबदील नही हो सकता। कदम तो शरीर के सकेतो पर ही चलत हैं। कोस्टा अपने-आप को बे-सहारा महसूस करने लगा था। फिर भी वह अपने-आप को समझाने की कोशिश कि रहा था। अभी निणय नही हुआ है। हम पूरी तौर पर विरोध मे खडे हो सकते हैं। सारी ताक़त के साथ विरोध करेंगे। यह तो लालच है—सरासर लालच। मेरा मुँह बद करने के लिए ही यह सब किया जा रहा है। यह नैतिक है गलत है। ज़िदगी को धोखा देने वाली हरकत है। इस तरह

हम मजदूरो के गले पर छुरी फेर देंगे। कोस्टा को हसी आ गयी। उसे लगा कि यह खयाल तो सभाओ म दिये जाने वाल भाषणो की तरह है। मज़दूरों के हितों का ही ध्यान रखना है तो मुख्यमत्री की बात स्वीकार कर लेनी चाहिए। सत्ता हाथ मे हो तो मज़दूरो का जितना भला कर सकत हैं उतना विरोध कर के नहीं। सत्ता स इतना घबराना पागलपन हागा। मुख्यमत्री की बातों म कुछ तो तथ्य है ही। हम लोग आदोलन किस लिए करते हैं? सरकार पर दबाव डालने के लिए ही न? हम खुद ही सरकार बन जायें तो हमारे काम का दायरा और भी बढ़ सकता है। तब सारे समाज को बदलने की बात हम कर सकते हैं। आज हम मज़दूरो और समाज को क्या दे सकते हैं? आदोलन हडताल, झगडे भाषण और भविष्य के लिए आशाएँ। सत्ता हाथ म रहे तो इन मज़दूरो का निश्चय

ही भला किया जा सकता है। सत्ता को वेश्या समझने का पागलपन कम से कम हम तो नहीं करेंगे। हर नये आदमी के लिए सत्ता कुंआरी कन्या की तरह होती है। बिना उसके हर पार्टी सत्ता के लिए झगड़ती है ? फिर हम ही सत्ता को क्यों अस्पृश्य मानते हैं ? मुख्यमंत्री के कहने म कुछ तो वजन है ही। शिंदे सैंसिबल आदमी है। कोस्टा को अजीब उत्साह-सा महसूस हुआ। हम भी जवान हैं। हम म ताकत है कुछ करने और बनने की जिद है। हम सच्चे हैं। उद्देश्य के लिए कुछ भी कर सकते है। सत्ता हाथ म हो तो हम क्या नहीं कर सकते ? परपरागत विरोध करने से क्या होना है ? उसे लगा कि दुनिया और फल गयी है। उसने लबा सांस ली। उसे लगा कि उसने निणय ले लिया है। अचानक जो कुछ हुआ पर उस अचरज था। निणय जब तक अमल म आयेगा तब तक वक्त लगेगा। इस पर मन सोच विचार म लगा रहेगा। कुछ दिन हम अनिश्चय की स्थिति म रहेंगे। कुछ व्यावहारिक दिक्कतें आयेंगी तो चुप लगा जायेंगे। आठ महीने म कुछ-न कुछ हो जायेगा। लेकिन असली निणय तो हो ही चुका है। कोस्टा कुछ उदास और निराश सा हो उठा।

रास्त म उसे एक पत्रकार मिला। कोस्टा की पुरानी पार्टी का ही था।

कहिये कोस्टा साहब ? आज सचिवालय म ?'

हां जी। यूनियन के लफडे न जाने कहां-कहां जाने को मजबूर करते हैं ?' कोस्टा ने उसका हाथ दबाते हुए कहा।

दोनो करीब के एक होटल मे चाय के लिए चल दिये।

कहो भई साने आजकल तुम्हारे पास कोई काम वाम नही है शायद ?' कोस्टा ने कहा।

पत्रकार हस दिया। वसे कोई खास काम तो नहीं है। अभी अभी एक मिनिस्टर की प्रेस-कांफ्रेंस खत्म हुई है। अब केबिनेट मीटिंग चल रही है। कुछ देर बाद ब्रीफिंग। वैसे एक सेंसेशनल खबर भी है।

कैसी ?'

तुम्हे बताने म कोइ हज नही है लेकिन किसी को बताना मत। अपना स्कूप है उसने धीमी आवाज म कहा। फिर बोला मुख्यमंत्री का बड़ा लडका बडा लफडेबाज मालूम होता है ? उसने फास म एक लडकी के साथ लफडा कर लिया है। सुनते हैं बाद मे पुलिस ने उसे पकड लिया। दन ही बाज फास्ड टु मरी।

अच्छा ? कहा से मिली खबर ?

है अपना भी एक सोस।'

तुम्हारा स्कूप है शायद ?'

'यस।

फिर तो मैं भी तुम्हें और जानकारी देता हूँ।"

एँ?"

यस।'

मतलब मेरी जानकारी सच्ची है ?

हाँ। कुछ तो ठीक है। पर तुम्हारे लायक़ जानकारी मेरे पास है। कहाँ से मिली, यह न पूछना। किसने बतायी यह भी किसी को न बताना।"

जो जानकारी कास्टा के पास थी वह उसने बता दी और साने खुश हो गया।

चाय पीने के बाद साने ने मुँह बनाते हुए कहा—

पार्टी क्या कहनी है जनाब ? स्साला फूटे मटके-सा हाल है। लगातार पानी चलता रहता है।'

अब और क्या हो गया ?

वही जी। जिसे देखा वही पार्टी छोड़कर चल देता है। सीधे सरकार की पार्टी में शामिल हो जाता है। सरकार टुकड़ा डाल देती है और लालची उधर ही बढ़ जाते हैं।

इसमें नयी बात कौन सी हो गयी! यह तो पुरानी चाल है।'

'मतलब, तुम्हें मालूम नहीं है ?'

"क्या ? आजकल पार्टी के लोग मुझसे बातें ही कहाँ करते हैं ?"

पर यह तो हर जगह हो रहा है। हमारे आल इंडिया सेक्रेटरी भी अब पार्टी बदल रहे हैं। सुनते हैं उन्हें किसी सेंट्रल कमेटी की मेंबरशिप दी जा रही है।'

'सच ?'

सच, मतलब एकदम सही। अब अपनी ही पार्टी की बदनामी होती है इस वजह से मैंने कुछ छापा नहीं। क्यों झंझट मोल लूँ ? अब दिल्ली से खबर आ जाये तो देखना कम छापता हूँ। दिल्ली का समाचार बम्बई से!'

'अच्छा, यह तो मुझे मालूम ही न था।"

'इससे तो हम अच्छे हैं। राजनीति ही छोड़ दी। सच देखा जाय तो अब किसी में विरोधी पार्टी के तौर पर जीने की हिम्मत ही नहीं बची।'

कास्टा कुछ देर चुप रहा। साने की बातें सेक्रेटरी को लेकर थी लेकिन उसे भी चुभ रही थी। कुछ सोच कर वह बोला—

"क्या कहते हो साने? किसी को लगता हो कि उसके विचार सरकार

म शामिल होकर पूरे हो सकत हैं तो उधर जाने म हर्ज ही क्या है ? पार्टी कर ही क्या सकती है आखिर ?"

अरे सब चोर हैं। काहे के विचार। सब एक नम्बर के ढोंगी हैं। स्वार्थी स्साले !' सान गरम हो गया। वह लगातार सिगरेट के कश खींचे जा रहा था।

कोस्टा न कहा "अरे सभी को गालियाँ क्यों दे रहे हो ? कम-से-कम अपने सेक्रेटरी के बारे मे तो ऐसा नही कहा जा सकता।'

'सुनो कोस्टा, यह तुम मुझसे न कहो' साने न गुस्से से कहा। उसे तो मैं तुमसे ज्यादा जानता हूँ। तुम जब बम्बई आये भी न थे तब म वह मेरे साथ काम करता था। अब मुझसे ज्यादा न कहलवाओ। वह कौन है कैसा है मैं अच्छी तरह से जानता हूँ। उसके विचार क्या हैं यह भी खूब जानता हू। मुझे तो आश्चर्य इसी बात का है कि अभी तक वह पार्टी म बना कस रहा ?

कोस्टा न लंबी साँस ली और चुप हो गया। साने ने आगे कहा, 'और सरकार म जाकर यह लोग करेंगे भी क्या ? यहाँ स वहाँ तक सब गडबड है। तुम क्या जानते नही हो ? तुम खुद ही कहते रहते हो। और ये लोग उसी माहौल मे जाकर बठने वाल हैं। अपनी पार्टी से गये हुए लोगों का रिकाड निकालकर देख लो। मोटर बँगला, जमीन—यही हैं उनके विचार ? सब के पौ बारह।

हाँ यह बात तो ठीक है। कुछ लोग ऐसे ही होते हैं। लेकिन हरेक का एक माला म तो पिरोया नही जा सकता ? तुम क्या समझते हो कि पार्टी स जाने वाले लोगों का कोई लक्ष्य नहीं है ?'

यही तो मैं भी कहता हूँ। पार्टी की यह हालत किसने कर दी ? इन्ही लोगो ने न ? सत्ता मिलने के सपने देखते हैं और चल देते हैं।'

कोस्टा चुप बठा रहा। साने की बातों का व्यंग्य वह अपने पर समझ रहा था। वह जानता था कि साने प्रतिक्रियावादी है। कुछ सावधानी के साथ वह बोला—

'हम तो तुम्हारी बातें जचती नहीं। मैं यह नही कहता कि सत्ताधारी लोगो म भ्रष्टाचार नही है। लकिन हमारी पार्टी म क्या कम गडबड है ? जरा पिछली बातें याद करो। सत्ता नही थी तो भी पसो की कसी गडबड हुई थी। भ्रष्टाचार तो राजनीति का एक अभिन्न अंग बन गया है। वह कम कसे हो सकता है, यही देखना है। पर असल बात यह नही है। जिन्हे कुछ करना है क्या वे पार्टी म रहकर कुछ कर सकते हैं ? सत्ता हासिल करके ही वे कुछ कर सकत हैं। जरा सोचो, काम करने वाले यदि सत्ता

म होते तो आज दुनिया कुछ और ही होती। लेकिन वे तो पार्टी के साथ ही मर-खप गये।'

साने परेशान हो गया। लेकिन फिर भी हँस पड़ा। वह कुछ तैश म बोल गया था। लेकिन कोस्टा की बात वह मानने को तयार न था। कोस्टा ने भी कोशिश छोड दी। लेकिन उसे अपनी बातें जरूर जँच गयी थीं। साने ने व्यंग्य करने की कोशिश की, लेकिन कोस्टा ने अपने को परेशान न होने दिया। जाते जाते साने ने कहा तुम्हारी बातें ठीक नहीं लगतीं।'

क्यों, क्या हुआ ?

जान जाओगे। तुम जो कुछ भी बोले हो, उससे मैं सब कुछ समझ गया हूँ।

कोस्टा हँस पड़ा 'अरे छोड़ो भी। मैं तो राजनीति कभी की छोड़ चुका हू। अपनी यूनियन सलामत तो हम सलामत। तुम पत्रकार बने रहो, बस।'

'देखते हैं।'

और कोस्टा अपने आफिस की ओर चल दिया। चार बज चुके थे। रघू से मिलकर और कोर्ट जाने के बाद उसकी नसें बुरी तरह से तन गयी थीं। सिर भन्ना गया था। रघू पर गुस्सा आ रहा था। लेकिन अब जरा तसल्ली-सी महसूस हो रही थी। जैसे तूफान खत्म हो गया हो। जैसे नदी की बाढ खत्म हो गयी हो। जैसे विनीता के साथ रात बिताकर सुबह हो गयी हो। जैसे भीड़ भाड़ वाले रास्ते से शब्दहीन शांतिपूर्ण। एयरकंडीशंड कमरे म आ गये हों।

सुबह सिल्विया की आरजू गंगाराम की मौत दयानंद पानिटकर की घबराहट नीला को डिक्टेशन कोर्ट म केस, रघू से मुलाकात उसके आरोप —सारी ही परेशान करने वाली बातें वह भूल गया हो, ऐसी बात नहीं थी। लेकिन अब उन यादों से वह परेशान न हो रहा था। उसके मन की हल-चल जैसे रुक गयी थी। पहले वाली उदासी जाती रही थी। सच पूछा जाय तो सारी परेशानी पैदा हुई थी मुख्यमंत्री से मुलाकात के दौरान उनकी बातों से। बातों की बातें रोजाना ही होती रहती हैं।

कोस्टा को रघू की बातों पर हँसी आ गयी। पहले उसे जरा अपराध भाव महसूस होता था। रघू जो कुछ बोलता था उसका असर हक जमा होता था। उसकी बातों म कुछ वज़न जरूर था। अब उसे हँसी आ रही थी। अब अगर वह मिला तो उसे परेशान कर देंगे। वह जरा भावुक ज्यादा है, अव्यावहारिक है। वह सिर्फ किताबी कीड़ा है। उसे दुनिया का कोई अनुभव नहीं है। उसके हाथ से तो देश का नुकसान ही ज्यादा होगा।

अब मिला तो उससे यह बात कहनी होगी। लेकिन उस वक्त इतना हौसला क्यों नहीं हुआ था ?

और कल अगर अय्यर आ गया तो उसे वह फाइल पूरी तरह दी जा सकती है ? कोस्टा सोच में पड गया। यह एक दूसरा ही सवाल था। अपनी मुहिम का क्या होगा ? उसे तो जारी रखना होगा। लेकिन उसे खास मुकाम पर मोड देना भी जरूरी है। कोस्टा बेचैन हो उठा। सत्ता आते ही क्या हम दिशा बदल देंगे ? लेकिन फिर उसे अपने पर ही तैश आने लगा। हम कहीं अपनी दिशा तो नहीं बदल रहे ? दिशा तो वही है, रास्ता जरूर बदल रहा है। अय्यर के आने पर कल देखेंगे।

कोस्टा आफिस में पहुँचा तो दरवाज़े पर ही हमीद मिल गया। दरवाज़े पर बैठा वह बीडी पी रहा था। कोस्टा को देखते ही उसने वहीं ज़मीन पर बीडी घिसकर बुझा दी। बीडी का टोटा वापस फटे कुरते की जेब में रख लिया। खडे होकर उसने कोस्टा को सलाम किया। दरवाज़े के करीब वामन भी खडा था। सच पूछा जाये तो सुबह कोस्टा ने दोनों को पीटने का हमला किया था।

लेकिन अब पीटने का मूड न था। उसने सिर्फ नाराज़गी दिखायी। दूसरी तरफ कोने में नीला और एक दो लडकियां बैठी हुई थीं। इस वजह से गाली देने का मौका भी नहीं था।

साले दारू पीते हो। घर में तो खाने को नहीं है। मटका लगाते हो। लग जाय तो दारू पीते हो। शराब पीकर काम पर जाओगे तो कोई भी लात मारकर भगा देगा। अब मेरे पास आ रहे हो ? क्यों बे वामने तेरी मां को टी० बी० है न ? उसकी दवा दारु करने के बजाय दारू पीते हो ? बेशरम कहीं के ! फिर नज़र आये तो मुझसे बुरा कोई न होगा। यूनियन के लोग तुम्हारे वास्ते चंदा करते हैं ? चलो भागो यहाँ से। यूनियन को तुम जैसे गद्दारों की कोई ज़रूरत नहीं है, सूअर कहीं के !

डांटते डपटते कोस्टा केबिन में घुसा। उसके पीछे कांपते और आंखें पोंछते हमीद अंदर आया। माफ करना, साब। अल्ला कसम अब शराब मैं देखूंगा तक नहीं साब !’’ कहते हुए वह अपने मुंह पर थप्पड लगाने लगा। वामन भी अंदर आया और उसके पीछे पीछे दूसरे मज़दूर भी किसी न किसी काम से अंदर हो लिये। केबिन बंद होने पर कुर्सी पर बैठते हुए कोस्टा ने चार छह तीखी गालियां सुना डालीं।

फिर कुछ नरम पडकर वह बोला, गधो, तुम लोगों को तो अक्ल है ही नहीं। खाने को तो मिलता नहीं, दारू ज़रूर पीते हो। कौन रखेगा ऐसों को नौकरी पर ? ज़रा तो आदमी की तरह रहो। घर पर तुम्हारे बाल

बच्च ह। अब क्या चोरी करोगे या डाका डालोगे ? कबख्त स्साले।'

हमीद और वामन ने फिर शराब न पीने की क़सम खायी। वे दिल से कसम खा रहे हैं इस बात का कोस्टा खूब जानता था। लेकिन कब अगर मटका लग जाये तो वे फिर शराब की ओर बढ जायेंगे यह भी वह अच्छी तरह जानता था। कोई इलाज न था। शराब की आदत क़सम खान स तो जाती नही लकिन इन्हें काम पर न लगाया जाये तो स्साले या तो चोरी करन लगेंगे या और भी बिगड जायेंगे।

अगर फिर कभी तुम्हारे मुह स दारू की गध भी आयी तो पहल अच्छी तरह से मरम्मत होगी फिर पुलिस म द दूँगा समझा।' कोस्टा न चेतावनी दी। हमीद और वामन ने फिर कान पकड़े और क़सम खायी।

फिर कोस्टा ने घन्टी बजाकर आफिस-सेक्रेटरी का बुलवा लिया। कुछ पूछन म पहले ही सेक्रेटरी बोला। साहब,इस हमीद का रिकार्ड बहुत खराब है। छह जगहों पर य शराब पीकर गया और वहाँ से निकाला गया है। अब इस कोइ रखने क लिए तयार ही नहीं होता।

कोस्टा न हमीद की ओर देखते हुए एक तीखी गाली द दी।

ठीक है आज पोस्टर लगाने का काम है न ? वही दे दो इस हरामजादे को सिर्फ आज के लिए। बाद म देखेंगे।

हमीद कोस्टा के पाँव पकडने लगा तो कोस्टा ने उसक बाल खीचकर उस उठाया। फिर आँखें तरेरकर वामन से बोला हरामखोर अब फिर मटका लगाना। फिर बताऊँगा।' फिर कोस्टा दूसरे मजदूरों की ओर मुडा।

किसी की नौकरी किसी की अर्जी किसी की शिकायत यूनियन की रिपोट किसी की पैसे खाने की शिकायत बोनस के झंझट। तरह नबर क कारखान म मजदूरों म छँटनी होने वाली थी। उसके लिए आज मीटिंग थी। उस मिल का हिसाब किसी की मांग किसी का और कुछ। लगभग डेढ घटा इसी गडबडी म बीत गया। फिर भी मजदूरों की भीड कम न हो पा रही थी। आखिर उसने कहा 'अब बचे हुए लोग कल आना घर पर। आज मुझे और भी काम है।' इस पर भीड कम हो गयी।

भीड हटने पर नीला फाइलें लेकर अन्दर आयी। नीची गदन किय उसन फाइलें टेबिल पर रख दी और हसकर ऊपर देखा। कोस्टा उसी की ओर देख रहा था। वह भी हँस दिया। फिर थोडा सकपकाया। निणय लने की बारी आ ही गयी तो ? आज ऐसा क्यो हो रहा है ? आज तक तो कभी ऐसे खयाल मन म आये नही।

हाथ ऊपर कर कोस्टा ने एक लबी जम्हाई ली। फिर बोला, "हूँह। आज नहाया ही नही।

'गद हैं आप बड़े।'

क्या ? क्या हुआ ?' कोस्टा ने हँसते हुए पूछा।

आपको तो कुछ है ही नही काई कायदा ।'

'किसी ने सिखलाया ही नही।'

कौन सिखलायगा ? जरूरत ही क्या है ?"

नही है ?"

मन म हो तो सब कायदा जाना जा सकता है।'

हम तो बस यो ही हैं। काहे का कायदा-वायदा ? और अपनी फिक कौन करता है ?

वाह। ऐसा क्यो कहते हैं ?'

यो ही ।'

इसलिए इस तरह रहना चाहिए ?

एक दिन न नहाया जाये तो क्या बनने बिगडने वाला है ?'

मैं सिफ नहाने की बात नहीं कह रही हूँ। और भी बातें हैं। बवक्त ना रहना सब-कुछ। आदमी को ढग स तो रहना चाहिए न ?

मुझ जसे आदमी के लिए क्या ढग वग ? न घर है न फैमिली। ऐसे ठीक हैं।

हुह !'

फिर हाथ ऊपर करके कोस्टा हस दिया। फिर थोडा सकपकाया। ला के साथ इतनी गभीरता से बातें न करनी थीं। वह आज ऐसे क्या ल रही है ? वह बेहद सेंसेटिव है। अपने मन की बातें चाहे न बतलाये किन मुझ पर एतबार जरूर है उस। मैं बस हाथ आगे कर दूँ लकिन मन हा होना। नीला मुझे ठीक लगती है। इसलिए मन म आने वाले खयालों ो मन-ही मन दबा देना पडता है। शादी बगर उसका स्पश गुनाह क्यों गता है ? और विनीता के रहते उसके साथ शादी कैसे हो सकती है ? ीर आज लिया हुआ निणय ? नीला को वह रुचेगा ? उसकी प्रतिक्रिया या होगी ?

कोस्टा ने दोनो हाथ टेबिल पर पटक दिये। हथलियां मसली और ीर तजी से बोला चलो, जल्दी निबटाना है। आज का क्या काम है ?"

नीला ने एक-एक कागज उसके सामने रखने शुरू कर दिये। कुछ अपने नाय ड्राफ्ट कुछ कोस्टा की सुबह दी गयी डिक्टेशन के कागज कुछ पुरानी ाइलें और कुछ नयी। कुछ खत। कोस्टा ने जल्दी स दस्तखत किये। ीला के तैयार ड्राफ्ट पढे और बहुत अच्छा कहकर नीला को दाद दी। ुछ इधर उधर की गलतियाँ ठीक की। फिर दोपहर आये खत देखने

लगा। किस प्रश्न का क्या जवाब दिया जाये, यह भी बताया। तभी फोन की घंटी बज उठी। नीला ने हाथ बढ़ाया तो उसके पहले ही कोस्टा ने रिसीवर उठा लिया। वह जानता था कि यह विनीता का फोन होगा।

हलो, कोस्टा हीअर।

हलो डार्लिंग ! हाऊ आर यू ?"

कोस्टा ने नीला की ओर देखा। वह उसी की ओर देख रही थी। कोस्टा उसकी ओर देखकर मुस्कराया। फोन पर बोला 'हाऊ आर यू ? फिर माउथपीस पर हाथ रखकर नीला से बोला 'आंटी आज छोड़ेगी नहीं। बुढ़िया खाने पर बुला रही है।

हलो डीयर ! आज शाम मुझे जरूरी काम है कोस्टा फिर फोन पर बोलने लगा।

ओ नो।' दूसरी तरफ से विनीता ने मिन्नत की 'मैं आज तुम्हारी एक न सुनूँगी। तुम्हारी गेट-मीटिंग कितने बजे है यह मुझे मालूम है। उसके बाद कौन-सा काम है ?'

'सच कह रहा हूँ। कुछ एपाइंटमेंट्स हैं।

झूठ न बोलो कोस्टा। मुझे अब शंका होने लगी है तुम किसी नयी छोकरी के चक्कर में तो नहीं हो ?'

कोस्टा ने फिर नीला की ओर देखा और हँस दिया। फिर फोन पर बोला 'तो भी क्या ? तुम जलती हो न ?'

'जहाँ भी होगे वहाँ से खींच लाऊँगी।'

'माई गाड ! तुम तो बिलकुल आंटी लगती हो।"

दूसरी तरफ से विनीता जोर से हँस दी।

ओ नॉटी मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि कहीं भी चले जाओ पर आओगे मेरे पास ही' विनीता की आवाज बदली हुई थी। मिन्नत करते हुए बोली 'मैंने कभी ईर्ष्या की है कोस्टा ? तुम मुझे बताकर कहीं भी चले जाओ।'

कोस्टा जोर से हँस पड़ा। उसकी यह हँसी नीला को पसंद है। इस हँसी से उसके बदन में रोमांच हो आता है। कोस्टा दिल खोलकर हँसता है। बच्चे जैसी हँसी। मौका आने पर कोस्टा कितना झूठ बोलता है, यह भी नीला जानती है। उसे विश्वास नहीं था। कोस्टा की शिवाजी पार्क की आंटी पुरानी थी। लेकिन कोलाबा की यह आंटी नयी थी। फिर कोस्टा और विनीता के संबंध ऑफिस के हर आदमी को मालूम थे। नीला ने विनीता के कई फोन सुन लिये थे। लेकिन संबंध कितने गहरे हैं इस बात को वह न जानती थी। उसका फोन आता था तो वह परेशान हो जाती

थी। उसके दिल की हालत अजीब हो जाया करती थी। पर इलाज न था। कोस्टा की हँसी सुनकर उसे लगता कि सब कुछ माफ कर दिया जाय।

घबरा गयी?" कोस्टा ने फोन पर ही हँसते हुए पूछा।

ना। आज शाम आ रहे हो या नहीं, बताओ? अगर ना करोगे तो तुम्हारे आफिस या गेट मीटिंग में गाड़ी लेकर आ जाऊँगी और अच्छा खासा सीन खड़ा कर दूँगी।'

'अरे भाई आ जाऊँगा। तुम नहीं जानतीं, तुम्हारे लिए कितने एपाइंटमेंट्स रद्द करने पड़ेंगे।'

कोई नहीं, हम लोग परसों ही तो तय कर चुके थे। और रद्द भी कर दो तो कोई हर्ज नहीं। मेरे लिए इतना तो करना ही होगा।

ठीक है ठीक है पर ज्यादा वक्त नहीं है मेरे पास। आज किसी भी हालत में आंटी पगी के पास जाना ही होगा। वह बुढ़िया बेहद नाराज हो गयी है। माउथपीस पर हाथ रखकर नीला से बोला, उसे बुढ़िया कहा जाये तो यह खुश हो जाती है।

वह तो देख लेंगे। पहले तुम आओ तो सही। आज का मिलना जरा जरूरी है।

हमेशा ही जरूरी हुआ करता है।

'नहीं। आज खास वजह है।

'क्या, क्या बात है?'

'मुझे तुमसे एक खास मसले पर सलाह लेनी है।'

मेरी सलाह? तुमने मुझसे कभी भी किसी भी मसले पर सलाह नहीं ली है। उल्टे तुम जरूर सलाह दिया करती हो।

बेकार बातें न करो। आओगे तो पता चल जायेगा।

पर कुछ तो हिंट दो।'

फोन पर नहीं बताती। मेरे बाप ने मुझे बेकार ही लफड़े में उलझा दिया है।

'मतलब?"

आने पर बताऊँगी।

ओ के। सी यू डार्लिंग, बाई।

बाई!

कोस्टा ने फोन नीचे रख दिया। चेहरा सख्त बना लिया। फिर फुसफुसाया, 'स्साला जिसे टालना चाहता हूँ, वही अटक जाता है।' फिर नीला की ओर देखते हुए बोला, सच कहता हूँ कि किसी प्रेमिका को झिड़का जा सकता है। लेकिन ये बूढ़ी आंटियाँ बड़ी चिपकू होती हैं।'

नीला भी हँस दी।

कोस्टा फिर काम में तेज़ी से जुट गया। एक-दो जरूरी ड्राफ्ट नीला को लिखवाये। तभी कुछ मिलने वाले लोग आ गए। लोग दरवाज़े से अंदर झाँकने लगे थे। तेरह नंबर के कारखाने का सेक्रेटरी भी एक बार अन्दर झाँक गया था। कोस्टा ने सारा काम तेज़ी से खत्म कर लिया। वक्त हो रहा था। मीटिंग में जाना ज़रूरी था।

नीला फाइलें समेटने लगी तो कोस्टा ने कहा, 'थैंक्स नीला। मेरा आधा काम तो तुम ही कर देती हो।'

नीला हँस दी। 'आपको वक्त लगेगा। गेट मीटिंग है।"

'हाँ है। पर उठने की तबीयत ही नहीं होती।'

'चलिये उठिये अब।'

नीला ने फाइलें उठायीं और केबिन से बाहर आ गयी। कोस्टा कुछ न बोल पाया। तभी दो-तीन लोग अंदर आ गये। तेरह नंबर की यूनियन के सेक्रेटरी ने कहा 'चलिये कोस्टा साब वक्त हो चुका है।"

'बस चलते ही हैं। आप लोगों का क्या काम है?' दूसरे लोगों की ओर देखते हुए कोस्टा ने पूछा।

'साब नौकरी चला गया।'

'दूसरी यूनियन के लोग बहुत तंग करने लगे हैं साब मिल में।'

'अरे कल सुबह आना दस बजे यहाँ पर। अभी तो मीटिंग में जा रहा हूँ।'

कोस्टा उठ गया। केबिन से बाहर आया तो और दो तीन ने उसे घेर लिया। उनसे बातें करते-करते ही वह बाहर आ गया।

सीढ़ियों पर आते हुए बोला 'अरे आज जीप नहीं है। ज़रा टैक्सी देखो। मैं आ ही रहा हूँ।'

फिर सीढ़ियाँ चढ़कर वह ऑफिस में आ गया। नीला निकलने की तैयारी कर रही थी। जेब से एक कागज़ निकालकर उसने नीला को दे दिया। 'अलमारी के बीच वाली फाइल में रख देना इसे।' उसने फिर से ड्राअर खोला चाबियाँ निकालीं और अलमारी खोलकर उस फाइल में वह कागज़ रख दिया। अलमारी बंद करके चाबियाँ वापिस ड्राअर में रख दीं। कोस्टा वहीं मँडरा रहा था। नीला ने हँसकर कहा 'बस?'

'थैंक्यू।'

कोस्टा उससे बातें करना चाहता था। विनीता का फोन आने के बाद उसे नीला से बातें करने का मन हो रहा था। उसमें अपराध भाव जाग रहा है। वह नहीं समझ पा रहा था नीला आखिर है क्या?

‘ज़रा बातें करनी थी।

‘फिर?”

अभी तो वक्त नहीं है। कल शाम का वक्त खाली रखता हूँ। तुम भी खाली रहना।”

किस बारे में बातें करना चाहते हैं?

‘आज चीफ मिनिस्टर से बात हुई न उसी के बारे में।

नीना का चेहरा एकदम खिल गया। ‘मैं सोच रही थी पूछना भी चाहती थी। लेकिन सोचा आप खुद ही बतायेंगे।

फिर पूछा क्या नहीं?”

‘ऊहूँ।

ठीक है कल बातें करेंगे। घर पर ही जा रही हो न? टैक्सी से छोड़ दूँ।’

‘नहीं, आपको देर हो जायेगी।

कोस्टा सीढ़ियाँ उतर गया। पहले वाला अपराध भाव अब नदारद था। नीना बोलती नहीं पर हमेशा मेरा खयाल रखती है। लेकिन मैं क्या उसके बारे में इतना सोचता रहता हूँ? उसके हाथ और बाल हमेशा नज़रों के आगे क्यों आ जाते हैं? विनीता और दूसरा कोई इस तरह दिमाग पर असर क्या नहीं डाल पाते?

टैक्सी में बैठने के बाद तेरह नंबर के सेक्रेटरी ने कहा कोस्टा साहब उन लोगों ने बिलकुल गलत हिसाब दिखलाये हैं। एकाउंट सेक्शन के कुछ लोग हमारे भी पहचान के हैं। उनसे हमने सारे हिसाब ले लिये हैं। एक के भी रिट्रेंचमेंट की ज़रूरत नहीं है।”

फिर?

नोटिस लगा हुआ है।’

देखते हैं। मैनेजर कौन है?

वही लालूभाई।’

अच्छा वह! अभी तक वह बात नहीं भूल पाया? इस बार तो साल को छकाकर ही छोड़ेंगे। उसकी सारी पोल पट्टी अपन को मालूम है कोस्टा ने कहा। फिर कुछ क्षण रुककर बोला पहले घेराव करेंगे फिर स्ट्राइक की सोचेंगे। आप लोगों की स्ट्राइक की तैयारी तो है न?

सेक्रेटरी ज़रा सोच में पड़ गया। फिर बोला घेराव डिमांस्ट्रेशन गेट मीटिंग तो ठीक है। लेकिन इस बार स्ट्राइक ज़रा मुश्किल ही दिखती है।

कोस्टा भी सोचने लगा। फिर उसे अचानक जैसे कोई बात याद हो

आयी। वह बोला, ठीक है। स्ट्राइक की तयारी नहीं तो कुछ और सोचा जायेगा। वसे भी स्ट्राइक पर मजदूरों क हाल दखे नहा जात।"

फिर कुछ देर बाद उसने सेक्रेटरी से कहा हम लाग स्ट्राइक की धमकी देंगे। स्ट्राइक न हो यह मैं देख लूगा। आज ही मैं मुख्यमत्री स मिला हू। तुम तो जानते ही हो वह अच्छ आदमी हैं। मिल की बात चली थी। तब मैं मिल क हिसाब की बात नहीं जानता था। उन्होंने देखन की बात कही है। लेकिन मैं सोचता हूँ कि यदि उन्हें हिसाब वाली बात बता दी जाये तो वह जरूर इस मसल को देखेंगे। ठीक है न ?"

कुछ भी कीजिये, कोस्टा साहब पर स्ट्राइक मुश्किल है। और अगर कुछ हो गया तो लालूभाइ लाकआउट क लिए तैयार बठा है।'

अरे उसके बाप की हिम्मत नहीं। देखना तो सही, कसे हडिल करता हू स्साले को। आज मुख्यमत्री से मिलना अच्छा रहा। सच पूछा जाये तो वह अपनी ही तरफ है।'

आप कुछ भी कह लीजिए कोस्टा साब स्ट्राइक का नाम सुनते ही लाग तैयार जरूर होते ह पर परेशान हो जाते ह। सभी मन म डरते रहत ह। लेकिन यूनियन क लिए तयार हो जाते ह। आग कुछ हासिल हान की आशा बंधी होती है। वसे स्ट्राइक कोइ पसद नहीं करता।

हाँ बात सच है। मुफ कौन स्ट्राइक से मोह है। लेकिन वही एक हथियार है। मालिक लोग उसके बगर काबू म आ ही नहीं पात। फिर इधर वे मुँहजोर भी हो गए हैं। हमारा तो सिस्टम हमार आड आता है," कहते हुए कोस्टा सकपकाया। जरा सोच म पड गया। पास म कौन बठा हुआ है यह भी भूल गया। और सडक की ओर देखत हुए खुद ही फुसफुसाया अरे अब हम कवर भी ढील पड गय हैं। मार सहने की हिम्मत अब नहीं रही। मालिक जरा सा लालच दे दे तो हम लोग भौंकना बद कर दते हैं। सब-कुछ हासिल करन की ज़िद ही जसे खत्म हो गयी ह। साला वह रघू कौन झूठ बोलता है। उसके कहने में भी कुछ सच्चाई है। सिस्टम बदलन की ताकत हम लोगों म नहीं है। देखत हैं। तुमने तो खुद इतन लीडर देखे है पर कभी किसी ने यह बात पूरी तरह सोची है ? साले क्या करेंगे ? यह सब तो होता ही रहता है। हम भी तो इसी सिस्टम की पैदावार हैं न ? अय्यर लीडरों को कायर कहता है तो दूसरे अथ म। लेकिन वह भी सच है। फिर अय्यर को वसा कहन का अधिकार ही क्या है ? लेकिन सवाल अधिकार का नहीं है। वह जसा समझता है वसा ही बोलता है। हमारे पास जवाब नहीं है। सिर्फ एक दिन की टोकन स्ट्राइक हम लोगों को मुश्किल पड जाती है न ?'

मिल का गेट आने तक कोस्टा बड़बड़ाता रहा। बीच-बीच में सेक्रेटरी हाँ-हूँ किये जा रहा था। कोस्टा की बातों का वास्तविक अर्थ वह नहीं समझ पा रहा था। कोस्टा को भी इसकी खास फिक्र न थी।

गेट पर खास भीड़ न थी। कुछ मजदूर इकट्ठा हो गये थे। काल-साल झंडे थे। कोस्टा ने अपने खास स्टाइल में भाषण दिया। मैनेजर का मज़ाक बनाकर मजदूरों को हँसाया। सरकार पर आरोप लगाये। भ्रष्टाचार और स्मगलिंग के एक-दो किस्से सुनाये। और इसी बीच उसने अपना स्वर ऊँचा किया। फिर वह मिल के विषय पर आ गया। एक मजदूर को तो निकाल, फिर हम देखते हैं। दो दिन के ही भीतर नोटिस वापस न करा दिया, तो हमारा नाम नहीं।' फिर मजदूरों को दिलासा दिया कि उनकी बातें ऊपर तक पहुँचा दी जायेंगी।

मजदूर खुश हो गये। सबके चले जाने के बाद कोस्टा ने सेक्रेटरी से कहा 'कल सब हिसाब ले आना। देखते हैं क्या कर सकते हैं। खुद मुख्य मंत्री से ही बीच-बचाव के लिए कहता हूँ।

वहीं कुछ और हिदायतें उसने सेक्रेटरी को दीं। अखबार के लिए दिये जाने वाले समाचार को वहीं डिक्टेट करवाया। और भी दो-तीन मिलों की यूनियन के सेक्रेटरी आये हुए थे। सेंट्रल यूनियन की मीटिंग कब हो इस बारे में कोस्टा ने उनसे चर्चा की। पास के ही एक होटल के बाहर खड़े होकर उसने आलू-बड़े खाये। फिर उन्हें विदा करके टैक्सी में बैठकर कोलाबा की ओर चल दिया। विनीता से मिलने जाते समय उसका मन हमेशा ही खुश हो जाता था। वैसे विनीता से बातें करने, उसे स्पर्श करने या उसे चूमने के दौरान नीला की याद ज़रूर उभरती है। वैसे विनीता के पास होने से उसका तनाव ज़रूर कम हो जाता है। लेकिन आज उसे मेरी सलाह चाहिए। विनीता दूसरों को सलाह देने वाली लड़की है लेकिन आज उसका स्वर फोन पर बदला हुआ लग रहा था। होगा कुछ। वही बतायेगी। अभी से दिमाग क्यों परेशान करें? लेकिन आज ज्यादा देर बैठ न सकेंगे। किसी भी हालत में आंटी के यहाँ जाना ही होगा। विनीता नाराज़ नहीं होगी। परसों पूरी रात उसके साथ बितायी थी। बड़ा मज़ा आया। उसने इस खयाल को तत्काल झटक दिया। अगर उसी खयाल में डूबे रहे तो आज भी बँध जायेंगे और आंटी के यहाँ नहीं जा पायेंगे। पर विनीता के साथ मज़ा बड़ा आता है। और नीला कैसी होगी? बड़ी कोशिश से उसने यह खयाल अंदर ही अंदर दबा दिया। आज विनीता सीरियस है। वजह? उसके पेट में अजीब हलचल-सी पैदा हुई। उसने कहीं हाथ पकड़कर शादी की बात की तो?

कोस्टा होटल के करीब पहुँचा तो सामने ही विनीता की सफ़ेद मर्सीडीज़ खड़ी नज़र आयी। मतलब वह अन्दर बैठी होगी। बॉय ने दरवाज़ा खोलकर सलाम किया। हमेशा की तरह बरामदे के कोने में एक कुर्सी पर विनीता धूमिल उजाले में बैठी हुई थी। हल्का संगीत चल रहा था। उसने चम्पई रंग का बेल-बॉटम पहन रखा था। ऊपर स्लीवलेस ब्लाउज़। कोस्टा को देखते ही उसने हाथ ऊपर किया और उस धूमिल उजाले में उसकी गोरी बाँह नज़र आ गयी। कोस्टा की साँस तेज़ हुई। हमेशा यही होता है। विनीता की यही विशेषता है। और किसी भी लड़की में ऐसा अन्दाज़ नहीं। और किसी लड़की ने कोस्टा को इतना पागल नहीं बनाया था। आज तो विनीता ने अपने लम्बे रेशमी बाल भी खोल रखे थे जो उसकी पीठ पर लहरा रहे थे। इस वक्त अगर विनीता कहती तो कोस्टा उसके तलवे भी चूम लेता।

वही कोशिश करके कोस्टा ने अपना चेहरा गंभीर बनाया। उसने हाय कहा तो उसने सिर्फ़ गर्दन हिलायी। कुर्सी पर करीब बैठने पर उसने कहा 'सुन्दर दिख रही हो।'

विनीता उसके मन की बात ताड़ गयी। कुछ पल उसकी ओर सख्त चेहरे से देखती रही। फिर आँखें नचाते हुए बालों को एक खास नज़र के साथ झटका देकर बोली 'बस?'

कोस्टा पिघल गया। अँधेरा होता तो वह विनीता को अपने करीब कर लेता। वैसे अभी भी ऐसा करने में कोई हर्ज न था क्योंकि उस बरामदे में दूर-दूर रखी कुर्सियों पर सभी यही किये जा रहे थे। लेकिन कोस्टा के लिए कुछ नियम-कायदे थे। उसने होंठ चबाते हुए उसका हाथ पकड़ लिया और खुलकर हँसते हुए विनीता ने अपना हाथ एक खास अन्दाज़ के साथ छुड़ा लिया।

'यू आर जस्ट ए चाइल्ड' उसने हँसते हुए कहा।

कोस्टा भी हँस दिया। जो वह कहे वही सही। इस वक्त तो वह रानी और मैं गुलाम। उसके सामने वह ऐसा कमज़ोर क्यों हो जाता है? इतनी लड़कियाँ देखीं लेकिन यह मुझे कहती है 'जस्ट ए चाइल्ड।' वह फिर उसकी ओर देखने लगा। दिन भर की थकान और परेशानियाँ जैसे हवा हो गयीं। सच पूछा जाये तो अब इस संगीत की भी ज़रूरत नहीं थी। कोस्टा ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया।

खाने का आर्डर देकर विनीता गंभीर हो गयी। बोली 'मेरा बाप मुझे एक लफड़े में उलझाना चाहता है।' बाप की बात करते हुए उसकी आवाज़

नफरत आ जाती थी और ऐमी नफरत देखकर कोस्टा भी
करता था। वह जानता था कि विनीता के अपने पिताजी
रे खयालात कुछ ऐसे ही है। लेकिन उसे इस तरह की बातें
थी।
त्या लफडा है ?'
टो। मैं नही उलझने वाली। कहते हुए कुछ ऐसे मीठे अदाज
ा की ओर देखा तो उस लगा कि उसकी आखो ने कुछ तय
ऐसे मौको से कोस्टा घबराता है। लेकिन उस पल कोस्टा को
हज ही क्या है ? सच क्या हज है ?
क्या आखिर ? कोस्टा ने पूछा।
डी कपनी की हिस्सेदारी म वह मुझे उलझा रहा है।'
?
यल यूनिट। बडा भारी प्रोजेक्ट है। पहले तो उसने मेर
लिये और कल सब बातें बतायी। करीबन डेढ करोड का

? तो मुझसे क्या पूछती हो ?
न कोस्टा की ओर देखा।
नही पूछू तो किससे पूछूगी ? मेरा इस तरह उलझना तुम्ह
?
?'
ी उसकी ओर देखा और उसे बात एकदम समझ म आ गयी।
ज़रो से अपने को बचाने लगा। सामने की बत्ती की ओर
ोला—
पागल हो।'
ुम ? विनीता ने तेज निगाह से कोस्टा की ओर देखा।
ुछ देर चुप रहा। फिर धीरे धीरे बोला—
मुझे तुम्ह सलाह देने का कोई अधिकार नही है। मैं कौन होता
ला ? तुम और तुम्हारे पिताजी जानें।
ने उसकी आंखो म आंखें डाल दीं। लबी सांस लेकर होठ
ोली, कोस्टा तुम बिलकुल पागल हो।"
स्टा का सिर चकराने लगा। लेकिन उसने अपने होश सभाले।
फेरा। फिर बोला—
तक तुमने मुझसे पूछा है ? विनीता सच तुम कुछ बातें अपने
य जाती हो।'

विनीता न अपनी आँखें अभी भी कोस्टा की आँखो मे डाल रखी थी। कोस्टा क बेचन होने को वह देखती रही। कुछ बोली नही। उसकी परेशानी देखकर वह फिर हँस दी।

सच कोस्टा तुम इतनी-सी भी बात कसे नही जान पा रहे हो ? तुम पागल ही नही, बिलकुल बचकाने हो। इतने बडे लीडर कसे बन गये तुम ? अपन मन की बात भी नही जानते ?'

विनीता फिर मीठी हँसी हँस दी। उसकी हसी म तीखापन न था। हाँ कोस्टा के सारे मोर्चे ढहा देने वाली हसी जरूर थी वह। फिर उसने कोस्टा का हाथ अपने हाथ म ले लिया और उसे सहलाया। फिर सामन आय बाल नखरे के साथ पीछे की ओर किये। फिर ऐसे बोली, जसे किसी बच्चे को समझा रही हो—

तुम अगर कुछ नही समझते तो मैं तुमको सब कुछ समझा दूगी। याद रखो तुम मेरे बगर जी नही सकते ? तुम क्या सोचते हो कि जी सकोगे ? बिलकुल नही। जरा सोचोगे तो खुद ही समझ जाओग। जिद मे कुछ वक्त मेरे बिना जरूर बिता सक्त हो लकिन ज्यादा देर तक नहीं। तुम फिर मेरे पास वापिस आ जाओगे। चाहो तो,देख लो कोशिश करक।

उसक आत्मविश्वास म कोस्टा पूरी तरह पिघल गया। उसका यह रूप नया ही था। एक ओर उसकी बातें बचकानी लगती थी तो दूसरी ओर वह खुद ढीला हुआ जा रहा था। उसका हर शब्द उसे सच्चा लग रहा था। उसे महसूस हो रहा था कि वह पूरी तौर से उससे बँध चुका है। इसी पल वह उठकर क्यों नही चल देता ? लेकिन मेर लिए यह सभव नही है। गरज कि विनीता ने पूरी तौर पर उसे बाँध लिया है। उसकी आँखो के सामने पल भर के लिए नीला की वस्त्रहीन आकृति चमक गया और उसन लबी साँस ली।

खाना आ जाने पर कोस्टा स कहा, 'तुम्हारे बाप को बात पसन्द न आयेगी।

'टु हल विद दट बास्टड।'

'मैं क्रिश्चियन हू।'

टु हेल विद रिलीजन।

कोस्टा चुपचाप खाना खाता रहा। उसके दिमाग म अजीब परेशानी पल रही थी। सिल्विया को कसे हमने एकदम मना कर दिया था। उसने कितनी मिन्नतें की थी। लकिन मुझ उलझना ही न था। और भी ऐसी कितनी लड़कियाँ थीं लकिन विनीता कुछ और ही है। यहाँ कोई तक चल नहीं पाता। शादी स हम डरते हैं ? उसका सिर और भी चकराने लगा।

विनीता ने कुछ देर खाने की कोशिश की। कोस्टा को चुप बैठा देखकर वह भी चुप बैठ गयी। लेकिन उससे ज्यादा देर रहा न गया। हाथ का चश्मा उसने टेबिल पर रख दिया। उसे अचानक गुस्सा आ गया। गुस्से के मारे आँखों में पानी आ गया। उसकी साँस तेज हो गयी। झटके के साथ उसने कोस्टा का हाथ पकड़ लिया और दबी आवाज में उसने कहा—

कोस्टा, कोस्टा, यू फूल! सच तुम कुछ भी नहीं समझते हो। तुम राजनैतिक व्यक्ति हो। काम बाद में देखते हो, हिसाब पहले लगाते हो। लेकिन तुम में समझ नहीं है। तुम समझते हो कि मैं तुम्हारे पास यों ही चली आयी हूँ? तवायफ की तरह? मैं कुमारी थी, जानते हो न? फिर किसलिए आयी थी तुम्हारे पास? मुझे जो कुछ चाहिए वह मैं खुद हासिल कर लेती हूँ। क्या तुम अभी भी नहीं समझ पाये? सच, नहीं समझ पाये?

विनीता इतने आवेश में बोल रही थी कि उसकी आँखों में आँसू आ गये थे। कोस्टा भी उसकी हालत देखकर परेशान हो गया। उसने और करीब होकर उसके कंधों पर हाथ रख दिया और समझाने के स्वर में बोला—

डार्लिंग, प्लीज, इस तरह अपसेट न हो। तुम मजाक नहीं समझती क्या? कुछ तसल्ली से काम लो।'

विनीता ने तत्काल उसका हाथ परे हटा दिया। रूमाल से अपनी आँखें पोंछकर वह फिर खाने लगी। वह इतने आवेग में थी कि रो नहीं पा रही थी। बात कोस्टा की समझ में आ गयी थी। उसे कुछ भारीपन महसूस हुआ। लगा किसी ने कंधे पर वज़नदार चीज रख दी है। ऐसा क्यों? यह एहसास एकदम नया था। विनीता के पूछे या मेरे बगैर बताये ही मैं विनीता से इस तरह क्यों बँध गया हूँ? लेकिन इसमें हर्ज क्या है? एक बार फिर उसकी आँखों के सामने डिक्टेशन लेने वाली नीला की आकृति उभरी और उसने विनीता से कहा—

हम लोगों के झगड़े होंगे।

बिलकुल नहीं। नान्सेंस। मैं तुम्हें सम्भाल लूँगी।

बरामदे के सामने वाले चबूतरे पर दो-तीन वाद्य बजाने वाले सुर मिला रहे थे। एकदम पुराने स्वर—कोस्टा को उसके गाँव ले जाने वाले सुर। सुर की संगति बैठ नहीं पा रही थी, लेकिन कोस्टा को ऐसा महसूस हो रहा था।

'अब तो बताओ कि मैं क्या करूँ उसका?' विनीता ने पूछा।

'तुम्हारे पास कांट्रैक्ट के कागज तो होंगे? कल उन्हें मुझे दिखलाना। मैं देखूँगा।'

'मैं बताती हूँ। मेरा खयाल है कि मैं उन्हें फाड दूँ। पता नहीं मेरा बाप कहाँ से ले आया यह लफड़ा?

पहन देखें तो सही—कानूनन ठीक है या नहीं। यही देखना होगा।"

'होगा ही।'

खाना खाने के दौरान अब दोनों बातें कर रहे थे। तभी होटल का एक वेटर करीब आया। अदब से झुककर बोला, 'यू आर मिस्टर कोस्टा?"

यस। व्हाट इज़ इट?'

'फोन-काल सर।'

मेरा।' कोस्टा को अचरज हुआ। वह यहाँ है यह बात क्या किसी को मालूम थी? आता हूँ कहते हुए वह परेशानी में उठा और वेटर के पीछे पीछे चल दिया। फोन उठाया तो वह दूसरी ओर से डिसकनेक्ट हो गया।

परेशान-सा वह वापस आ बैठा। विनीता ने पूछा कहाँ आऊँ उन कागजों को लेकर?

फ्लैट पर आओ भायखला में। सुबह आठ-साढ़े आठ बजे आना।'

फ्लैट पर? देखना फिर ।

हाँ तो क्या हुआ? अब हर्ज क्या है?' उसकी गर्दन पर हौले हौले हाथ फेरते हुए कोस्टा ने कहा मुझे डरपोक न समझो। एक बार तय कर लूँ तो आखिरी दम तक टिका रहता हूँ।

इस तरह की बातें अपने भाषणों में ही कहते रहो मुझसे न कहो। तुम खुद को इतना न जानते होगे, जितना मैं तुम्हें जानती हूँ।

मैंने बताया तो सही झगड़े होंगे। दोनों ज़ोर से हँस पड़े।

कुछ देर बाद विनीता ने कहा सच कहती हूँ कि मैं अपने बाप से इतनी नफरत करती हूँ कि याद तक करने का दिल नहीं करता। अभी तुमने कहा तो याद आयी। एक नंबर का डरपोक आदमी है। न जाने कितनी औरतों को फँसाया होगा। मेरे ही सामने कितनी आयी होंगी। माँ बेचारी मर गयी ठीक हुआ। नहीं तो उसने खुदकुशी कर ली होती।

अब यह कहने की ज़रूरत है?'

अच्छा छोड़ो।

कुछ देर बाद वही वेटर फिर आ गया। अबकी बार उसका चेहरा अपराधी-सा हो गया था। कोस्टा की आँखों में सवाल उभरा तो उसने अदब के साथ कहा 'फिर से आपका फोन है, साब।'

अब कोस्टा तैश में आ गया। "बोला, नहीं हैं। जाओ कह दो। फिर

पूछना कि कुछ कहना है क्या ? नाम पूछना। कहना, कोस्टा नहीं है।'

उसके चले जाने के बाद कोस्टा सोच में पड़ गया। किसका फोन होगा ? नीला तक को मेरे इधर आने की बात मालूम नहीं थी। दूसरे किसी को मालूम होने का सवाल ही न था। फिर उसने विनीता से पूछा तुमने किसी को बताया था हमारे इधर आने के बारे में ?

'नहीं तो। मैं तो इसी वजह से ड्राईवर तक को नहीं लाती।''

होगा कोई। मारो गोली !' कहते हुए कोस्टा हँस दिया। विनीता हँस दी। उसके बदन पर रोमांच उभर आया। उसका हाथ अपने हाथ में लेकर और दूसरे हाथ में बँधी घड़ी देखते हुए उसने कहा चलो अब चलना चाहिए।' फिर बोला, आज मैं नहीं रुक सकता।

कौन कहता है रुकने के लिए ? विनीता मुस्करायी।

कोस्टा ने उसकी कमर दबा दी। उसने हाथ कहा तो उसने जेब से मनीबैग निकाल लिया और विनीता कुछ कहे उससे पहले ही बोला आज बिल मैं देता हूँ।

नो। वैसे भी आज मैं पर्स लायी ही नहीं हूँ।

बिल चुकता किया तो कोस्टा ने देखा कि अब उसके पास वापिस जाने लायक टैक्सी के पैसे भी नहीं बचे हैं। लेकिन वह चुप रहा।

दोनों दरवाजे के करीब आये तो वह वेटर मलूल चेहरा लिये सामने खड़ा था। कोस्टा ने पूछा किसका फोन था ?

फिर से कट गया साब !'

ठीक है। अच्छा ही हुआ।

गाड़ी के करीब आने पर विनीता ने कहा चलो मैं खुद तुम्हें पहुँचाये देती हूँ।

नहीं मुझे शिवाजी पार्क जाना है आंटी के यहाँ।

तो वहाँ पहुँचा देती हूँ।

नहीं काफी वक्त हो जायगा।

मौसी के यहाँ ही जाना है न ?

क्यों शक हो रहा है ? झगड़े होंगे ?

विनीता फिर जोर से हँस दी। दरवाजा खोलकर गाड़ी में बैठ गयी। गाड़ी स्टार्ट करके बोली टैक्सी से जाओगे ?'

हाँ।

अच्छा बाई ! गुड नाइट !

विनीता की गाड़ी नजरों से ओझल होने तक वह देखता रहा। फिर उसने टैक्सी को इशारा किया। टैक्सी से वह वी० टी० तक आया। वहाँ

बस की क्यू म खड़ा हो गया। कुछ देर बाद बस आयी और वह शिवाजी पाक की बस म ऊपर की मंजिल पर हवा म बठ गया।

होटल म आये फोन की बात उसे जँच न रही थी। किसे पता हो सकता है? किसी न आस पास देखा होगा। फिर फोन की क्या जरूरत थी? कोस्टा को बात सीधी न लग रही थी। कुछ ऐसा था जो उसे चुभ रहा था। लकिन इस विषय म ज्यादा सोचने का अथ भी क्या था? पहले हा वह सुबह स थक चुका है। उसन आँखें मूद ली और उस खयाल को दिमाग स निकाल दिया।

दिन भर म दो महत्त्वपूण निणय लिये गये थे जो उसकी जिंदगी की दिशा बदल सकत थ। उसे फिर उदासी-सी महसूस हाने लगी। सच पूछा जाय ता आटी के यहाँ जाने का आज मन न हो रहा था। निणय लेने का असर इतना ज्यादा था कि उसका मन सीधे बिस्तर पर जा लेटन का हो रहा था। लकिन जाना भी जरूरी था। ऐसी उदासी क्यो महसूस हो रही है? अकेलपन की वजह से? सुबह से तो अकेलेपन का असर हुआ नहीं। फिर यह उदासी क्या?

कोस्टा न जम्हाई ली। भारीपन हट नही पा रहा था। बस की ऊपरी मंजिल पर ज्यादा लोग न थ। बातें करने के लिए पहचान वाला कोई दिख न रहा था। कडक्टर बातूनी नजर न आया। कोस्टा को पहचान कर उसने सलाम जरूर किया था। फिर वह पिछली सीट पर बठकर ऊँघने लगा था। बस म बठ सभी लोग अपने-अपने घर जान की फ़िक्र म थ। सब के चेहरे अजीब थकान भरे नजर आ रहे थे। अजीब चेहरे परेशान, मुरझाय पसीन स तर।

कोस्टा ने आँखें मूदन की कोशिश की लकिन बचेनी दूर नही हो पा रही थी। सारे दिन की बातें आँखों के आगे आ जाती थीं। अजीब थकान महसूस हो रही थी। आज आटी के यहाँ ही सो जाये। गगाराम की औरत जवान है। वह अब क्या करेगी? उसकी रोनी शक्ल सामन आ गयी। बदन पर काँटें उभर आये। लायसेंस मिल चुका है। अब पिस्तौल खरीद लेनी चाहिए। और उस फाइल का क्या किया जाय? प्रधानमत्री से मिलना ठीक हा सकता है। अय्यर को भी कल अपने विश्वास म लना चाहिए। वह जरूर मदद कर सकता है। आज की स्टोरी का कुछ तो असर हो ही रहा होगा। उसे कल कसे हैंडिल करें? देखते हैं। चीफ़ मिनिस्टर रीजनबल आदमी है। ऑफर बुरी नहीं है। फोन की बात कुछ सच नहीं लगती। रघू को एक बार झाड़ना होगा। तभी वह जमीन पर आ पायेगा। हमीद को तो आज अच्छी तरह स पीटना था। नालायक, स्साला! तेरह नबर

का मामला क्या बिना हड़ताल के हल हो सकता है ? क्या इतनी भी ताकत नहीं है हममें ? इतने साल बाल धूप में तो पकाये नहीं हैं । अब तो चीफ मिनिस्टर भी सुन लेगा । आह, एक घंटा और विनीता के साथ गुजार लेता तो थकान का नाम निशान न रहता । ओ गाड कैसी अजीब छोकरी है नीला नीला नीला ।

किशोर वझे

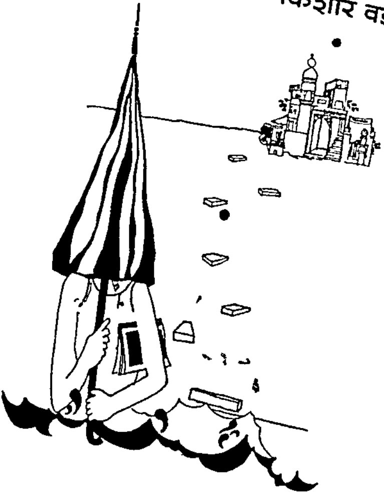

किशोर जब प्रभादेवी की उस चाल में पहुँचा तो शाम ढल चुकी थी। अँधेरा गहराने लगा था। रास्ते की बत्तियाँ जल चुकी थीं। चाल में जरूर अँधेरा सा था। चाल तक पहुँचते ही एक परिचित गंध उसकी नाक में समाने लगी। इस चाल में उसने चार-पाँच साल गुजारे थे। उसके बदन पर काँटे उभर आये। बीच के चौक में गन्दगी, पास वाले संडास की बू, हर घर में पकने वाले खाने की गंध और चाल की लड़कियों के पाउडर की सुगंध और पड़ोस के एक प्रेस की स्याही की अजीब-सी गंध। इन सारी ही गंधों को मिला दिया जाय तो एक अजीब-सी गंध बन जाती है, जिसे उस चाल की गंध कहा जा सकता है। कहीं भी इस तरह की गंध आ जाये तो फौरन किशोर को प्रभादेवी की इस चाल की याद आ जाती है और तब उसके पेट में अजीब-सा गोला उठने लगता है। फिलहाल उसके बदन पर काँटे उभर आये। सीने में अजीब-सी धड़कन हुई। साँस कुछ तेज हुई। और फिर वह चाल की सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। सीढ़ियाँ उसकी पहचानी थीं। उसे रोशनी की जरूरत न थी। सीढ़ियों की कौन-सी सिल हिलने वाली है इस बात को वह खूब जानता था। उजाला नहीं था, ठीक ही था। नहीं तो चाल में जो मिल जायेगा उसे औपचारिकता की खातिर ही नमस्कार करना पड़ेगा।

पहली मंजिल के दो एक घर बंद थे। तीसरे घर में ही रहकर किशोर ने बम्बई में शुरू-शुरू के पाँच साल गुजारे थे। उस घर के सामने एक बूढ़ा खाट पर लेटा हुआ था। बीच-बीच में खाँसी का दौरा पड़ जाता तो वह सींखचों के बीच में से नीचे चौक में पच से थूक देता था। इस घर को छोड़ते वक्त बच्चों ने उसे पागल कहा था। लेकिन किशोर को उन लोगों की जरा भी परवाह न थी। वैसे भी वह मकान खुद उसके नाम पर न था। उसे वह मकान इसी शर्त पर मिला था कि जब जरूरत होगी तब छोड़ देना होगा। इस तरह किसी के मकान रहने के बजाय खुद ही मकान छोड़ देना ज्यादा ठीक था। इसी वजह से उसने वह मकान छोड़ दिया था। खास बात यह भी थी कि उसका खुद इस मकान में रहना असंभव हो गया था। इसी वजह से उसने छोड़ा। जिन्दगी में कभी न मिलने वाली प्रेयसी जिस मकान के करीब ही रहती हो, उस मकान में कौन भावुक और होशियार आदमी रह सकता है?

दरवाज़ क करीब वाली गलरी म अदर स आने वाल प्रकाश मे दरी बिछाकर एक तेरह साल का लडका पढाई कर रहा था। किशोर के आने पर भी उसन मुह ऊपर न किया। अदर अजीब शक्ल की दीवारो पर ट्यूब का उजाला अजीब लग रहा था। नाना सामत हमेशा की तरह खाट पर नही थ। कहीं बाहर गये हुए थे। सामन की दीवारो पर लोहिया और जयप्रकाश की तस्वीरें लगी हुई थीं। टबिल पर किताबा के ढेर क बीच डाकोस्टा की तस्वीर रखी हुइ थी। टेबिल के सामन वाली कुर्सी पर शला एक किताब स मुह ढांपे बैठी हुइ थी। किशोर क जूतों की आवाज़ आते ही उसन मुह ऊपर किया और आवाज़ दी, 'जीजी वक्ले साहब आये हैं।

किशोर को शला स हमेशा डर लगता है। शैला नीला की दूसरे नबर की छोटी बहन थी। नीला से छोटी बहन की शादी हो चुकी है। शला बीस साल की होगी। गोरी। नीला से ऊंची मर्दाने अदाज़ की लडकी है। उसकी सारी पढाई स्कालरशिप पर होती रही है। आजकल भी स्कालरशिप पर राजनीति शास्त्र म एम० ए० कर रही है। वह किशोर स कभी बात नही करती। मैट्रिक स पहले ज़रूर अपनी पढाई म आने वाली दिक्कतें पूछती थी। लेकिन मैट्रिक म मेरिट म आ जाने के बाद स उसन पूछना छोड दिया था। किशोर न भी वह मकान छोड दिया था। किशोर को लगता कि वह उसे तुच्छ समझकर ही वैसा व्यवहार करती है। लेकिन ऐसा शक उसे क्या है इस बात को उसन कभी नहीं सोचा। तुच्छता समझ म आती है लेकिन बनावटीपन आते ही वह मुझे नीला की ओर रेफर कर देती है मतलब ?

नाना नहीं हैं ?" उसन पूछा। लेकिन शला न किताब से मुह ऊपर किया ही नहीं। किशोर को बेहद झुंझलाहट हो आयी।

कह रहे थ कि बाहर हो आता हू नीला न ही भीतर से आते हुए जवाब दिया। टॉवेल से हाथ पोछती हुई जब वह बाहर क कमरे म आयी तो किशोर को लगा कि उसकी सांस रुक गयी है। वह जानता था कि कुछ भी हो जाये लेकिन यो ही चलता रहेगा।

नीला न उसकी ओर ऐसे देखा कि किशोर के बदन म रोमांच हो आया।

बस दो मिनट और। वैसे भी इन लडको का वक्त हो चुका है ' कहते हुए वह उन लडकों के करीब चली गयी। नीला क बारे म यह शिकवा हमेशा रहा है। मेरी ओर ऐस देखकर वह एक बडा सा गुनाह कर देती है। उस हँसी म कई सवाल उभर आते हैं। यादों का अबार खडा हो जाता है। कई मीठी बातें याद हो आती हैं। उन यादो म कही भी नकार की भावना

नहीं होती। यादों म भी वे यादें—एक बार घर म कोई न होने पर लिया चुंबन और नाना को देखने जात वक्त जे० जे० अस्पताल के करीब हाथ म हाथ थामना। उसकी मुस्कराहट म क्या भविष्य क लिए कोई दिलासा है? बस यही गाडी रुक जाती है या उसी दिलासा की खोज म हम यहा चल आत हैं? क्या नीला खुद हसते समय इन बातों का खयाल करती है? या मरी कल्पना ही ऐसी दौड लगाया करती है?

पाँच मिनट म ही उन लडकों को विदा करके नीला अन्दर आ गयी और उसन फिर हजारों तरग पैदा करन वाली हसी कमरे म बिखेर दी।

नाना बोल कि आज कुछ ठीक लग रहा है। इसलिए जरा घूम आता हूँ। बस अब आत ही होंगे।

अकेल ही गये है?

नहा बिजू साथ म है।

आज जरा हवा म ठडक है।

कोट पहनकर गये हैं।'

कुछ देर खामोशी। और क्या बोलें? नाना होते तो व ही बोलते रहत।

शला ने किताब बद कर दी। अँगडाई ली और उठकर खडी हो गयी। बोली जीजी मैं अभी आती हू।

अरे रुको भी चाय बनाती हूँ।'

नहीं चाय के लिए ही जा रही हू। पद्रह मिनट म आ जाऊगी।'

जाते वक्त शला ने किशोर की ओर देखकर अजीब तरह स हँस दिया। उसम समझन का सकेत था या दया भाव? किशोर वचन हो गया।

चाय अभी बनाऊँ या नाना के साथ लेंगे?

नाना को आ जाने दो।

'शला की क्लास फलो है इसी चाल म। आजकल उसी से खूब पटती है। नीला न टेबिल ठीक करत हुए कहा। किशोर न सिर्फ 'हू' कहा। वह उसी की तरफ देख रहा था, जैस सब कुछ पी जाना चाहता हो। उसकी हर अदा प्यासी आँखो से देखे जा रहा था। नीला भी कुछ न कह रही थी। वह एसा क्यों करती है? वह जरा भी नजरो म नापसदगी दिखला दे तो हम इधर कभी न आयेंगे। लकिन वह मेरे साथ ठीक तरह से पेश आती है।

नीला ने टेबिल पर बेतरतीबी स रखी किताबें करीने से रख दी। डीकोस्टा का फोटो पोछकर वापिस उसी जगह पर रख दिया। उसी पर निगाह डाली फिर किशोर की ओर देखते हुए बोली, आपका भाई आने —

वाला था न ?'

'हां। आया हुआ है पर तुम्ह कसे मालूम हुआ ?"

'पिछने हफ्त ही ता आप नाना से कह रहे थे।'

अर, हां मैं ता भूल ही गया था।

उसे यहां लाइय न एक बार।

देखते हैं। वह घाटकोपर म है कपनी के गस्ट हाउस म।

टेबिल साफ करके नीला कुर्सी पर बैठ गयी। दोनों की आंखें मिल गयी। दोना अकेल थे न जाने कितन न्निो बाद! न्निन क्यो सालो बाद। बिजली के भार स दो भारी बादल आपम म टकरा जायें कुछ इसी तरह दोना की नजरें टकरा गयी। नीला की नजरो म भी क्या बिजली बसती है! उसे कुछ कहना है। और उसे जो कुछ कहना है वह मुझे नहीं सुनना। यह हँसी पिछली हँसी से अलग है। अनजान सी है। उसम कई बातें दबी हुई हैं। वह मुझे मालूम नहा। यह नजर तो किसी और के परिचय की होनी चाहिए। किसकी ? या यह मेरा खुद का भ्रम है ? नीला, तुम या न देखा करो सिफ मुस्करा भर दिया करो। फिर वह मुस्कराहट भले ही निरथक ही क्यो न हो! लेकिन इस तरह कलेज को चीरती हुई नजरो से न देखा। पहले वाला समय होता तो मैंने समदर पर चलने की बात कही होती। पर अब नही।

पल दो पल के नजरों के मिलन से किशोर के आगे सारी दुनिया घूम गयी। उसे लगा वह इसी क्षण की राह देख रहा था। कह जाय एक बार हा ही जाये फसला! नीला 'न नही कहेगी। हज ही क्या है ? नाना कितने खुश हा जायेंगे! उसकी छोटी बहिन की शादी हो चुकी है। शला तो खुद हा तय कर लेगी। बिजू भी शादी लायक हो चुकी है। वह भी अपने लिए किसी को चुन लगी। तुम ही कितन दिनों तक यो झुलसती रहोगी ? हम जो चाहते है वह हमेशा तो मिलता नहीं। तुम्ह कौन चाहिए था मुझे मालूम नही। लेकिन वह मिल न सका। मिलेगा भी नहीं शायद फिर काइ और क्यो नहा ढूढ लेती ? मैं तो तुम्हारी ही राह देख रहा हूं। इसम गलत कुछ नही है। खुद सोच लो नीला नीला, पल दो पल के लिए सोचा! किशोर परेशान हो उठा।

दूसरे ही पल नीला न नजरें फेर ली। उसने भी इन क्षणो म क्या अपने से कुछ कहा ? उसने टेबिल पर रखी एक किताब उठा ली।

कास्टा ने यह नाना के लिए दी है। पढी है ?'

किसी अफ्रीकी लेखक की सोशलिज्म पर किताब थी। किशोर ने उलट पुलट कर देखी।

'कोस्टा बीच-बीच में नाना को याद करता है।' 'मतलब ?' 'वैसी बात नहीं। वह हमेशा ही नाना को याद करता है। पार्टी के दूसरे लोग भले ही भूल जायें पर वह नहीं भूलता।'

नीला का पार्टी के बारे में बातें करना ही किशोर को कतई पसन्द नहीं था। नीला पार्टी की मेंबर नहीं है। वह सिर्फ नौकरी करती है। फिर पार्टी की ऐसी तरफदारी किसलिए करती है? पहले उसे पार्टी की इतनी फिक्र थी क्या? उल्टे वह गालियाँ दिया करती थी। खास तौर पर नाना की बीमारी के दौरान। वह अक्सर कहा करती थी कि पार्टी ने नाना की ज़िन्दगी बर्बाद कर दी। और यह बात सच भी थी। नाना सामंत ने पार्टी के लिए अपना ज़िन्दगी तबाह कर दी थी। लेकिन उनकी बीमारी में पार्टी कहाँ मर गयी थी। नाना और उनकी लड़कियों की तरफ किसने ध्यान दिया था? फिर नाना को पार्टी में इतनी मोहब्बत कब से हो गयी? फिर भी कोस्टा के बारे में इतनी बातें? वैसे कोस्टा ने नीला को पार्टी-आफिस में नौकरी पर जरूर जमा दिया था। लेकिन इससे नाना की ज़िन्दगी की कीमत नहीं चुक जाती। और फिर वे नीला से काम भी कितना लेते हैं। और किसी जगह स्टेनो से इतना काम लिया जाता है? लेकिन नीला होशियार है। महत्त्वाकांक्षी है। वह सब काम कर लेती है। कोस्टा का फोटो वह खुद ले आयी होगी। किशोर के मन में एक जहरीली लहर फैल गयी थी। सीने में अजीब आग थी। अचानक किशोर को अपने ही विचारों पर शर्म आने लगी। अब इसे क्या कहें? कोस्टा का फोटो हुआ तो क्या? हो सकता है कि नाना खुद ही ले आये हों। नाना कोस्टा की इज्जत करते हैं। कोस्टा भी धीरे धीरे ऊपर आया है। नाना अगर आज पार्टी में होते और किस्मत ने साथ दिया होता तो आज वे पार्टी में पहली लाइन में होते। लेकिन साथ वालों ने दगा दी। बीमार पड़े तो पार्टी वाले उन्हें भूल ही गये। पार्टी के लिए जेल गये, पुलिस के डंडे खाये, नौकरी छूटी तो कोई पूछने तक न आया। बस नाना भी उनके पास नहीं गये।

कोस्टा का एन्टी स्मगलिंग कैम्पेन कैसी चल रही है? अब तो बातें पेपर में भी आने लगी हैं।

जोर शोर से। पर काम बड़े खतरे का है' नीला ने कहा। किशोर ने देखा कि अब तक नीला की बातों में जोश न था, लेकिन यह बात आते ही नीला आवेश में बोल रही थी। उसके शब्द उसके कान पर दस्तक दे रहे थे। पर उनका अर्थ उसे समझ में न आ रहा था। नीला कोस्टा की पक्की भक्त बन गयी है यह बात जरूर किशोर समझ चुका था। नीला जोर जोर से बोल रही थी और किशोर चुपचाप सुन रहा था। उसके पेट

वाला था न?"

हाँ। आया हुआ है पर तुम्हें कैसे मालूम हुआ?'

'पिछले हफ्ते ही तो आप नाना से कह रहे थे।'

अरे, हाँ मैं तो भूल ही गया था।

उसे यहाँ लाइये न एक बार।

देखते हैं। वह घाटकोपर में है कंपनी के गेस्ट हाउस में।"

टेबिल साफ करके नीला कुर्सी पर बैठ गयी। दोनों की आँखें मिल गयीं। दोनों अकेले थे न जाने कितने दिनों बाद! दिन क्या, सालों बाद। बिजली के भार से दो भारी बादल आपस में टकरा जायें, कुछ इसी तरह दोनों की नजरें टकरा गयीं। नीला की नजरों में भी क्या बिजली बसती है! उसे कुछ कहना है। और उसे जो कुछ कहना है वह मुझे नहीं सुनना। यह हँसी पिछली हँसी से अलग है। अनजान सी है। उसमें कई बातें दबी हुई हैं। वह मुझे मालूम नहीं। यह नजर तो किसी और के परिचय की होनी चाहिए। किसकी? या यह मेरा खुद का भ्रम है? नीला तुम या न देखा करो सिर्फ मुस्करा भर दिया करो। फिर वह मुस्कराहट भले ही निरर्थक ही क्यों न हो! लेकिन इस तरह कलेजे को चीरती हुई नजरों से न देखो। पहले वाला समय होता तो मैंने समंदर पर चलने की बात कही होती। पर अब नहीं।

पल दो पल के नजरों के मिलन से किशोर के आगे सारी दुनिया घूम गयी। उसे लगा वह इसी क्षण की राह देख रहा था। कूद जाय, एक बार हो ही जाय फैसला! नीला 'न' नहीं कहेगी। हर्ज ही क्या है? नाना कितने खुश हो जायेंगे! उसकी छोटी बहिन की शादी हो चुकी है। शैला तो खुद ही तय कर लेगी। बिजू भी शादी लायक हो चुकी है। वह भी अपने लिए किसी को चुन लेगी। तुम ही कितने दिनों तक यों झुलसती रहोगी? हम जो चाहते हैं, वह हमेशा तो मिलता नहीं। तुम्हें कौन चाहिए था मुझे मालूम नहीं। लेकिन वह मिल न सका। मिलेगा भी नहीं शायद फिर कोई और क्यों नहीं ढूँढ लेती? मैं तो तुम्हारी ही राह देख रहा हूँ। इसमें गलत कुछ नहीं है। खुद सोच लो नीला नीला पल-दो पल के लिए सोचो! किशोर परेशान हो उठा।

दूसरे ही पल नीला ने नजरें फेर लीं। उसने भी इन क्षणों में क्या अपने से कुछ कहा? उसने टेबिल पर रखी एक किताब उठा ली।

काम्टा ने यह नाना के लिए दी है। पढ़ी है?

किसी अफ्रीकी लेखक की सोशलिज्म पर किताब थी। किशोर ने उलट पुलट कर देखी।

कोस्टा बीच-बीच में नाना को याद करता है। मतलब?'

कभी बात नहीं। वह हमेशा ही नाना को याद करता है। पार्टी क

' दूसरे लोग भले ही भूल जायें पर वह नहीं भूलता।'

नीला का पार्टी के बारे में बातें करना ही किशोर को कतई पसंद नहीं था। नीना पार्टी की मेम्बर नहीं है। वह सिर्फ नौकरी करती है। फिर पार्टी की ऐसी तरफदारी किसलिए करती है? पहले उसे पार्टी की इतनी फिक्र थी क्या? उल्टे वह गालियाँ दिया करती थी। खास तौर पर नाना की बीमारी के दौरान। वह अक्सर कहा करती थी कि पार्टी ने नाना की ज़िन्दगी बर्बाद कर दी। और यह बात सच भी थी। नाना सामंत ने पार्टी के लिए अपना ज़िन्दगी तबाह कर दी थी। लेकिन उनकी बीमारी में पार्टी कहाँ मर गयी थी। नाना और उनकी लड़कियों की तरफ किसने ध्यान दिया था? फिर नाना को पार्टी में इतनी मोहब्बत कब से हो गयी? फिर भी कोस्टा के बारे में इतनी बातें? बस कोस्टा ने नीला को पार्टी-आफिस में नौकरी पर ज़रूर जमा दिया था। लेकिन इससे नाना की ज़िन्दगी की कीमत नहीं चुक जाती। और फिर वे नीला से काम भी कितना लेते हैं। और किसी जगह रना में इतना काम लिया जाता है? लेकिन नीला होशियार है। महत्वाकांक्षी है। वह सब काम कर लेती है। कोस्टा का फोटो वह खुद ले आया होगी। किशोर के मन में एक ज़हरीली लहर फन गयी थी। सीने में अजीब आग थी। अचानक किशोर को अपने ही विचारों पर शर्म आने लगी। अब इसे क्या करूँ? कोस्टा का फोटो हुआ तो क्या? हो सकता है कि नाना खुद ही ले आये हों। नाना कोस्टा की इज्जत करते हैं। कोस्टा भी धीरे धीरे ऊपर आया है। नाना अगर आज पार्टी में होते और किस्मत ने साथ दिया होता तो आज वे पार्टी में पहली लाइन में होते। लेकिन साथ वालों ने दगा दी। बीमार पड़े तो पार्टी वाले उन्हें भूल ही गये। पार्टी के लिए जेल गये पुलिस के डंडे खाये नौकरी छूटी तो कोई पूछने तक न आया। बस नाना भी उनके पास नहीं गये।

'कोस्टा का एन्टी स्मगलिंग कैंपेन कैसी चल रही है? अब तो बातें पेपर में भी आने लगी हैं।

'ज़ोर शोर से। पर काम बड़े खतरे का है,' नीला ने कहा। किशोर ने देखा कि अब तक नीला की बातों में जोश न था लेकिन यह बात आते ही नीला आवेश में बोल रही थी। उसके शब्द उसके कान पर दस्तक दे रहे थे। पर उनका अर्थ उसे समझ में न आ रहा था। नीला कोस्टा की पक्की भक्त बन गयी है यह बात ज़रूर किशोर समझ चुका था। नीना ज़ोर ज़ोर से बोल रही थी और किशोर चुपचाप सुन रहा था। उसके पेट

मे अजीब-सा खालीपन पैदा हो रहा था।

बस! बातों का दायरा इतना ही है? नाना की बीमारी, बिजू की पढ़ाई कोस्टा जयत—सारी दुनिया की बातें हो जायेंगी लेकिन हमारे तुम्हारे बीच की बातें?

फिर कुछ देर खामोशी।

नौकरी कैसी चल रही है? आखिर किशोर ने ही पूछ लिया।

ठीक है, इंटरेस्टिंग है।

काम काफी होता है न?'

'हाँ। पर थकान महसूस नहीं होती।'

'इंटरेस्ट हो तो कैसी थकान! हम तो किसी बात मे इंट्रेस्ट ही नहीं रहा ।'

इस पर नीला चुप रही। उसने पल भर किशोर की ओर देखा और नजरें दूसरी ओर फेर ली।

अचानक किशोर को लगा कि वह फिजूल ही यहाँ आया। मेरे लिए यहाँ कोई जगह नहीं है। यहाँ आना निरर्थक है। पहले यहाँ स्वागत हुआ करता था। लेकिन अब मैं यहाँ न भी आऊँ तो भी कोई फर्क नहीं पड़ता। दो सप्ताह तक यहाँ न आया था तो किसी ने लाज पर जाकर पूछताछ भी न की। नीला कभी लाज पर आयी है पता लगाने के लिए? या कभी उसने लाज या आफिस मे फोन किया है? बेकार ही चले आये। बस अब चलना चाहिए। सारा दिन बर्बाद कर दिया। अब और परेशानी नहीं चाहिए। उसे अजीब बेचैनी हो रही थी।

सीढ़ियों पर कदमों की आहट हुई।

शायद नाना आ गये।

किशोर को तसल्ली-सी हुई लेकिन दूसरे ही पल निराशा भी हुई। और कुछ वक्त मिल जाता तो कोई और विषय बात के लिए निकल सकता था। नीला कुछ तो बोली होती। हम बोले होते। लेकिन रहने दो। मन की बातें मन ही मे दबाकर रखने मे कुछ नहीं। अब यहाँ नहीं आना। इससे तो नाना का आना ही ठीक रहा।

वाह वाह कब आये?

नाना ने दिल खोलकर किशोर का स्वागत किया। नाना को किशोर वाकई पसन्द है। आज वे ज्यादा ही बूढ़े नज़र आ रहे थे। उम्र पचास के आस पास होगी पर वे सत्तर के नज़र आ रहे थे। साथ मे बिजू भी थी। वह भी किशोर की ओर देखकर हँस दी।

कहो ठीक है न सब?'

'अब को तो आप काफी दिनों बाद आये।'

बातें शुरू हो गयीं। नाना को राजनीति बेहद पसन्द है। राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय राजनीति, महाराष्ट्र की राजनीति। किशोर को डर था कि वही विषय फिसल कर कोस्टा पर न आ जाय? और आज का ताजा विषय स्मगलिंग ही था। नाना कह रहे थे, "कोस्टा ने इस विषय पर सवाल जरूर उठाया है लेकिन उसे आखिरी सिरे तक ले जाये तो मैं उसे मानूँ। नहीं तो समझेंगे कि यह भी एक स्टंट है।'

चाय पी और बेचैन मन से किशोर वहाँ से चलने लगा।

"आज काफी दिनों बाद आये हो। ऐसा मत किया करो। बीच-बीच में आते रहा करो" नाना ने कहा। उनकी आवाज थकी थकी लग रही थी। उसमें हताश वेदना भी नजर आ रही थी।

'आता तो हूँ।'

"हमें खुशी होती है। आप हमेशा आते रहें यही हम चाहते हैं।" नाना ने नीला की ओर देखकर कुछ इस अंदाज में कहा कि किशोर का दिल पसीज गया। गरज कि वे नीला से कुछ कहना चाहते थे। किशोर से भी कुछ कहना चाहते थे, लेकिन वे कह न पाते थे। तभी नीला ने गर्दन घुमा कर ऐसा भाव दिखाया जैसे उस तरफ उसका ध्यान हो न हो। लेकिन उसके चेहरे का बदलता भाव किशोर की नजरों से छिपा न रह सका। किशोर सिर्फ हँस दिया। भारी मन से वह वहाँ से चल दिया।

यह एक और हार। दिन भर की हारों पर और काला रंग चढ़ाने वाली हार। हम यहाँ आये ही क्यों? जरूरत ही क्या थी? किस लालच में बेशर्म की तरह चले आये? मुझ में जरा भी स्वाभिमान नहीं है? उसे लगा, जैसे चाल के हर कमरे से आने वाली उजाले की लकीरें खुले नश्तर की तरह उसके बदन पर पड़ रही हैं। उसे खुद से नफरत होने लगी। नीला के कमरे का उजाला भी मायूस सा महसूस हुआ जैसे हर पल उस पर हावी हो रहा हो। फिर भी वह बैठा रहा।

हवा ठंडी थी। किशोर के कदम मायूसी में तेज हो गये। बस-स्टॉप पर उसने चारमीनार सुलगा ली। उस बस में खड़े होने की जगह मिल गयी। उससे सट कर एक काली मोटी-सी बदशक्ल औरत खड़ी थी। बस जैसे ही हिचकोले लेती वैसे ही वह औरत अपने पूरे बदन के साथ किशोर से टकरा जाती थी। किशोर को मितली-सी आने लगी।

वह चाल में आया तब लोग खाना खत्म करके जा रहे थे। चाचा ओटले पर बैठे हुए थे। किशोर ने पूछा, "अनिल आ गया?"

'आये हैं। पर आज खाना खाने का इरादा नजर नहीं आता।'

'क्या ?"

चाचा सिर्फ हँस दिये और उन्होंने हाथ अजीब तरह से मटकाये। चाचा आज बोलने के मूड में नहीं थे। कुछ अजीब लग रहा था। अनिल के बारे में क्या फैसला हुआ यह जाना जा सकता था। अगर कोई बात होती तो चाचा ज़रूर कुछ बोले होते। लेकिन अनिल पर चाचा इतने नाराज क्यों हो रहे हैं? किशोर को अचानक बाबूजी को लिखने वाले खत की याद हो आयी।

चाचा एकाध लिफाफा है ? या इनलैंड ?

चाचा ने टेबिल की दराज़ में देखा और चेहरा अजीब सा बनाकर बोले सॉरी।'

लिफाफा न मिला तो न सही—सादे कागज पर तो खत लिख ही सकते हैं और कल का पहला काम यही होगा कि लिफाफा पोस्ट कर दिया जाय। किसी भी हालत में आज बाबूजी को खत लिखना ही होगा। लापरवाही काफी हो चुकी है। *मेरी वजह से दूसरों को क्या तकलीफ हो?* सीधे लिख देते हैं।

पूज्य बाबूजी को सादर चरण स्पर्श। खत लिखने की वजह यह कि—।

अनिल मुँह पर चादर लिये सो रहा था। उसके पलंग के करीब सिगरेट के कई टोटे पड़े हुए थे। वे सभी ट्रिपल फाइव या इसी तरह की किसी मँहगी सिगरेट के थे। यह साला हमेशा ही ड्रामा किया करता है। किशोर को हँसी आ गयी। मेरी सारी ज़िन्दगी में कहाँ नाटकीयता नहीं है। और अनिल की हर बात में नाटकीयता! इसी को कहते हैं लाइफ। खूब मज़े कर रहा है।

'उठिये मिस्टर खाना खाने चलिये' अपने पलंग पर बैठ कर जूते निकालते हुए किशोर ने कहा। उसे बस भूख न थी। लेकिन अनिल को कंपनी देना ज़रूरी था। वह हाथ-पाँव धो आया लेकिन अनिल सो सा ही *रहा था। उसने मुँह से चादर भी अलग न की थी।*

क्यों क्या ख़याल है जनाब ? किशोर ने फिर पूछा।

अनिल में कुछ हरकत हुई। दो तीन मिनट बाद अनिल पलंग पर उठ बैठा।

अब खाने में क्या रखा है ?'

किशोर को लगा कि उसे हँसी आ जायेगी। अनिल से बड़ा अपनापन महसूस होने लगा। उसे लगा कि वह उसके लिए न जाने क्या क्या कर सकता है। कहीं उसके हँसने में कड़वाहट तो नहीं थी? कुछ पल उसे

अजीब-सी राहत महसूस हुई।

अरे पागल तो नहीं हो गये ?"

'पागलपन से भी परे पहुँच गया हूँ। फ़ैसला क्या हुआ, जानते हो?

तुम्हारे चेहरे से ही पता चल रहा है।'

अनिल कुछ देर तक शून्य में देखता रहा। फिर बोला, चलो, कुछ घूम आते हैं।

अरे, यहीं जो बातें कर लेते हैं। यहाँ दूसरा है ही कौन ?"

नहीं बाहर ही चलते हैं। वैसे भी अब भूख तो है नहीं" अनिल बड़े इत्मीनान से बोला। वह बिस्तरे से उठ बैठा। पाजामा-कुर्ता पहन लिया पाँव में चप्पल अटका ली और बोला चलो।

बाहर बम्बई की रात को खुश करने वाली हवा थी। दिन भर की थकान के बाद यह हवा अच्छी लग रही थी। रात के साढ़े नौ बज चुके थे। फिर भी रास्ते पर लोगों का आना जाना कम न हो पाया था।

कुछ देर तक दोनों चुपचाप चलते रहे। फिर एक ईरानी होटल में घुस गये। अनिल ने दो कप चाय मँगायी।

सिगरेट पान-पीते उसकी जीभ जल गयी थी। देख," वह बोला।

आदत नहीं है तो पीते ही क्यों हो ? नाटकबाज़ी स्साली ! '

अनिल ने आँखें ऐसे बनायीं जैसे सीने में अजीब सा दर्द उठा हो। किशोर ने पूछा, 'अरे बताओगे भी कि आख़िर हुआ क्या ?'

आज दोपहर चाचा ने उसके बाप को फ़ोन किया था। पूछा था कि मिलने आऊँ ? बाप ने कहा नथिंग डूइंग। उसने पहले ही कोई लड़का ढूँढ लिया है।'

धत् तेरे की ! बस इतना ही ?"

धत् ? तुम मतलब समझते हो ?'

'तुम तो पागल हो !'

दोनों ने चुपचाप चाय सुड़की। किशोर ने चारमीनार का पैकेट ख़रीदा और दोनों बाहर आ गये। किशोर को अजीब-सी तसल्ली महसूस हो रही थी। बाबूजी का अभी ख़त लिखना है। कोई हर्ज नहीं। घूमने के बाद लिख लेंगे। सोने से पहले लिख लें बस ! नीला के घर पर डाइवोर्स का मामला बढ़ता ही जा रहा है। उसका फ़ोटो इस तरह रख जाने का मतलब, यानी बात बहुत बढ़ चुकी है। नौकरी पर लगाने का मतलब इतना सस्ता तो नहीं होता।

'किशोर तुम मेरी हालत समझ नहीं पा रहे हो," अपनी सड़क पर आते ही अनिल ने कहा। 'मुझे बसन्ती से प्रेम है और उसके बग़ैर मैं जी

नहीं सकता।'

किशोर ने गर्दन हिलायी। उसे लगा कि अनिल जरा सीरियस है। उसने पूछा शाम को बसती मिली थी न?

हाँ।"

वह क्या बोली?'

वह क्या बोले बेचारी!'

मतलब तुमने उससे कुछ पूछा ही नहीं?'

क्यों किशोर वह एकतरफा कार्यवाही नहीं कर सकती।

अब किशोर को गुस्सा आ गया। एकतरफा नहीं है तो फिर दिक्कत क्या है?

फिर तुम्हारी दिक्कत क्या है?

अनिल ने साँस ऐसे छोड़ी कि जैसे कह रहा हो कि तुम कुछ समझते ही नहीं। फिर बोला देखो बसती से मुझे मोहब्बत है। मुझे उसे उलझन में नहीं डालना है। पिताजी की अनुमति के बिना अगर वह शादी करेगी तो खुश नहीं रह पायेगी।

किशोर को तैश आ गया। कुछ देर तक वह कुछ न बोला। वह न समझ पा रहा था कि अनिल नाटक कर रहा है या वह वाकई भावुक है। या तो वह पागल है या बहुत भावुक। लेकिन अनिल मूर्ख नहीं है। आज तक उसने बहुत सी लड़कियाँ देखी हैं। एक के लिए भी उसमें ऐसी भावनाएँ नहीं थीं। या मुझसे ही गलती हो रही है। हो सकता है मैंने अनिल को अभी तक जाना ही न हो।

दोनों चुपचाप समंदर के किनारे आ गये। रास्ते से हटकर जहाँ बालू थी वहाँ आ बैठे। समंदर की लहरें खामोश दिख रही थीं और हवा भी तेज न थी। पर हवा में काफी ठंडक थी। किशोर को लगा कि सारे दुख-दर्द अवास्तविक और काल्पनिक हैं। अनिल का प्रेम हास्यास्पद है। एक सिगरेट सुलगाकर उसने कहा—

सच कह रहा हूँ अनिल तुम्हारी बातें सुनकर तो मुझे हँसी आ रही है। एक मामूली-सी बात का इतना बतंगड़ बनाकर तुम खुद परेशान हुए जा रहे हो। बात एकदम सीधी है। तुम एक-दूसरे को बहुत चाहते हो—बस। तुम्हारे पास ढेर सारा पैसा है। तुम उसे खुश रख सकते हो। बाकी की बातें तो ऊलजलूल हैं। तुम क्यों बेकार रो गा रहे हो?"

कुछ देर के लिए किशोर रुका और फिर बोला एक बात ध्यान में रखो। हम जिससे प्रेम करते हैं वह भी अगर हमसे प्रेम करे तो इससे बढ़कर बात क्या हो सकती है! तुम्हारे साथ यही बात है और तुम हो कि

पागलों की तरह परेशान हुए जा रहे हो। ऐसा सहसा नहीं होता है। हम जिससे प्रेम करते हैं वह किसी और से प्रेम करती है और वह किसी और को चाहता है—जंजीर तो यों बनती है। उससे लोग दुखी होते हैं। एक तुम हो। जिससे प्रेम है उसी के साथ शादी हो तो इससे बढ़कर बात क्या हो सकती है। मतलब पागलपन छोड़ो। सीधे जाकर बसंती के बाप के आगे खड़े हो जाओ और पूछो। अगर वह इनकार करे तो सीधे बसंती को साथ लेकर सिविल मैरिज कर लो। अगर मौका चूक गये तो ज़िन्दगी भर पछताते रहोगे।

अनिल बेचैन हो उठा। किशोर की बातों का रुख उसने पहचान लिया था।

तुम अनुभव से यह कहते हो?

कुछ पल किशोर चुप रहा। मुझे ऐसा अनुभव कहाँ? यह तो साधारण सी बात है बिलकुल स्वाभाविक।

नहीं जी मेरा क्या खाक अनुभव होगा। लेकिन हर चीज़ का प्रत्यक्ष अनुभव होना लाज़मी नहीं है। कुछ बातें ऐसी होती हैं कि देखकर समझी जा सकती हैं। दुनिया के बारे में मेरी जो कुछ समझ है उसी के बल पर यह सब कह रहा हूँ। देखो तुम्हारी समझ में आ सके तो।'

किशोर की बातें खत्म हो गयीं। अनिल कुछ न बोला। चारों ओर खामोशी थी। चौपाटी पर एक बत्ती तक न थी। दूर से लोगों के आने जाने की आवाज़ें ज़रूर आ रही थीं। दूसरी तरफ के श्मशान में कुछ उजाला ज़रूर नज़र आ रहा था। माहौल कुछ बोझिल था। अनिल समंदर की ओर पीठ किये बैठा था और सामने के रास्ते पर लोगों की ओर देख रहा था। कुछ देर तक दोनों ही चुप रहे।

तुम्हारी बातों में दम ज़रूर है' आखिर अनिल ने कहा।

फिर खामोशी। अब दोनों के ख्याल बिलकुल विरोधी दिशाओं में बह रहे थे। बातें खत्म हो चुकी थीं। लेकिन वहाँ से उठने की तबियत न हो रही थी। किशोर को लॉज पर जाकर खत लिखना था। जितनी ज्यादा देर हो रही है उतना ही ख्याल अच्छा लग रहा है। देरी की वजह से खत लिखना कहीं टल तो नहीं जायगा? नहीं असम्भव है। आज भले ही बारह एक बज जायें लेकिन टेबिल-लैम्प लगाकर खत लिख देना चाहिए। न जाने कितने दिनों से दिमाग में है और न जाने कितने कागज़ बरबाद कर दिये हैं। कम-से-कम जयंत का ख्याल करके तो लिख ही देना चाहिए। नहीं तो आज की बात कल पर चली जायेगी। कल की बात परसों पर और हर बार की तरह टल जायेगी। लॉज पर जाते ही लिखना शुरू कर

देना होगा— पूज्य बाबूजी, सादर चरण स्पर्श। खत लिखने की वजह यह है कि आपके सभी खत मिल गये। आलस की वजह से खत न लिख सका। क्षमा करें। अभी छुट्टी भी नहीं मिल पायी है इसी वजह से न आ सका। अगले महीने छुट्टी लेकर आऊँगा। आपकी तबियत अब कैसी है? आज ही जयंत इंटरव्यू के लिए यहाँ आया है। उसने बताया कि पूज्य माता जी का पेट खराब चल रहा है ठीक ही चल रहा है ।जयंत ने आज ही मुझे इलेक्ट्रिक शेवर दिया है। वह इंटरव्यू में ज़रूर सफल होगा। बाकी ठीक है। मैं ठीक ही चल रहा हूँ ।

इतने दिन से तय कर रहा हूँ पर आगे बात बनती ही नहीं। यह अनिश्चय क्यों? हम क्यों निर्णय नहीं ले पाते हैं? अनिल को हम लाख समझाते रहे पर ज़रूरत तो हम अपने को समझाने की है। कितने दिन तक मामला ऐसे ही लटकता रहेगा? एक दिन सीधे नीला से पूछ ही लेना चाहिए ताकि अनिश्चितता तो खत्म हो। या सारी ज़िन्दगी ऐसे ही बिता देनी है उजड़े रेगिस्तान की तरह? बकौल अनिल इससे तो सीधे समंदर में चला जाना क्या बुरा है! त्रिशंकु की तरह लटकने में क्या रखा है? मान लो नीला ने मना ही कर दिया तो क्या होगा? बस इसकी संभावना कितनी है? उसकी आँखों में कुछ और ही होता है। नकार उसकी आँखों में नहीं है यह भी सच है। अगर नकार होता तो हम वहाँ क्यों जाते? मान लो उसने ना कर दिया तो क्या बिगड़ेगा? बाबूजी जिससे कहेंगे उसी से शादी करना क्या बुरा होगा? किशोर के बदन पर काँटे उभर और उसे लगा कि जैसे हज़ारों चींटियाँ उसके बदन पर चढ़ गयी हैं। एकदम असह्य। फिर बाबूजी को क्या लिखे? यही न कि मेरी राह न देखिये। जयंत की शादी कर दीजिये। पूज्य बाबूजी सादर चरण स्पर्श। खत लिखने की वजह यह कि ।

अनिल रास्ते की तरफ चुपचाप देखे जा रहा था। दूर मोटरों की बत्तियाँ चमकती और अदृश्य हो जाती। उनके इंजन की आवाज़ ज़रूर काफी दूर तक आती रहती थी। रास्ते पर एकाध ही पैदल नज़र आ रहा था। बीच में एक युगल कमर में हाथ डाले नज़रों के सामने आ गया और बमती की याद तीव्र हो उठी। किशोर की बातों का अर्थ उसकी समझ में आने लगा। अचानक अनिल एकदम हड़बड़ाया। तनकर बैठ गया और किशोर से बोला—

किशोर ज़रा उधर देखना क्या हो रहा है?

किशोर ने घूमकर देखा। पहले तो उसकी कुछ समझ में न आया। सामने वाले रास्ते से जो छोटी-सी गली आ मिलती है वहाँ नारियल के

दो पेड़ थे। वहाँ अँधेरा था। उसके नीचे नजर गयी तो किशोर भी हड़बड़ा गया। अरे बाप रे!” वह बीच में ही चिल्लाया।

उन दो पेड़ों के करीब एक ऊँचे से आदमी को दो तीन लोग पीट रहे थे। अँधेरे में उनकी हरकतें साफ न दीख रही थीं। अनिल ने किशोर का ध्यान उधर खींचा। तभी तीन लोगों ने उस ऊँचे आदमी को घेर लिया था। दूसरे ही पल एक आदमी ने उस पर लोहे के किसी औजार से हमला बोल दिया। तभी वह ऊँचा आदमी नीचे गिर पड़ा। बाकी दोनों ने भी उस पर हमला कर दिया।

किशोर एकदम डर गया। पहले उसने वहाँ से भाग जाने की सोची। लेकिन तब तक अनिल ने निर्णय ले लिया था। अनिल झट से उठा और दौड़ते हुए उधर की ओर लपका। तेज़ी से चीखा पुलिस पुलिस अरे पकड़ो पकड़ो खून! खून! तभी किशोर भी चीखने लगा। अनिल करीब न जाओ। करीब न जाओ। भागो कहीं तुम पर हमला न बोल दें वे लोग।' लेकिन अनिल उधर ही बढ़ रहा था। और किशोर को उसके पीछे भागना लाज़मी हो गया।

उन दोनों के चीखने और भागकर उधर बढ़ने में काफी काम हो गया। आस पास के कुछ बंगलों की खिड़कियाँ खुल गयीं। वे लोग रुक गये। अनिल और किशोर को उन लोगों ने तेज़ आवाज़ में धमकी दी और वहाँ से भाग खड़े हुए। रास्ते के करीब ही एक टैक्सी खड़ी थी। शायद उन लोगों की ही थी। उन तीनों के उसमें बैठते ही टैक्सी तेज़ी से चल दी। आध-पौन मिनट के भीतर ही यह सब हो गया। और फिर खामोशी छा गयी जैसे कुछ हुआ ही न हो। और जैसे वाकई कुछ हुआ ही नहीं, इस अंदाज़ में मकानों की खिड़कियाँ फिर बंद हो गयीं। इतना सब तेज़ी से हो गया। अब खामोशी।

वहाँ अँधेरा था। वह आदमी औंधा पड़ा हुआ था। दोनों उस पर झुक गये।

‘सिर से खून आ रहा है। जल्दी टैक्सी लानी चाहिए।”

“अभी ज़िन्दा दिख रहा है।

सच पूछा जाय तो उस अँधेरे में कुछ भी नजर न आ रहा था। लेकिन चोटों के दर्द की वजह से वह आदमी पाँव पटक पटक कर कुछ बड़बड़ा रहा था। उसके ज़िन्दा रहने का यही प्रमाण था।

‘मैं टैक्सी लाता हूँ, तुम यहीं रुको’ कहते हुए किशोर रास्ते की ओर भागा। दो मिनट उसे टैक्सी की राह देखनी पड़ी। फिर दोनों ने मिल कर उस आदमी को उठाकर टैक्सी में रखा। टैक्सीवाले ने पिछली बत्ती

जलायी और वह चीखा अरे बाप रे खून! यह तो बड़े खतरे की बात है।'

पहले के० ई० एम० अस्पताल चलो। फिर दूसरी बात होगी। यह आदमी मर रहा है अनिल चीखा। झींकते हुए ही ड्राईवर ने टैक्सी बढ़ायी।

टैक्सी की बत्ती जली तो उस जख्मी आदमी का चेहरा नज़र आया। किशोर ने उस आदमी का सिर अपनी गोद में ले लिया था। उसकी पैंट खून से भीग गयी थी। चेहरा देखते ही उसे कुछ याद आया।

अनिल, इस आदमी को तुम पहचानते हो ?'

अनिल ने प्रकाश में ध्यान से देखा नहीं पर इस आदमी का फोटो जरूर इधर पेपर में छपा था।

कोस्टा!

हाँ। डीकोस्टा ही है। करवट। माई गाड! अच्छा हुआ जो हम करीब ही थे।'

अनिल ने जेब से रूमाल निकाल लिया। जहाँ से खून निकल रहा था अँधेरे में ही वहाँ अंदाज़ से रूमाल बाँध दिया।

दर्द से कोस्टा कराहा।

आ-आ आटी आटी नीला नीला! वह बड़बड़ा रहा था। दर्द से उसने पाँव झटके तो वे अनिल के सिर से टकराये। फिर उसने दो-तीन बार गर्दन हिलायी। वह फिर बर्राया ओह आटी नीला नीला!

किशोर का सिर पल भर के लिए चकरा गया। मन पर एक छाया मँडरायी। लगा जैसे बदन पर किसी ने गरम पानी उँडेल दिया हो। डीकोस्टा दिखने में अच्छा खासा है। हो सकता है कि उसने नीला को उसी वजह से नौकरी दी हो। हो सकता है यह कारण न रहा हो। पर सहज ही शक होना है। डीकोस्टा ब्रह्मचारी है। उसके पीछे कई लड़कियाँ दीवानी है। उन सब में से यह नीला का नाम ले रहा है।

कौन है मद् साहब? क्या हुआ? टैक्सी चलाते हुए ड्राईवर ने पूछा।

लेबर-लीडर कोस्टा है। कोई मार रहा था उसे। हम लोगों ने उसे छुड़वाया।

अरे बहुत बुरा हुआ। कोस्टा को हम भी पहचानता है। बहुत बुरा हुआ साब।

कुछ देर बाद वह बोला कौन थे वे बदमाश? अकेले को मार रहे थे। साब कोस्टा साब बड़ा अच्छा आदमी है साब। हमने कई बार उन्हें

टैक्सी में बिठाया, मगर पैसा नहीं लिया। इधर उसकी छोटी आंटी रहती थी, साब। उससे मिलने जा रहा होगा। किसी ने धोखा दिया होगा। बड़ा अच्छा आदमी है साब!'

ड्राईवर बोले जा रहा था। रास्ते पर चहल पहल न थी। तिलक ब्रिज आया तो किशोर ने चारमीनार सुलगा ली। उसके खत्म होते ही के० ई० एम० अस्पताल आ गया। कोस्टा के सिर में और पीठ पर हमले किये गये थे। सिर में फ्रैक्चर हो गया था। अस्पताल पहुँचते ही उसे आपरेशन रूम में ले जाया गया। पुलिस की पूछ-ताछ हुई। पेपर के पत्रकार पूछ-ताछ करने लगे। सुबह दो के करीब डीकास्टा को ऑपरेशन थियेटर के बाहर निकाला गया। धोखा खत्म हो चुका था।

किशोर और अनिल लाज में अपने-अपने पलंग पर लेटे तो साढ़े तीन बज चुके थे। किशोर चारमीनार का एक पैकिट ज्यादा पी गया था। अनिल को नींद आ गयी। किशोर की आँखों के सामने पंखा चमक रहा था। उसका प्रतिबिम्ब उसमें उभर रहा था। उसकी नज़रों के आगे नीला की टेबिल पर रखा डीकोस्टा का फ़ोटो उभर रहा था। नीला की आँखें कुछ और कह रही थीं। डीकास्टा का कराहना उसके कानों तक आ रहा था। और दिमाग़ में खत का वही मज़मून बार बार चक्कर काट रहा था—'पूज्य पिताजी चरण स्पर्श। खत लिखने की वजह यह कि ।'

जलायी और वह चीखा अर बाप र खून! यह ता बडे खतरे की बात है।'

पहल क० ई० एम० अस्पताल चलो। फिर दूसरी बात होगी। यह आन्मी मर रहा है अनिल चीखा। झीकत हुए ही ड्राईवर न टक्सी बन्गयी।

टक्सी की बत्ती जली तो उस जख्मी आदमी का चेहरा नज़र आया। किशार न उस आन्मी का सिर अपनी गोद म ल लिया था। उसकी पट खून से भीग गयी थी। चेहरा दखते ही उसे कुछ याद आया।

अनिल इस आदमी को तुम पहचानत हा?

अनिल न प्रकाश म ध्यान से दखा नही पर इस आदमी का फाटो जरूर इवर पपर म छपा था।

कोस्टा!'

हा। डीकास्टा ही है। करवट। माइ गाड! अच्छा हुआ जा हम करीब ही थ।'

अनिल न जेब से रूमाल निकाल लिया। जहाँ स खून निकल रहा था अधरे म ही वहा अन्दाज से रूमाल बाध दिया।

दद से कास्टा कराहा।

आ आ आटी आटी नीला नीला! वह बडबडा रहा था। दद से उसन पाँव झटके तो व अनिल के सिर से टकराय। फिर उसने दो-तीन बार गदन हिलायी। वह फिर बर्राया ओह आटी नीला नीला!

किशोर का सिर पल भर के लिए चकरा गया। मन पर एक छाया मडरायी। लगा जसे बन्न पर किसी न गरम पानी उँडल दिया हो। डीकोस्टा दिखन म अच्छा खासा है। हो सकता है कि उसन नीला को उसी वजह स नौकरी दी हो। हा सकता है यह कारण न रहा हो। पर सहज ही शक होता है। डीकोस्टा ब्रह्मचारी है। उसके पीछे कई लडकिया दीवानी हैं। उन सब म स यह नीला का नाम ले रहा है।

कौन है यह साहब? क्या हुआ? टक्सी चलात हुए ड्राईवर ने पूछा।

लेबर लीडर कास्टा है। कोई मार रहा था उसे। हम लोगो ने उस छुडवाया।

अरे बहुत बुरा हुआ। कास्टा का हम भी पहचानता है। बहुत बुरा हुआ साब।

कुछ देर बाद वह बोला कौन थ वे बदमाश? अकल को मार रहे थ। साब कोस्टा साब बडा अच्छा आदमी है साब। हमन कई बार उन्हे

टैक्सी में बिठाया, मगर पैसा नहीं लिया। इधर उसकी छोटी आटी रहती थी, साब। उससे मिलने जा रहा होगा। किसी ने धोखा दिया होगा। बड़ा अच्छा आदमी है साब!'

ड्राइवर बात जा रहा था। रास्ते पर चहल पहल न थी। तिलक ब्रिज आया तो किशोर ने चारमीनार सुलगा ली। उसके खत्म होते ही के० ई० एम० अस्पताल आ गया। कोस्टा के सिर में और पीठ पर हमले किये गये थे। सिर में फ्रैक्चर हो गया था। अस्पताल पहुँचते ही उसे आपरेशन रूम में ले जाया गया। पुलिस की पूछ-ताछ हुई। पेपर के पत्रकार पूछ-ताछ करने लगे। सुबह दो के करीब डाकोस्टा को आपरेशन थियेटर के बाहर निकाला गया। खतरा खत्म हो चुका था।

किशोर और अनिल लाज में अपने-अपने पलग पर लेटे तो साढ़े तीन बज चुके थे। किशोर चारमीनार का एक पैकिट ज्यादा पी गया था। अनिल को नींद आ गयी। किशोर की आँखों के सामने पंखा चमक रहा था। उसका प्रतिबिंब उसमें उभर रहा था। उसकी नज़रों के आगे नीला की टेबिल पर रखा डीकोस्टा का फोटो उभर रहा था। नीला की आँखें कुछ और कह रही थीं। डीकोस्टा का कराहना उसके कानों तक आ रहा था। और दिमाग में खत का वही मजमून बार बार चक्कर काट रहा था—पूज्य पिताजी चरण स्पर्श। खत लिखने की वजह यह कि ।'

अय्यर

ओ नो व्हाट हिड यू से ?"

यस। सैली इज डेड।"

अय्यर का चेहरा काला स्याह पड़ गया। उसके माथे पर पसीने की बूँदें चमकने लगीं। केबिन के दरवाज़े का सहारा लेकर वह अंदर आया और बीच वाली कुर्सी पर बैठ गया। सामने रखी ट्रे से उसने एक कागज़ उठाया और उससे अपना मुँह पोंछ लिया। गले से टाई निकाल दी और ऊपर चलते पंखे की ओर देखता रहा। उसने एक बार फिर मुँह पोंछा। कुछ ही देर बाद पाम्पे अंदर आया।

बाद्रा नहीं जायेंगे ?' उसने धीमे से पूछा।

अय्यर ने कुर्सी पर टँगा कोट उठा लिया। पर्स और जेब टटोले तो कुल ढाई सौ के आसपास रुपये निकले। उसने पोंम्पे से पूछा तो उसने अपने पास से पचास रुपये उसे दे दिये।

"पंद्रह मिनट में तुम कितने रुपये ला सकते हो, उधार ?' अय्यर ने पोंम्पे से पूछा।

'कितने चाहिए ?"

'कितने भी, आठ सौ हज़ार। दो दिन में वापस कर दूँगा।'

पाम्पे चुपचाप बाहर चला गया। पंद्रह मिनट में ही वापिस आकर उसने साढ़े पाँच सौ रुपये अय्यर के हाथ में थमा दिये।

'चल रहे हो बाद्रा ?"

चलो।"

अय्यर ने डायरी खोली। कल की डायरी में कुछ साफ़ करना रह गया था। फ़ाइल देखकर बेकार के कागज़ उसने निकालकर फेंक दिये। एक कागज़ से मुँह पोंछकर उसे पीछे की ओर फेंक दिया। कपड़े से फिर टेबिल पोंछी। फ़ाइल बंद की। डायरी बंद कर के टेबिल पर ही पटक दी और कुर्सी से टिक गया।

रहने दो। अब नहीं।" वह बोला।

"रहने भी दो," पाम्पे ने कहा।

'तुम साफ़ कर लोगे ? वैसे काम हो ही चुका है। बचा हुआ काम देख लेना ज़रा।"

पोंम्पे ने गर्दन हिलायी।

'सचिवालय म आज कुछ है ?

म डाट वरी अवाउट दट। एव रीथिंग इज आ के। चलो।

ओ के। चला।

भारी मन से उठत हुए अय्यर न कोट पहन लिया।

इस वक्त अय्यर न अपनी गाडी निकालने की कोशिश नहीं की। टक्सी को इशारा किया। ड्राईवर का पेडर राड का पता दिया और पीछे की ओर टिक कर और आँखें वद कर वह बैठ गया। पाक्से चुप रहा। सिगरट पीता बठा रहा। कुछ दर बाद अय्यर न ही पूछा—

टली न कितन बज फान किया था ?

यही कोइ पाँच-सवा पाच बजे।

मरी कब ?'

चार बजे।

'यू नो पोक्से मैंने अपनी ओर से जितना बन सकता था मदद की थी। आई काट हेल्प !

'आई ना आई नो।

'आखिर म तो उसकी ओर दखा नही जाता था। इसी वजह से उस के यहा न जाता था। बिलकुल खराब हो चुकी थी।

पाक्से चुप था। फिर अय्यर भी मकान आने तक चुप रहा। कमरे म आन पर उसन कपडे बदले। अलमारी से एक व्हिस्की की बोतल निकाल ली।

'तुम लोगे ?'

इस वक्त ? नही पर तुम ल लो ! '

'घर पर मैं दूसरी बार ले रहा हूँ। एक वार मम्मी मरी तब और दूसरी वार अब।

बिना पानी मिलाय अय्यर आधा ग्लास पी गया। फिर पोक्से के कंधे पर हाथ रखकर बोला चलो।

टक्सी बाद्रा की ओर बढने लगी तो अय्यर ने कहा तुम जानते हो पोक्से मैं स्ली स शादी करने वाला था ? मरन क एक दिन पहले ता मम्मी ने भी इजाज़त द दी थी।'

फिर क्यों नही की ?

'काफ़ी देर हा चुकी थी। अय्यर कुछ देर चुप रहा। फिर अचानक बोला—

'वट शी वाज़ ए जम। तुमने तो दखा था उसे ? अमग आल द वीमन आई मट शी वाज द वस्ट। पोक्से, तुमन कभी अपनी बीवी के अलावा

किसी लड़की को चखा है ? नहीं न ? यू आर ए फूल। सो कर तो देखा ? फिर समझ सकोगे कि तुम्हारी बीवी कैसी है ? फारस रोड पर कभी गये हो ? नहीं। आई नो। तुम में हिम्मत ही नहीं है। आई नो आज चलोगे ? चलो मैं तुम्हें ले चलता हूँ। कावर्ड ! यू ब्लडी महाराष्ट्रियंस यू डोंट नो लाइफ। कम आन लेट मी टीच यू।

पोंक्षे को अय्यर पर दया आयी। लेकिन वह गुस्सा न हुआ। लाइफ के बारे में हरेक के खयाल अलहदा होते हैं अय्यर साहब। उसने इतना ही कहा।

यू आर राइट यस यस। यू आर राइट। परफैक्टली राइट। आई एम सारी। आज सली मर गयी है न इसीलिए मैं बकझक कर रहा हूँ। सारी मुझे गुस्सा आ रहा है। पर तुम्हारे खयाल एकदम ठीक हैं। बी फेथफुल टु युअर वाइफ। सली मेरे साथ फेथफुल थी लेकिन मैं खुद नहीं था। शी वाज ए जेम। आई एम ए रास्कल। तुम अपनी बीवी को धोखा न देना। बी ए गुड मैन। यस ए गुड मैन। अरे हां तुम्हारा बेटा कैसा है ?

अब ठीक है।'

'गुड। टेक केयर आफ हिम। स्मार्ट है। बी हैप्पी। फैमिली लाइफ। पर सच कहता हूँ मुझे फैमिली लाइफ रास न आती। मैं जैसा हूँ वैसा ही ठीक हूँ। मेरा टैम्परामेंट फैमिली लाइफ को सूट ही नहीं करता।

फिर अय्यर कुछ देर ऐसे ही चुप बैठा रहा। सड़क की ओर देखते हुए फिर बोला—

'वह वाकई अच्छी लड़की थी। सुना पोंक्षे ? ए रियली ऑनेस्ट गर्ल। तुमने तो दो-तीन बार उसे देखा था। तुम कुछ भी नहीं जानते ? वेरी इन्टेलिजेंट वेरी सेंसिटिव। उसी टली ने पैसे के खातिर उससे एस घघ करवाये थे। बट शी लव्ड टली टू—साला ! बास्टर्ड। वह ध्यान खूब रखती थी अपना। बीमारी कैसे लग गयी पता न चला। हम काफी पहले उसके यहाँ जाना था ? पिछले दो-तीन महीने से गया ही न था। पैसे जरूर भिजवा दिये थे। लेकिन खुद न जा सका। स्साला हम भी अजीब डरपोक हैं। वह बेहोशी की हालत में मेरा नाम रट रही थी। हम इधर मजे किये जा रहे थे। ह्वाट डू यू से, पोंक्षे ? मैं बहुत क्रूड हूँ न ?'

ना यू आर राइट।'

फिर ? मैं क्या पजिल हूँ ? नानसेंस। यू आर टाकिंग राइट पोंक्षे।

पोंक्षे कुछ न बोला। सड़क की ओर देखता रहा। बान्द्रा करीब आया तो अय्यर बोला, मैं पांच-दस मिनट से ज्यादा वहाँ **रुकूँगा नहीं**। तुम

मुझे अकेला न छोड देना। बाद म हम आफिस नही जायेंगे। आज तुम दो ढाई घटे बठ जाना। प्लीज़।'

एक जगह रुककर उसन फूलों का हार खरीद लिया।

सली का कमरा अदर से बद था। बाहर भी कोई न था। यहां कोई मरा होगा इसका अदाज़ तक न हो रहा था। पाक्षे न बल बजायी तो स्कट पहने एक लडकी बाहर आयी। देखते ही उसने अय्यर को पहचान लिया। आंखो स रूमाल लगाकर बोली टली बाहर गया है। आपको बठने के वास्ते बोला है। वो अब्बी आता होगा।'

वे लोग अदर के कमरे मे चले गय। एक पुराने ढर्रे के पलग पर सली का दुबला पतला शरीर पड़ा हुआ था। गले तक चादर ढंकी हुई थी। सिर पर शालनुमा एक कपडा बंधा हुआ था। सली की आंखें बद थी। होठ सफद नज़र आ रह थे। नाक म कपडा ठुसा हुआ था। कमरे की खिडकी बद थी। छत ऊची थी और कमरे का फर्नीचर पुरान ढर्रे का था। अदर अजीब सी गध आ रही थी। सली के पलग के करीब स्टूल डालकर वह लडकी बठ गयी। एक छोटे से रूमाल से उसने अपनी आंखें पोछी और सली की ओर देखने लगी। बीच-बीच म वह रूमाल से अपनी आंखें पोछ लेती थी। आंखो म आंसू नज़र नही आ रह थे। बीच-बीच म वह ऊपर खिसक आने वाले अपने स्कट को नीचे की ओर खिसका लेती थी।

आते ही अय्यर ने फूलों की माला पलग के पैतान रख दी। कुछ देर उस ने सली की ओर देखा। वह इसी पशोपेश म था कि ऐसे वक्त क्या किया जाय? मम्मी के वक्त बात दूसरी थी। उसन मम्मी के पाव छूकर नमस्कार किया था। लेकिन इस वक्त क्या किया जाये? सच पूछा जाये तो मम्मी के वक्त बुरा ज़रूर लग रहा था लेकिन उसस छुटकारा मिलने पर तसल्ली भी हुई थी। मम्मी अडसठ साल की होकर मरी थी। इसने तो अभी अठाईस साल भी पूरे नही किये थे। इससे मेरा प्रेम था क्या? इससे कभी हम शादी करने के लिए तयार थे। लेकिन क्या वाकई इससे मुझ प्रेम था? फिर ऐसा क्यों? मम्मी के समय तो ऐसा न लग रहा था। सिर बुरी तरह भिन्ना रहा है। लग रहा है खून का हर कतरा बाहर आ जायेगा। आखिर यह सब क्या है? मरते वक्त सली को मेर बारे म क्या महसूस हुआ होगा। मैंने उसे धोखा दिया यही सोच रही होगी? पर मैं भी क्या करता? मम्मी के बाद शादी करन की हालत ही न रही। वह मरेगी यह तय था। लकिन कब—यही सवाल बचा था। पर मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। कितने दिन से टली फोन कर रहा था। एक बार आ जाना चाहिए था। सली बीमार थी। वह मर रही थी और हम मिसेज खान के

पास पडे हुए थ । मुझम अपराध भाव क्यो जाग रहा है ? जि दगी म कभी ऐसा महसूस न हुआ था ।

फिर अय्यर और पोश करीब की एक कुर्सी पर बैठ गय । अय्यर को जम्हाई आ गयी । उसने दबाने की कोशिश की है लेकिन कोशिश सफल नहीं हुई । फिर एक के बाद एक तीन चार जम्हाईया उसन ली । सली क मुह की ओर दखन की हिम्मत न हो रही थी । इसी वजह से उसके मुह की ओर न देखते हुए वह कुर्सी से पीठ टिकाय बठा हुआ था । जब न रहा गया तो उसने उस लडकी स पूछा टली कब आने वाला है ?

उसन तो कहा था अब्बी आता है । उसन फिर आखें पाछ ली । इसी तरह कुछ वक्त गुजर गया । अय्यर बचन था । उससे बठा न जा रहा था । पांच छह मिनट बाद वह उठा । उसने पूछा—

फ्यूनरल कब तय किया है ? '

'शायद कल सुबह ।"

अय्यर कुछ देर तक ऐसे ही पाशे की ओर देखता रहा । फिर उसने जब म हाथ डालकर पांच सौ रुपय निकाल और उस लडकी की ओर बढ़ात हुए बाला ' दिस इज़ फार फ्यूनरल । '

उस लडकी ने पसे लेने के बजाय हथलिया से अपना मुह ढाप लिया और बुरी तरह रोने लगी । अभी तक लग रहा था कि उसकी आंखा म आंसू नही है । लेकिन अब उसका सारा चेहरा आसुआ से भीग गया था । उसका सारा बदन कांप रहा था । आते समय पोशे को अजीब लगा था । मेकअप किया काला-स्याह चेहरा, छोटा स्कट मोटा बदन तग ब्लाउज । उसे दखत ही अजीब घृणा उसके मन म भर गयी थी । लकिन उसका रोना खकर पोंशे का गला भी भर आया । उससे न रहा गया । उसकी आखो स भी आंसू बहने लगे । उसने जेब से रूमाल निकाला और आंखें और नाक पाछ ली ।

अय्यर को गुस्सा आ गया । वह तश म बोला "डाट क्राई । ये लो पम, लो । टनी को दे देना ।

उस लडकी का रोना और भी तज़ हो गया । जसे छोटे बच्चे पर हाथ उठाया जाये तो वह और भी तेज़ रोने लगता है उसी तरह वह लडकी ज़ार ज़ार से रोने लगी ।

'कम आन टेक इट । मुझ जाना है । टली को बताना कि मैं आ गया था । कल सुबह फिर आऊँगा । फ्यूनरल पर । कम आन टक इट । '

जब अय्यर न देखा कि वह लडकी पसा नही ले रही है तो बोला डाट बी ए फूल । मैं टली को दे रहा हू पस । फ्यूनरल के लिए ।' उसन

उसका हाथ हटाया और उसके ब्लाउज़ में रुपये ठूस दिये।

वे दोनों बाहर आये तो पाध्ये ने कहा 'और कुछ देर रुक जाना था। बाहर निकलने की इतनी जल्दी क्यो की ?'

अय्यर चुप ही रहा। उसने टैक्सी को इशारा किया। पाध्ये को अंदर बिठाया और टैक्सी आफिस की ओर बढ़ने लगी तो बोला—

तुम्हें आफिस छोड़ देता हूँ। घंटे भर बैठना, फिर घर चले जाना। आज मैं आफिस में न बैठ पाऊँगा।

अय्यर इसके बाद कुछ न बोला। माहीम काजवे आने पर समदर की ओर देखने लगा। बीच में ही पाध्ये ने पूछा वह सली की बहन थी ?'

'नानसेंस। वह तो दूसरी बिल्डिंग की घरवाली थी।

पाध्ये ने सिगरेट सुलगा ली। आफिस आने तक वह तीन सिगरेट पी गया।

पाध्ये को आफिस में छोड़कर अय्यर ने टैक्सी नरीमन पाइंट की ओर मुड़वायी। दस का वक्त हो रहा था। आखिरी पानी पूरी वाला अपनी गाड़ी लिये जा रहा था। अय्यर ने पानी-पूरी ली। दूसरी तरफ तेज प्रकाश में एक बिल्डिंग की नीव डाली जा रही थी।

अय्यर कुछ देर उधर देखता रहा। समदर की लहरें लहरा रही थी। हवा तेज हो गयी थी और किनारे से टकराती लहरो की आवाज एक खास लय के साथ आ रही थी।

प्रिंसिपल्स आफ लाइफ अय्यर बुदबुदाया जहाँ देखो वहाँ यही प्रिंसिपल। इससे बच नही सकते।'

जेब में हाथ डाले हुए वह मरीन ड्राइव के किनारे किनारे चलने लगा।

उसे खुद होश न था कि वह कहाँ जा रहा है और क्या कर रहा है। जानना भी किसलिए ? जानकर हम कौन से काम करते रहते हैं ? कौन करता है ? दुनिया की हर बात आखिर एक छोटी सी चीज़ के इर्द गिर्द केंद्रित रहती है न ? प्रिंसिपल आफ लाइफ। हम सली की ओर क्यो खिंचे ? मिसेज़ खान के लिए हम अपने काम की परवाह नही करते। प्रिंसिपल आफ लाइफ। जिन्दगी का मूल तत्व। पुनरचना ? हुंह। अपना रिश्ता ही क्या है ? फिर हम इतनी रंडीबाजी क्यो करते हैं ? पाध्ये की तरह शादी कर ली होती। फिर कहाँ रहता प्रिंसिपल ? नानसेंस। देअर इज़ नो प्रिंसिपल आफ लाइफ। इन फैक्ट देअर इज़ नो लाइफ एट आल।

लाइफ इज एन एक्सिडेंट। बस ! हमने मम्मी की ओर ध्यान क्या नही दिया। शादी क्यो नही कर ली ? जस्ट सो। रंडीबाजी क्या की ?

जान समझकर हम कौन-सी बातें करत हैं ? हम इस धधे म आये ही क्यो ? एक्सीडेंट ? जान समझकर तो इधर आये नहीं। भडारी से झगडकर नौकरी को लात मारकर निकल आये तो भी क्या ? जस्ट सो। देअर इज नो प्रिंसिपल आफ लाइफ। हम तो प्रिंसिपल के आदमी ही नही हैं। पाश् हो सकता है। अच्छे-बुरे प्रिंसिपल हो सकते हैं। भडारी के भी हो सकते हैं कोस्ला के हो सकते हैं। चीफ मिनिस्टर के भी हो सकते हैं। लेकिन उनका उद्देश्य है। कुछ अच्छे सिद्धात होगे कुछ बुरे। सच पूछा जाये तो हम बिलकुल ही बेतरतीब हैं। इसीलिए काम म जी लगायें यही अच्छा है। काम न हो तो खूब औरतें मिलती हैं जब चाहे तब। बेकार सोच विचार किस वास्ते ? कायदे स सोच विचार हमस नही हो पाता। हो सकता है हमारी करीने से पढाई लिखाई नही हो पायी इसलिए ऐसा हो। हम म सिर्फ एनिमल इन्स्टिक्ट है। उसी के बल पर बम्बई म टाइपिस्ट से चीफ रिपोर्टर बन गये। कायदे से सोचते विचारते तो प्रधानमत्री हो सकते थे। रडीबाज़ी के चक्कर म न पडे होते तो सली से शादी कर लेते। कम-से-कम मम्मी द्वारा बतायी कर्नाटकी लडकियो म से किसी एक से ही कर लेते। पर छोडो भी। इट्स आल नॉनसेंस। साली ह्विस्की का यही असर होता है। या कि यह ती की मौत का असर है ? इसलिए सिर भिन्ना रहा होगा। लेकिन सली ी मौत स हमारा वास्ता ही क्या ? हम क्या उससे प्रेम था ? सच पूछा ाय तो वह एक रडी थी। वसे अब ऐसा नही कहना चाहिए। पर थी ज़रूर। उसकी क्लास ज़रूर ऊँची होगी। फीस ज्यादा होगी। पहली इट्रा डक्शन क वक्त हमने कितने दिये थे ? यस—पतालिस रुपये। तो वह रडी थी मरे लिए उसन अपना धधा छोड दिया तो क्या हुआ ? पिछले सात साला म वह मर अलावा किसी क साथ नही सोयी ता क्या हुआ ? मुझे उससे प्रेम था ? बिलकुल नही। प्रेम कुछ और ही होता है। फारस रोड पर कइयो के साथ सोये तो क्या उन सबसे प्रेम था ? बकवास। लेकिन आज समन्दर अजीब लग रहा है। लहरो की आवाज़ बदन पर काँटे उभार रही है। चौपाटी की नियोन लाइटें आखो म बुरी तरह चुभ रही है। कपडे बदन को चुभ रहे है। सिर फूट गया है हाथ-पाँव टूट गये हैं। फिर भी हम कही जा रहे हैं। कोई किसी स नही पूछेगा कि हम कहाँ जा रहे हैं ? और हम भी किसी को नही बतायेंगे। गरज कि हम खुद भी कहाँ जानते हैं ?

समन्दर पर लहरो की आवाज़ और भी तेज हो गयी थी। हवा भी तेज हो गयी थी। एकाध के अलावा बाकी नियोन लाइटस अजीब मरियल सी लग रही थी। समदर के करीब वाला रास्ता अब सुनसान नज़र आने लगा था। कितने बजे हैं, इस बात की फिक्र अय्यर को न थी। लेकिन अब

बम्बई नीद म अलसायी हुई सी नज़र आ रही थी। तभी पानी बरस पडा। बगर सूचना के ही मशीनगन की तरह बडी बडी बूदें बरसने लगी। अय्यर को कहीं रुकने का होश न था। चोपाटी पर खडे तिलक के पुतले की तरह वह भी बारिश म खडा रहा। आध पौन मिनट म बौछार उस भिगोकर चली गयी। नीचे की बालू अजीब किचकिची हो गयी थी। रास्त पर गीलेपन की वजह से बत्तियो का प्रतिबिंब साफ-साफ नज़र आने लगा था। अय्यर दो-तीन मिनट तक वसे ही खडा रहा। फिर आराम से चलने लगा। चोपाटी का पुल पारकर वह गिरगांव म आ गया। ऑपेरा हाउस से वह लमिंग्टन रोड की ओर मुड गया। वहां स विट्ठलभाई पटेल रोड से होता हुआ फारस रोड पर आ गया। सारा रास्ता उस हाथ की लकीरों की तरह नज़र आ रहा था। नीची गदन किये वह चल रहा था। फारस रोड की हतभटी की बू उसकी नाक म आयी तो उस एहसास हुआ कि वह फारस रोड पर आ गया है। होटल खुले हुए थे और कही-कही गाने के रिकाड बज रहे थे। आधे खुले कपडे पहनी औरतो स मकानों की गैलरी भरी हुई थी। उनके इशारों की परवाह न कर वह एक खास कोठी की ओर बढ गया।

आओ साब। माल देखना है ?' उसकी पहचान वाली एक औरत पान खाये दांत बिचकाते हुए बोली।

नही। मगलाबाई कहाँ है ?

अदर गिराइक के साथ।

'तो मैं बठता हूँ।"

सारा कमरा अजीब सा लग रहा था। उस कमरे म अजीब बू आ रही थी। पहली बार जब अय्यर आया था तो उसे बडी मुश्किल स अपनी मितली रोकनी पडी थी। अब तो आदत हो चुकी थी। फारस रोड की आन्त किसी को भी हो सकती है। उसने बडे-बडे अमीर लोग वहां देख थ। उसने सोचा तक न था कि वह भी कभी फारस रोड पर आ सकता है। लकिन इस लाइन की प्रगति बडी तेज़ी स हुआ करती है। पहले कोलाबा लिंकिंग रोड बाद म एकदम इधर। वह एक सहज यात्रा थी। जस बहता पानी ढलान की ओर बहता है। जो कोलाबा से शुरू करता है वह अत म इधर ही आ जाता है।

अदर के कमर से एक पढा लिखा भद्र महाराष्ट्रियन बाहर आया और अय्यर से नज़रें मिलाये बगर ही बाहर चला गया। कुछ देर बाद बाल सँवारती हुई मगलाबाई बाहर आयी। काले रग की मोटे बदन की वह औरत करीबन चालीस की रही होगी। उसक दात पान की वजह स खराब हो चुक थे। बाल भी कुछ कुछ सफेद हो चुके थे। मेकअप के बीच चेहरे

की मुरिया नजर आ रही थी। वह थकी हुई दिख रही थी। लेकिन अय्यर को देखते ही खुश हो गयी।

"अरे ये तो साब हैं! कब आया, साब?"

'अभी आया।

काफ़ी दिनों बाद मेहरबानी की, साब।"

'यूँ ही आया था।"

अपने खास ग्राहक को देने वाली लौंग उसने लाकर अय्यर को दे दी।

'अंदर आओ।'

"नहीं। आज दिल नहीं है।'

आओ। बहुत दिन में आया साब।"

तुम्हारे काम खत्म हो गये?'

'अब कैसा काम साब। बड़ी मुश्किल से एक गिराइक मिला था साब। बूढ़ी हो गयी हूँ न अब" मंगलाबाई निराश होकर बोली।

अय्यर चुप रहा। उसके दिमाग में कोई भी खयाल न था। दिमाग अजीब खाली-खाली-सा था। लेकिन बीच में ही जैसे पानी के बीच मछली उछल पड़े वैसे ही उसके मुँह से शब्द निकले। 'प्रिंसिपल आफ लाइफ।" यह शब्द कहाँ से आये थे?' शायद उस जापानी पेंटर का असर होगा। अय्यर मंगलाबाई की ओर देखता रहा। उसका इस तरह देखना अजीब लगा तो मंगलाबाई ने पूछा—

'साब की तबियत ठीक नहीं। कपड़े गीले हो गये, साब?

'ठीक है।

फिर चलो न अंदर।'

'नहीं बस। हम भी बूढ़े हुए आज।

'ना आप तो । चलो न अंदर।' मंगलाबाई ने उठते हुए कहा।"

नहीं नहीं। आज नहीं। आज तो यों ही आया था।

मंगलाबाई का चेहरा मुरझा गया तो अय्यर ने जेब से पैसे निकाला "' दस-दस के चार नोट निकालकर उसके आगे धर दिये। आज सिर्फ इसके लिए आया था।

नहीं-नहीं साब। धंधे के बग़ैर आपसे कभी पैसा नहीं लिया साब।

'लो। कह रहा हूँ न आज मैं इसीलिए आया था।"

मंगलाबाई ने अय्यर के हाथ से नोट ले लिये और आँचल आँखों से लगा लिया।

'बुरे हाल हैं साब। गिराइक मिलता नहीं। बूढ़ी हो गयी हूँ साब अब। जैसे-तैसे दिन गुजारती हूँ, साब। बीमारी नहीं अभी, साब। आप

भी नही आता साब।

उसने नाक छिनककर आँखे पोछ ली। तब तक अय्यर बस ही बैठा हुआ था।

धधा छोडकर गाव चली जाओ। अब कौन रोकेगा ?

मगलाबाई ने आखो को बडा किया।

गाव ! दस मील से ही पत्थर मारेंगे साब। यहाँ भी आया था लोग, साब। आप जैसा कम होना है साब।

अय्यर कुछ देर रेलिग की ओर देखता रहा। फिर उठा।

फिर आऊगा कभी। महीने मे एकाध बार। और पैसे चाहिए तो कहा।

नही साब। बहुत महरबानी साब।

बिना कुछ बोले और उसकी तरफ देखे अय्यर वहा से बाहर आ गया। मगला के बारे म सोचकर उसके पेट म अजीब सा गोला उठा। किसी समय बात करने के लिए उसके पास वक्त न रहता था। अय्यर को बुरा लगा। कहाँ हैं प्रिंसिपल ? साला नो प्रिंसिपल ! ए इर्रेशनल जगल ! जिन्दगी म न्याय तो है ही नही। अजीब उलझन है। पोक्षे टली सली सली की दोस्त न्यूज एडीटर जनरल मनेजर भडारी शहाणे चीफ मिनिस्टर, डीकोस्टा मम्मी खबरें मिसेज खान के साथ आज का खाना मुकामुरा उसके चित्र स्मगलिंग की स्टोरी कल की कोस्टा के साथ एपाइटमट अजीब उलझन ! गहराई म उतरना ठीक नही।

फिर अय्यर कुछ समय तक बेकार ही भटकता रहा। दो-तीन पहचान की कोठिया मे गया। वहाँ दो-ढाई सौ रुपये उसने बाँट दिये। ऐसे ही। कर्तव्य की खातिर। हम सली के लिए पैसे बाट रहे हैं ? पर सली को तो खयाल तक नही है। दिमाग म मशीन की तरह खटखट हो रही है। सेना के पास पहुँच ही जाना था। जानते हुए भी नही गये और वह बेहोशी की हालत म भी मेरा नाम ले रही थी।

एक जगह काफी मिन्नत की गयी तो उसने थोडी सी हतभट्टी ले ली। आँखो के आगे अँधेरा सा छाने लगा। उसको अपने पर नियन्त्रण रखने की आदत थी। उसे एकदम याद आया कि कल का पर्सनल कालम लिखना है। मतलब अब सोना लाजमी है। लेकिन इलाज न था। काम तो करना ही चाहिए। टैक्सी करके वह उसी हालत म आफिस आ गया। वह लडखडा रहा था। अपनी सेफ से उसने टॉवेल निकाला और बाथरूम म चला गया। शर्ट निकालकर मुह पर ठडे पानी के छींटे मारे। पाँच मिनट म नार्मल होने पर वह वापिस केबिन म आ गया। उसने घडी म देखा तो एक बज रहा था।

बम्बई दिनाक

टलीफोन के करीब नाइट रिपोटर बठा हुआ था। वह
नज़र आ रहा था।

व्हाट हैपड ? व्हाई डाट यू स्नाप ? अय्यर का मूड एक
हुआ था।

'कोस्टा हैज बीन अटक्ड। हास्पिटल ल जाया गया है
माई गाड! देन व्हाई आर यू हीयर ? पामल एडिशन के
भेजा या नहा ? कापी कहा है ? फोटोग्राफर को उठाया या नहीं
गाड! यू आर एन इनकपिटेंट फूल। कम आन टेल मी क्या
तक।

अय्यर की आवाज ऊँची हो गयी तो नाइट रिपोटर और
गया। यू शुड हैव रश्ड देअर कहते हुए उसने फोन हाथ म ल
कंट्रोल रूम स दो मिनट म डिटेल्स लकर उसन मज़मून तयार किय
दे दिया। कमरा निकालकर आफिस की गाडी बाहर निकाली।
के० ई० एम० पहुच गया। फोटो का आज उपयोग न था। लकि
काम म आयेंगे, इस इरादे से उसने उन दो लडको के फोटो खीच
उनस मुलाकात की। कोस्टा आपरेशन रूम म था।

अय्यर वापस आया तो नाइट रिपोटर बता रहा था—

'अरेस्ट होने की खबर जरूर है। पर पुलिस कफम नही कर रही

'कही कुछ गडबड जरूर है चीफ सब कह रहा था इज़
कनक्टेड विद स्मगलस ? उसने पूछा।

'इट इज !' अय्यर ने कहा 'एड आई एम गोइग टु से इन
मनी वड स। तुम सिटी एडिशन रोक लो। ऐसी स्टोरी देता हूँ कि भड
परेशान हो जाय। टु हैल विद ऑल !'

इस तरह चीखकर अय्यर टाइपराइटर खटखटाने लगा।

जीवाजीराव शिदे

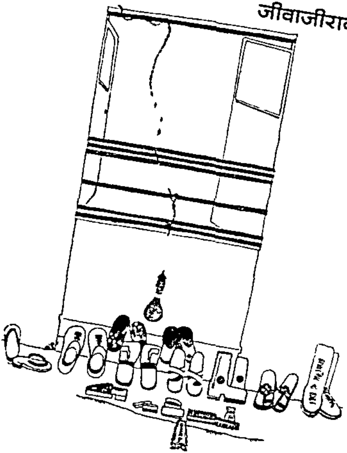

मुख्यमंत्री जब कबिनेट मीटिंग के लिए कमरे में आये तो सारे ही मंत्री एकत्रित हो चुके थे। कुर्सियों पर बैठे हुए गप्पें लगा रहे थे। मुख्यमंत्री के आते ही सभी सम्हलकर बैठ गये। चर्चा बन्द हो गयी। चपरासी फाइलें का उनके करीब वाली टेबिल पर रख गया और कबिनेट रूम का दरवाजा बन्द करके चला गया।

जीवाजीराव ने चश्मा लगाकर ऐजेंडा पढ़ा। फिर हँसते हुए वित्त-मंत्री से कहा—

'कहिये अण्णा साहब आज इफामल डिस्कशन है कुछ?"

मुझे मालूम नहीं।

वित्त-मंत्री ज़रा अपने ही रौब में थे। लेकिन जीवाजीराव हार मानने वालों में से नहीं थे। मंत्रिमंडल की बैठक हो या विधानसभा का हॉल माहौल को बोझिल रखना उन्हें कतई पसंद न था। वित्त मंत्री के तेवर चढ़े हों तो कुछ बनता बिगड़ता नहीं। हम भी उनके खिलाफ काफी कुछ कर सकते हैं। लेकिन सामने तो खुशगवार माहौल ज़रूरी है।

नहीं क्यों? अगले महीने पहले इतवार को हमारे यहाँ सबका खाना है। मीनू बताइये?

ए? कुछ समझ में नहीं आया।'

अजी उस दिन अण्णा साहब का पचपनवाँ जन्मदिन है।

अरे हाँ हम तो भूल ही चुके थे वाह वाह! साहब ने खूब याद रखा। कांग्रेच्युलेशंस अण्णा साहब! किसी को भी ध्यान न था? पब्लिक सत्कार किया जाना चाहिए। कांग्रेट्स!'

खुद अण्णा साहब भी इस बात से हड़बड़ा गये। मतलब उन्हें खुद तो याद था कि बम्बई और दूसरी जगहों पर उनका खासा सत्कार होने वाला है लेकिन मुख्यमंत्री एकदम इफामल होकर कैबिनेट में ही यह बात सबके सामने कह देंगे इस बात का अंदाज उन्हें न था। इसी वजह से वे सकपकाये।

मुख्यमंत्री उनकी ओर देखकर मुस्कराये। यह बात उन्होंने पहले से तय नहीं की थी। सच बात तो यह थी कि वित्त मंत्री से आज मिलने से पहले तक उनके जन्म दिन की याद तक उन्हें न थी। पर कैबिनेट रूम में घुसते ही उन्हें एकदम याद हो आयी। बस मुख्यमंत्री को कई बातें याद

रहती हैं। लेकिन वित्त मंत्री का जन्मदिन उन्होंने अपनी पर्सनल डायरी में नोट कर रखा है। ऐन वक्त पर याददाश्त काम आ गयी। उन्हें बड़ी तसल्ली का एहसास हुआ। मेहनत की वजह से काम के बीच थकान भले ही महसूस होती हो लेकिन उनका दिमाग और याददाश्त जवानी की तरह ताज़ा रहते हैं। इस बात में उन्हें बड़ा दिलासा मिला और वे हँस दिये। इसमें वित्त मंत्री के खिलाफ पहला मोर्चा जीतने की खुशी भी शामिल थी।

चलिये तो तय रहा 'मुख्यमंत्री ने कहा वैसे भी बहुत दिनों से हम लोग इकट्ठे नहीं हो पाये थे। फिर कुछ सोचकर बोले मेरा एक सुझाव है। देखें आप लोगों को पसंद आता है *या नहीं?* उड़ीसा के लोगों की मदद करने का एक मुद्दा अपने ऐजेंडा पर है। हम लोगों को व्यक्तिगत रूप से भी कुछ देना चाहिए। हम लोग अपनी एक दिन की पगार दे दें तो कोई हर्ज नहीं। अपनी राय बताइये। और असल बात तो यह है कि अण्णा साहब के पचपनवें जन्मदिन समारोह पर हमें इसकी घोषणा कर देनी चाहिए। उनकी सोशल सर्विस ध्यान में रखकर ।'

नहीं नहीं। मुझे इतना मान क्या दे रहे हैं!'' अण्णा साहब ऐसे बोले जैसे उनका दम घुटा जा रहा हो। वैसे वे इतने सीधे नहीं थे।

लेकिन मंत्रिमंडल में अण्णासाहब के चहेतों ने इस बात को हाथों हाथ उठा लिया। वे विशेष रूप से खुश हो उठे थे।

अण्णा साहब कुछ कहें इससे पहले ही जीवाजीराव बोल पड़े 'यह नहीं चलेगा। इस मामले में हम अण्णासाहब की एक न सुनेंगे। हम लोगों के बीच असली समाजसेवक तो वही हैं। हम लोग तो यों ही हैं। कुर्सी छूट जाये तो हमारे पास रह ही क्या जाता है? लेकिन अण्णासाहब की बात और ही है। उनका जन्म दिन तो इसी तरह मनाया जाना चाहिए। बस तय हो चुका। किसी को कोई उज्र तो नहीं है न?"

उज्र तो किसी को भी न था। उज्र था तो केवल वित्त-मंत्री को। इन सभी बातों का प्रचार के लिए कैसा उपयोग हो सकता है, इसका खाका उनके सामने आ गया। उनका चेहरा मुरझा गया। जीवाजीराव दूसरे राजनीतिज्ञों से भिन्न हैं इस बात को वे अच्छी तरह समझ चुके थे। पहले बड़प्पन देना फिर पीछे से वार करना! वित्त मंत्री को और भी निश्चय हो गया। वे मुख्यमंत्री की ओर देखकर कृतज्ञता से हँस दिये। मुख्यमंत्री भी हँस दिये। वित्त मंत्री मुख्यमंत्री के बारे में क्या सोचते हैं इसे जीवाजीराव अच्छी तरह जानते थे। उन्होंने घंटी दबा दी और बोले, 'चलिये, अब ऐजेंडा पर विचार हो जाय।'

मंत्रिमंडल की बैठक शुरू होते ही उस विभाग के सेक्रेटरी अंदर आये। फाइलें खोली गयी। आज कोई खास मसला न था। एक-दो गाँवों में पानी और नालियों की योजना, पाँच छोटे कच्चे रास्ते, इंडस्ट्रियल डिस्प्यूट्स के कानून में कुछ परिवर्तन और इसी तरह की कुछ और बातें। जल्दी ही निर्णय हो गये। कोई भी किसी विषय पर खास नहीं बोला। वित्त-मंत्री तो चुप ही बैठे थे। काम की बात हो तो मुँह खोलते थे। बैठक डेढ़ घंटे में ही खत्म हो गयी। एक दो मंत्री उकता गये थे। अपने-अपने डिपार्टमेंट के कुछ खास मामले उन्होंने मुख्यमंत्री को बताये और इसके बाद मुख्यमंत्री अपने केबिन में चले गये।

उनके जाते ही पत्रकार अन्दर आ गये। फाइल पर नजर डालने से पहले ही वे लोग मुख्यमंत्री की टेबिल के चारों ओर कुर्सियों पर जम गये। जीवाजीराव ने नजर ऊपर की तो सामने पत्रकार मौजूद थे। उन्होंने अचरज से देखा। 'अरे आप लोग आ गये।'

'पत्रकार हैं, इसलिए आना पड़ता है। वी मस्ट कम। इट्स अवर ड्यूटी। आज की बैठक में कोई खास बात साहब?'

पत्रकारों के आने की बात का पता जीवाजीराव को पहले से था। उन लोगों को क्या बताना है यह भी वे मीटिंग के दौरान ही तय कर चुके थे। लेकिन अब वे फाइलें देखने का नाटक कर रहे थे। बोले—'आज तो आपको देने लायक कुछ भी नहीं है। हमेशा होना जरूरी है क्या?'

उन्होंने दो-बार फाइलें देखीं। शहाणे मदद के लिए थे ही। 'हाँ यह देखिये तीस लाख की नल योजना है और यह नाली योजना। अरे भाई चाय दो न इन लोगों को।'

पत्रकारों की कलम कागजों पर चल पड़ी।

बाद में किसी ने कहा, 'बस। और कुछ नहीं?'

'अरे आप लोगों को तो जितना दें, उतना ही कम लगता है।'

सब हँस दिये।

'हाँ। एक बात और है। लेकिन उसे केबिनेट के नाम पर मत डालिये। हम लोगों में इनफार्मल रूप से यह तय हुआ है। वित्त मंत्री अण्णासाहब का अगले महीने जन्मदिन है पहले इतवार को। वे हमारे महान नेता हैं और श्रेष्ठ समाज-सेवक की हैसियत से एक अलग किस्म का सत्कार करने की बात हम लोगों ने तय की है। हम सभी मंत्री उनके जन्म दिन पर एक दिन की पगार उड़ीसा की मदद के लिए देंगे। अण्णासाहब की सेवा के प्रतीक रूप में। देखिये, इसे फ्लैश कर सकें तो।'

पत्रकारों की कलम तेजी से चल रही थी। यह फ्रंट पेज की खबर है जीवाजीराव जानते थे। इस बात को भी वे जानते थे कि कल सभी अखबारों में इसे बड़े अक्षरों में दिया जायगा।

"वाह! बहुत बढ़िया खबर है!'

'हम में से ही किसी ने यह प्रस्ताव रखा था और सब लोगों ने इसे तय किया है।'

'किसने रखा था?'

यह क्या बताना जरूरी है?'

हाँ, साहब।'

'अरे छोड़िये भी।'

ब्रीफिंग चल रहा था कि इसी बीच उद्योगमंत्री नानासाहब देशमुख अंदर आये। पास ही एक कुर्सी पर बैठ गये। ऊँची आवाज में बोले 'वाह! यह कैसे हो सकता है! खुद साहब ने ही यह बात कही थी। हम सबने टीम स्पिरिट से तय किया।'

इस बात का विश्वास उन्हें था कि यह खबर धाँसू होगी।

कुछ और सवालों के बाद साने ने पूछा—

आज कोस्टा से बातें हुईं। कोई खास बात?"

बातें? नहीं तो।

नहीं। आज डीकोस्टा मिले ही नहीं?

हाँ हाँ। यूँ कहिये चर्चा। हाँ हाँ मिले थे, आये थे। वे तो हमारे दोस्त हैं।

कुछ खास?"

नहीं जी। अपनी शिकायत लेकर आये थे। वे खुद आप लोगों को बतायेंगे। चाय हो चुकी थी और बाहर मिलने वालों की संख्या भी बढ़ रही थी।

अच्छा तो ठीक है।" मुख्यमंत्री ने ही बात खत्म की। तब पत्रकार उठ खड़े हुए।

उनके जाने के बाद मुख्यमंत्री को अचानक थकान-सी महसूस हुई। नानासाहब देशमुख की बातें जैसे-तैसे सुनकर उन्हें विदा किया। फिर चपरासी से मँगवाकर दो गोलियाँ खायीं। आधा गिलास पानी पीया। पास रखी आरामकुर्सी पर पाँच मिनट तक बैठे रहे और दिमाग की मशीन पाँच मिनट के लिए बंद कर दी। कुछ देर लंबी लंबी साँस ली। तत्काल उन्हें ताजगी महसूस होने लगी। एक तसल्ली मन में थी। अभी तक आज का दिन अच्छा बीता था। सभी चीजों पर काबू था। मन को परेशान

करने वाली कोई बात न थी हमेशा की तरह। लकिन आज जिन जिन चीज़ों पर क़ाबू पाना था, वे क़ाबू म आती जा रही थीं। कुछ एसी बातें थीं जिनम उनकी जीत हो चुकी थी। सुबह की दो बठकें कोस्टा स मुलाक़ात वित्त मत्री का मसला पत्रकार-परिषद—सभी कुछ उनके मन के मुताबिक हुआ था। वसतराव के मामले बापूसाहब जोशी की आलोचना मिलिंद का लफडा और अय्यर की रिपोट—यह बातें उनके हाथ म न थी। ऐसी बातो पर हौले हौले क़ाबू पाना या कोई रास्ता ढूढ निकालना और अपने हाथ की बातों पर फौरन काबू पा लेना—यही उनका जीवन दशन रहा था। उनका अनुभव था कि ऐसा करने स दुख कम होता है। हर बात को मन म बिठात रहते तो अभी तक वे जल कर खाक हो चुके होत।

मुख्यमत्री ताजा होकर कुर्सी पर बठ गय और उन्होंने शहाणे को बुलवा लिया।

बाहर काफी लोग हैं?

दो शिष्टमडल हैं। एक विदेश जाने वाला सास्कृतिक मडल है फोटोग्राफरो के साथ ।

अच्छा वे बठे हैं अभी?

बैठे हैं।'

'ठीक है। सुना ' अपने हाथ के कागज की ओर देखत हुए उन्होंने कहा। उन्होंने कुछ नोटस खुद तैयार किये थ। एक म उनक भतीज का नाम था, दूसरे पर वसतराव जाधव का। रेवेन्यू और इडस्ट्रीज के दो मामन हैं। उनकी फाइलें सेक्रेटरी के रिमाक के साथ कल आ जाना चाहिए। जरा देखना है।'

यस सर।

और कोई बात? कोई मसज?"

'बँगले स फोन था। बापूसाहब जोशी सात बज आने वाल हैं।

अच्छा मिलाइये जरा।

फोन मिलने पर मुख्यमत्री ने रिसीवर हाथ म लिया और कहा

हूँ।''

'अजी, बापूसाहब का फ़ोन आया था। सात बज आने वाले हैं वे। उनसे खाने की बात कही तो बोले, देखेंगे।"

हूँ। अच्छा।' कुछ देर वे कुछ न बोले। फिर सोचकर बाल, 'आठ बजे मीटिंग है सुन्दरबाई हॉल म। अ हूँ टीक है। आधा पौना घटा देर स भी चला जाऊँगा। ठीक है तो मैं सात-साढ़े सात तक आ जाऊँगा।

'अरे पर आपको उनके साथ खाना खाना है न ?'

हां तो ऐसा करो। बापूसाहब कितने बजे तक रहेंगे ? कब तक आयेंगे ? साढे सात तक न ? उनसे कहना मैं आता हूं साढे आठ तक। नौ तक तो आ ही जाऊँगा। मीटिंग खतम कर के।

कह दूगी उनसे।

कुछ देर खामोशी। फिर सुधाजी ही बोलीं 'पेरिस से कुछ खबर मिली ?

'इतनी जल्दी कैसे मिल सकती है ? मैंने व्यवस्था कर दी है। कल-परसों तक कुछ मालूम पडेगा। तुम ज्यादा परेशान न हो।"

फिर खामोशी।

हां—तुम सिनेमा जाने वाली थी न ?

'अरे कैसे जा पाऊँगी, बापूसाहब आने वाले हैं न ?"

'हां हा। कमल नाराज तो नही हुई न ?

वह यही बैठी है। बातें करेंगे ?

और जीवाजीराव कुछ कहे उससे पहले ही रिसीवर से बच्चा स्वर आने लगा। इस कमल को कहां देखा है यह मुख्यमंत्री को याद न आ पा रहा था।

हूं—सफर तो ठीक रहा न ? आपकी बहन आपकी बडी फिक्र करती है क्यों ?' इसी तरह की कुछ औपचारिक बातें उन्होंने की और फोन बद कर दिया।

साढे छह बज रहे थे। फिर मिलने वालो की कतार शुरू हो गयी। शिष्टमंडल फोटो चाय बातें। हरेक मुख्यमंत्री से बातें करना चाहता था। सवा सात तक मिलने वाले खतम हुए तो गृह विभाग के उपमंत्री का फोन आ गया।

'साहब लातूर मे जरा गडबड हो गयी है।

"क्या हुआ ?

हिंदू मुस्लिम दगा नजर आता है। आगजनी हो रही है और चार लोगों के मरने का भी समाचार है।

घटे भर मे मामला रफा-दफा हो जाना चाहिए।

अच्छा साब।'

पाच छह मर भी जायें तो हर्ज नहीं लेकिन स्थिति कंट्रोल मे आ जानी चाहिए। नौ बजे तक मैं घर पर हूं। वहां फ़ोन आना चाहिए।"

जी साब।

'और आपका कल का प्रोग्राम क्या है ?

नासिक में एक ट्रेनिंग स्कूल का उद्घाटन है। वहाँ जाना है ।'

वहाँ का कार्यक्रम रद्द कर दीजिये और जितना जल्द हो सके आज ही रात को लातूर चले आइये।'

अच्छा साहब पर जरा ।'

सुनिये कम्यूनल फिसाद है न ? कल अगर कुछ ज्यादा बढ़ गया तो दिल्ली को जवाब देना मुश्किल हो जायेगा। वहाँ जल्दी जाना जरूरी है।''

'हाँ साहब।

वैसे खुद मुझे जाना चाहिए लेकिन मैं जरा इधर बिजी हूँ। इसलिए आपको घास दे रहा हूँ। काम ठीक हो जाना चाहिए। अधिकारियों के साथ कुछ दिक्कत आयें तो मुझे फ़ोन कीजिये।

ठीक है साहब। नौ बजे आपको फोन करूँगा और अभी निकलता हूँ ।'

मुख्यमंत्री ने फ़ोन रख दिया। गृह विभाग के उपमंत्री की बात अभी पूरी तौर पर साफ नहीं हो पायी थी। उपमंत्री महत्त्वाकांक्षी थे और होशियार भी। इसी वजह से उनके साथ ठीक से पेश आना लाज़मी था। लातूर के मामले से उनका झुकाव मेरी ओर ही होगा यह सोचकर जीवाजीराव ने दूसरा खयाल दिमाग से निकाल दिया। दोपहर आई० जी० के साथ हुई बातचीत फिर उभर कर ऊपर आ गयी। वे कुछ परेशान से हुए। उपमंत्री वैसे साफ दिल के आदमी थे कम-से-कम उस नोट में उनका उल्लेख न था। उनकी फाइल जरा ध्यान से देखनी होगी। नानासाहब और वसंतराव के घनिष्ठ संबंध हैं। वसंतराव का खयाल आते ही जीवाजीराव का माथा एकदम गरम हो गया। लेकिन उन्होंने खुद पर काबू रखा। वसंतराव एक दिन गले में जरूर फाँसी लगवायेंगे यह डर उन पर सवार हुआ। इस बात को वे जानते थे कि आजकल वसंतराव ऐश कर रहे हैं और उनका मन खुद उन्हें ही खाये जा रहा था। अण्णासाहब बड़ी पकड़ाई में नहीं आ पाते इसी बात का अचरज उन्हें था। हो सकता है कि उनके रास्ते कुछ अलहदा हों। कोस्टा जैसा आदमी अपनी कैबिनेट में होना चाहिए। तभी सब गन्दगी दूर हो सकती है। कोस्टा के लिए उनके मन में आदर भाव पनपने लगा था।

अचानक जीवाजीराव के दिमाग में एक बात और उभरी। वसंतराव मिलिंद को पैसे भेजते हैं ? सुनने में आया कि मिलिंद वहाँ लफड़े किया करता है। पहले एक बार मिलिंद के पास चरस पकड़ी गयी थी। उस बात को दबाने के लिए कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ा था।

जीवाजीराव ने फ़ोन उठा लिया।

वसतराव जाधव के घर से मिलाइय ।"

कुछ देर घंटी बजती रही । फिर नौकर की आवाज आयी, 'जाधव साब घर पर नहीं हैं ।'

कहाँ गये हैं ?'

'कौन बोल रहा है ?'

'मुख्यमत्री शिदे ।

'साहब तो मेथा सेठ के यहाँ गय हैं साहब ।"

जीवाजीराव ने फोन नीचे रखा और फिर उठा लिया । 'यस सर !' उनके ऑपरटर की आवाज आयी ।

ये मेथा सेठ कौन है ?'

'सर वे जय एक्सपोट कार्पोरेशन के मेथा । आपके पास काफी बार आ चुके है ।

उनस फोन मिलाइये जरा ।

यस सर ।"

फोन नीचे रखकर मुख्यमत्री ने फाइलें देखना शुरू की । अब तक सारा सचिवालय खाली हो चुका था । उनका पसनल स्टाफ जरूर मौजूद था । चारो ओर खामोशी थी । ऐसे समय सारे राज्य की जिम्मेदारी कसे सिर पर मडराती रहती है ! पाँच करोड जनता की जिम्मेदारी उन पर थी । रत्नागिरी से लेकर डहाणू घले तक और उधर गांदिया चादा तक । हर छोटी-मोटी बात पर ध्यान देना पडता था । जिम्मेदारी परेशान कर देन वाली थी और ऊपर से राजनीति ! तिस पर इस तरह की गडबडी ।

फान की घंटी बजते ही मुख्यमत्री ने रिसीवर उठा लिया ।

साब मिस्टर मेथा के लिए चारा जगहों पर फोन किया लेकिन वे मिल नहा पा रहे ।

अच्छा ठीक है । तुम्हारी ड्यूटी कब तक है ?

दस तक साहब ।

'जाते वक्त वसतराव जाधव के यहाँ फोन कीजिये और उनसे तत्काल मुझे फोन करने के लिए कहिय ।

'यस सर ।

मुख्यमत्री न कुछ खास खास फाइलें दखी । जिन कागजा पर दस्तखत करने थ उन पर सही किये और फिर वे चल दिये ।

सुन्दरबाई हाल की सभा उन्होंने अपने खास ढग से निपटायी । इस तरह की सभाओं के निमत्रण वे खास तौर पर स्वीकार करते थे कभी अपने जूनियरो पर नहीं टालत थ । इसी वजह से सारे ही राजनीतिक दला

में उनकी खास साख थी।

बँगले पर पहुँचते-पहुँचते साढ़े नौ बज गये। उन्हें चिंता थी कि बापूसाहब राह देख रहे होंगे। लेकिन सभा में अपने जमने की तसल्ली भी थी। दिन भर की थकान धीरे धीरे बदन में उतर रही थी। शरीर भारी सा हुआ जा रहा था। अब और गोलियों से काम न चलने वाला था। कम-से कम दो पग ब्रांडी पीनी पड़ेगी खाने से पहले गरम पानी में। लेकिन आज तो बापूसाहब आने वाले हैं। उनके सामने कुछ भी पीना मुश्किल है।

जीवाजीराव को बापूसाहब और उनसे दबने की अपनी आदत से खुद पर भी गुस्सा आने लगा। हम बापूसाहब से इतने घबराते क्या हैं? बापूसाहब को क्या दिन भर इसी तरह खटना पड़ता है? वे तो रोज़ाना सुबह व्यायाम भी कर लेते हैं। मालिश करवा लेते हैं। चाय-वाय लेते नहीं। दोपहर में उनका सोना भी कभी नहीं चूकता। मेरी तरह सुबह साढ़े छह से वे परेशान नहीं रहते। वे ज्ञानी हैं क्योंकि रोज़ाना उन्हें पुस्तकें पढ़ने के लिए वक्त मिल जाता है। मेहनत की थकान क्या वे कभी समझ सकते हैं? और इस तरह थकने पर ब्रांडी से बढ़कर दूसरी दवा क्या हो सकती है? क्या कभी वे इस बात को समझ सकेंगे?

दूसरे ही पल मुख्यमंत्री को कुछ शर्म भी महसूस हुई। राजनीति से बाहर के जो लोग जीवाजीराव को मानते थे उनमें से बापूसाहब जोशी भी थे। जीवाजीराव के समकालीन। कालेज में तीन चार साल आगे होंगे। बयालीस के आंदोलन में कालेज छोड़ने को लेकर दोनों के बीच काफी कहा-सुनी हुई थी। दोनों अपने-अपने मन पर अड़े हुए थे। दोनों ने एक दूसरे को अच्छी तरह पहचान लिया था। साथ ही दोनों के मन में एक-दूसरे के लिए आदर भाव भी था।

बापूसाहब ने कालेज छोड़कर आंदोलन में भाग लिया जेल गये, पुलिस के डंडे खाये चक्कियाँ पीसीं। वे राष्ट्रीय मंच पर चमक गये। दो बार उन्होंने खुद ही खड़े होने से इंकार कर दिया। यहाँ तक कि विधान सभा की सदस्यता से भी इंकार कर दिया। सत्ता का लोभ जानबूझकर छोड़ दिया। अगर वे चाहते तो राज्य का सर्वोच्च पद उन्हें मिल सकता था सहज ही। लेकिन वे खुद न चाहते थे। चुनाव की राजनीति से हटते ही उन्होंने समाजसेवा का कार्य हाथ में लिया था। गाँव में आश्रम तथा स्कूल चलाना वर्ण भेद दूर करने के लिए आन्दोलन छेड़ना—यही सब वे करने लगे थे। इधर राजनीति पर वे ज़्यादातर बोलते ही न थे। अचानक उनके भाषण की कटिंग की याद आते ही जीवाजीराव परेशान हो उठे। एकबार भी बापूसाहब ऐसा क्यों कर रहे हैं? सीधे-सादे मुझे भ्रष्ट कह

रहे हैं ? और तो और सत्ता से मुझे खाच निकालने की धमकी भी दे रहे है ! कुछ न-कुछ जरूर है। बापूसाहब अकारण ऐसा नही बोले होग। कोई गलत समाचार मिल गया होगा उन्हें शायद या उन्हें गलतफहमी हो गयी होगी।

गाडी पोच म पहुँचते ही दरवाजा खोलने वाले नौकर स उन्होने पूछा बापूसाहब जोशी आये हुए हैं ?'

जी, साब !" उसने जवाब दिया।

लेकिन गाडी से उतरते ही मिलने आये और पहले से मौजूद लोगों ने उन्हें घेर लिया। उन्हें छोडना भी ठीक न था।

अरे आप लोग कब आये ? अच्छा आप भी ? कब आये ! सब ठीक है न ? दादा क्या कहते हैं ? अरे मैंन तो आपको देखा ही न था। वाह ! आपकी पीछे-पीछे रहने की आदत अभी छूट नही पायी है।'

इसके पीठ पर हाथ रख उसकी पीठ थपथपा, इसका हाथ पकड उसको नमस्कार कर—इस तरह का सकस करते हुए वे बंगले की सीढियाँ चढ गये। बीच म ही एक पत्रकार का चेहरा भी नज़र आया। 'अरे आप यहा कसे ? आप हमारा पीछा नही छोडेंगे क्या ? कहते हुए ज़ोर से हँस दिये। साथ म सभी हँस पड।

'ऐसे ही आपसे मिलन चला आया था ' कहते हुए पत्रकार वहाँ से खिसक लिया। जीवाजीराव न लोगो के आवेदन ले लिये।

जब रहा न गया तो बाल अच्छा भाइ अब काफी थक चुका हूँ। अदर ज़रा मीटिग है। बाद म हम लोग मिलेंगे ही कहते हुए वे अदर खिसक लिये। कुछ लोग अभी बरामदे म खडे थे। लेकिन जीवाजीराव ने उनकी फिक्र न की।

अदर आते ही सुधाजी बोलीं कब स बापूसाहब को रोके बठी हूँ।

अच्छा हुआ। अच्छा हुआ चला अब बठते ही हैं।

अजी पर एक मिनट।

'हूँ क्या ?

वह मरा एक रिपोटर आ गया था मिलिंद के बार म पूछ रहा था। मालूम नही उसे कहाँ से पता चल गया ?'

फिर ? तुमन क्या कहा उससे ?

उस भगा दिया। धक्का मारना ही बचा था।'

जीवाजीराव चलते चलते रुक गये। बोले 'बस हो गया कबाडा। अब वह काफी कुछ मसाला छाप देगा। तुमको हज़ार बार कह चुका हूँ कि इन प्रेम क भूता को न सताया करो। बडे हरामी होत हैं वे लोग।"

"अजी पर मैं भी क्या करती ? इतना पीछे पडा हुआ था कि बस ! जो चाहे जो पूछे चला जा रहा था। मुझे तश आ गया।" सुधाजी की आवाज रुआंसी-सी हो गयी थी।

ठीक है। अब आगे से ध्यान रखना।

आगे बढ़ते हुए वे फिर रुक गये।

आपक भाई साहब का कहीं पता चला ?'

वह तो आज ही दोपहर आया था।"

वह मुझसे तो मिलता ही नहीं ?'

क्यो, क्या हुआ ?

कुछ नहीं। वह जरूर एक िन मुझे फांसी लगवायेगा।"

बापूसाहब उधर बठे हैं। नही तो मैं भी चीखना जानती हूँ। क्या किया है उसन ?

जीवाजीराव कुछ न बोले। कोट के बटन खोलत हुए उन्होने ड्राइग रूम म प्रवेश किया। साफ पर बठे बापूसाहब एक पत्रिका पढने म मशगूल थ। जीवाजीराव का आया दखकर वे हँसकर खडे हो गये।

माफ कीजिय वाकई , उन्हें हाथ पकडकर सोफा पर बिठाते हुए जीवाजीराव बोले। काम इतना ज्यादा होता है कि कही भी समय पर पहुँचना मुश्किल हो जाता है।

भई जीवाजीराव बापूसाहब हसते हुए बोल, आप तो बहद फामल हुए जा रह हैं।

नही सच कह रहा हू। मैंने खुद आपको रोका है और ।'

इट्स आल राइट बापूसाहब बोले।

सुधाजी आकर बठ गयी। इस बीच जीवाजीराव भी मुह हाथ धो और कपडे बदलकर आ गये।

तीनो खाना खान बठे तो बापू साहब बोले आपको मिलिन्द के बारे म बतलाया सुधा ने।

हाँ। अजीब लफडा किये बठा है वह।'

अजी लफडा क्या, जवानी का दौर है। फच बहू है आपका तो उसका स्वागत करना चाहिए।

जीवाजीराव कुछ न बोल सिफ हँसते रहे।

मिनी क्या कहती है ? महाबलेश्वर म ही है न ?

हाँ। मज म है' सुधाजी न कहा। मिनी दूसरी लडकी थी।

जीवाजीराव को सूझ न रहा था कि क्या बातें की जायें। सुधाजी के सामने तो राजनीति पर बात करना बेकार था। तभी सुधाजी न कहा—

वसतराव अगले महीने पेरिस जाने वाले हैं। वह शायद मिलिंद को यहाँ ले आयेंगे।"

क्या ? ' जीवाजीराव न चौंककर देखा। बापूसाहब हँस दिये।

खाने के दौरान बाहर के कमरे म फोन खनखनाया।

नौकर ने आकर बताया साहब डेप्युटी होम लाइन पर हैं। कुछ देर बाद फोन करने के लिए कहूँ ? '

नहीं। फौरन इधर लाओ। ' नौकर ने डाइनिंग रूम के प्लग से फोन जोडकर रिसीवर साहब के हाथ म दे दिया।

' हूँ !

दो बार फायरिंग हुआ साहब। अब हालत ठीक है।

हूँ। कितने लोग मर गये ?'

ग्यारह ?

गडबड काफी थी साहब ! छुरेबाज़ी भी शुरू हो गयी थी। मैं यहा से टच म था।

ठीक है। आप कब पहुँच रहे हैं वहाँ ?'

'बस निकल ही रहा हूँ। आपको रिपोर्ट दने के लिए ही रुका हुआ था। आई० जी० भी साथ म हैं। '

गुड ! ठीक है। बाद म खबर दीजिय।

फोन नीचे रखकर जीवाजीराव ने फिर खाना शुरू कर दिया।

दगा हुआ है कही ? कहाँ पर ?" बापूसाहब न पूछा।

लातूर मे जीवाजीराव ने सख्त चेहरे से कहा। बापूसाहब ने गर्दन हिला दी। पता नही हम लोग कब सुधर पायेंगे ' वे फुसफुसाय।

बडा मुश्किल है जीवाजीराव न कहा हम लोग इतना कुछ करते है तो भी लोग हैं कि सब पर पानी फेर दते है। अब आप ही बतायें बापूसाहब क्या किया जाये ? इन बाता का कसे टाल सकत हैं हम ?

सच है। कभी-कभी तो लगता है कि हम लोग प्रजातन्त्र के काबिल ही नही हैं।

' अब बापूसाहब आप जस लोग एसा कहेंगे तो हम लोग क्या करेंगे आखिर ?'

हम जस ही तो बोल सकते हैं। आप लोग तो सत्ताधारी हैं इसलिए बोल नही पात।

नहीं वह बात नही। मरा तो विश्वास है कि प्रजातन्त्र की गति धीमी ज़रूर है लेकिन गति है।'

ठीक है, लेकिन कुछ चक्र इतने तज़ी स घूमते हैं कि असली बात छिप

जाया करती है। भ्रष्टाचार आर्थिक असमानता की भी तो गति तज है। फिर रफ्तार धीमी न हो तो क्या हो? लगता नहीं कि दोनों मुक़ाबल म ठहर सकेंगे।'

मुझे आपकी बातें जँचती नहीं। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि हम लोग न वातों को दबा रहे हैं। गति ज़रूर धीमी है। पर हम आग ज़रूर बढ हैं।'

जीवाजीराव चुप हो गये। वे कुछ खिन्न भी थ। बापूसाहब की राय तबदीली हुई है — इसका एहसास हो रहा था। फिर बापूसाहब उन लोगों म से न थ जो बिना आधार के अपनी धारणाओं को बदल लेते हैं। आप सत्ताधारी हैं इसलिए आपकी समझ वैसी है। मैं ऐसा नहीं समझता। आदमी को कभी भी चिराग तले का अँधेरा नज़र नहीं आता।'

बापूसाहब न यह वाक्य इतनी सहजता से कहा कि उसका व्यंग्य सम धन म जीवाजीराव को ज़रा देर लगी। उनका सिर भिन्ना गया। खाली म रखी कटोरी को उन्होंने सरका दिया। फिर बोले—

कभी-कभी तो लगता है हम बेकार ही मरे जा रहे हैं। लोग हम समझ न सकेंगे खासकर आप जैसे लोग। आपको नहीं लगता कि आप लोग हम पर अन्याय कर रहे हैं?'

बापूसाहब जोशी ज़ोर स हँस दिये। जीवाजीराव और भी परेशान हो गये। बापूसाहब की हँसी कुछ और ही थी। बालों की सफेदी स इस हँसी म और भी तीखापन आ गया था। सिर्फ अपनी इसी हँसी के बल पर उन्होंने कई लोगों को जीत लिया था। उस हँसी म अभी भी ताज़गी और ताक़त थी।

मैं आपकी आलोचना नहीं कर रहा हूँ जीवाजीराव बापूसाहब हँसते हुए बोले सिर्फ हालात का एहसास करवा रहा हूँ और अपनी राय भी ज़ाहिर किये दे रहा हूँ। दरअसल बात यह है कि मेरा प्रजातन्त्र पर स विश्वास ही उठ गया है।'

सुना है कि आप चुनाव लड़ रहे हैं?'

बिलकुल झूठ। मैं तो अपने आश्रम को भी छोड़कर बाहर जा रहा हूँ शायद आपको पता होगा?

जीवाजीराव न गर्दन हिलायी और अनजाने म ही एक खयाल उनके दिमाग़ म तैर गया। बापूसाहब की हरकतों पर फाइल तैयार करने के लिए कहना चाहिए। उसी पल इस निर्णय पर उन्हें शर्म भी महसूस हुई। लेकिन इलाज न था। वे एक राज्य के मुख्यमंत्री थे। राज्य म क़ानून और व्यवस्था बनाये रखना उनका पहला कर्तव्य था। बापूसाहब के विचार किस दिशा

म जा रहे हैं, उन्हें इस बात का पता था और यह भी वह अच्छी तरह म जानते थ कि सिर्फ सोचकर ही खामोश रह जाने वालों म से बापूसाहब नहीं थ। बापूसाहब कर्मशील थे। विधानसभा स वे अलग हुए थे तो स्कूल और आश्रम चलाने की भावना को लेकर ही।

जीवाजीराव ने विषय बदल लिया। उनका मन कुछ हलका हो गया था। भाषण के बारे म पूछताछ करना इस समय ठीक न रहेगा। तभी उन्हें एक बात याद आ गयी और अजीब अपराधी स्वर म उन्होंने सुधाजी स पूछा—

अरे कमल आयी हुई है न ?

सुधाजी हँस दी। खाने के बाद उन्होंने पानी पीया। फिर बोली सो गयी वह तो। काफी थकी हुई थी। काफी राह देखी उसने।

जीवाजीराव को तसल्ली ही हुई। यह कौन कमल है बूढ़ी है या जवान यह सवाल उनके होठों पर आया था। लेकिन इसे उन्होंने वहीं दबा लिया। उनका खाना हलका था। मुर्गी का सूप दो चार उबली सब्जियाँ ज्वार की रोटी और मक्खन। यह खाना डाक्टरों ने तय कर रखा था। अंत म फलों का रस।

बापूसाहब को विदा करते वक्त जीवाजीराव कुछ उदास हो गये। बापूसाहब ने उनकी पूना की जिन्दगी देखी थी। इसी वजह से वे भी जीवाजीराव को मानते थे। पूना म एक साथ बिताये हुए दिन—यही जोडने वाला धागा था। बापू साहब को शालन केलकर का मामला भी मालूम था। वैसे जीवाजीराव भी बापूसाहब की जिन्दगी के कई पहलू अच्छी तरह से जानते थे। बापूसाहब का ब्रह्मचारी बने रहना भी वे अच्छी तरह से जानते थे। लेकिन जीवाजीराव के हिसाब से यह सब बेकार हुआ जा रहा था। कालेज म अलग-अलग धारणाओं की वजह से अलग हो जाने के बावजूद विधान सभा म वे एक दूसरे के करीब आये थे। लेकिन उस वक्त भी वे बहुत करीब नहीं आ सके। कुछ दूरी बनी रही थी। वह दूरी कभी भी कम न हो पायी। अब तो दोनों के रास्ते ही अलग थे। अब तो सामना होने की भी गुंजाइश थी। इसका एहसास बापूसाहब को भी था। विदा होते समय बापूसाहब का चेहरा भी अजीब सा हो गया था। जीवाजीराव ने उनका हाथ पकडकर अपनी गाडी तक पहुँचाया था। पाँच छह सेकिंड दोनों एक दूसरे की ओर देखते हुए खडे रहे थे। फिर जीवाजीराव बोले—

मिलते रहियेगा। संबंध तोड लेना ठीक नहीं।"

"अवश्य!" बापूसाहब ने कहा। सुधाजी की ओर देखकर उन्होंने हाथ हिलाया और गाडी में बैठ गये।

खिन्नता स मुख्यमत्री अदर आये तो पार्टी के अध्यक्ष का फोन आया हुआ था। दस मिनट तक उनस बातें करनी पडी। अगली कायकारिणी की बठक क बारे म बातें की थी। कल का वक्त दकर उन्होने फोन बद कर दिया।

'अब और कितना काम है ?' सुधाजी ने पूछा।

'कम-से-कम एक घटा तो लग ही जायगा,' बाहर बैठ स्टेनो की ओर इशारा कर जीवाजीराव ने कहा। कुछ अर्जेंट मैसेज देने हैं।

एक घटा मतलब ढाई घटा—इस समीकरण को सुधाजी अच्छी तरह से जानती थी। पौने बारह बज चुके थे और उनकी आखो म नीद तर रही थी। व नाराज़-सी होकर वहाँ स चल दी।

जीवाजीराव स्टेनो लेकर अपने आफिस के कमरे म चले गये। उन्होने एक गिलास गरम पानी मगवाया और उसम ब्रांडी डालकर नीबू निचोड लिया। उस पीते हुए उन्होने फाइलें देखना शुरू किया। उनकी आदत थी कि प्रधानमत्री और उनके विभाग को वे स्वय लिखते थे वसे उनके विभाग के सेक्रेटरी खत का मजमून लिख देते थ। लेकिन उनकी ज़िद थी कि पत्र उनक दस्तखत से ही जाना चाहिए। दो खत डिक्टेट कराये थे कि तभी फोन की घटी बजी। स्टेनो ने फोन लिया 'यस!' बोला 'कमिश्नर साहब का फोन है। पूछ रहे हैं कि कि साहब जाग रहे है क्या ?

हाँ। मिलाओ।' कहते हुए उन्होने रिसीवर अपने हाथ म लिया।

'गुड मार्निंग, सर!' पौन बज रहा था। 'सारी टू डिस्टर्ब यू सर।'

इटस आल राइट।' मुख्यमत्री थक चुके थे।

'मेरा खयाल था कि आप जाग रह हो तो यह खबर आप तक पहुचा दूँ'' पुलिस-कमिश्नर ने कहा।

यस ?

अभी कुछ देर पहले ही किसी ने डीकोस्टा पर हमला किया है, शिवाजी पार्क के क़रीब।''

माई गाड!'

ही इज एट के० ई० एम०। ऑपरेशन रूम म है। सिर म लोहे के सरियो की चोट है। पर, ही विल लिव। ही वाज इमिडीएटली पिक्ड अप। इन फक्ट दो लडको ने हमला होते देखा और वे दौडकर आ गये। नही तो हमलावर मार देते।

दिस इज सीरियस। यस वेरी मच।''

पुलिस कमिश्नर चुप रहे। मुख्यमत्री की गुस्सल साँस उन्ह सुनायी द रही थी। मुख्यमत्री ने कहा देखिये यह पता लगाने के लिए मैंने सुबह

हा कहा था कि उसे ट्रक करन वाले लोग कौन है फिर भी आप लोग साते रहे।

सर, हम लोगों ने इमिजीएट ट्रैकिंग शुरू कर दी थी। लेकिन वह बीच म ही एक बस म चढ गया था। तभी गडबड हो गयी।

नानसेंस अब ऐसी गडबड नही होनी चाहिए। कुछ भी हा हमलावर पकडे जान चाहिए।'

यस सर। वी आर आलरेडी आन द जाब।

यू बटर बो आर यू विल लूज यूअस।

आई अम सारी सर।

इटस आल राइट।'

फोन रखकर जीवाजीराव ने आख बद कर लीं। मामला जरा गभीर नजर आ रहा था। कोस्टा पर किसने हमला किया है ? वह बच गया नहा ता मरी इज्जत चली जाती। कोस्टा छोटा मोटा आदमी नही है। उन दा लडका को इनाम दिया जाना चाहिए। कोस्टा मर जाता तो कितना बडा तूफान खडा हो जाता ! उनके सीने की धडकन कुछ बढ गयी। कौन हो सकत है वे लाग ? दोपहर जिन लागा पर नोट पढा था क्या वे ऐसा कर सकते है ? किसकी टाग किसके साथ उलझी है पता ही नही चलता। पुलिस भी ठीक तरह स पता नही लगा पा रही। इसका कस्टम से जरूर सबध ह। बापूसाहब क्यो परेशान है ? वे भी इन बाता से परेशान हो चुके है ? लेकिन इस तरह हार मानने स कसे चलेगा ? कस्टम सेंटल इटलिजेंस स्टट पुलिस सबको एक साथ लगाकर इस मामले को सुलझाना होगा। जीवाजीराव ने निश्चय कर लिया और आख खोल ली। स्टेनो जम्हाई ले रहा था।

बस अब आखिरी दो खत, कहत हुए उन्होने दो खत और डिक्टट करवाय और स्टेनो को छुट्टी दे दी। टबिल ठीक की और नीद की गोलिया लन म पहले ठडी हवा खान के लिए बालकनी म आ खडे हुए।

पूरब की इस बालकनी स बम्बई शहर का कुछ हिस्सा नजर आता है। दूर कुछ बत्तियाँ भी नजर आती थी। बम्बई सो रही थी। शायद बारिश हुई थी। हवा मे एक अजीब सी ठडक थी एक खुमारी थी। मलाबार हिल से बम्बई ऐसे नजर आ रही थी जसे कोई प्रौढा अस्तव्यस्त लटी हुई हो। बगले के सामन वाल रास्त पर एक आदमी चलता हुआ उन्हे नजर आया। इस समय यहा स कौन आदमी जा रहा है ? चलते चलते उस आदमी न सहज ही ऊपर की ओर देखा। रात न होती तो उनकी नजरें आपस म मिल जाती। हाथ पीछे किये वह आदमी धीरे धीरे कदम बढाता

हुआ अँधेरे म खो गया। शायद यह आदमी नही जानता कि हम इतने बडे राज्य के मुख्यमत्री हैं नही तो वह उन्हे ऐसे नजरअदाज करके न जाता। यह जिम्मेदारी परेशान कर देने वाली जिम्मेदारी है। ईमानदारी से निभाया जाय तो एक शरीर से यह जिम्मेदारी निभाना कठिन है। इस आदमी को क्या पता? और इस जिम्मेदारी को झेलने म हमारा कोई साथी भी नही है। ऐसी जिम्मेदारी लेनी ही नही चाहिए। हम न लें तो बहुत-से इस जिम्मेदारी को लेने के लिए आगे बढ आयेंगे।

टेबिल पर रखी गोलियाँ लाकर जीवाजीराव कमरे में आ गये। आज उनके कार्यक्रम के अनुसार तीन चार फाइलें और देखना शेष था। समाचार-पत्र पढने थे। लेकिन आज थकान काफी थी। बीच-बीच मे सीने म दद और चक्कर भी आ रहे थे। और वक्त होता तो वह इस तरफ ध्यान ही नही देते लेकिन आज उन्हें यह पीडाएँ महसूस हो रही थी। इसम खतरा था। उन्हे खुद पर काबू रखना होगा। आज घटे भर पहले ही सोना तय किया। सुधाजी के कमरे म वे एक बार चक्कर लगा आये। वे बेचैन सी सो रही थीं।

पास के सोने के कमरे म आकर उन्होने गोलियाँ खायीं और पानी पी लिया। हलकी-सी चादर पाँवों पर लेकर टेबिल लैंप के उजाले म उन्होने समाचारपत्रों की हैडलाइंस पढनी शुरू की।

तभी टेलीफोन की घटी ऐसे बजी जैसे घबराया बच्चा दरवाजे की घंटी बजा दे। जीवाजीराव ने उधर ध्यान नही दिया। उनके बेडरूम की बत्ती रिसेप्शन रूम के ऑपरेटर को नजर आती है। खास बात हुए बिना वह घटी नही देगा, इसे वे जानते थे। लेकिन फिर भी उन्होने नजरअदाज कर दिया।

पंद्रह-बीस सेकिंड के बाद फिर वैसी ही घटी बजी। उन्होने इरादा बदला। कोई जरूरी काम ही होगा वर्ना दूसरी बार घटी बजाने की हिम्मत आपरेटर म नही हो सकती। जीवाजीराव ने लेटे-लेटे ही रिसीवर उठा लिया।

यस?

एक्सट्रीमली सारी सर टु डिस्टर्ब   फोन पर पुलिस कमिश्नर थे और उनकी आवाज़ घबरायी हुई लग रही थी।

गो अहैड   गो अहैड।''

सर हमलावर पकड लिये गये हैं।' अभी भी उनका स्वर परेशान था।

'गुड जाब! बहुत अच्छे! कुल तीन घटो मे ही पकड लिया?

ही कहा था कि उसे ट्रैक करन वाल लोग कौन है फिर भी आप लोग साने रह।'

मर, हम लोगो ने इमिजीएट ट्रैकिग गुरू कर दी थी। लेकिन वह बीच म ही एक बस म चढ गया था। तभी गडबड हो गयी।

नान्सेंस अब ऐसी गडबड नही होनी चाहिए। कुछ भी हा हमलावर पकडे जाने चाहिए।'

यस सर। वी आर आलरेडी आन द जाब।

यू बटर वी आर यू विल लूज यूअम।

आइ अम सारी सर।

इटस आल राइट।'

फोन रखकर जीवाजीराव ने आँखें बद कर ली। मामल जरा गभार नज़र आ रहा था। कोस्टा पर किमने हमला किया है? वह बच गया नही ता मेरी इज्ज़त चली जाती। कोस्टा छाटा माटा आदमी नही है। उन दो लडकों को इनाम दिया जाना चाहिए। कोस्टा मर जाता ता कितना बडा तूफान खडा हो जाता। उनके सीने की धडकन कुछ बढ गयी। कौन हो सकत है व लोग? दोपहर जिन लोगो पर नोट पटा था क्या वे ऐसा कर सकते हैं? किसकी टाँग किसक साथ उलझी है पता ही नही चलता। पुलिस भी ठीक तरह से पता नही लगा पा रही। इसका कस्टम से ज़रूर सबध है। बापूसाहब क्यो परेशान है? वे भी इन बाता से परेशान हो चुके हैं? लकिन इस तरह हार मानने से कसे चलेगा? कस्टम सेंट्रल इटलिजेंस स्टट पुलिस सबको एक साथ लगाकर इस मामले को सुलझाना होगा। जावाजीराव ने निश्चय कर लिया और आँखें खोल ली। स्टेनो जम्हाई ले रहा था।

बस अब आखिरी दो खत' कहते हुए उन्हाने दो खत और डिक्टेट करवाये और स्टेनो को छुट्टी दे दी। टबिल ठीक की और नीद की गोलियाँ लन म पहल ठडी हवा खाने के लिए बालकनी मे आ खडे हुए।

पूरब की इस बालकनी स बम्बई शहर का कुछ हिस्सा नज़र आता है। दूर कुछ बत्तियाँ भी नज़र आती थी। बम्बई सो रही थी। शायद बारिश हुई थी। हवा मे एक अजीब सी ठडक थी एक खुमारी थी। मलाबार हिल से बम्बई ऐस नज़र आ रही थी जसे कोई प्रौढा अस्तव्यस्त लेटी हुई हा। बगल क सामन वाले रास्त पर एक आदमी चलता हुआ उन्ह नज़र आया। इस समय यहा से कौन आदमी जा रहा है? चलते चलते उस आदमी न सहज ही ऊपर की ओर देखा। रात न होती तो उनकी नज़रें आपस म मिल जाती। हाथ पीछे किये वह आदमी धीरे धीरे कदम बढाता

हुआ अँधेरे में खो गया। शायद यह आदमी नहीं जानता कि हम इतने बड़े राज्य के मुख्यमंत्री हैं नहीं तो वह उन्हें ऐसे नज़रअंदाज़ करके न जाता। यह ज़िम्मेदारी परेशान कर देने वाली ज़िम्मेदारी है। ईमानदारी से निभाया जाये तो एक शरीर से यह ज़िम्मेदारी निभाना कठिन है। इस आदमी को क्या पता? और इस ज़िम्मेदारी को झेलने में हमारा कोई साथी भी नहीं है। ऐसी ज़िम्मेदारी लेनी ही नहीं चाहिए। हम न लें तो बहुत-से इस ज़िम्मेदारी को लेने के लिए आगे बढ़ आयेंगे।

टेबिल पर रखी गोलियाँ खाकर जीवाजीराव कमरे में आ गये। आज उनके कार्यक्रम के अनुसार तीन चार फाइलें और देखना शेष था। समाचार-पत्र पढ़ने थे। लेकिन आज थकान काफी थी। बीच-बीच में सीने में दर्द और चक्कर भी आ रहे थे। और वक्त होता तो वह इस तरफ ध्यान ही नहीं देते लेकिन आज उन्हें यह पीड़ाएँ महसूस हो रही थीं। इसमें खतरा था। उन्हें खुद पर काबू रखना होगा। आज घंटे भर पहले ही सोना तय किया। सुधाजी के कमरे में वे एक बार चक्कर लगा आये। वे बचपन सी सो रही थीं।

पास के सोने के कमरे में आकर उन्होंने गोलियाँ खायीं और पानी पी लिया। हलकी-सी चादर पाँवों पर लेकर टेबिल लैंप के उजाले में उन्होंने समाचारपत्रों की हैडलाइंस पढ़नी शुरू की।

तभी टेलीफोन की घंटी ऐसे बजी जैसे घबराया बच्चा दरवाज़े की घंटी बजा दे। जीवाजीराव ने उधर ध्यान नहीं दिया। उनके बेडरूम की बत्ती रिसेप्शन रूम के ऑपरेटर को नज़र आती है। खास बात हुए बिना वह घंटी नहीं देगा इसे वे जानते थे। लेकिन फिर भी उन्होंने नज़रअंदाज़ कर दिया।

पंद्रह-बीस सेकिंड के बाद फिर वैसी ही घंटी बजी। उन्होंने इरादा बदला। कोई ज़रूरी काम ही होगा वर्ना दूसरी बार घंटी बजाने की हिम्मत ऑपरेटर में नहीं हो सकती। जीवाजीराव ने लेटे-लेटे ही रिसीवर उठा लिया।

यस?'

एक्सट्रीमली सॉरी सर टु डिस्टर्ब फोन पर पुलिस कमिश्नर थे और उनकी आवाज़ घबरायी हुई लग रही थी।

गो अहैड गो अहैड।'

सर हमलावर पकड़ लिये गये हैं।' अभी भी उनका स्वर परेशान था।

"गुड जॉब! बहुत अच्छे! कुल तीन घंटों में ही पकड़ लिया?"

'सच पूछा जाये तो उन्हें घटे भर म ही पकड लिया था। सर, हमारे ट्रैक्स हमला होने के दौरान ही वहाँ पहुच चुके थे और तभी वे भाग खडे हुए थ। हमने पीछा किया पर ।"

गुड ! हमले की खबर अखबार वालो को मिल चुकी होगी ? अब इस खबर को भी दे दीजिय। अभी तक हैड लाइन नही गयी होगी। दो ढाई बज रहा है।'

पर पर साहब कुछ दिक्कतें हैं।"

कहिये।'

कमिश्नर परेशान नजर आये तो वे फिर बोले—

यस ? '

सर हमारे लोगो न जय एक्सपाट कारपोरेशन वाले मेथा के जूहू वाले बगले पर उन लोगो को पकडा सर।'

अच्छा ?'

यस सर। रेड की तो एक इसपेक्टर को एक अलमारी म नोटों के बडल नजर आय। काफी सोना भी था।'

अच्छा कस्टम को खबर दीजिये। रेवेन्यू इटैलीजेंस को बुलवाइये। सीज़ इट।

सर हम वही करन वाले थे लेकिन मेथा आन्सट्रक्टेड। अभी सर मुझे वसतराव जाधव ने फोन किया था। वे भी वहाँ पहुचे हुए हैं। उन्होंने कहा कि अलमारी म से डाक्यूमटस लिये तो बहुत बुरा हागा।'

माई गाड ! हाऊ डेअर ही हाऊ हाऊ ' जीवाजीराव का खून गर्मा गया। साँस तेज हो गयी। सीने की धडकन बढ गयी। पकडो उसे। अरस्ट हिम। उस पाठ पढाना ही होगा।

सर !'

'यस यस अरस्ट हिम जीवाजीराव इतने ज़ोर से चिल्लाये कि पास के कमरे म सोयी सुधाजी की नीद टूट गयी। व उनके कमरे म आ गयी।

मुझ ज़रा शक है सर पुलिस-कमिश्नर घबराते हुए बोले। उनकी आवाज़ म थकान और कँपकँपी महसूस हो रही थी।

"डोंट यू डेअर डिसओबे मी मैं कह रहा हूँ। आई आडर। पकडो उसे।

आई थिक सर ।

अरस्ट हिम,' जीवाजीराव ज़ोर से चिल्लाये और उन्होंने रिसीवर रख दिया।

सुधाजी घबरा गयी थी। वे कुछ समझ न पा रही थी। परेशान होकर बोली 'अजी क्या हो गया? किसी को बुलवाऊँ क्या? जीवाजीराव को इतने गुस्से में उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था।

मुख्यमंत्री चुप रहे। अभी भी वे बिस्तर पर तकिये से टिके हुए थे। उनके कंधे और पेट में दर्द शुरू हो गया था। बदन में कँपकँपी थी। पसीना आ रहा था।

'अजी क्या हुआ बताइये न? आपकी तबियत ठीक नहीं है। किसे पकड़ने के लिए कहा है?' सुधाजी उनके माथे पर हाथ रखते हुए बोली।

जीवाजीराव ने हाथ परे कर दिया। आँखें बन्द कर ली और दबी आवाज में बोले 'वसंतराव को ब्लैकमनी चोरी का सोना हमलावर'

वे आगे कुछ न बोल सके। सुधाजी भी परेशान हो गयी। पल भर के लिए उनकी साँस रुक गयी। वे जीवाजीराव की ओर आँखें फाड़कर देखती रही। होश में आयी तो उन्होंने गर्दन नीची कर ली। हथेलियों से चेहरा ढाँप लिया। 'अच्छा तो मेरा यह धंधे करता है।' वे केवल इतना ही बुदबुदा सकीं।

जीवाजीराव का सिर भिन्ना गया था। दायें हाथ से वे अपनी भौंहें मसल रहे थे। बीच-बीच में बालों पर हाथ फेरते जा रहे थे। उनके कान बुरी तरह गर्मा गये थे। कुछ देर बाद उनके पेट में अजीब-सा गोला उठा। 'वसंतराव वसंतराव!' वे खुद भी बुदबुदाये। वे समझ गये थे कि पुलिस कमिश्नर क्या कहना चाहता था। वसंतराव ने क्या नहीं किया होगा! अखबारों में यह खबर कितनी जोर शोर से छापी जायगी। वसंतराव ने मिलिंद को काफी बार पैसे भेजे हैं इतना तो तय है। और क्या होगा? बापू साहब ने कहा था। चिराग तले अँधेरा।

जीवाजीराव काँप उठे। उनका माथा भन्ना गया। उन्हें लगा कि उन्हें चक्कर आ रहा है। सीने की धड़कन तेज हो गयी है। उन्होंने माथे से हाथ हटा लिया और वे बिस्तर पर लेट गये। टेलीफोन उठाने के लिए उन्होंने हाथ लंबा किया। वे रिसीवर उठाने ही वाले थे कि घंटी बज उठी।

जीवाजीराव ने रिसीवर कान से लगा लिया। दूसरी ओर से उन्हें पुलिस-कमिश्नर की भारी साँस सुनायी दे रही थी। वे चुप रहे।

'एक्सक्यूज मी, सर,' पुलिस-कमिश्नर की आवाज उभरी। मुख्यमंत्री चुप रहे। कमिश्नर ने कहा—

'हमने अभी किसी को भी अरेस्ट नहीं किया है सर।' फिर खामोशी।

इज़ दट आके सर ?"

आल राइट।"

थक्यू सर।"

हमलावर का क्या हुआ ? '

"उन्ह तो पकड ही रहे हैं सर। उनके स्टेटमटस ज़रा ध्यान स लन होग ।'

आई लीव इट टु यू।'

'कस्टम रेवन्यू का भी खबर देनी है। लकिन हम ध्यान रखेंग सर।

जीवाजीराव को बहुत ज्यादा पसीना आ गया था। वे बिस्तर पर पसर गय। उन्हान बदन पर चादर ओढ ली। उनके मुह से श न निकल रहा था। अस्पष्ट स्वर म उन्हाने सुधाजी मे कहा—

डाक्टर को बुलवा लो।

पानिटकर

‘अभी ढाई-तीन घट तो हैं ही साहब ।’

दयानद न कोट की जब मे हाथ डाला । अन्दर रखे पिस्तौल का ठडा सा स्पश हुआ तो कुछ जान म जान आयी ।

‘उसकी जरूरत नही होगी साहब । बिलकुल सेफ काम है ।” सामन वाला आदमी अपन पील दाँत दिखाते हुए बाला । दयानन्द कुछ चौंक गया । फिर खुद को सम्हालत हुए बोला—

ठीक है । ठीक है । क्या नाम बताया तुमन अपना ?’

जी हुसन ।

‘मथा सेठ का काम कब से कर रहे हो ?

काफी साल हो गये । अब ठीक से याद नही ।’

ट्रक और आदमी बराबर हैं न ?’

‘पक्का काम हा चुका है साब । अँधेरा हाते ही जगह पकड लेंगे ।

कुछ देर तक खामोशी रही ।

गाँव म ता कुछ गडबड नही है न ?

‘आप जरा भी फिक्र न करें साहब । हमने अब तक मेथा सेठ के सौ स भी ज्यादा काम किय हाग । और बिना किसी गडबडी के ।’

मेथा सठ का इतजाम बहुत बढ़िया था । दयानद को पता लगने स पहल ही मेथा ने आदमी काम पर लगा दिये थे । इस हुसैन को दयानद न इससे पहल कभी नही देखा था । मेथा का जाल बहुत दूर तक बडी मजबूती से फला हुआ था । दयानद ने फिर स जेब म हाथ डालकर पिस्तौल का छुआ । जरूरत नही पडगी लकिन पास रखना जरूरी है । मेथा ने उस दो-तीन बार पहले भी पिस्तौल दिया था । । लकिन कभी जरूरत न पडी थी । आज भी न पडेगी । लकिन यह हुसैन कहाँ से आ गया मथा कभी भी किसी एक का काम नही सौंपता है । एक-दूसर पर निगरानी रखने के लिए दो आदमी होत हैं । हुसन क पाजामे म पिस्तौल है यह भी सच है ।

सूरज तजी स नीचे उतर रहा था । दयानद न हुसन के पीछे की ओर जाती हुई ठिगनी-सी आकृति की ओर देखा । झाडियों क बीच स हाता हुआ वह समन्दर की ओर बढ रहा था । हुसन का चेहरा घिसा पिटा-सा था, उसके दाँत निकले हुए थ । उसने जरूर दो-तीन खून किए होंगे

दयानद को पक्का विश्वास था हम आदमी का दखत ही पहचान जात हैं। आदमी के मन म क्या चल रहा है यह भी जान सकते है। नजरो से काफी कुछ जाना जा सकता है। अब यह बात और है कि सुनदा के बारे म अदाज नही लगा पात। लेकिन दूसरे लोगो को हम चट स पहचान सकते हैं। हुसन जरूर दो-तीन खून कर चुका होगा। पप पर काम करने वाले नूर का असिस्टट अजाब बिलकुल बाक्सर लगता है लेकिन मक्खी मारने की नौबत आ जाये तो परशानी म पड जाता है। उसकी आखा से ही यह बात समझ म आ जाती है। मेथा का घबराना भी उसकी आखों को देखकर जाना जा सकता है। हुसन न दो-तीन खून तो किये ही होंगे।

रास्त के दूसरी तरफ झाडियाँ, उसस परे ढलान फिर बालू और बाद म समदर। सूरज अब समदर पर टिक गया था। धीरे धीरे नीचे उतर रहा था। आसमान खामोश था। गहरा सुर्ख रग चारो ओर छाया हुआ था। कुछ पक्षी इधर उधर उड रह थे। बम्बई यहाँ से काफी दूर है। सुनदा और जया दूर हैं। मेथा भी दूर है। यहाँ है सिफ हम। वियाबान कच्चा रास्ता। नारियल के पडो के उस पार गाव नजर आता है। झाडिया क उस आर फला हुआ समदर। यहाँ से नजर नही आता पर लहरो की आवाज़ जरूर सुनायी देती है। अब कुछ ही दर बाद समदर मे ज्वार आयगा। सूरज डूब रहा है। अधेरा छा जायेगा। आसमान ज्यादा कठोर होता जा रहा है। खामोशी गहरा रही है। खामोशी के किनारे पर लहरें जरूर टकरा रही है। खामोशी को एकदम चीरने वाली आवाज़ किसकी है? बम्बई की ओर एक बोइग जा रही है। खामोशी गहरा रही है। लकिन जगल के पत्तो की सरसराहट जसी लहरो की आवाज इस खामोशी को और भी गहरा कर रही है। आसमान का लाल रग खत्म हो रहा है। अँधेरा जमीन पर पसर रहा है। घाटकोपर की कालोनी मे जो सुबह शुरू होती है वह यहाँ समदर पर आकर खत्म हा जाती है। अब सुनदा जया को लकर घमने निकली हागी। मेथा जुहू के बँगल पर फोन के करीब बैठा होगा। बम्बई म नियान बत्तिया अपना उजाला फैला रही होगी। रास्त मोटरो की बत्तियो म चमक रहे होंगे। दुकानो के शोकस शान से चमक रह हाग। लकिन यहा स्याह अधेरा चारो ओर से घिरता आ रहा है। आसमान म अब चाँदनी नजर आन लगी है। नीचे एकदम अँधेरा। दूसरी तरफ समदर की खास आवाज़। ऊपर चाँदनी और नीच मेरा शरीर एक अजाब-सा एहसास। दुनिया होने की यही पहचान शेष है। बम्बई म दिन धक्के देने पर भी खत्म नहीं होता। या बम्बई मे यह जान ही नही पडता कि दिन खत्म हुआ है। दिन ढलने से पहले ही बत्तियाँ जल जाती हैं। और

यहाँ दिन खतम हान स पहले ही शरीर पर अँधरा झुकने लगता है।

दयानद क बदन म कपकँपी छा गयी। बम्बई मे अँधेर स कभी-कभी मुकाबला हो पाता है। यहाँ का सा अँधरा बम्बई म देखने को नही मिलता। अँधेरे म एक छोटी सी बत्ती कहीं-न कहीं चमकती ही रहती है। यहाँ का अँधेरा पुरातन सा लगता है। लकिन इससे बदन म कपकँपी क्यो छान गती है? सीने की धडकन क्यो तेज हो जाती है? अँधेरे की हर लहर क साथ यादों के चिनार क्यो सामने खडे हो जाते हैं। दिन क उजाले या तेज बत्तियो क प्रकाश म इन यादो की आगे आने की हिम्मत तक नही होती। अब जरूर अँधरे की ढाल हाथ म लेकर आगे बढ रही है। कुन्नी माँ सुनदा का दुख पाप का धधा—ऐसी स्मृतियों की इस विशाल अँधेरे म कोई जगह नही होनी चाहिए। इस पल तो बिलकुल ही नही।

और सुबह स मन क कोने म दबी कास्टा स मुलाकात की बात फन फलाय दिल पर कैसे सवार हो रही है? मामूली-सी बात। कोस्टा को हमने सिफ लिफ्ट दी थी और किसी ने देखा भी नही। मेया तो बडी मीठी बातें किय जा रहा था। खुश था। कल-परसो हम खुद ही उस बता देंगे कि कोस्टा मिला था। मेया मजाक म बात को उडा देगा। अब तो उसका हम पर पूरा-पूरा विश्वास है। हम अब उसक अपने आदमी बन चुके हैं। बेकार ही डरत हैं। आज भी मेया की आखें याद आने पर डर लगता है। सुबह कोस्टा से मुलाकात की बात बदन पर काँटे खडे कर देती है। कोई मतलब ही नहीं इन सबका। हम अभी तक इन स्थितियो मे रम नही पाय हैं। आश्चय है।

अब अँधरा और गहरा गया है।

दयानद ने लबी साँस ली। पता नही इस तरह कितनी देर बैठना पडेगा? सुबह तीन-साढे तीन के करीब चन्द्रमा ऊपर आयगा। उससे पहल माल उतारकर भर लिया जाना चाहिए। ट्रान्स शाम हान स पहल ही दस-पद्रह मील की दूरी पर आ चुके होंगे। काफी अधरा छान पर वे आग आयेंगे। समदर म ही डुमन की नावें उन्हें मिल जायेंगी। माल नीचे उतर जाये तो हमारी जिम्मेदारी खतम। ट्रक म बालू भरकर ठीक तरह से जगह बनायी है। वैसे काम बिलकुल सेफ है। लेकिन हमेशा की तरह ही दयानद के सीने की धडकन तेज हो रही है। इस बार माल ज्यादा है। कस्टम वालो के चक्कर म न फँसे तो बस जीत गये। लेकिन मेया होशियार है। वह सब व्यवस्था कर देता है। उसने कहा है कि इस पर भी यदि कुछ गडबड हो जाये तो जान बचाकर भाग लना। पिस्तौल का उपयोग जहाँ तक हो सके नहीं करना।

दयानद झाडी से बाहर आ गया। रास्ते पर आकर उसन अँगडाई ली। जब में रखी पिस्तौल टटोली। उसके कोट और पैंट की जेबो म सौ सौ के नोट भरे हुए थे। नाव और माल उतारने वालों को उस दिन की तनखाह सौ के नोटों म दी जानी थी। हुसन और ड्राइवर का भुगतान मेथा बाद म करता है। हमेशा ऐसा ही होता है। दयानद की जब मे बाकी रुपये इमरजेंसी के लिए है। बस मेथा उन रुपयों का हिसाब कभी नहीं पूछता। वह दयानद की ऊपरी आमदनी है। लेकिन रकम बहुत नहीं थी। इतने बडे मामल मे डेढ-दो हज़ार रुपये कुछ भी नही होते।

टालर वालों का हिसाब कस होता है यह बात अभी भी दयानद के लिए रहस्य थी। इतने साल धधे म गुज़ारन के बाद भी दयानद को बहुत-सी बातें मालूम ही न थीं। इस रहस्य के बारे म उत्सुकता दिखाना मथा सठ को पसद न था। यदि कभी तिरछा सवाल कर लिया जाता तो मेथा सेठ का चेहरा पत्थर की तरह सख्त हो जाया करता था। वह अपन काम के लोगो का उतनी ही बातें बताता था जितनी उनके लिए जानना जरूरी होता।

इसी वजह से दयानद को कई बातो पर अचरज होता था। मेथा सठ के पास माल आन के सदेश कहाँ से आत हैं? माल का पमट किस तरह होता है? उसके कुल मकान कितने हैं? उसके फोन करते ही लॉकअप म बद लोग कसे छूट जात हैं? बीच-बीच म मन्त्रियों के साथ उसके फोटो कैसे छप जात हैं? कई बातें ऐसी थी जिनके बारे म वह कुछ भी नही जान पाया था। शुरू म दयानद इस तरह के सवाल पूछ लिया करता था लेकिन बाद म जब वह मथा क स्वभाव स वाकिफ हो गया तो उसन पूछना बद कर दिया। जो सामने है इतना ही जानना काफी है—उसने यही तय कर लिया था। वसे जो कुछ उसके सामने था वह भी कम न था। मथा सठ को फँसाता तो वह बखूबी फँसा सकता है। लेकिन फँसाना इतना सरल नही है यह वह भी अच्छी तरह जानता था। उसे मेथा का सख्त चेहरा याद हो आया इससे बाहर नहीं निकल सकते।

खैर जो कुछ मिल रहा है वह भी कम नही है' बुदबुदाकर दयानद ने हाथ झटक दिये। सुबह की घबराहट गायब हो चुकी थी। वह अब काम के लिए तयार था। जब मे रकम की गर्मी का एहसास उसे हो रहा था तभी ही उसे याद आया कि वह किस तरह भूखे पेट बम्बई म घूमा करता था। उस दौर के साथ आज की स्थिति की तुलना करक वह उत्तेजित हो उठा। बस पसा कमाना चाहिए। पसा असल बात है। पैसे पर दुनिया मरती है।

एक अजीब आज़ादी-सी उसे महसूस होने लगी। धधे से बाहर निकलने

की सोचता ही कौन है ? मेया के पेट पर बैठकर पसा कमाना और बस। दयानद हँस पड़ा। इद गिद अधेरे पर उसने नजर डाली। वह अपने काम म तेजी से जुट गया।

वह जिस जगह पर खड़ा था वह रास्ते का मोड था। कुल मिलाकर सौ मीटर का दोनों तरफ़ का रास्ता उसे नजर आ रहा था। नीचे का ढलान और समदर नजर न आ रहा था। रास्ते हर हमशा की तरह ही बलगाड़ियाँ और ट्रक आ जा रहे थ। किसी म रेत भरी रहती है ता किसी म पत्थर। जगह कम जोखिम की थी। दयानद न एक ऊँची-सी जगह देखी और उस पर चढ़कर वह चारों ओर देखन लगा। दूर जल रही छोटी-सी बत्ती दूर बस गाँव का पता दे रही थी। बाकी चारो ओर अंधेरा था और ऊपर तार। क्षितिज रेखा बिलकुल धूमिल-सी नजर आती थी। तेज हवा और लहरों की आवाज समदर का एहसास करा रही थी। लेकिन साफ साफ कुछ भी नजर न आ रहा था। समदर पर एक भी बत्ती न थी।

वहाँ से उतरकर दयानद नीचे आ गया। मोड के करीब ही बलगाड़ी के पहियो स एक रास्ता बन चुका था। ढलान उतरने के बाद कुछ दूर पर उस ट्रक दिखायी दिया। ट्रक का बोनट खुला हुआ था। सामने के पहिए के पास जक पड़ा था। पीछे रत और पत्थर थ। ड्राइवर स्टीयरिंग पर बठा हुआ खुर्राटे ले रहा था। सब कुछ ठीक था। माल चढ़ते ही ट्रक भाग खड़ा होगा।

दयानद ने ड्राइवर का नहीं जगाया। वह कुछ और आग बढ़ गया। देखा तो अँधेरे म हुसैन सामन स आ रहा था। उसकी आकृति और सफेद पाजामे की वजह से दयानद ने उसे फौरन पहचान लिया। बस उसका चेहरा नजर न आ रहा था।

साहब पहला सदेश मिल चुका है उन लोगों को। अब घट भर म माल उतारा जायगा।'

अच्छा ट्रक म माल चढ़ाने म कितना वक्त लगेगा ?'

'सीमेन्ट की खपच्चियाँ तैयार हैं। माल उनम भर दिया जाय तो सीधे ट्रक म।

चाँद ऊपर आने से पहल ट्रक रवाना हो जाना चाहिए।

काई फिक नहीं। बिलकुल सेफ काम है।"

दोनों ढलान से ऊपर की ओर आये तो हुसैन ने पूछा   साहब पेमट के लिए पैसा है न ?"

दयानद ने गदन हिलायी और जेब म रखी अपनी पिस्तौल को छुआ।

"मछुआरे बड़े परेशान करते हैं साब। माल खपच्चियों म भरने बहुत

अगर कोई कुछ रख ले ता नजरअदाज कर देना साब वर्ना डेंजरम रहगा। दयानद इस बात को अच्छी तरह से जान चुका था। हर जगह यही होता था। एक ही जगह पर तो हर बार माल उतारा नही जा सकता। इसी वजह से हर बार जगह तब्दील कर देनी पडती थी। हर बार काम पर दूसरे लोग होते थे।

समदर म ज्वार आ रहा है अब महसूस होन लगा था। टकराती हुई लहरा की आवाज यही बता रही थी।

दोना ढलान की ओर लगभग आधे फर्लांग तक चलते रहे। अब छने नारियल के पेड थे। रास्ता काफी पीछे रह गया। था। इस जगह पर समदर जैसे अदर की ओर धस गया था। दस-पद्रह फट ऊचाई पर रेतीली सतह थी और चारो तरफ नारियल क पड थे। यह जगह माल उतारन के लिए एकदम फिट थी।

साब आप अब तक्लीफ न करें। यहीं बैठ जाइये। माल कदमो पर आ जायेगा।'

दयानद चट्टान पर बठ गया। पास की एक चट्टान पर खडे होकर हुसन न मशाल जलायी और अपने इद गिद तीन बार घुमायी। तभी समदर म एक जगह पर छोटी सी बत्ती जली और एकदम बुझ गयी।

बस अब माल आ ही रहा है' कहत हुए हुसैन नीचे बैठ गया। बटरी उसन समदर की ओर ही कर रखी थी। बीच-बीच म वह खडे हो कर समदर की ओर बटरी चमकाता और वापस नीचे बैठ जाता था।

ज्वार तजी पर था। दयानद के कदमों से कुछ ही दूरी पर लहरें आकर टकरा रही थी। ठडी हवा बदन का चूम रही थी। हवा की आवाज कान म अजीब-सी लग रही थी जिस तरह समदर क किनारे अकेल बठ कर लहरो की आवाज सुनी जाये। अनजाने ही दयानद के सीने की धडकन तेज़ हो गयी थी।

नावा म कितने आदमी हैं ?

दस।

लांच वाल यहीं तक आने वाले थे न ?'

नहीं साब। सदेश था कि मील भर अदर रहकर ही माल उतारना है।"

'वसे भी वे हमेशा किनार तक नही आत है। किनारे पर भले ही न आते हा लेकिन काफी करीब आ जात हैं।'

हुसन चुप रहा।

कस्टम क लोग इधर आते हैं ?'

“सप्ताह में एकाध बार गाँव की ओर आते हैं। पर हमारा गाँव अच्छा है। इस जगह की तो उन्हें बिलकुल ही जानकारी नहीं है।'

कुछ वक्त ऐसे ही गुज़र गया। दोनों समंदर की ओर मुँह किये हुए थे। हुसैन बीच-बीच में जगह बताने के लिए बैटरी का उजाला डाल देता था। समंदर से अब कोई जवाब नहीं आ रहा था लेकिन अब उसकी कोई ज़रूरत भी न थी।

दयानंद ने अभी तक कई बार माल उतारा था। लेकिन फिर भी उसमें बेफिक्री का भाव न आ पाया था। बस उसे खास डर भी न लग रहा था। लेकिन कुछ घबराहट ज़रूर थी। एक बार माल किनारे से लग जाये तो वह घबराहट भी खत्म हो जाय। फिर तो काम में और बातें सोचने के लिए वक्त ही नहीं रहता। ट्रक रवाना हो जाय तो काम खत्म। बस।

कुछ ही देर में समंदर के किनारे पर दो नावों की आकृतियाँ नज़र आने लगीं। तभी दयानंद और हुसैन खड़े हो गये। आगे की ओर बढ़ने लगे। पानी जूतों से लगा तो रुक गये। कोई कोई लहर पैंट गीला कर जाती थी। नावें क़रीब आ रही थीं। कुछ ही देर बाद नाव के आदमियों की आवाज़ें सुनायी देने लगीं।

दुल्या ऽ ऽ र ऽ !' कहकर हुसैन ने आवाज़ दी।

'हाँ हाँ हमव हाय।' समंदर से आवाज़ आयी। नावें काफ़ी करीब आ चुकी थीं।

फिर नाव के लोग उतर पड़े और उन्होंने हाथ से नाव किनारे की ओर खींचना शुरू कर दिया। हुसैन और दयानंद भी आगे की ओर बढ़ आये। उन्होंने नावों को हाथ लगाया। हुसैन ने चार आदमी साथ लिये और चट्टान के पीछे रखी खपचियाँ निकालना शुरू कर दीं।

इधर दुल्या के लोगों ने नावों से थैलियाँ निकालना शुरू कीं। दयानंद ने थैली में हाथ डालकर देखा कि उसमें रखी चीज़ पीली ही है न। उस स्पर्श में नयापन कुछ न था। लेकिन फिर भी उसमें एक जादू ज़रूर था। बीच-बीच में पीली चमक अचानक कौंध जाती थी तो दयानंद के सीने में धड़कन तेज़ हो जाती थी। आखिर सोना तो सोना ही है। वर्ना दुनिया का सारा हिसाब इसी पर क्यों चलता। खून हो जाते हैं डाका पड़ जाता है और छोटे आदमी अचानक बड़े हो जाते हैं।

थैलियाँ लाकर रेत पर रख दी गयीं। सारे काम बड़ी तेज़ी और करीने से हो रहे थे। थैलियाँ गिनने की ज़रूरत न थी। और उतना वक्त भी न था। धंधे के लोग ईमानदारी से काम करते हैं। अपनी बात के बड़े पक्के होते हैं। इसी वजह से लेन देन सिर्फ मुँह ज़बानी हो जाता है। इसके

बगर धधा चन ही नही सकता । कोई रसीद नही और न ही कोई
चीज़ । इसी वजह स मेया बचे रुपयों का हिसाब नहीं लता । पैट्रोल
पर हर माह तनखाह देत समय वह जरूर दस्तखत करवाता था ।

दयानद आदमियो पर बराबर नज़र रखे हुए था । लेकिन जसा
न कहा था उसने किसी आदमी को भी कोई चीज निकालते हुए
देखा । रेत और सीमट की बोरियो म थैलियाँ भर दी गयी और उनक
सीये जाने लगे ।

साहब पेमट कर डालिय ' दुल्या न कह ।

दयानद ने हुसन की ओर देखा । हुसन ने गदन हिला दी । अब
बोरियाँ ट्रक मे चढ़ान की देर थी । पमेट हो जाने पर वही एक
बचता था ।

दयानद न कोट और पतलून की जेब से नोट के बडल निकाले ।
आदमिया को बीस नोट और दुल्या को बीस नोट क अलावा ऊपर से
नोट और । तज़ी से पच्चीस नोट गिनकर उसने दुल्या के हाथ म
दिये । उसन पच्चीस नोट पहले ही अलग निकालकर रख लिये थे ।

दुल्या ने नाट गिने । उसने नोट वापिस दयानद की तरफ बढाये
बाला साहब लीजिय ।"

क्या क्या हुआ ?"

लीजिये साहब । हम नहीं चाहिए ।

दयानद परेशान हो उठा । उसन हुसन की ओर देखा । हुसन बी
पी रहा था । कुछ करीब आकर बोला क्या हुआ साहब ?'

क्या हुआ यह तो मैं खद पूछ रहा हूँ ।'

साहब, हम तो कुछ भी नही कहते । हम पैस नही चाहिए । अ
जाइय ।'

दुल्या जरा तश म बाल पडा ।

हरेक के लिये दो सौ और तुम्हारे लिए पाँच ज्यादा ।'

हर आदमी को तीन सौ देने थ साहब ।'

पर हमेशा का रेट तो दो सौ का है ।'

आज का काम ज़रा जोखिम का था साहब ।

' पर पहले तो बनाया नहीं ?'

काम बडा है यह तो सभी जानते है साहब ।

वक्त तज़ी से गुज़र रहा था । दयानद परशानी म पड गया । हु
आराम स बीडी पी रहा था । धीरे से बोला, जल्दी करो साहब । व
हो रहा है ।"

इस वक्त तक नाव वाले दयानद को घेर चुके थे। उनके चेहरे उस नहीं दिखायी दे रहे थे लेकिन सिर नजर आ रहे थे। काले स्याह वस्त्र। दयानन्द की गर्दन पर पसीना आ गया। उसके पास रुपये थे लेकिन यह माँग गैरजरूरी थी। दुल्या की और मेया की आपस में पहचान है। हुसैन बीच का आदमी है। फिर भी यह बात? दयानद तैश में आ गया। अगर उनके मन में आ जाये तो दयानद का नामोनिशान नजर न आता।

दयानन्द ने चट-से जेब से और नोट निकाले। गिनकर देखे तो बारह थे। उसने वे दुल्या के हाथ पर रख दिये। गिनकर दुल्या ने सलाम किया 'चला रे अब।' कहते हुए साथियों को पुकारा। हरेक ने एक एक-एक बोरा कंधे पर उठा लिया और सभी ट्रक की ओर बढ़ने लगे।

दयानन्द का दिमाग तेजी से काम कर रहा था। स्थिति पर वह बराबर नजर रखे हुए था। उसे खतरे की गंध आ रही थी। अब तेजी से सब कुछ करना जरूरी था। लेकिन दुल्या और उसके आदमी खुश नजर आ रहे थे। हुसैन भी इस तरह खड़ा था जैसे काम से निबट गया हो। फिर यह हरकत किसलिए? सारा धंधा विश्वास पर चलता है। फिर दुल्या ने आज ऐसा क्यों किया? और हुसैन चुप क्यों रहा? तभी उसने पिस्तौल को छुआ।

हो सकता है कि काम वाकई बड़ा और जोखिम वाला हो और दुल्या ने ज्यादा पैसों की माँग की हो। लेकिन उसके माँगने का अंदाज कुछ दूसरा ही था। उसने सीधे कह दिया होता तो बात दूसरी थी। उसकी आवाज में धोखे की गंध थी और उसके साथियों के व्यवहार में भी। फिर हुसैन भी चुप था।

दयानद ने होंठ चबाये। धोखा! उसके दिमाग में एक ही बात थी। पहले से जो डर था वह इसी धोखे की वजह से था। लेकिन उस तरह से उसने सोचा न था। उसका दिमाग मशीन की तरह काम कर रहा था। मेया की आँखें कोस्टा से मुलाकात तेजी से चलती कार झटके से लगाया गया ब्रेक। धोखा! धोखा!

ट्रक बिलकुल अँधेरे में खड़ा था। दुल्या और उसके साथी चुपचाप बोरियाँ उठाये ट्रक की ओर बढ़ रहे थे। किसी का भी दयानद की ओर ध्यान न था। कहीं वाकई धोखा है? होगा कैसे? मेरे पास पिस्तौल है। लेकिन हुसैन के पास भी तो है। या शायद धोखा न भी हो। लेकिन दिमाग में परेशानी जरूर है।

ड्राइवर तैयारी में जुट गया था। दुल्या के साथियों ने तेजी से बोरियाँ ट्रक में चढ़ानी शुरू कर दी थी। फिर उस पर रेत डालकर पत्थर रख

बगर धधा चल ही नही सकता। कोई रसीद नही और न ही कोई लिखित चीज़। इसी वजह से मेया बच रुपयों का हिसाब नहीं लता। पट्रोल पप पर हर माह तनखाह देते समय वह जरूर दस्तखत करवाता था।

दयानन्द आदमियो पर बराबर नज़र रखे हुए था। लेकिन जैसा हुसन ने कहा था उसने किसी आदमी को भी कोई चीज़ निकालते हुए नही देखा। रेत और सीमेंट की बोरियो म थलियाँ भर दी गयीं और उनके मुह सीये जाने लगे।

साहब पेमेंट कर डालिये दुल्या ने कहा।

दयानद ने हुसन की ओर देखा। हुसन ने गर्दन हिला दी। अब सिर्फ बोरिया ट्रक म चढ़ाने की देर थी। पेमेंट हो जाने पर वही एक काम बचता था।

दयानन्द ने कोट और पतलून की जेब से नोट के बडल निकाले। दस आदमियो को बीस नोट और दुल्या को बीस नोट के अलावा ऊपर से पाँच नोट और। तेज़ी स पच्चीस नोट गिनकर उसने दुल्या क हाथ म थमा दिये। उसने पच्चीस नोट पहले ही अलग निकालकर रख लिये थे।

दुल्या ने नोट गिने। उसने नोट वापिस दयानद की तरफ बढाये और बोला ‘साहब लीजिये।

‘क्यो क्या हुआ ?

लीजिये साहब। हम नहीं चाहिए।

दयानद परेशान हो उठा। उसने हुसन की ओर देखा। हुसन बीडी पी रहा था। कुछ करीब आकर बोला, ‘क्या हुआ साहब ?’

क्या हुआ यह तो मैं खुद पूछ रहा हूँ।

साहब हम तो कुछ भी नही कहते। हम पैसे नही चाहिए। आप जाइये।

दुल्या ज़रा तैश म बोल पडा।

हरेक के लिये दो सौ और तुम्हारे लिए पाँच ज्यादा।”

हर आदमी को तीन सौ देने थे साहब।’

‘पर हमेशा का रेट तो दो सौ का है।

आज का काम ज़रा जोखिम का था साहब।’

‘पर पहले तो बताया नहीं ?’

काम बडा है यह तो सभी जानते है साहब।

वक्त तेज़ी से गुज़र रहा था। दयानन्द परेशानी म पड गया। हुसन आराम से बीडी पी रहा था। धीरे से बोला ‘जल्दी करो, साहब। वक्त हो रहा है।

इस वक्त तक नाव वाले दयानंद को घेर चुके थे। उनके चेहरे उसे नहीं दिखायी दे रहे थे लेकिन सिर नज़र आ रहे थे। काले स्याह बदन। दयानन्द की गर्दन पर पसीना आ गया। उसके पास रुपये थे लेकिन यह मांग गैरज़रूरी थी। दुल्या की और मेथा की आपस में पहचान है। हुसैन बीच का आदमी है। फिर भी यह बात? दयानंद तैश में आ गया। अगर उनके मन में आ जाये तो दयानंद का नामोनिशान नज़र न आता।

दयानन्द ने चट-से जेब से और नोट निकाले। गिनकर देखे तो बारह थे। उसने वे दुल्या के हाथ पर रख दिये। गिनकर दुल्या ने सलाम किया। "चलो रे अब।' कहते हुए साथियों को पुकारा। हरेक ने एक-एक बोरा कंधे पर उठा लिया और सभी ट्रक की ओर बढ़ने लगे।

दयानन्द का दिमाग तेज़ी से काम कर रहा था। स्थिति पर वह बराबर नज़र रखे हुए था। उसे खतरे की गंध आ रही थी। अब तेज़ी से सब कुछ करना ज़रूरी था। लेकिन दुल्या और उसके आदमी खुश नज़र आ रहे थे। हुसैन भी इस तरह खड़ा था जैसे काम से निबट गया हो। फिर यह हरकत किसलिए? सारा धंधा विश्वास पर चलता है। फिर दुल्या ने आज ऐसा क्यों किया? और हुसैन चुप क्यों रहा? तभी उसने पिस्तौल को छुआ।

हो सकता है कि काम वाक़ई बड़ा और जोखिम वाला हो और दुल्या ने ज़्यादा पैसों की मांग की हो। लेकिन उसके मांगने का अंदाज़ कुछ दूसरा ही था। उसने सीधे कह दिया होता तो बात दूसरी थी। उसकी आवाज़ में धोखे की गंध थी और उसके साथियों के व्यवहार में भी। फिर हुसैन भी चुप था।

दयानंद ने होंठ चबाये। धोखा! उसके दिमाग में एक ही बात थी। पहले से जो डर था वह इसी धोखे की वजह से था। लेकिन उस तरह से उसने सोचा न था। उसका दिमाग मशीन की तरह काम कर रहा था। मेथा की आंखें कोस्टा से मुलाक़ात तेज़ी से चलती कार झटके से लगाया गया ब्रेक। धोखा! धोखा!

ट्रक बिलकुल अंधेरे में खड़ा था। दुल्या और उसके साथी चुपचाप बोरियां उठाये ट्रक की ओर बढ़ रहे थे। किसी का भी दयानंद की ओर ध्यान न था। कहीं वाक़ई धोखा है? होगा कैसे? मेरे पास पिस्तौल है। लेकिन हुसैन के पास भी तो है। या शायद धोखा न भी हो। लेकिन दिमाग में परेशानी ज़रूर है।

ड्राइवर तैयारी में जुट गया था। दुल्या के साथियों ने तेज़ी से बोरियां ट्रक में जमानी शुरू कर दी थीं। फिर उस पर रेत डालकर पत्थर रख

दिय। फिर ट्रक को धक्का देकर ढलान से रास्ते पर ला खडा किया। ट्रक का बानट अभी भी खुला था। सारे काम इस तरह खामाशी स हो गय जम पहने से रिहसल हा चुकी हो।

ट्रक रास्ते पर खडा था और दुल्या क साथी काम पूरा करक अलग खडे हा गये। दुल्या ने दयानन्द को सलाम किया जाते हैं साहब। और वह अपन साथियो के साथ पाडियो से ढलान की ओर चल दिया। फिर अधरे म गायब हो गया। दयानद न अपने चेहरे पर हाथ फेरा।

अब ट्रक के करीब दयानद ड्राइवर और हुसैन खडे हुए थे।

दयानद ने कहा मेथा सेठ से सारी बातें कही जायेंगी।

'साहब इसमे मेरा क्या वास्ता ? हुसैन ने कहा पेमेट क बारे म मैं कुछ नही जानता। मैं तो सिफ दुल्या को मिला देता हूँ।'

आज दुल्या ऐसे क्यो अकड रहा था ?'

'क्या पता ! उसके और सेठ के बीच कमीशन क सबध हैं। यह तो उसका ऊपरी काम है।"

'अच्छा !

मैंने तो पहले ही कहा था, साहब। यह लोग बेहद परेशान करते हैं।'

डेंजरस है। वह तो गनीमत है कि मेरे पास इस वक्त पसे थे।'

अजीब झमेला है। मेथा का लफडा समझ म ही नहीं आता।

ड्राइवर ने कहा चलना साब। देरी नही होना।'

हाँ अभी चलते हैं।'

चारो ओर सन्नाटा। दयानद को ट्रक के साथ स्टेशन तक जाना था। स्टेशन गाव से चार मील की दूरी पर था।

'ठीक है ' कहते हुए दयानद ट्रक पर चढ़ने लगा तो हुसन ने उसका हाथ पकड लिया।

ठहरो साहब !

'क्या हुआ अब ?"

जरा ठीक से सुनिये। जीप की आवाज आ रही है।'

दयानद कुछ देर चुप रहा। उसने चुपचाप सुनने की कोशिश की। लेकिन समदर की आवाज के अलावा दूसरी आवाज सुनायी न दे रही थी।

कुछ भी नही है।"

ठीक स सुनिय साहब।

हुसन की पकड कडी हो गयी। दयानद ने उसके हाथ को झटका दिया। लेकिन हुसन की पकड कडी थी। दयानद ने दाया हाथ घुमाकर

हुसैन पर हमला कर दिया। पकड़ ढीली हुई तो राम को छोड़कर दयानन्द झाड़ी की ओर भागने लगा। सामने से एक-दो परछाइयाँ आती नजर आयीं। वे लोग दुल्या के साथी होने चाहिए। दयानन्द ने झटके के साथ जेब से पिस्तौल निकाल ली।

सामने से हट जाओ हरामी। पिस्तौल है मेरे पास।'

परछाइयाँ पर हट गयीं। लेकिन तभी पिस्तौल की एक गोली उसके कान के करीब से निकल गयी। वह हुसैन होना चाहिए। होंठ चबाते हुए दयानन्द झाड़ी के पीछे कूद गया। किनारे किनारे भागने लगा। दूसरी ओर से और लोगों के भागने की आवाज भी आने लगी। वह वहीं पास में छिप कर बैठ गया। चारों ओर सन्नाटा था।

पाँच छह सेकिण्ड में ही यह सब कुछ हो गया था। मशीन की तरह।

यह जरूर भैया की हरकत होगी। कोस्टा। कोस्टा। आज वह क्यों मेरी गाड़ी में आ गया था। गुस्से से दयानन्द का बदन काँपने लगा। उसे इस तरह मरना न था। सुनन्दा और जया घाटकोपर का बँगला और अधूरा! कान के करीब से गुजरने वाली हुसैन की गोली। भैया पागल है। वह आदमी की परख नहीं जानता। हम तो उसी के आदमी थे। मेरे साथ दगा करने की जरूरत न थी।

खामोशी। अँधेरे में कुछ नजर ही न आ रहा था। कौन कहाँ है इस का अंदाज हरकत करने पर ही हो सकता था। दयानन्द ने पिस्तौल मजबूती के साथ पकड़ रखी थी। साँस रोक रखी थी। कोई हरकत नजर न आ रही थी। आँखें फाड़कर देखने पर भी रास्ता नजर न आ रहा था। ऊपर बादल छा गये हैं शायद? सुनन्दा और जया इस वक्त सो रही होंगी। नींद में भी सुनन्दा के होंठों पर वही मुस्कराहट होगी। मेरे चारों ओर तो घना अँधेरा है। पास में पिस्तौल और छह गोलियाँ। उधर कितने लोग हैं, पता नहीं। इस वक्त कोस्टा सामने आ जाता तो वह उसे गोली मार देता।

अभी कोई भी हलचल नहीं है। सब खामोश। वही अँधेरा और समन्दर की लहरों की आवाज। कल सुनन्दा उठेगी तो किस मनस्थिति में होगी? कितना वक्त गुजर गया?

दायीं तरफ से कैसी आवाज आ रही है? कोई आगे बढ़ रहा है। दयानन्द ने साँस रोक ली। होंठ चबाये और दुबारा आवाज आते ही गोली दाग दी। ढुशुग यह गोली कोस्टा के पेट में। फिर खामोशी।

वे यह जगह जान गये हैं। दयानन्द झाड़ी के पीछे से भाग खड़ा हुआ। दो गोलियों की आवाज आयी। यह पिस्तौल दूसरी ही थी। हुसैन की नहीं थी। ड्राइवर की या दुल्या की? दयानन्द फिर एक जगह औंधा लेट गया।

फिर खामोशी। कितना वक्त गुज़र गया है। कोई हलचल नही है। ऐसा कब तक चलता रहेगा? सुबह कब होगी? गोलिया की आवाज गाँव तक नही पहुची होगी क्या?

दयानद ने सामने की ओर देखा। एक सफेद सी चीज़ हिल रही थी। दूरी पर। वह हुसन का पाजामा होना चाहिए। दयानद ने निशाना लगाया और गोली दाग दी। चीज़ हिलना बद हो गयी। फिर एक आवाज हुई। दयानद के कानो के करीब से एक और गोली निकल गयी। आवाज़ की दिशा म होठ चबाते हुए उसने फिर एक गोली छोडी। यह गोली मेथा के लिए। दयानद क्रूरता म हँस दिया।

उसका सिर चक्कर खा रहा है। और कुछ नही उसकी सारी ताकत पिस्तौल थामे हाथ म है। सास रोक रखी है। नज़र तेज। खोजती हुई। कौन कहा पर है? ज़रा हिल डुलकर देखें? वे लोग चल गय क्या?

एक और आवाज़—ढुशुग! दद की एक तीखी लकीर। जसे चीरती हुई निकल गयी आरपार। सुनदा और जया की पल भर याद! बुढ़िया की याद। फिर इस दुनिया म चारो ओर फले अधेरे की याद। अब होश नही। सिफ हर दिशा को चीरती तेज आवाज करती हुई भयानक आग। पिस्तौल म अभी तीन गोलियाँ शेष हैं।

दयानद गिरते पडते खडा होता है। सामने नज़र आती परछाइयो पर तेजी से गोलिया दागता है—ढुशुग। यह गोली अपने धधे पर। दूसरी ओर से भी गोलिया चली। लेकिन अब क्या? ढुशुग—यह मेथा की लडकी के लिए। और यह एक और—अब तक की गलतियो के लिए। एक और गोली की जरूरत थी। होती तो सारी दुनिया पर दाग दी होती।

अब दद कहा है? अब तो चारो ओर तेज़ रोशनियो का तीखा अधेरा है। इतना स्याह अधेरा कभी देखा न था। वही मज़ेदार अधेरा, जिसम चाँदनी के भी पैबन्द नही लगे हुए हैं!